6-4

चिकित्सा-चन्द्रोदय

तीसरा भाग

लेखक :

आयुर्वेद पंचानन बाबू हरिदास वैद्य

चिकित्सा-चन्द्रोदय (७ भाग), स्वास्थ्य रक्षा, हिन्दी-अंग्रेजी शिक्षा,
हिन्दी-बंगला-शिक्षा प्रभृति पुस्तकों के लेखक, और
भर्तृहरि के शतक-त्रय तथा गुलिस्ताँ आदि
अनेकों पुस्तकों के अनुवादक

प्रकाशक :

हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड

लाल दरवाजा, कच्ची सड़क, मथुरा (उ० प्र०)

पिन—२८१००१

मूल्य { अजिल्द का ४०) रु०
सजिल्द का ४५) रु० }

प्रकाशिका :
श्रीमती चमेली देवी वैद्य भूषण

संचालिका :
हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
लाल दरवाजा, कच्ची सड़क, मथुरा (उ० प्र०)
पिन कोड २८१००१

★

दसवाँ संस्करण
जनवरी १६६०

★

मूल्य { अजिल्द का ४०) रु०
सजिल्द का ४५) रु०

★

मुद्रक :
मयूर प्रेस, ३७१/५ बद्रीनगर, दरेसी रोड
मथुरा–२८१००१

निवेदन

चिकित्सा-चन्द्रोदय तीसरे भाग का दसवाँ संस्करण आपके हाथों में रखते हुए मुझे अपार सुख एवं सन्तोष की अनुभूति हो रही है। अनेकों वर्ष पूर्व जब मेरे गुरु एवं पूज्य पिताजी ने आयुर्वेद के इन ग्रन्थों का लेखन-कार्य प्रारम्भ किया था, उस समय और इस समय में आकाश-पाताल का अन्तर है। न जाने कितने ग्रन्थ अब-तक प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन जगदाधार श्री कृष्णचन्द्र की कृपा से 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' ने आयुर्वेदाकाश में 'ध्रुव' का अटल स्थान प्राप्त कर लिया है। इनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं।

हाल ही में चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भाग का सत्रहवाँ संस्करण, प्रकाशित हो चुका है। अपने देश के असंख्य आयुर्वेद-प्रेमियों के साथ-साथ साधारण गृहस्थों तक ने इन ग्रन्थों को अपनाया है और अपने जीवन का आवश्यक अंग समझा है।

अनेकों प्रिय पाठकों के आग्रह-भरे पत्र आते रहते हैं कि पूज्य पिताजी "बाबू हरिदास वैद्य" के जीवन-सम्बन्धी जानकारी के बिना पुस्तकों के अध्ययन में कुछ अधूरापन-सा लगता है। अतः इस संस्करण में उन्हीं के द्वारा लिखित "मेरे जीवन-सम्बन्धी दो-चार बातें" के कुछ अंश प्रारम्भिक कृतियों से लेकर उद्धृत किये जा रहे हैं।

यद्यपि इस संस्करण में मेरी प्रिय पुत्री एवं सहयोगी डॉ० शकुन्तला श्रीवास्तव ने सुन्दर, आकर्षक छपाई, प्रूफ-संशोधन आदि का पूरा ध्यान रखा है, फिर भी पाठक-गण, छोटी-मोटी त्रुटियों पर ध्यान न देंगे, ऐसी आशा है। और यदि सुन्दर बनाने के लिए कुछ सुझाव भेजेंगे तो उनका भी स्वागत है। समयानुसार मूल्य-वृद्धि होने पर भी पुस्तकों की लोकप्रियता एवं उपयोगिता बनी रहेगी, ऐसा विश्वास है।

—चमेली देवी वैद्या

मथुरा.
२७ जनवरी १९९०
माघ शुक्ल १
विक्रमी सम्वत् २०४६

बाबू हरिदास वैद्य

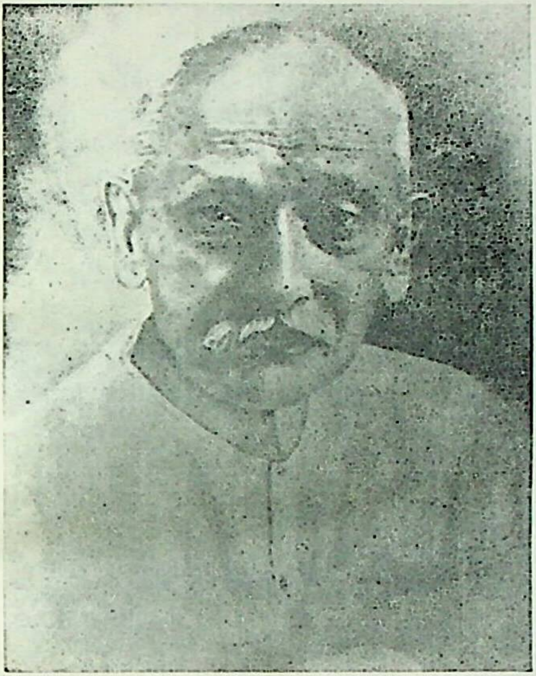
द्वारा सन् १९३७ में लिखित

"मेरे जीवन-सम्बन्धी दो-चार बातें"

से उद्धृत कुछ अंश

मेरा जन्म मथुरा के एक सम्पन्न वैश्य-कुल में सम्वत् १९२८ वि० में हुआ। पूज्य पिताजी का नाम लाला हीरालाल जी था। नाम रखा किशनलाल (कृष्णलाल)। मुझे अंगरेजी की ऊँची तालीम दिलाई गई, पर फिर भी घरेलू झंझटों के कारण बी० ए० की तैयारी करता हुआ भी परीक्षा न दे सका।

दैवयोग से एक तोपखाने के कप्तान वेनब्रिज की मुझ पर कृपा हो गई। मुझे खूब आमदनी होने लगी। दो तोपखानों की ख़जान्चीगीरी भी मुझे मिल गई। पर गुलाब के साथ काँटा मौजूद था। मुझसे चन्द ग़लतियाँ हो गईं। नतीजा यह हुआ कि, मुझे चोर की तरह क्वेटा (विलोचिस्तान) की ओर छोड़ना पड़ा। सिन्ध के बयाबाँ जंगलों में महीनों ख़ाक छानी। जैसलमेर के तालाब पर आकर कुछ आनन्द पाया। एक महात्मा ने आयुर्वेद-विद्या का शौक लगा दिया। शिक्षा भी दिल से दी। मामूली ज्ञान हो गया। लघुत्रयी शेष करा दी। यहाँ से मन उछटा तो रियासत जोधपुर के, एक ठिकाने पोकरन में आकर बने श्मशान पर डेरा डाला। साधु-सन्तों ने एक दिन इकट्ठे होकर मेरा नाम 'हरिदास' रख दिया। पोकरन में मैंने कई सालों तक वहाँ के 'ट्रेवर एङ्गलो वर्नाक्यूलर स्कूल' की हैडमास्टरी की। वहीं एक वृद्ध-वैद्य सेवक जी से वैद्य विद्या का अच्छा ज्ञान हुआ। अपनी दूसरी धर्म पत्नी के स्वर्ग-धाम जाने पर, पोकरन छोड़ कर मैं जयपुर आया। सफलता पर सफलता और यश-प्राप्ति के बाद भी यथेष्ट धन न मिलने पर जयपुर छोड़ कर मैं बम्बई गया और डाक्टर शर्म्मन के पत्र का सम्पादन-कार्य करने लगा। पर आफ़त तो मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी थी, इसलिए जान बचाने और धन कमाने को कलकत्ते पहुँचा।



जन्म :–सन् १८७२ मृत्यु :–सन् १९४८

आयुर्वेद-पंचानन बाबू हरिदास वैद्य

चिकित्सा-चन्द्रोदय, स्वास्थ्य-रक्षा, अ ग्रेजी-हिन्दी-शिक्षा,
हिन्दी-बँगला-शिक्षा प्रभृति पुस्तकों के लेखक और
अक्लमन्दी का खज़ाना, गुलिस्ताँ, भर्तृहरि-
कृत शतक-त्रय आदि कितनी ही
पुस्तकों के अनुवादक

कलकत्ते में मैंने अनेक तरह की घोर विपत्तियाँ उठा कर, हर काम में सफलता प्राप्त की। आयुर्वेद-विद्या की कमी भी यहीं एक वृद्ध बंगाली विद्वान द्वारा पूरी हुई। वैसा सच्चा निष्कपट गुरु इस ज़माने में बड़े भाग्य से मिलता है। मैं उन दिनों तीन-चार सौ रुपये माहवारी पैदा कर लेता था। गुरुजी के पारिवारिक खर्च के लिए सौ रुपये से भी अधिक देता था। वे मुझे दिल खोल कर आयुर्वेद और बंग भाषा पढ़ाते थे। मैं आज उन्हीं की बदौलत ऐसा बन सका हूँ। मेरा एक-एक रोम उनका ऋणी है। चिकित्सा-चन्द्रोदय सात भाग, स्वास्थ्य-रक्षा और हिन्दी-बंगला-शिक्षा के तीन भाग उन्हीं की कृपा के फल हैं। तीनों शतकों का अनुवाद सेन्ट जॉन्स कालेज, आगरा के एक प्रोफेसर की पढ़ाने की शैली पर किया गया है। एफ० ए० के कोर्स में एक शतक था। मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की थी कि, कभी मौक़ा मिला, मेरे पास धन हुआ, तो मैं तीनों शतकों का ऐसा ही अनुवाद करूँगा। ईश्वर की कृपा से मेरा वह विचार कलकत्ते में पूरा हो गया। हिन्दी भाषा-भाषियों ने मेरे अनुवाद की भूरि-भूरि प्रशंसाएँ कीं। अनेकों पत्रों ने तो यहाँ तक लिख दिया कि इससे अच्छा अनुवाद इन शतकों का कोई और न लिख सकेगा। बात भी यही हुई।

इस फर्म की स्थापना सन् १६०० के आस-पास की गई। १६०५ में प्रेस वगैरः खोले गये। किशनलाल का नाम हरिदास सन् १८६८ में हो गया।

अपना अन्तिम समय अपने जन्म-स्थान में बिताने की इच्छा से सन् १६३१ में मैं मथुरा नगरी आ गया।

मेरी लड़की चमेली देवी आयुर्वेद विद्या में दक्ष है। रोज़ दो-तीन सौ स्त्रियों का इलाज करती है। विदेश से आये हुए रोगियों के पत्रों के जवाब में दवाएँ तजवीज करती है। इसकी तैयार की हुई दवाएँ रस, भस्म, आसव और अरिष्ट सर्वोत्तम होते हैं। उसके हाथ में यश है, पीयूषपाणि है, तभी तो उसने मेरी मदद के बिना, अनेक असाध्य मरीज़ाओं की जान बचा कर मुझे खुश किया है। मैंने भी ख़ुश होकर उसे अपने गुप्त-से-गुप्त अनमोल प्रयोग बता दिये हैं। आशा है, यह पुत्री होकर भी, मेरी कीर्ति को सुपुत्र की तरह बढ़ायेगी।

—:※:—

विषय-सूची

□ पहला अध्याय (पृष्ठ १-७६) □

★

□ दूसरा अध्याय (पृष्ठ ८०-१२०) □

★

□ तीसरा अध्याय (पृष्ठ १२१-१८५) □

★

□ चौथा अध्याय (पृष्ठ १८६-२०१) □

★

□ पाँचवाँ अध्याय (पृष्ठ २०२-२२७) □

★

□ छठा अध्याय (पृष्ठ २२८-२६५) □

★

□ सातवाँ अध्याय (पृष्ठ २६६-२९२) □

★

□ आठवाँ अध्याय (पृष्ठ २९३-३२६) □

★

चिकित्सा-चन्द्रोदय

[तीसरा भाग]

पहला अध्याय

□ अतिसार-वर्णन □

अतिसार का निदान

बहुत ही भारी, चिकने, रूखे, गरम, पतले, कड़े, शीतल, संयोग-विरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश-विरुद्ध और समय-विरुद्ध पदार्थों के खाने-पीने, भोजन-पर-भोजन करने, एक भोजन के बिना पचे दूसरा भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, स्नेह आदि कर्मों के अतियोग या मिथ्यायोग, स्थावर आदि विष खाने, डरने, शोक करने, खराब पानी पीने, अत्यन्त शराब पीने, स्वभाव और ऋतु के विपरीत आहार-विहार करने, जल में बहुत देर तक रहने या खेल करने, पाखाना-पेशाब प्रभृति वेगों को जबर्दस्ती रोकने और पक्वाशय की दुष्ट हुई वायु तथा कृमियों— कीड़ों से मनुष्य को 'अतिसार' रोग होता है।

अतिसार की सम्प्राप्ति

ऊपर लिखे हुए कारणों से—रस, जल, रुधिर, मूत्र, पसीना, मेद, कफ और पित्त प्रभृति पतली धातुएँ कुपित होकर, जठराग्नि या पाचकाग्नि को मन्दी करती हैं और स्वयं मल में मिल जाती हैं। पीछे गुदा में रहने वाली अपान वायु उनको नीचे की ओर धकेलती है; तब वे नदी के वेग की तरह गुदा में से निकलती हैं। इन सबके इस तरह निकलने को ही 'अतिसार' कहते हैं।

अतिसार के पूर्वरूप

जिसको अतिसार-रोग होने वाला होता है, उसके हृदय, नाभि, गुदा, पेट और कूख में तोड़ने की-सी वेदना होती है, शरीर दुःखी-सा रहता है, गुदा की हवा रुक जाती है, मलावरोध हो जाता है, पेट फूल जाता है और खाया-पिया नहीं पचता। तात्पर्य यह है कि, अतिसार होने के पहले ये चिह्न नजर आते हैं।

अतिसार के भेद

अतिसार ६ प्रकार के होते हैं—(१) वातातिसार, (२) पित्तातिसार, (३) कफातिसार, (४) सन्निपातातिसार, (५) शोकातिसार, (६) आमातिसार।

☛ **नोट**—इनके सिवा रक्तातिसार, भयातिसार, शोषातिसार, छर्द्यातिसार और प्रवाहिका प्रभृति और भी भेद है। रक्तातिसार में खून के दस्त आते हैं, परन्तु यह पित्तातिसार का भेद माना जाता है। भय और शोक से पैदा हुए अतिसार 'आगन्तुक अतिसार' कहलाते हैं। ये दोनों अतिसार वातोल्वण अतिसारों के समान होते हैं। भय और शोक से वायु, शीघ्र ही कुपित होकर, इन दोनों अतिसारों को पैदा करती है। इन दोनों अतिसारों के पूर्व लक्षण न होने पर भी ये एकाएक पैदा हो जाते हैं। प्रवाहिका भी अतिसार का भेद है। प्रवाहिका और अतिसार में बहुत थोड़ा भेद है। इन सबके लक्षण हम आगे लिखेंगे।

वातातिसार के लक्षण

'चरक' में लिखा है—वात-प्रकृति प्राणी अगर हवा और धूप में अधिक रहता है, बहुत ही शारीरिक परिश्रम करता है; बहुत ही रूखा, थोड़ा या एक ही तरह का रस सेवन करता है, सदा तेज़ शराब पीता है, अधिक मैथुन करता है और मल-मूत्र आदि वेगों को रोकता है, तो उसकी वायु कुपित होकर पाचक-अग्नि को उपहत—नष्ट कर देती है। अग्नि के शान्त होने पर, कुपित वायु, पेशाव और पसीनों को मलाशय में ले जाकर, उन्हें मल में मिला कर, मल को पतला करके अतिसार' पैदा करती है।

'माधव-निदान' में लिखा है—वात से पैदा हुए अतिसार में कुछ-कुछ ललाई लिये, फेनयुक्त, रूखा, आम मिला हुआ कच्चा और थोड़ा-थोड़ा मल बारम्बार उतरता है। मल उतरते समय आवाज़ होती है और दर्द भी होता है।

'सुश्रुत' में लिखा है—वातातिसार वाले के पेट में दर्द चलता है, पेशाव रुक जाता या कम होता है, आँतों में गड़गड़ आवाज़ होती है, गुदा बाहर निकलती-सी जान पड़ती है; कमर, ऊरु और जाँघों में थकान-सी मालूम होती है, दस्त थोड़ा-थोड़ा आता है, मल में झाग और रूखापन होता है, मल की रंगत में कलाई या श्यामता होती है और दस्त होते समय वायु की आवाज़ भी होती हैं।

☛ **नोट**—वातातिसार रोगी के पसीने और पेशाव, अपनी-अपनी राहों से न निकल कर ज़्यादातर गुदा-मार्ग से ही निकलते हैं, इसी से अतिसार-रोगी को पेशाव और पसीने कम आते हैं।

पित्तातिसार के लक्षण

'चरक' में लिखा है—पित्त-प्रकृति वाले प्राणी अगर खट्टे, नमकीन, कड़वे, खारे, गरम और तीक्ष्ण पदार्थों को ज़्यादा खाते हैं, अथवा अग्नि, धूप और गरम हवा का ज़्यादा सेवन करते हैं और क्रोध तथा ईर्ष्या करते हैं, तो उनका पित्त कुपित हो जाता है। कुपित पित्त, पतलेपन के कारण, पाचक गरमी को नष्ट करके पक्वाशय में जाकर, अपने उष्णत्व, द्रवत्व और सरत्व गुणों के कारण, मल को पतला करके अतिसार पैदा करता है।

'माधव-निदान' में लिखा है—पित्तातिसार में पित्त की वजह से पीला, नीला और धूसर रंग का मल उतरता तथा प्यास, बेहोशी और दाह होता एवं गुदा पक जाती है।

'चरक' में लिखा है—पित्तातिसार में हल्दी-सा, नीला, काला, पित्त-मिला हुआ और बदबूदार मल निकलता है, प्यास लगती है, दाह होता है, पसीने आते हैं, बेहोशी होती है, शूल चलते हैं और मलद्वार यानी गुदा का पाक होता है।

'सुश्रुत' में लिखा है—मल बदबूदार और गरम हो, दस्त ज़ोर से हों, दस्तों का रंग पीला, नीला या लाल हो तथा वह मांस के धोवन-जैसे छिछड़ेदार हों, पसीने आयें, मूर्च्छा और दाह हो, गुदा पक जाय और ज्वर हो—ये लक्षण पित्तातिसार के हैं।

नोट—पित्तातिसार में यदि अधिकतर पित्तकारक पदार्थ सेवन किये जाते हैं, तो घोर रक्तातिसार हो जाता है। रक्तातिसार में मल-मिले ख़ून के दस्त होते हैं।

कफातिसार के लक्षण

भारी, मीठे, शीतल और चिकने पदार्थों के सेवन करने, अति भोजन करने, निश्चिन्त होकर दिन में सोने और आलस्य-वश होने के कारण से कफ-प्रकृति वाले प्राणी का कफ कुपित हो जाता है, और वह अपने भारी, मधुर, चिकने और शीतल स्वभाव से 'अतिसार' पैदा करता है।

'माधव-निदान' में लिखा है—कफातिसार वाले प्राणी का मल सफ़ेद, गाढ़ा, चिकना, कफ मिला हुआ, बदबूदार और शीतल उतरता है तथा रोएँ खड़े हो जाते हैं।

'चरक' में लिखा है—कफातिसार में चिकना, सफ़ेद, लिबलिबा, ताँतूदार और थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है। इसमें प्रवाहिका, उदर, गुदा और पेड़ू प्रभृति

में भारीपन, कभी-कभी बँधा मल और कभी पतला मल उतरना, रोम-हर्ष, वमन-सी आती जान पड़ना, निद्रा, आलस्य, अवसाद और अन्नद्वेष—ये लक्षण होते हैं।

'सुश्रुत' में लिखा है—कफातिसार में तन्द्रा, निद्रा, भारीपन, जी मिचलाना या मुँह में पानी आना, अग्निमांद्य, दस्त आना और फिर भी शंका बनी रहना, सफ़ेद, गाढ़ा और कफ-मिला दस्त आना, दस्त के साथ आवाज़ न होना, भोजन में अरुचि और रोमांच, ये लक्षण होते हैं।

सन्निपातातिसार के लक्षण

'चरक' में लिखा है—अति शीतल, चिकनी, रूखी, गरम और कड़ी चीजों के खाने, विषम भोजन करने, विरुद्ध भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, समय के बाद भोजन करने, थोड़ा भोजन करने, ख़राब शराब पीने, बहुत शराब पीने, दूषित जल पीने, संचित मल को निकालने, बारम्बार जुलाब लेने, अग्नि, सूर्य और हवा तथा जल के अत्यन्त सेवन करने, बहुत सोने, न सोने, वेग रोकने, ऋतुओं के बदलने, ताक़त से ज़्यादा काम करने, डरने, शोक करने, अथवा कृमि, शोष, ज्वर और बवासीर से, अति दुर्बल होने के कारण, मन्दाग्नि वालों के तीनों दोष कुपित होकर, अग्नि को अत्यन्त नष्ट कर देते और पक्वाशय में जाकर 'सब दोषों के लक्षणों वाला अतिसार' करते हैं।

'माधव-निदान' में लिखा है—सन्निपात-अतिसार में सूअर की चरबी के समान या मांस के धोवन के जैसा एवं वात, पित्त और कफ के अतिसारों के लक्षणों वाला मल उतरता है। त्रिदोष से हुआ अतिसार कष्टसाध्य होता है।

'चरक' में लिखा है—सन्निपात के अतिसार में रक्त आदि धातु अत्यन्त दूषित हो जाते हैं। इससे दूषित धातुओं के स्वभाव के अनुसार, अतिसार के रंगों में भेद होता है। शोणित—खून आदि धातुओं के बहुत ही बिगड़ जाने से पीला, हरा, नीला, मँजीठ के रंग का, मांस के धोवन-जैसा, लाल, काला, सफ़ेद, सूअर की चरबी के समान सफ़ेद, पीड़ा-सहित या पीड़ा रहित, बहुत या थोड़ा मल निकलता है। कभी मल में गाँठें होती हैं और आम मिला रहता है और कभी पका हुआ मल आता है। रोगी के मांस, खून और बल अत्यन्त क्षीण हो जाते हैं, अग्नि मन्द हो जाती है और मुँह का ज़ायका एकदम से जाता रहता है। ऐसे रोगी को 'कृच्छ्रसाध्य' समझना चाहिए।

'सुश्रुत' में लिखा है—जिस अतिसार में तन्द्रा हो, बेहोशी हो, अग्निमांद्य हो, मुखशोष हो, प्यास बहुत हो, दस्तों का रंग किसी एक प्रकार का रंग न हो, और सब दोषों के लक्षण तथा उपद्रव हों, उसे 'सन्निपातातिसार' कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है, किन्तु बालक और बूढ़े का यह अतिसार तो असाध्य ही होता है।

शोकातिसार के लक्षण

भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्र या धन प्रभृति का नाश होने से जब मनुष्य शोक करता है, तब मनुष्य की अग्नि मन्द हो जाती है। शोक के कारण आँख, नाक और गले वग़ैरः से गिरने वाला जल और शोक से पैदा हुई गरमी—ये दोनों, कोठे में जाकर मनुष्य के ख़ून को बिगाड़ कर, उसके स्थान से चलायमान कर देते हैं; तब वह ख़ून, गुदा की राह से, विष्टा और दुर्गन्ध-सहित या रहित, चिरमिटी के रंग के समान लाल निकलता है, उसे ही 'शोकातिसार' कहते हैं। यह शोकातिसार बड़ी कठिनाई से आराम होता है; क्योंकि बिना शोक दूर हुए, केवल दवा से इसमें लाभ नहीं होता; इसी से इसको कष्टसाध्य कहते हैं।

'चरक' में लिखा है—भय और शोक से पैदा हुए दो तरह के 'आगन्तुक-अतिसार' होते हैं। इन दोनों के लक्षण वातप्रधान अतिसार के लक्षणों से मिलते हैं। भय और शोक के कारण, वायु शीघ्र ही कुपित होती है। इनमें वात-हरण करने वाली चिकित्सा करनी चाहिए और रोगी को प्रसन्न रखना चाहिए तथा उसे तसल्ली देनी चाहिए।

भयातिसार के लक्षण

भय की वजह से—वात, पित्त और कफ क्षुभित होकर मल को दूषित करते हैं, तब तत्काल, विशेषकर वात और पित्त के लक्षणों वाला, गरम और पानी में तैरने वाला मल, गुदा की राह से, प्रवाह के रूप में बाहर निकलता है, उसको 'भयातिसार' कहते हैं। उसमें डर मिटने से रोगी सुखी होता है।

☞ **नोट**—शास्त्र में कहा है, 'रागद्वेषभयाच्चैव ते स्युरागन्तवा गदाः।' अर्थात् राग, द्वेष और भय से जो रोग होता है, उसे 'आगन्तुज' कहते हैं। इस कथन के अनुसार 'भयातिसार' आगन्तुज है। इस अतिसार में वात, पित्त, और कफ मल को दूषित करते हैं और पीछे भय के कारण से ये वात, पित्त, कफ और मल चलायमान होते हैं। इस अतिसार में दुष्ट वायु का सम्बन्ध पीछे होता है, क्योंकि 'भय से वायु होती है', इस वजह से भयातिसार में वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिए।

आमातिसार के लक्षण

खाये हुए पदार्थों के न पचने से, चलायमान हुए वात आदि दोष, कोठे की रस-रक्त आदि धातुओं और मल-मूत्र आदि मलों को चलायमान करके, वारम्बार, मरोड़ी के साथ, अनेक तरह की विष्ठा गुदा के बाहर निकालते हैं, इसी को 'आमातिसार' कहते हैं। यही छठा अतिसार है।

☛ नोट—जिस तरह भारी पदार्थ खाने आदि से दोष दूषित होते हैं, उसी तरह आम से भी दोष दूषित होते हैं और वे ही अतिसार करते हैं। किन्तु आम अतिसार को पैदा नहीं करता; यानी और अतिसारों की तरह, आमातिसार भी दोषों से ही होता है। फिर भी, चिकित्सा के सुभीते के लिए, 'आमातिसार' अलग कहा है। सब तरह के अतिसारों में मल रोकने की दवाएँ कही गई हैं; किन्तु इस आमातिसार में मल रोकने की दवा देने की मनाही है। आमातिसार में दस्त रोकने वाली दवा देने से संग्रहणी, अफारा, शूल, गुल्म, सूजन, उदर-रोग और ज्वरादि अनेक प्रकार के विकार पैदा हो जाते हैं। इसलिए, अतिसार का इलाज करते समय, इस बात की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिए, कि आमातिसार है या पक्वातिसार है।

आमातिसार के लक्षण—वातादि दोषों से मिला हुआ मल, यदि जल में डालने से डूब जाय तथा इसमें बहुत ही बदबू हो और वह फटा हुआ हो, तो समझना चाहिए, कि अतिसार अभी आम यानी कच्चा है—पका नहीं है।

पक्वातिसार के लक्षण—अगर मल जल में न डूबे, फटा हुआ और बदबूदार न हो तथा मनुष्य का शरीर हलका हो, तो समझना चाहिए कि अतिसार पक गया है।

रक्तातिसार के लक्षण

पित्तातिसार वाला रोगी या पित्तातिसार होने वाला मनुष्य, अगर अत्यन्त पित्तकारक वस्तुएँ खाता-पीता है, तो उसे भयंकर 'रक्तातिसार' हो जाता है।

☛ नोट—कभी-कभी बिना पित्तातिसार के भी, अत्यन्त पित्तकारक आहार-विहारों से, पित्त या रक्त के कुपित होने के कारण, 'रक्तातिसार' हो जाता है।

प्रवाहिका के लक्षण

अत्यन्त वातकारक पदार्थों के सेवन करने से, कुपित हुई वायु, संचित कफ को मल में मिला कर बार-बार गुदा के बाहर निकालती है; तब मरोड़ी के साथ थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है। इसे ही 'प्रवाहिका' कहते हैं।

जिस प्रवाहिका में शूल चलता है, उसे वायु की प्रवाहिका कहते हैं। यह रूखे पदार्थों के सेवन करने से होती है। जिस प्रवाहिका में दाह होता है, उसे पित्त की प्रवाहिका कहते हैं। यह तीक्ष्ण और गरम पदार्थों के सेवन करने से होती है। जिस प्रवाहिका में कफ की अधिकता होती है, उसे कफ की प्रवाहिका कहते हैं। यह चिकने पदार्थों के सेवन करने से होती हैं। जिस प्रवाहिका में खून निकलता है, उसे रुधिर की प्रवाहिका कहते हैं। यह भी, पित्त की प्रवाहिका की तरह, तीक्ष्ण और गर्म पदार्थों के से सेवन ही होती है।

☛ **नोट**—प्रवाहिका अतिसार का ही एक भेद है। भेद इतना ही है, कि अतिसार में अनेक प्रकार की पतली धातुएँ निकलती हैं और प्रवाहिका में केवल कफ निकलता है। कफ तो उपलक्षण है; पित्त और खून भी निकलते हैं। इसी को डाक्टरी में डिसेन्ट्री (Dysentery) और हिकमत में पेचिश कहते हैं। इसमें आँव और खून के दस्त मरोड़ी देकर होते हैं; क्योंकि आँतों में घाव होने से यह रोग होता है।

अतिसार के उपद्रव

सूजन, शूल, प्यास, ज्वर, श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, मूर्च्छा और हिचकी—ये अतिसार के उपद्रव हैं। जिस अतिसार-रोगी में ये सब लक्षण हों, वैद्य उसका इलाज न करे। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं—

तृट्श्वासकासज्वरशोथमूर्च्छाहिक्कान्नविद्वेषणवान्तिशूलैः ।
युक्तोतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविन्ददामोदरमाधवेति ॥

जिस अतिसार-रोगी को प्यास, श्वास, खाँसी, ज्वर, सूजन, बेहोशी, हिचकी, अन्न में अरुचि, वमन और शूल—ये उपद्रव हों, वह हठ से, हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव कहे। मतलब यह है कि ऐसा रोगी नहीं जीता।

असाध्य अतिसारों के लक्षण

जिसका मल पकी जामुन के समान, यकृत्-पिंड के समान, सूक्ष्म, घी के समान, तेल-सरीखा, चरबी और मज्जा के समान, दाल के पानी के समान, दूध और दही के समान, मांस के धोवन के समान, काला, नीला और लाल रंग का, तरह-तरह के मिले रंगों का, अनेक रंगों का, बहुत काला, चिकना, मोर की पूंछ के चँदोये के समान, चित्र-विचित्र, सघन, सड़े हुए मुर्दे की-सी गन्ध के समान, मस्तक के मगज़ के समान, भारी, बदबूदार और बहुत गरम हो, तथा रोगी को प्यास, दाह, अरुचि, श्वास और हिचकी हो; पसलियों और हड्डियों में शूल-पीड़ा हो;

मूर्च्छा, बेचैनी और मोह हो; गुदा के आँटे पक गये हों और रोगी बकवाद करता हो—ऐसा अतिसार-रोगी असाध्य है। ऐसे मरीज का इलाज वैद्य को न करना चाहिए।

जिस अतिसार-रोगी की गुदा, मल निकलने के बाद भी बन्द न होती हो, रोगी क्षीण हो गया हो, शूल चलते हों, पेट पर अफारा हो, गुदा के पकाने वाले पित्त के रहने पर भी, शरीर शीतल हो और जठराग्नि नष्ट हो गई हो—उस रोगी का भी वैद्य को इलाज न करना चाहिए।

जिसके हाथ-पैरों की अँगुलियाँ और सन्धियाँ पक गई हों पेशाब रुक गया हो और मल अत्यन्त गरम हो, वह रोगी मर जायगा।

जो अतिसार-रोगी, क्षय-रोगी और ग्रहणी-रोगी मांस और अग्निबल से हीन हो जाते हैं, वे नहीं जीते।

नोट—जैसे-जैसे लक्षण ऊपर लिख आये हैं, अगर ऐसे-ऐसे लक्षण बालकों और बूढ़ों के अतिसारों में हों, तो उन अतिसारों को असाध्य समझना चाहिए। जवानों को भी, यदि धातुओं के दुष्ट होने से, अतिसार हों, तो उसे असाध्य समझना चाहिए।

अतिसार-मुक्त रोगी के लक्षण

जिस मनुष्य को पेशाब करते समय दस्त न हो, अपान वायु—गुदा की हवा—साफ निकले और अग्नि दीप्त हो तथा कोठा हलका हो, उसे अतिसार से मुक्त हुआ समझो; यानी इन लक्षणों के होने पर समझ लो कि अतिसार आराम हो गया।

अतिसार में मल-परीक्षा

बहुत से रोगों में मल-मूत्र के देखने से रोग का बहुत कुछ निश्चय हो जाता है। ख़ासकर अतिसार में मल-परीक्षा की बड़ी जरूरत रहती है। जो वैद्य यह नहीं जानता कि किन-किन रोगों में कैसे दस्त होते हैं, वह रोगों का ठीक इलाज नहीं कर सकता। जैसे, हैज़े में पतले दस्त होते हैं और अतिसार में भी पतले दस्त होते हैं। घोर अजीर्ण में भी चावल के धोवन-जैसे दस्त होते हैं और हैजे में भी चावल के धोवन-जैसे दस्त होते हैं। जो वैद्य इन दस्तों का बारीक भेद न जानता होगा, वह धोखा खा जायगा और तब क्या ठीक इलाज कर सकेगा? हरगिज नहीं। इसीसे हम नीचे दस्तों के कुछ भेद लिख देते हैं। पाठक उन्हें अच्छी तरह समझ कर याद कर लें।

(१) अतिसार, संग्रहणी, विशूचिका, घोर अजीर्ण और कृमि-रोग प्रभृति में पतले दस्त होते हैं, पर इनके दस्तों में फ़र्क़ है।

अतिसार-रोग में मल पानी-जैसा पतला होता है और हैज़े के भी दस्त पतले होते हैं। अतिसार के पतले दस्तों में मल होता है, पर हैज़े के दस्तों में मल नहीं होता। अतिसार के दस्त लाल, पीले, काले, धूमिल प्रभृति अनेक रंगों के होते हैं, पर हैज़े के दस्त चावल के धोवन के जैसे-ही होते हैं। हैज़े के दस्तों में मल का न होना और उनका रंग चावल के धोवन के जैसा होना—यह खास पहचान है।

घोर अजीर्ण में भी चावलों के धोवन-जैसे दस्त होते हैं और हैज़े में भी वैसे ही दस्त होते हैं। यद्यपि हैज़े का पैदा करने वाला अजीर्ण है, तो भी, ऐसी दशा में, पेशाब से इन दोनों का भेद मालूम हो जाता है; यानी हैज़े में पेशाब बहुधा बन्द हो जाता है।

अतिसार में दस्त पतले होते हैं और कृमि रोग में भी प्रायः दस्त पतले होते हैं एवं कृमि-रोग से भी अतिसार होता है; पर कृमि-रोग वाले का जी मिचलाया करता है।

अतिसार में दस्त पतले होते हैं और संग्रहणी में भी; पर इन दोनों के दस्तों में बड़ा भेद है। संग्रहणी में कच्चा अन्न, बिना पचे, ज्यों का त्यों निकलता है। इस रोग के दस्तों में खूराक का कच्चा भाग रहता है। ग्रहणी नामक आँत का यह क़ायदा है, कि वह कच्चे को ग्रहण करती और पके को निकाल देती है; पर जब ग्रहणी ख़राब हो जाती है, जब ग्रहणी-रोग हो जाता है, तब वह कच्चे अन्न को ग्रहण करती और कच्चे को ही निकाल देती है। इस रोग में भी मरोड़ी के साथ दस्त आते हैं और बीच-बीच में बन्द भी हो जाते हैं।

अजीर्ण वाले का मल बदबूदार और ढीला होता है; पर बहुत ही बढ़े हुए अजीर्ण में, मल चावलों के धोवन या काँजी के समान होता है।

☛ **नोट**—अलग-अलग दोषों के कोप से हुए अतिसारों के लक्षण प्रत्येक प्रकार के अतिसार में लिख आये हैं, अतः उनके फिर लिखने की जरूरत नहीं।

मरने वाले रोगी का मल बहुत काला, बहुत सफ़ेद, बहुत पीला, बहुत लाल या अत्यन्त गरम होता है। कोई-कोई कहते हैं, कि ऐसे रोगी का मल बहुत ही बदबूदार, लाल, कुछ सफ़ेद, काला और माँस के धोवन-जैसा होता है।

जिसका मल सड़ा हुआ, बदबूदार या मोर के पंख के चँदोये-जैसा होता है, वह रोगी असाध्य होता है।

नोट—काला दस्त कलेजे के रोग या पित्त के विकार से भी होता है। अनेक बार आमले, गूगल या लोहे से बनी दवाओं से भी काला दस्त होता है। काला दस्त होते ही घबराना न चाहिए; बल्कि पता लगाना चाहिए, कि क्यों काला दस्त हुआ है।

रक्तातिसार के दस्तों में ख़ून आता है। बवासीर और रक्तपित्त में भी, गुदा से ख़ून गिरता है। भेद यही है, कि बवासीर में दस्त क़ब्ज से होता है और दस्त के पहले या पीछे धार में ख़ून गिरता है। रक्तपित रोग में भी, दस्त के आगे या पीछे, धार में ख़ून गिरता है; किन्तु रक्तातिसार में ख़ून, आंव या मल के साथ मिल कर आता है। साफ शब्दों में यों समझिये, कि अगर दस्त के साथ मिल कर ख़ून आये, तो रक्तातिसार या पेचिश समझो। अगर दस्त क़ब्ज़ से हो और दस्त के आगे-पीछे ख़ून गिरे, तो बवासीर समझो।

नोट—अगर दस्तों में ख़ून और पीप अत्यधिक गिरें, तो समझो कि कलेजा पक कर आंतों में फटा है।

अतिसार और संग्रहणी में नाड़ी-परीक्षा

पादे च हंसगमना करे मण्डूकसम्प्लवा।
तस्याग्नेर्मन्दता देहे त्वथवा ग्रहणी-गदे॥
भेदेन शान्ता ग्रहणीगदेन निर्वीर्यरूपा त्वतिसारभेदे।
विलम्बिकायां प्लवगा कदाचिदामातिसारे पृथुताजडा चा॥

जिसके पाँव की नाड़ी हंस के समान और हाथ की नाड़ी मेंढ़क के समान चलती है, उसके शरीर में मन्दाग्नि या संग्रहणी रोग समझना चाहिए।

संग्रहणी का दस्त होने के बाद, नाड़ी शान्तवेगा हो जाती है। अतिसार रोग में, दस्त होने के बाद, नाड़ी सर्वथा बलहीन हो जाती है। विलम्बिका में नाड़ी मेंढ़क की तरह चलती है। इसी तरह आमातिसार में नाड़ी स्थूल और जड़वत् चलती है। अतिसार में नाड़ी ऐसी मन्दी हो जाती है, जैसी शीतकाल—जाड़े में जोंक हो जाती है।

नोट—नाड़ी देखने की तरकीबें और भिन्न-भिन्न रोगों और दोषों में नाड़ी की चालें कैसी होती हैं, यह विषय हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भाग में

ख़ूब बढ़ा कर लिखा है। पाठक वहाँ देख लें। यहाँ हमने केवल अतिसार और संग्रहणी की नाड़ी की चालें लिखी हैं; क्योंकि आमातिसार, अतिसार और संग्रहणी तीनों दस्तों के रोग हैं, और इनमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। पर ध्यान रहे, केवल नाड़ी-परीक्षा से रोग-परीक्षा हो नहीं सकती। देखिये, संग्रहणी और मन्दाग्नि में हाथ की नाड़ी मेढ़क के समान चलती है; विलम्बिका और विशूचिका में भी नाड़ी मेढ़क के समान चलती है। केवल मल, केवल मूत्र या दोनों ही के रुक जाने या इच्छा से रोक लेने पर भी नाड़ी मेढ़क की चाल से चलती है। फिर भी, और परीक्षाओं के साथ, नाड़ी-परीक्षा करना भी जरूरी है। इससे भी बड़ी मदद मिलती है।

□ डाक्टरी मत से अतिसार के लक्षण □

डायरिया के लक्षण

अंगरेजी में अतिसार को 'डायरिया' (Diarrhoea) कहते हैं। एलोपैथी चिकित्सा में इसके चार भेद माने हैं:—(१) ब्लौस डायरिया*, (२) म्यूकस डायरिया, (३) सिरस डायरिया, (४) सिम्पेथेटिक डायरिया।

पहले में, पतले दस्त होते हैं, कुछ गाढ़ा और पीला मल निकलता है। दूसरे में, गाँठ लेकर गाढ़ा और पतला मल निकलता है। तीसरे में, पानी के समान पतले दस्त होते हैं। चौथे में, पतले और गाढ़े भिन्न-भिन्न रंगों के दस्त होते हैं।

साधारणतया इस रोग में दस्त होते हैं, क़य होती हैं, श्वास में दुर्गन्ध आती है, पेट फूल जाता है और उसमें पीड़ा होती है, शीत लगता है और कमज़ोरी हो जाती है। जीभ का रंग मैला-सा हो जाता है।

डायरिया के कारण

अत्यन्त गरम भोजन करना, मिर्च वग़ैरह तीक्ष्ण चीज़ खाना, उपवास के बाद गरम पदार्थ खाना, क़ायदे से आहार-विहार न करना, शोक और भय प्रभृति डायरिया या अतिसार की उत्पत्ति के कारण हैं।

बालकों को दाँत निकलते समय तथा गर्भवती और प्रसूता को भी यह रोग होता है।

अगर अतिसार रोगी, पथ्य पर ध्यान न देकर अपथ्य सेवन करता है, तो वह धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है। उसका चेहरा पीला हो जाता है; शरीर में

* इसी को वैद्यक में 'पक्वातिसार' कहते हैं।

सूजन आ जाती है; बेहोशी होने लगती है और जीभ सफ़ेद हो जाती है। इस दशा में रोगी को असाध्य समझना चाहिए।

नोट—दस्तों को शीघ्र ही न बन्द करना चाहिए। अगर एकदम पतले दस्त होते हों तो शीघ्र ही बन्द करने का उपाय करना चाहिए। चिकनी और देर में पचने वाली चीज़ें न खिलानी चाहिए।

डिसेन्ट्री के लक्षण

जिसे वैद्यक में 'प्रवाहिका' कहते हैं, उसे ही अंगरेजी में 'डिसेन्ट्री' (Dysentery) और हिक्मत में पेचिश कहते हैं। डाक्टरों ने इसके तीन दर्जे माने हैं।

पहले दर्जे में—म्यूकस मेम्ब्रेन परदे में, यानी बड़ी आँतों में सूजन हो जाती है; इसलिए मरोड़ी होकर पतले दस्त आते हैं।

दूसरे दर्जे में—खामेडस नामक परदे में ज़ख़्म हो जाते हैं; इसलिए उस समय आँव और ख़ून के दस्त आते हैं।

तीसरे दर्जे में—वही परदा स्याह और निर्बल हो जाता है, उस समय हरे-पीले वगैरः तरह-तरह के दस्त आते हैं।

इस रोग में—पेट में सूई चुभाने की-सी वेदना होती है, ज़रा-ज़रा सी देर में पाखाना जाने की इच्छा होती है, भूख बन्द हो जाती है, किसी क़दर प्यास लगती है, पेट पर अफारा आ जाता है और रोगी के शरीर से बदबू आती है। ये मुख्य लक्षण हैं।

यह रोग अगर दवा करने पर भी दिन-दिन बढ़ता ही जाय, तो असाध्य समझना चाहिए। पहले दर्जे में यह रोग सुखसाध्य रहता है, दूसरे में कष्टसाध्य और तीसरे में असाध्य हो जाता है।

डिसेन्ट्री के कारण

अत्यन्त गरमी, गरम और खुश्क पदार्थ, कच्चे फल, कच्चे अन्न और देर से पचने वाले पदार्थ खाना इस रोग के कारण हैं। मलेरिया से भी यह रोग पैदा होता है। जब यह रोग मलेरिया से होता है, तब यह घर-घर में फैल जाता है।

नोट—वैद्यक में 'कुटजावलेह' इसकी उत्तम दवा है। इसके सिवा और भी बहुत-सी दवाएँ हैं।

हिकमत से अतिसार का बयान

इसका हिकमत में, वैद्यक की तरह, बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन है। हम 'नौसिखिये वैद्यों की जानकारी के लिए चन्द खास-खास बातें लिखते हैं। जिसे वैद्यक

में 'अतिसार' कहते हैं, उसे हिकमत में 'इसहाल' और 'इतलाक़' कहते हैं। इस रोग में बार-बार दस्त आते हैं। इसके हम तीन विभाग करते हैं—

(१) साधारण, (२) इतलाक़ ख़ूनी, और (३) पेचिश।

साधारण इतलाक़—अतिसार में पतले दस्त आते हैं। इसे अपने वैद्यक के वातातिसार, पित्तातिसार और कफातिसार के अन्तर्गत समझना चहिए।

इतलाक़ ख़ूनी—इसे वैद्यक में रक्तातिसार कहते हैं। इसमें ख़ून के दस्त होते हैं, उनका रंग किसी क़दर लाल होता है। इसको 'इतलाक (अतिसार) जिगरी' भी कहते हैं। यह अतिसार कलेजे पे होता है। असल में, इसमें मांस के धोवन-जैसे दस्त आते हैं।

पेचिश को अपने यहाँ का आमातिसार या प्रवाहिका समझना चाहिए। इस रोग में आँतों में ज़ख़्म हो जाते हैं। ज़ख़्मों की वजह से मरोड़ी होकर, आँव या आँव और ख़ून के दस्त होते हैं; साथ ही नाभि में दर्द भी होता है। इसे बोलचाल की भाषा में 'पेचिश' कहते हैं; पर हकीम लोग 'ज़हीर' कहते हैं। यह रोग सादिक़ और क़ाबिज दो तरह का होता है।

☛ नोट—अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभि के नीचे दर्द हो, तो समझना चाहिए कि सुद्दा (गाँठ) है। रोग के पहले, कोई कच्चा अन्न या कड़ी चीज़ खाने या खुश्की से अन्न की नाली में सुद्दा हो जाता है। ऐसी दशा में, गाय का दूध, चीनी मिला कर, दिन में ३-४ वार पिलाना चाहिए। अगर बार-बार हाजत हो, पर दस्त न हो तो, हुकना* या बस्ति करनी चाहिए।

जिसमें अनाज के दाने अथवा ईसबगोल-जैसी कोई चीज़ खाई जाय और वैसा ही मल निकले, उसे 'सादिक़' कहते हैं। जिसमें अनाज के दाने मल के साथ न निकलें, उसे 'क़ाबिज' कहते हैं।

सादिक़ ज़हीर में दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहिए; किन्तु क़ाबिज़ ज़हीर में, पहले ही, मल रोकने वाली दवा देना खतरे से ख़ाली नहीं। इसमें संग्राहक या क़ाबिज़ दवा देने से सुद्दे (गाँठ) पड़ने और दर्द होने का डर है। वैद्यक में भी, आमातिसार में मलरोधक—मल रोकने वाली दवा देना मना है।

एक यूनानी ग्रन्थ 'मीज़ान तिब्ब' में लिखा है—मेदे में विकार होने, जिगर में ख़राबी पहुँचने और आँतों में गड़बड़ी होने से कितने ही प्रकार से दस्त होते हैं। हम उन सबका सविस्तार वर्णन करें, तो एक और पोथा हो जायगा, इसलिए

* हुकना=गुदा में दवा की पिचकारी लगाना।

हम अपने नौसिखिये वैद्य और गृहस्थ भाइयों की जानकारी के लिए चन्द ज़रूरी बातें लिखते हैं । इन बातों के जानने से, उन्हें रोग-परीक्षा और चिकित्सा में कुछ-न-कुछ मदद ज़रूर मिलेगी ।

मेदे की ख़राबी से दस्त

(१) अगर नजला गिरने से दस्त होते हैं, तो वह सोने के बाद होते हैं । इस दशा में, दस्त बन्द न करके, मवाद निकालना चाहिए और साथ ही नजला मिटाने और भेजे (मस्तिष्क) को पुष्ट करने के उपाय करने चाहिए ।

(२) अगर खाने-पीने की गड़बड़ी से दस्त हों तो हल्का और कम खाना चाहिए । साथ ही पचाव का भी उपाय करना चाहिए ।

(३) अगर रगों में मवाद होने से दस्त आयेंगे, तो दस्त तो बहुत आयेंगे, पर शरीर मोटा-ताज़ा ही रहेगा—दुबला न होगा । इस दशा में फ़स्द खोलना, बदन मलवाना, पसीने निकालना और लंघन कराना अच्छा है ।

(४) अगर जिगर की कमज़ोरी से सफ़ेद या हरे दस्त हों, तो जिगर और आमाशय को पुष्ट करने वाला पथ्य और दवा देनी चाहिए ।

☛ नोट—इस हालत में 'जवारिश मस्तगी' अच्छी हैं ।

जिगर की ख़राबी से ६ प्रकार के दस्त होते हैं । वे जिगर का फोड़ा फूटने, जिगर के कमज़ोर होने, ख़ून के अधिक होने, जिगर पर गरमी पहुँचने और जिगर में ख़ून के जल जाने प्रभृति कारणों से होते हैं । उनमें से किसी में पीप आती है, किसी में मांस के धोवन जैसे दस्त आते हैं, किसी में ख़ून के दस्त और किसी में गाढ़ी कीच-जैसे दस्त आते हैं ।

☛ नोट—अगर जिगरी दस्त मांस के धोवन-जैसे होते हों, तो बीजों समेत मुनक्के देना अच्छा है ।

अगर ख़ून की अधिकता से दस्त होते हों, तो जब तक कमज़ोरी न बढ़े, दस्त बन्द न करने चाहिए । आरम्भ में फ़स्द खोल कर थोड़ा-थोड़ा ख़ून निकलना और हाथ-पैर तथा छातियों को कस कर बाँध देना उचित है । अगर दस्त बन्द करने की ज़रूरत हो तो कुर्स, कहरुआ और कुलफे के बीजों का शीरा, बारतंग के पानी से बना कर, देना चाहिए । भोजन हल्का और थोड़ा देना चाहिए ।

अगर दस्त सफरावी या पित्त के होंगे, तो जिगर पर गरमी होगी । उस दशा में बिना मवाद निकाले, दस्त बन्द करने न चाहिए ।

अगर जिगर में ख़ून या और किसी मवाद के जल जाने से दस्त हों तो सफ़ेद चन्दन, अर्क़-गुलाब में घिस कर, जिगर पर लगाना चाहिए और दाहिने हाथ की फ़स्द असीलम खोलनी चाहिए।

अगर दस्त गाढ़े कीच-से हों, तो समझना चाहिए कि या तो जिगर का फोड़ा फूटा है या जिगर का सुद्दा खुल गया है, अथवा जिगर में मवाद जल गया है। इस दशा में भी, जब तक कमजोरी न बढ़े, दस्त बन्द न करने चाहिए।

जिगर और मेदे या आमाशय के दस्तों का अन्तर

जिगरी दस्तों में बड़ी दुर्गन्ध आती है। खाली पेट में कम दस्त आते हैं, पीड़ा नहीं होती और रोगी हर दिन कमज़ोर होता जाता है; पर मेदे या आमाशय के दस्तों में ये लक्षण नहीं होते। लेकिन जब जिगर के दस्तों को बहुत दिन हो जाते हैं, तब मेदे से भी दस्त आने लगते हैं। उस समय मरोड़े और जिगर के चिह्न मिल जाते हैं। उस दशा में, जिगर और मेदा, दोनों का विचार करके इलाज करना चहिए।

आँतों से दस्तों में खून आना

आँतों से दस्तों में ख़ून दो तरह से आता है:—आँतों के छिल जाने से, और (२) ख़ून की अधिकता से, आँतों की किसी रग का मुँह खुल जाने से।

अगर आँतों के छिल जाने का कारण पित्त होगा, तो पित्त के दस्त आयेंगे और उनमें छिलके निकलेंगे। इसके बाद छिलकों-सहित ख़ून और आँव गिरेंगे। सारे लक्षण गरमी के पाये जायेंगे।

☛ नोट—इस हालत में खट्टी और क़ाबिज़ (ग्राही) औषधियाँ देनी चाहिए। अगर मवाद ज़्यादा आने लगे, तो उसे निकाल देना चाहिए। घाव बन्द करने को लुआब ईसबगोल, लुआब बीदाना या अन्य लसदार दवाएँ देनी चाहिए। कुलफे का शीरा, गिले अरमनी के साथ पिलाना और 'सफूफ मिकलियासा' देना बहुत ही मुफ़ीद है।

अगर बलग़म या कफ के दस्त होंगे, तो पहले कफ के दस्त आयेंगे। बहुधा जुक़ाम या नजले के पीछे ऐसा होता है।

☛ नोट—इस दशा में पहले कारण को रोकना चाहिए; यानी जुक़ाम या नजले का उपाय करना चाहिए और घाव भरने वाली दवायें देनी चाहिए; जैसे रिहाँ के बीज, वारतंग और वनतुलसी प्रभृति। काली हरड़ घी में भून कर, कूट-पीस कर छान लो और इसमें से ३ माशे बड़ी हरड़ का चूर्ण बराबर का सफेद कन्द या मिश्री मिला, रोगी को खिलाओ। यह नुसख़ा अच्छा है।

अगर यह रोग वात या बादी अथवा सौदा से होगा, तो दस्तों में मरोड़ी चलेगी। एवं बादी, रुधिर और छिलके निकलेंगे।

☛ नोट—इस दशा में पहले रोग के कारण को रोकना चाहिए। इसके बाद तिल्ली को पुष्ट करने और मवाद को नरम करने वाले बीज और चूर्ण देने उचित हैं।

अगर तिल्ली के सख़्त होने और मवाद या मल की ख़ुश्की से रोग होगा, तो पहले क़ब्ज़ होगा और मल कड़ा निकलेगा।

☛ नोट—इस दशा में मल को तर और नरम करने वाली दवाएँ देनी चाहिए, जैसे; ईसबगोल का लुआब और शबत बनफशा तथा रोगन बादाम वगैरह। अगर इतने पर भी मरोड़े न मिटें, तो क़ाबिज़ दवाएँ देनी चाहिए; परन्तु जब तक मवाद न निकल जाय, आँतें सूखे मल से रहित न हो जायँ, तब तक क़ाबिज यानी दस्त रोकने वाली दवा देनी न चाहिए।

अगर हरताल, नौसादर और चूना प्रभृति विषैली चीज़ों के खाने से मरोड़े हो, तो वमन करानी चाहिए एवं ताज़ा दूध और हरीरा पिलाना चाहिए।

अगर जुलाब लेने से मरोड़े हो जायँ, तो शीतल दवाएँ देनी चाहिए। माठे में लोहा बुझा कर वही माठा पिलाना चाहिए; अथवा चावलों के साथ लोहा-बुझा माठा पिलाना चाहिए।

अगर आँतों की रग के खुल-जाने से ख़ून के दस्त आते होंगे, तो उनमें मरोड़े, बवासीर और जिगर के दस्तों के लक्षण न पाये जायेंगे और पीड़ा भी न होगी। परन्तु पेचिश या आँव-ख़ून के, मरोड़ी के साथ लगने वाले, दस्तों में पीड़ा अवश्य होगी।

☛ नोट—अगर ख़ून ज़्यादा निकल जाय और रोगी में ताक़त हो, तो फ़स्द बासलीक खोलनी चाहिए। फिर बन्द करने के लिए कुर्स, कहरुआ प्रभृति दवाएँ देनी चाहिए। पौने दो माशे—शर्बत हुब्बुल्लास या शर्बत अन्जवार के साथ देना सबसे अच्छा है। गिले अरमनी, झाऊ और अनार के छिलके—सबको बराबर-बराबर लेकर कूट-छान कर गोलियाँ बना लो। इनमें से सात माशे गोलियाँ या चूर्ण खाना इस रोग में अच्छा है। इसके सिवा पेट पर बारे लगाना भी अच्छा है। जहाँ तक हो सके, इस रोग में अफ़ीम न देनी चाहिए।

आँतों से पीव आना

जब आँतों में मरोड़ से घाव पड़ जाते हैं या पक कर सूजन फूट जाती है, तब आँतों से गुदा द्वारा पीव आने लगती है। ऐसा रोग होने से पहले पेचिश या सूजन होती है।

एक प्रकार के दस्त और होते हैं। उनमें कभी आँव आता है और कभी आँवों के साथ ख़ून भी आता है। इसको ज़हीर क़ाबिज़ कहते हैं। इस रोग में ईसबगोल आदि के पिलाने से आँव नहीं आते।

☞ **नोट**—इस रोग में मल या मवाद को नर्म करने वाली दवाएँ खाने और हुकने के काम में लानी चाहिए। इस रोग में गरम पानी बहुत लाभदायक साबित हुआ है। क़ाबिज़ दवाएँ देने से इस रोग में रोगी के मरने का भय रहता है। इस रोग में हुकना और शाफा बहुत लाभदायक है।

अगर नीचे की आँत में, वरम—सूजन से यह रोग होता है, तो उस जगह बोझ सा मालूम होता है। इसमें कभी-कभी तप-ज्वर होता है और पेशाब कठिनाई से होता है।

☞ **नोट**—इस रोग में फ़स्द खोलना, कमर के नीचे पछने लगाना, थोड़ा खाना और शीतल दवाएँ लेना अच्छा है; क्योंकि इससे ख़ून की गरमी नष्ट होती है।

अगर मवाद का गिरना बन्द हो जाय, तो खैरू, मेथी, बनफशा, बाबूना और करम-कल्ले के पत्ते—इनको औटा कर, पेट और गुदा को धारना चाहिए। अगर वमन हो सके, तो बहुत ही अच्छा हो।

अगर गुदा में बहुत ही ज़्यादा सर्दी पहुँचने से यह रोग हो, तो उसे सेकना या गरम जल से धारना चाहिये अथवा ईंट को गरम करके उस पर बैठना चाहिये और सात माशे हालों भून कर, निहार पेट—खाली पेट में फाँकने चाहिए।

अगर सवारी या किसी कड़ी चीज़ पर बैठने से यह रोग हो, तो 'रोगन मोम' मलना चाहिए।

अगर खाली पेट में खटाई खाने से यह रोग हो गया हो, तो "मिश्री का शर्बत" पिलाना चाहिए।

□ अतिसार में पथ्यापथ्य □

अतिसार में अपथ्य

अतिसार-रोगी को स्नान, नदी में घुसना, तेल की मालिश, भारी और चिकने भोजन, कसरत और अग्नि का सन्ताप—इन सब को छोड़ देना चाहिए।

अतिसार-रोगी को पसीना नहीं निकलवाना चाहिए, सुरमा प्रभृति न आँजना चाहिए, बहुत पानी न पीना चाहिए, स्नान न करना चाहिये, स्त्री-प्रसंग न करना चाहिए, रात में जागरण न करना चाहिए, हुक्का प्रभृति न पीना चाहिए, नस्य न

सूँघनी चाहिए, तेल की मालिश न करानी चाहिए, मल-मूत्र आदि वेगों को न रोकना चाहिए, रूखे पदार्थ और अपनी आत्मा के प्रतिकूल या विरुद्ध भोजन से बचना चाहिए। इनके सिवा निम्नलिखित पदार्थ भी अतिसार-रोगी को अपथ्य हैं- गेहूँ, उड़द, जौ, बथुआ, मकोय, चौला की फली, कन्दों के साग, शहद, सहँजना, आम, सुपारी, काशीफल या पेठा, तूम्बी, बेर, भारी अन्न, भारी जल, पान, ईख, गुड़, मदिरा, पोई का साग, दाख, लहसुन, आमला, दूषित जल, दही का तोड़, बासी पानी, नारियल, स्नेहन कर्म, कस्तूरी, पत्तों के साग—सूआ-पालक-मेथी वगैरः, क्षार जवाखार-सज्जीखार आदि, दस्तावर पदार्थ, ककड़ी, खीरा, नमकीन और खट्टे पदार्थ एवं क्रोध। अतिसार-रोगी को इन सबसे परहेज करना मुनासिब है।

☛ नोट—यों तो अपथ्य सेवन सभी रोगों में हानिकारक होता है; लेकिन और रोगों में कुपथ्य से कभी-कभी हानि कम होती या देर से होती है। पर अतिसार में, इधर कुपथ्य सेवन किया और उधर तकलीफ बढ़ी, ऐसा होता है। इसलिए अतिसार में अपथ्य से खूब बचना चाहिए।

अतिसार में पथ्य

वमन, लंघन, निद्रा, पुराने साँठी चावल, चावलों का यूष, खीलों का माँड़, मसूर का रस, अरहर की दाल का रस, ख़रगोश, लवा, हिरन और सफ़ेद तीतर का मांस-रस, सब तरह की छोटी मछलियाँ, तेल, बकरी या गाय का, घी, दूध, दही और माठा तथा दही या दूध से निकाला हुआ मक्खन, नये केले का फल और फूल, शहद, जामुन, गजपीपर, अदरख, सोंठ, खटाई, कैथ, बेलगिरी, खट्टा और मीठा अनार, ताड़फल, पाढ़, चूका, भाँग, मँजीठ, जायफल, हाऊबेर, ज़ीरा, कुड़े की छाल, धनिया, बकायन, कषैले पदार्थों के रस, अग्नि-दीपक हलके अन्न और पीने के पदार्थ, नाभि से दो अंगुल नीचे और ऊपर अर्द्ध-चन्द्राकार दागना—अतिसार में पथ्य या हितकर हैं।

☛ नोट—पुराने अतिसार में दूध अमृत है एक भाग दूध और तीन भाग पानी मिला कर औटाना चाहिए। जब दूध-मात्र रह जाय, पिलाना चाहिए। वात-विबन्ध, मलरोध, शूलयुक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यास वाले को दूध पिलाना अच्छा है। हिकमत में भी लिखा है, अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभि के नीचे दर्द हो, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिला कर पिलाना चाहिए। वैद्य को नये-पुराने अतिसार का विचार करके दूध देना चाहिए। नये अतिसार में दूध हानिकारक है; पर बहुत पुराने में लाभदायक है।

अतिसार-रोग में जल

औटाने पर दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग या सौवाँ भाग रहा हुआ पानी, शीतल होने पर, पाचन, ग्राही, अग्निदीपक और दोषों का नाश करने वाला होता है। जल जितना ही औटाया जाता है, उतना ही वह ज्वर और अतिसार वाले के हक़ में अच्छा होता है।

अगर अतिसार वाले को दाह और प्यास ज़ोर से हों, तो धनिया और सुगन्धवाला को जल में औटाओ। आधा पानी रहने पर उतार लो। पीछे उसी जल को छान कर और शीतल करके रोगी को पिलाओ। इससे तृषा—प्यास और दाह-युक्त अतिसार में बड़ा लाभ होता है।

इसी तरह सुगन्धवाला और सोंठ को पानी में औटा कर, आधा जल रहने पर उतार लो और छान कर तथा शीतल करके पीने को दो।

इसी तरह नागरमोथा और पित्तपापड़े का जल औटा कर पिलाओ अथवा नागरमोथा और सुगन्धवाला जल में औटा कर, उस पानी को छान कर और शीतल करके पिलाओ।

□ अतिसारों में यवागू □

पक्वातिसार में

अरलू की छाल, प्रियंगू मुलहठी और अनार की कोंपल—इस सबको पीस कर और दही में डाल कर पतला यवागू बना कर अतिसार-वाले को दो। इससे सब तरह के पके हुए अतिसार निस्सन्देह नष्ट होते हैं।

वातातिसार में

कैथा, बेल, नोनियाँ (चाँगेरी), माठा और अनार—इनके द्वारा बनाई हुई पेया वातातिसार में हित है। पंचमूल के काढ़े से पकाई हुई पेया भी वातातिसार में हित है।

पित्तातिसार में

चन्दन, नागरमोथा, पटोलपत्र, सुगन्धवाला और सोंठ—इनके काढ़े से पकाई हुई पेया, इमली या माठे के साथ सेवन करने से पित्तातिसार में लाभ होता है। यह पेया पाचक और संग्राहक है। धनिया, सुगन्धबाला और पाठा—इनके काढ़े से सिद्ध किया हुआ भोजन भी पित्तातिसार में हितकारी है। साथ ही धनिया और सुगन्धवाला

के साथ औटाया हुआ जल देना चाहिए। पित्तातिसार में पहले लंघन कराने चाहिए, पीछे रोगी के मिज़ाज के माफिक यवागू, मण्ड या तर्पण देना चाहिए।

रक्तातिसार में

बकरी के एक सेर दूध में एक सेर पानी मिलाओ। पीछे उसमें सोंठ, कमल, सुगन्धवाला और पृष्ठपर्णी डाल कर पेया बनाओ। इस पेया से रक्तातिसार में बड़ा लाभ होता है।

कफातिसार में

दुर्गन्ध करञ्ज, त्रिकुटा, बेलगिरी, चीता, पाढ़, अनार और हींग—इनके काढ़े से यूष बना कर पीने से कफातिसार नष्ट होता है।

त्रिदोषातिसार में

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटाई, कटेरी, खिरेंटी, गोखरू, बेलगिरी, पाढ़, सोंठ और धनिया—इनके काढ़े द्वारा पेया बना कर सेवन करने से त्रिदोषातिसार अथवा सब अतिसारों में लाभ होता है।

वातपित्तातिसार में

लघुपञ्चमूल, पीपल और धनिया—इनके काढ़े से बनाया हुआ आहार वातपित्तातिसार में पथ्य है।

वातकफातिसार में

धनिया, सोंठ, नागरमोथा, सुगन्धबाला और बेलगिरी—इनका काढ़ा पाचन और दीपन है। इस काढ़े के योग से पकाया हुआ आहार वातकफातिसार में पथ्य है। धनिया और सोंठ के काढ़े में पकाया हुआ आहार भी वातकफातिसार वाले को हित है।

कफपित्तातिसार में

शालपर्णी, बेलगिरी, खिरेंटी और पृष्ठपर्णी—इन चारों के काढ़े से पेया बना कर और उसमें अनार का रस तथा इमली का रस डाल कर देने से कफपित्तातिसार में लाभ होता है।

भूख से हुए दस्त में

जिसे क्षुधा की व्याकुलता से दस्त होने लगें, उसको वातनाशक दीपन औषधियों के द्वारा बनाई हुई पेया देनी चाहिए।

अतिसार में लंघन और अन्यान्य पथ्य

कच्चे या आम के अतिसार में लंघन कराना सबसे अच्छा है पर लंघन अन्धाधुन्ध न कराने चाहिए। रोगी की सामर्थ्य हो, तो लंघन कराने चाहिए। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो उपवास या लंघन न करा कर, हल्का और शीघ्र-पाकी पथ्य देना चाहिए। अल्पाहार भी लंघन ही है। पानी में पकाया साबूदाना, अरारोट, बारली (Barley) पानी में घोला हुआ धान की खीलों का सत्तू और भात का माँड़—ये सब हल्के पथ्य हैं। इनके देने से हानि नहीं। यद्यपि अतिसार में पतली चीजें देना मना है, पर यवागू या उपरोक्त पदार्थों की मनाही नहीं है। आमातिसार या अपक्व अतिसार वाले को लंघन करा कर यवागू या यूष प्रभृति हल्के पदार्थ देने चाहिए। साथ ही आम को पचाने वाली अग्निदीपक तथा मल और अन्न को पचाने तथा मल को रोकने वाली दवा देनी चाहिए।

कफातिसार में लंघन और पाचन-क्रिया करना उचित है।

☛ नोट—हिंग्वाष्टक चूर्ण में हरड़ और सज्जीखार मिला कर फँकाना कफातिसार-रोगी को मुफ़ीद है। अथवा हरड़, दारुहल्दी, वच, मोथा, सोंठ और अतीस को १ पाव जल में औटा कर, १ छटाँक जल रहने पर रोगी को दो।

यद्यपि अतिसारों में सबसे अच्छा इलाज लंघन है, परन्तु पित्तातिसार और रक्तातिसार में लंघन कराना अनुचित और हानिकारक है। इन दो के सिवा और अतिसारों में, रोगी में सामर्थ्य होने की हालत में, लंघन कराना सर्वोत्तम चिकित्सा है।

☛ नोट—अगर लंघन कराने से प्यास बढ़ जाय, तो धनिया, सोंठ, मोथा और पित्तपापड़े या सुगन्धबाला को जल में औटा कर शीतल कर लो और छान कर वही जल थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। अथवा धनिया और सुगन्धबाला—इन दो को ही जल में औटा कर पीने को दो। इस जल से प्यास, दाह और अतिसार तीनों शान्त हो जाते हैं।

पक्वातिसार में पुराने बढ़िया चावलों का भात, मसूर की दाल, केले की तरकारी, परवल का साग, धनिया, सफ़ेद ज़ीरा, हल्दी और सेंधानोन डाल कर दो, ज़रा-सा चूने का पानी डाल कर दूध देना भी अच्छा है।

बहुत ही पुराने अतिसार में केवल दूध देना ही अच्छा है। अगर पुराने अतिसार वाला चाहे तो उसे बेल का मुरब्बा, भुना हुआ कच्चा बेल, अनार, सिंघाड़े और कसेरू देना हितकारी है। इन चीजों से बल बढ़ता, तृप्ति होती और रोग भी

भी नष्ट होता है। पुराने अतिसार-रोगी को ज्वर न हो, तो दही-भात भी दे सकते हैं। पेचिश को तो, दही-भात और मिश्री का भोजन ही, बहुधा आराम कर देता है। पर जो पथ्य दो, वह दाह न करने वाला, हल्का और थोड़ा दो।

रक्तातिसार में बकरी का दूध बहुत ही लाभदायक है।

□ अतिसार की चिकित्सा में चिकित्सक के ध्यान देने योग्य बातें □

(१) अतिसार आम है या पक्व है; यानी आमातिसार है या पक्वातिसार है, इस बात का विचार किये बिना अतिसार की चिकित्सा हो नहीं सकती। अतः सभी अतिसारों में पहले इस बात का निश्चय करना चाहिए कि अतिसार आम है या पक्व है; अर्थात् कच्चा है या पक्का।

☛ नोट—अगर जल में डालने से मल डूब जाय और फटा हुआ-सा हो, तो समझना चाहिए कि अतिसार आम—कच्चा है; पक्का नहीं। अगर जल में डालने से मल न डूबे, फटा हुआ-सा और बदबूदार न हो तथा रोगी का शरीर हलका हो, तो समझना चाहिए कि अतिसार पक गया।

(२) आमातिसार वाले को शीघ्र ही दस्त बन्द करने वाली—ग्राही—औषधि न देनी चाहिए; क्योंकि बिना समय हुए, अपक्व या कच्चे मल को रोक देने से दण्डक, अलसक, अफारा, संग्रहणी, बवासीर, भगन्दर, सूजन, पीलिया, तिल्ली, गोला, प्रमेह, उदर-रोग और ज्वरादि अनेक विकार हो जाते हैं।

☛ नोट—यदि बालक और बूढ़े को आम-अतिसार हुआ हो, रोगी वात-पित्त प्रकृति वाले, धातुक्षीणता वाले, कमज़ोर अनेक दोषों से युक्त हों और उनके शरीरों से ढेर मल निकल चुका हो—तो ऐसे रोगियों को, आम अतिसार होने पर भी, मल रोकने वाली—ग्राही—औषधि देकर, दस्त बन्द कर देने चाहिए; क्योंकि ऐसे रोगी आम के पचाने वाली दवा देने से मर जाते हैं। वजह यह है, कि पाचक औषधि से और भी दस्त आते हैं और रोगी कमज़ोर होकर मर जाता है।

(३) बलवान अतिसार में रोगी को लंघनों के सिवा और दवा न देनी चाहिए; क्योंकि लंघनों से दोष शान्त होते और पचते हैं।

☛ नोट—अगर एक ही समय में 'ज्वर' और 'अतिसार' दोनों पैदा हों, तो उस रोग को घोर 'ज्वरातिसार' कहते हैं। यह रोग बड़ी कठिनाई से आराम होता है। इस ज्वरातिसार में लंघन न कराने चाहिए। 'हारीत' ने कहा है—

न पित्तेन विना सोऽपि जायते शृणु पुत्रका ।
तस्य नो लंघनं प्रोक्तं ज्वरे चैवातिसारके ॥

हे पुत्र ! सुन, बिना पित्त के ज्वरातिसार नहीं होता, इस वास्ते 'ज्वरातिसार' में लंघन कराना मना है।

(४) पूर्व रूप की अवस्था में प्रायः सभी अतिसार आम—कच्चे या अपक्व होते हैं; इसलिए पूर्व रूप में अथवा अतिसार के आरम्भ में लंघन कराना ही सर्वश्रेठ उपाय है। लंघन हो चुकने पर, हलका और पतला भोजन देना चाहिए। 'सुश्रुत' पाचन औषधियों के योग से बना हुई 'यवागू' देने की आज्ञा देते हैं।

☛ नोट—पीछे के पृष्ठों में, हम अतिसार-रोगियों के देने योग्य 'यवागू' लिख आये हैं। अगर पूर्व रूप की अवस्था में, आम अतिसार हो और साथ ही शूल और अफारा भी हो, तो रोगी को पीपल और सेंधानोन जल में मिला कर पिलाना और वमन करानी चाहिए तथा लंघन आदि से उपचार करना चाहिए। वमन के बाद, हलके भोजन—षड्यूष और यवागू में पिप्पल्यादि पाचन द्रव्यों को मिला देना चाहिए। अगर इस तरकीब से आम न शान्त हो, यानी न पके, तो, 'हरिद्रादिक' या 'वचादिक' क्वाथ पिलाना चाहिए।

(५) जिसको शूल के साथ, बहुत बार, थोड़ा-थोड़ा दस्त होता हो, या दोष इकट्ठे हो रहे हों, तो हरड़ देकर उसका मल निकाल देना चाहिए। 'चरक' में लिखा है :—

कृच्छ्रं वाव्हतान्दद्यादभयां संप्रवर्त्तिनीम् ।
तया प्रवाहिते दोषे प्रशाम्यत्युदराभयः ॥

स्वयं निकलते हुए मल की पहिले उपेक्षा कर देनी चाहिए। आमातिसार में दस्त बन्द करने वाली दवा न देनी चाहिए; क्योंकि ऐसा करने से दण्डक, अलसक प्रभृति अनेक रोग होने का खटका रहता है। अगर मल कष्ट से निकलता हो, तो अन्यान्य दस्तावर दवाओं की अपेक्षा हरड़ देना अच्छा है। इसके देने से सब दोष बह जाते हैं और पेट का रोग अच्छा होता है। हरड़ और पीपल दोनों को पानी में पीस, निवाया कर, पिलाने से भी दूषित मल निकल जाता है।

☛ नोट—अगर रोगी को अत्यन्त पतले और बहुत से दस्त होते हों तो आरम्भ में उसे कय करानी चाहिए और इसके बाद लंघन और पाचन से काम लेना चाहिए।

(६) जिस रोगी की अग्नि दीप्त हो और उसे वेदना—पीड़ा रहित, बहुत दिनों का, अनेक रंगों वाला पका हुआ अतिसार हो, उसे 'पुटपाक' देकर आराम करना चाहिए। ऐसे अतिसार में 'पुटपाक' खूब चमत्कार दिखाता है।

☛ नोट—'पुटपाक' किसे कहते हैं और वह कैसे बनता है, इस बात को हमारे अनेक पाठक न जानते होंगे, इसलिए हम पुटपाक की विधि बतलाये देते हैं:—रोग-नाशक ताज़ा दवा ला कर, सिल पर रख कर पीस लो। पीछे गोला-सा बना, उस पर बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर, धागों से कस दो। इसके बाद, उस गोले पर कपड़ा लपेट, उस पर दो अंगुल मिट्टी चढ़ा दो। शेष में, आरने या जंगली कण्डे सुलगा कर, आग में उस कपड़-मिट्टी किये गोले को रख कर पका लो। जब वह भुरते की तरह पक-पक कर लाल हो जाय, तब निकाल कर शीतल कर लो। शीतल होने पर मिट्टी अलग कर गोले को एक रेजी कपड़े में रख, ज़ोर-ज़ोर से मल और दबा कर रस निकाल लो। इसी को 'पुटपाक रस' कहते हैं। इस रस की मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक है। इसमें शहद १० माशे मिलाया जाता है। यदि चूर्ण या अर्क प्रभृति मिलाना हो, तो ६ माशे मिलाते हैं। हम अतिसार-नामक कई पुटपाक आगे लिखेंगे। पुटपाक के सम्बन्ध में हम पहले और दूसरे भागों में भी लिख चुके हैं।

(७) 'सुश्रुत' में लिखा है कि जिस रोगी की अपान-वायु बन्द हो—हवा न खुलती हो, दस्त न होते हों, रुक-रुक कर थोड़े-थोड़े होते हों, शूल—दर्द और मरोड़े चलते हों, रक्तपित्त और प्यास हो, उस रोगी को दूध पिलाना मुनासिब है। बहुत पुराने अतिसार में 'दूध' अमृत का काम करता है।

☛ नोट—तीन भाग पानी में एक भाग दूध मिला कर ख़ूब औटाना चाहिए। इस दूध के पिलाने से अतिसार-रोगी के शेष रहे दोष या तो निकल जाते हैं, या नष्ट हो जाते हैं। अतिसार में ऐसा दूध परम पथ्य समझा जाता है। वात-विबन्ध, मल-रोध, शूल-युक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यास वाले को यह दूध उत्तम है। हिकमत के ग्रन्थों में भी लिखा है—अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त होता है और नाभि के नीचे पीड़ा होती है, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिला कर पिलाना चाहिए। इस बात को भी याद रखना चाहिए, कि ऐसी हालत में खूब साफ अरण्डी का तेल पिलाने से लाभ होता है। एक पाव दूध में चार या पाँच तोले अरण्डी का तेल देना चाहिए।

(८) शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, खिरेंटी, गोखरू, बेल, पाठा, सोंठ और धनिया—इनके योग से बना हुआ आहार सब तरह के अति-

सारों में लाभदायक होता है। तिलों का कल्क और मूँग का यूष भी हितकारी होता है।

ज्वर और अतिसारों में 'यवागू' प्यास को शान्त करता, वस्ति—पेडू को साफ करता तथा हल्का और दीपन है।

☛ नोट—(क) कफ-रोग और सन्निपात-ज्वर के सिवा, और सभी रोगों में मूँग हितकारी है।

(ख) पेट की आँतों को दुरुस्त रखने के लिए मसूर अच्छी चीज़ है। जिनको कच्चे-पक्के दस्त होते हों, पेट फूला रहता हो, गुड़-गुड़ शब्द होता हो और बारम्बार दर्द होता हो, उनको मसूर की दाल सेवन करना हितकारी है।

(ग) शास्त्रों में शूल-रोगी को दो दलों के अन्न—जैसे मूँग आदि; क्षयरोगी को स्त्री-प्रसंग; अतिसार-रोगी को पतले और खट्टे पदार्थ और ज्वर-रोगी को सभी पदार्थ-त्यागने की आज्ञा है; फिर सुश्रुत वगैरः आचार्य अतिसार-रोगी को 'यवागू' क्यों दिलाते हैं, यह सवाल पैदा होता है। इसका उत्तर यह है, कि वहाँ पतले से मतलब 'घी-दूध' आदि से है; यवागू और यूष की मनाही नहीं है।

(९) अगर अतिसार या प्रवाहिका-रोग रूखेपन से पैदा हुए हों, तो स्निग्ध—चिकनी क्रिया करनी चाहिए; और अगर चिकनाई से हुए हों, तो रूखी क्रिया करनी चाहिये।

(१०) भय से पैदा हुए अतिसार में रोगी को धैर्य या तसल्ली देकर निर्भय करना चाहिए और शोक से पैदा हुए अतिसार में शोक-नाशक क्रिया करनी चाहिये।

(११) विष, बवासीर या कीड़ों से हुए अतिसार में दोनों का इलाज करना चाहिए; यानी विष के कारण से हुए अतिसार में, विष और अतिसार दोनों की शान्ति का उपाय करना चाहिये।

(१२) अगर अतिसार के साथ क़य, मूर्च्छा—बेहोशी और प्यास वगैरः उपद्रव हों, तो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, जिससे अतिसार और क़य वगैरः सभी आराम हों। विरोधी चिकित्सा न करनी चाहिये; यानी ऐसा इलाज न करना चाहिये, जिससे एक रोग घटे, तो दूसरा बढ़े।

(१३) अगर वातादिक दोष मिले हुए हों, तो ज्वर और अतिसार में पहले 'पित्त' का उपचार करना चाहिए। इनके सिवा और सब रोगों में 'वायु' का उपचार करना उचित है। कहा है :—

समवाये तु दोषाणां पूर्वं पित्तमुपाचरेत् ।
ज्वरे चैवातिसारे च सर्वत्रान्यत्र मारुतम् ।।

(१४) ज्वर और अतिसार में जो अलग-अलग दवाइयाँ कही गयी हैं, वे ज्वरातिसार में सेवन नहीं करानी चाहिये; क्योंकि ज्वर में कही दवाएँ अतिसार को बढ़ाती और अतिसार में कही हुई ज्वर को बढ़ाती हैं। क्योंकि ज्वर-नाशक दवाएँ मल का अनुलोमन करतीं और अतिसार-नाशक औषधियाँ मल को रोकती हैं; इसलिये 'ज्वरातिसार' में विशेष चिकित्सा से काम लेना चाहिये। ज्वरातिसार बिना पित्त के नहीं होता; अतः ज्वरातिसार-रोगी को लंघन न कराने चाहिए। ज्वरातिसार में भी शीघ्र ही मल को रोकने वाली दवा न देनी चाहिये। मल के स्वयं प्रवृत्त होने पर कुछ उपेक्षा करनी चाहिये; क्योंकि अतिसार के स्वयं निःशेष होने से उसके साथ ज्वर भी निःशेष हो जाता है।

(१५) पित्तातिसार में—निदान, उपशय और लक्षणों से—अगर आम का अनुबन्ध मालूम हो, तो बलानुसार लंघन और पाचन देना चाहिये। यदि रोगी को प्यास ज़ोर से लगती हो, तो मोथा, पित्तपापड़ा, ख़स की जड़, अनन्तमूल, लाल-चन्दन और नेत्रवाला—इनके साथ औटाया हुआ जल शीतल कर देना चाहिये।

पित्तातिसार रोगी को लंघन के बाद, भोजन के समय, खिरेंटी, नागबला, मुद्गपर्णी, शालपर्णी, भटकटैया, कटेरी, शतावर और गोखरू के काढ़े से यवागू अथवा मंड आदि बना कर देना चाहिये।

दीप्त अग्नि वाले प्राणी का पित्तातिसार बहुत जल्दी आराम होता है। ऐसे मौके पर बकरी का दूध देने से बल और वर्ण की वृद्धि होती है।

पित्तातिसार-रोगी बलवान हो, अग्नि दीप्त हो, और दोष ज्यादा हों, तो दूध के साथ जुलाब देना चाहिये। इससे फिर अतिसार नहीं होता।

(१६) अगर बहुत दिनों तक अतिसार रहने से गुदा कमज़ोर हो जाय, तो गुदा में कोई चिकनाई लगानी चाहिये। अगर कांच निकल आये, तो सेंक वग़ैरह से उसे ठीक कर देना चाहिये; अथवा तेल या घी की मालिश करके उसे भीतर घुसा देना चाहिये।

(१७) यद्यपि हम लिख आये हैं कि बिना पके और बढ़े हुए अतिसार को न रोकना चाहिये, तथापि इस बात को न भूलना चाहिये कि क्षीण, वृद्ध, गर्भवती और बालक के बढ़े हुए अतिसार को तत्काल रोक देना चाहिये, अर्थात् सब लोगों

के बिना पके—आम अतिसार को फौरन ही मत रोको; किन्तु बालक, वृद्ध, क्षीण, और गर्भवती के बढ़े हुए अतिसार को फौरन रोक दो। कहा है :—

न स्तम्भयेदतीसारमपक्वं वृद्धिमागतम्।
बिना क्षीणस्य वृद्धस्य गर्भिण्या बालकस्य च॥

(१८) रोगी की जीभ ज़रूर देखते रहो। जीभ से रोगी के आराम होने और न होने का पता लग जाता है।

☛ नोट—अगर जीभ पर मैला जमा हो, तो पाचन-शक्ति में गड़बड़ी समझो। अगर जीभ बड़ी मुश्किल से बाहर निकले, और रोगी के इचछानुसार भीतर न जा सके, तो समझो कि रोगी अत्यन्त निर्बल और दुखी है। अगर रोग का ज़ोर हो और उसमें जीभ काँपे, तो ख़तरा समझो। अगर हैज़ा, होजरी और फेफड़े के रोग में जीभ का रंग सीसा धातु के समान हो जाय, तो ख़राब अलामत समझो। अगर मुंह पक जाय और जीभ सीसे के रंग के समान हो जाय, तो रोगी की मृत्यु समझो। मृत्यु समय की जीभ खरदरी, झागदार, लकड़ी-जैसी कड़ी और गति-रहित हो जाती है। संक्रामक ज्वरों, माता, होजरी, आँतों के रोगों और बहुत तेज़ चढ़े बुखार में जीभ सूख जाती है। जीभ का कड़ा होना मौत की निशानी है। प्रत्येक रोग में जीभ सूख कर फिर तर होने लगे; तो समझो कि रोग आराम हो रहा है।

—:❖:—

सामान्य चिकित्सा

अतिसार की चिकित्सा पर सामान्य नियम

सबसे पहले, सभी तरह के अतिसारों में, आम और पक्व अतिसार की जाँच करके दवा तजवीज़ करनी चाहिये। अतिसार आम—कच्चा हो, तो मल रोकने वाली—ग्राही औषधि न देनी चाहिए। पीछे लिखे हुए नियमों पर ध्यान रख कर दवा देनी चाहिए।

□ आमातिसार-चिकित्सा □

• पथ्यादि क्वाथ •

(१) हरड़, दारुहल्दी, बच, नागरमोथा, सोंठ और अतीस—इनका काढ़ा आमातिसार को नष्ट करता है।

• पाठादि चूर्ण •

(२) पाढ़, हींग, अजमोद, वच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन सब को कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। पीछे इसको सेंधानोन डाल कर गरम जल से पियो। इस चूर्ण से पीड़ा-सहित आमातिसार नष्ट हो जाता है।

• हरीतक्यादि कल्क •

(३) हरड़, अतीस, हींग, कालानोन, वच और सेंधानोन—इन सबको एकत्र पीस कर लुगदी-सी बना लो। इस लुगदी को गरम जल के साथ पीने से आम पकता और अतिसार नष्ट हो जाता है। अगर इस नुसखे से आमातिसार शान्त न हो, तो फिर सैकड़ों योगों—नुसखों से भी नष्ट होना कठिन है। इसको 'हरीतक्यादि कल्क' कहते हैं। परीक्षित है।

• वत्सादि क्वाथ •

(४) इन्द्रजौ, अतीस, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धवाला और कचूर—इनका काढ़ा बहुत दिनों के आमातिसार तथा रुधिर-विकार और शूल को नष्ट करता है।

• शुण्ठी-पुटपाक •

(५) सोंठ को अरण्ड के रस में पीस कर गोला-सा बना लो। पीछे उस गोले पर, बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर, सूत से मजबूती के साथ कस दो। इसके बाद उस पर कपड़ा चढ़ा, दो अंगुल मिट्टी चढ़ा दो और धूप में सुखा लो। पीछे जंगली या आरने कण्डे जला कर, उनके अंगारों में उस गोले को रख कर, भुरते की तरह पका लो। जब वह गोला पक जाय, निकाल लो। शीतल होने पर, उसे फोड़ कर लुगदी को निकाल लो और मोटे गज़ी के कपड़े में रख कर रस निचोड़ लो; अथवा यों ही पीस कर सेवन करो। इससे आमातिसार और शूल नष्ट हो जाता है। यह पाचन और अत्यन्त दीपन है।

☛ नोट—पुटपाक-रस की मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक की है।

• धान्यादि पंचक क्वाथ •

(६) धनिया, सुगन्धवाला, बेलगिरी, नागरमोथा और सोंठ—इन पाँचों का काढ़ा आम, शूल और विबन्ध का नाश करता तथा पाचन और दीपन है।

☛ नोट—अतिसार नष्ट करने में यह क्वाथ बहुत ही उत्तम है। इसी के सम्बन्ध में रसिक-शिरोमणि, अद्वितीय विद्वान्, पण्डितवर लोलिम्बराज महोदय कहते हैं:—

अयि प्रिये प्रीतिभृतां मुरारौ किं बालकश्रीधनधान्यविश्वे ।
यस्याप्यतिसार रुजो न तस्य किं बालकश्रीधनधान्यविश्वे ।। *

हे प्यारी ! जो श्रीकृष्ण से प्रीति रखते हैं, उन्हें पुत्र, लक्ष्मी, धन, धान्य और संसारी जाल से क्या मतलब ? इसी तरह जिन्हें अतिसार रोग नहीं है, उन्हें नेत्र-बाला, वेलगिरी, नागरमोथा, धनिया और सोंठ से क्या प्रयोजन ? यानी जिन्हें अति-सार हो, वे इन्हें सेवन करें । इन औषधियों से अतिसार आराम होता है ।

• धान्यादि चतुष्क क्वाथ •

(७) धनिया, सुगन्धबाला, वेलगिरी और नागरमोथा—इन चारों का काढ़ा, पित्त की अधिकता में देने से खूब लाभ होता है । अगर ख़ूनी अतिसार हो और रुधिर का धर्म पित्त के समान हो, तो भी यही काढ़ा देना चाहिए ।

नोट—पित्तातिसार पर यह काढ़ा बहुत अच्छा है ।

□ गरीबी नुसखे □

(८) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हींग, बच, कालानोन और हरड़—इनका चूर्ण गरम जल के साथ लेने से आमातिसार नष्ट होता है ।

(९) बच, वेलगिरी, पीपल, सोंठ, पटोल-पत्र, मीठा कूट, अजवायन और बायविडंग— इन सबको एकत्र पीस कर, गरम जल के साथ पीने से आम नष्ट होता है ।

(१०) कच्ची और भुनी हुई सोंठ, अरण्ड के रस में पीस कर खाने से, आमातिसार मय शूल के नष्ट हो जाता है । इसी को पुटपाक की विधि से पका कर भी खाते हैं ।

नोट—सोंठ (शुण्ठी) के पुटपाक की विधि पृष्ठ २८ में लिखी है ।

□ पक्वातिसार-चिकित्सा □

• समंगादि चूर्ण •

(११) लजवन्ती—छुईमुई, धाय के फूल, मँजीठ और लोध—इन चारों के चूर्ण की एक मात्रा, शहद में मिला, चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से पक्वा-तिसार नष्ट होता है ।

---

* इस श्लोक को खूबी का मुलाहिज़ा फरमाइये । पहली पंक्ति में बालक=पुत्र । श्री=लक्ष्मी । धन=दौलत । धान्य=धान । विश्व=संसार या प्रपंचजाल । दूसरी लाइन में वही बालक=नेत्रबाला । श्री=बेलगिरी । धन=मोथा । धान्य=धनिया । विश्व=सोंठ ।

☛ नोट—तीन तोले साफ किये हुए पुराने चावलों को अधकचरा कर, पांच छटांक शीतल जल में, रात के समय, मिट्टी के बर्तन में भिगो दो। सवेरे मल-छान कर जल निकाल लो और चावल फेंक दो। यही 'चावलों का धोवन' या 'तंदुल-जल' है। जरूरत होने से, चावल को केवल एक घंटे तक भिगोने से भी यह जल तैयार हो जाता है।

• शाल्मली वेष्टकादि चूर्ण •

(१२) मोचरस, लोध, अनार के फल की छाल और अनार के वृक्ष की छाल—इन चारों का चूर्ण, शहद में मिला, चावलों के धोवन के साथ लेने से पक्वातिसार नष्ट होता है।

• आम्रास्थादि चूर्ण •

(१३) आम की गुठली की मींगी, लोध, बेलगिरी और फूलप्रियंगू—इन चारों का चूर्ण, शहद में मिला, चावलों के धोवन के साथ लेने से पक्वातिसार नष्ट होता है।

(१) गंगाधर चूर्ण •

(१४) मोचरस, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, सोनापाठ और धाय के फूल—इन छह दवाओं को कूट-पीस, चूर्ण बना, मथित * के साथ लेने से अत्यन्त वेग से होने वाले दस्त भी बन्द हो जाते हैं।

(२) गंगाधर चूर्ण (दूसरा) •

(१५) नागरमोथा, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धाय के फूल और लोध—इन छह दवाओं का चूर्ण, गुड़ में मिला, मथित*, नामक माठे के साथ सेवन करने से गंगा के समान वेग वाला अतिसार भी आराम हो जाता है।

(३) वृद्ध गंगाधर चूर्ण •

(१६) नागरमोथा, सोनापाठा, सोंठ, धाय के फूल, लोध, सुगन्धवाला, बेलगिरी, मोचरस, पाढ़, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, आम की गुठली, लजवन्ती और अतीस—इन चौदह दवाओं का चूर्ण, शहद में मिला, चावलों के धोवन के साथ लेने से अतिसार, प्रवाहिका और संग्रहणी—ये तत्काल आराम होते हैं। यह चूर्ण गंगा के समान बहते हुए दस्तों को भी रोक देता है।

---

* जो दही कपड़े में छान लिया जाता है और जिसमें जल नहीं मिलाया जाता, उसे 'मथित' कहते हैं।

(४) गंगाधर क्वाथ •

(१७) जल-चौलाई; अनार के पत्ते, जामुन के पत्ते, सिंघाड़े के पत्ते, सुगन्ध-बाला, नागरमोथा और सोंठ—इन सबका काढ़ा पीने से गंगा के समान बहता हुआ अतिसार भी आराम हो जाता है।

• अंकोल कल्क •

(१८) अंकोल की जड़ पीस कर, चावलों के जल और शहद के साथ पीने से अतिसार का वेग उसी तरह आराम हो जाता है, जिस तरह पुल से जल का प्रवाह रुक जाता है।

• कुटजाष्टकावलेह •

(१९) कौरैया की जड़ की छाल ताजा ५ सेर ला कर, १६ सेर जल में काढ़ा करो। जब दो सेर जल रह जाय, तब छान कर फिर आग पर चढ़ा दो। जब पानी पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उसमें पाढ़, सेमर का गोंद, धाय के फूल, नागर-मोथा, अतीस, लजवन्ती और नरम बेलगिरी—इन सबका चार-चार तोले चूर्ण डाल कर अवलेह बना लो।

सेवन-विधि— इस अवलेह को पानी, गाय के दूध या बकरी के दूध अथवा चावल के माँड़ के साथ देने से अतिसार, संग्रहणी, रक्त-प्रदर, रक्ता-पित्त और ख़ूनी बवासीर—ये रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—औषधियों के काढ़े या फाँट को छान कर, फिर आग पर औटाने से जो रस तैयार होता है, उसे 'अवलेह' या 'लेह' कहते हैं। अवलेह की मात्रा ४ तोले की है; पर आजकल वैसे बलवान आदमी कम हैं। अतः ६ माशे से २ तोले तक की मात्रा ठीक है। इसमें अगर खाँड़ डालनी हो, तो चूर्ण से चौगुनी; और अगर गुड़ मिलाना हो, तो दूना डालना चाहिए। दूध, ईख का रस, पंचमूल के काढ़े का यूष और अड़ूसे का काढ़ा—ये अवलेह के अनुपान हैं। जैसा रोग हो, वैसा ही अनु-पान देना उचित है।

अवलेह ठीक पका या नहीं, इसकी पहचान यही है कि उसमें तांतू-से छूटते हैं और पानी में डालने से डूब जाता है; अँगुलियों से दबाने पर कड़ा और चिकना मालूम होता है। इसमें एक और ही तरह की अपूर्व गन्ध, वर्ण और स्वाद हो जाता है।

• आमलों की आलबाल •

(२०) रोगी को लिटा कर, आमलों को जल के साथ सिल पर पीस कर लुगदी-सी बना लो। उस लुगदी से रोगी की नाभि के चारों ओर थामला या घेरा-

सा बना लो। पीछे उस घेरे में तत्काल अदरख का रस भर दो। इस उपाय से नदी के समान दुर्जय—कठिनाई से जीतने लायक अतिसार भी आराम हो जाता है।

• कुटज पुटपाक •

(२१) कोड़ों की न खाई कच्ची और मोटी कुरैया की आधा पाव ताज़ा छाल ले, सिल पर रख, चावलों के धोवन में घोट कर गोला-सा बना लो। फिर उस गोले पर जामुन के पत्ते लपेट कर उसे डोरों से कस दो। इसके बाद उस पर गेहूँ का साना हुआ आटा लपेट दो और इसके भी बाद उस पर दो अंगुल मोटी मिट्टी की तह चढ़ा दो और आरने या जंगली कण्डों की आग तैयार कर, उसी में उस गोले को रख कर, भुरते की तरह पकाओ। जब पक कर गोला कुछ सुर्ख़ हो जाय (बहुत लाल न हो), आग से निकाल, शीतल कर, गोले को फोड़ कर, मिट्टी और आटा वगैरः दूर करके, उसे मोटे गज़ी के कपड़े में रख, ज़ोर से निचोड़ लो। यह 'कुटज पुटपाक' सब तरह के अतिसारों पर प्रधान औषधि है। हमारा अनेक बार का परीक्षित है। १०० में ६० को आराम करता है। मात्रा—जवान को ६ माशे से २ तोले तक की है। एक मात्रा में थोड़ा-सा 'शहद' डाल कर पीना चाहिए।

• बेल का पुटपाक •

(२२) ऊपर की तरह, आधा पाव बेलगिरी लेकर, चावलों के धोवन में कूट-पीस, गोला बना, बड़ या जामुन के पत्ते लपेट, डोरे से बाँध, दो अंगुल मिट्टी चढ़ा, धूप में सुखा लो और ऊपर की विधि से आरने कण्डों में पका लो। पीछे आग से निकाल, मिट्टी अलग कर कपड़े में रस निचोड़ लो। इसकी मात्रा जवान को २ से ३ तोले तक है। एक मात्रा में चार या पाँच माशे 'मोचरस' मिला कर, दोनों समय सवेरे-शाम सेवन करने से दुःसाध्य अतिसार भी आराम हो जाते हैं।

• वत्सकावलेह •

(२३) पहले ताजा उत्तम कुड़े की छाल साढ़े बारह सेर लाकर, चौंसठ सेर जल में क़लईदार कड़ाही में औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। फोक को फेंक दो और छने हुए जल को फिर उसी कड़ाही में चढ़ा, औटाओ। औटाते समय उसमें नागरमोथा, जवाखार, बिड़नोन, इन्द्रजौ, संचर नोन, सेंधानोन, धाय के फूल और पीपल—इन आठों में से प्रत्येक के दो-दो तोले पिसे-छने चूर्ण को मिला दो। जब गाढ़ा हो कर कलछी के लगने लगे, उतार लो और शीतल होने पर 'शहद' मिला कर रख दो। इसकी मात्रा जवान के लिये १ तोले की है। इसके

सेवन से दुःसाध्य अतिसार, मरोड़ी, ववासीर, संग्रहणी, भगन्दर, श्वास, प्रमेह और वमन प्रभृति रोग नष्ट हो जाते हैं। यह भी परीक्षित है।

• दाड़िम पुटपाक •

(२४) साबत अनार पर बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर डोरे से बाँध दो और ऊपर से दो-दो अंगुल मिट्टी लपेट कर सुखा लो। पीछे जंगली कण्डों की आग में उसे पकाओ। जब पक जाय, निकाल कर शीतल कर लो और मिट्टी दूर कर, उसको कपड़े में रख, ज़ोर से दबा कर रस निचोड़ लो। इस रस में 'शहद' मिला कर पीने से सब तरह के अतिसार, आम के दस्त, ख़ून के दस्त, पतले दस्त और वदबूदार दस्त—सभी आराम हो जाते हैं। मात्रा २ से ३ तोले तक है। शहद ६ माशे से १० माशे तक मिलाना चाहिए।

• छिन्नादि क्वाथ •

(२५) गिलोय, पाठा, ख़स, बेलगिरी नागरमोथा, नेत्रबाला, सोंठ, पद्माख, लाल चन्दन, कुड़े की छाल, धनिया, चिरायता और अतीस—इन दवाओं का काढ़ा, शीतल करके पीने से ज्वर, प्यास, अरुचि, दाह, ग्लानि, उबकाई, मरोड़ी और सूजन-युक्त अतिसार आराम होता है।

☛ नोट —यह नुसख़ा परीक्षित है, पर हमने ऐसे-ऐसे रोगियों को ही दिया, जिनको अतिसार के सिवा ज्वर, सूजन और दाह प्रभृति उपद्रव भी थे।

• लौह-पर्पटी •

(२६) शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला और लोह-भस्म १ तोला तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धक को घोट कर कज्जली बनाओ। पीछे उसमें लोह-भस्म मिला दो और घोटो। इसके बाद उस घुटी हुई कज्जली को लोहे की छोटी-सी कड़ाही में डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब वह लेई-सी हो जाय, उसे गरम-गरम ही केले के पत्ते पर फैला दो और ऊपर से दूसरा केले का पत्ता रख कर दवा दो और गोबर से ढक दो। दो घण्टे बाद, गोबर और ऊपर का पत्ता हटा, पापड़ी-सी उठा लो। यही 'लौह-पर्पटी' है। मात्रा ४ चावल की है। धीरे-धीरे मात्रा एक रत्ती तक बढ़ा सकते हो। अनुपान—शीतल जल, या धनिया अथवा ज़ीरे का काढ़ा। समय—सवेरे-शाम। इससे संग्रहणी, अतिसार और मन्दाग्नि—ये रोग नष्ट होते हैं।

• स्वर्ण पर्पटी •

(२७) हिंगलू से निकाला पारा या शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोले, सोने के वर्क ३ माशे और लोह-भस्म ३ माशे ले लो। पहले पारे और सोने के वर्क़ों को घोटो। बाद में शुद्ध गन्धक मिला कर घोटो और अन्त में लौह-भस्म डाल कर घोटो। जब सब घुट जाय, लोहे की कड़ाही में घुटे हुए मसाले को रख कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब पतली चाशनी-सी हो जाय, केले के पत्ते पर फैला कर, ऊपर से दूसरा केले का पत्ता रख कर दबाओ और ऊपर के पत्ते पर गोबर रख दो। दो घण्टे के बाद उठा कर शीशी में भर लो। मात्रा-४ चावल से २ रत्ती तक। अनुपान—शहद। समय—सवेरे-शाम।

रोग-नाश—इस पर्पटी से भी अतिसार आराम होते हैं। पेट फूलना, कच्चे-पक्के दस्त होना और संग्रहणी—ये सभी नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

☞ नोट—यह हमारी आज़माई हुई नहीं। राजवैद्य श्रीमान् किशोरीदत्त जी शास्त्री, कानपुर की पुस्तक से लेकर हमारे एक वैद्य-मित्र ने आजमाई थी। आप कहते हैं कि इसके उत्तम होने में कोई संशय नहीं।

• दूसरी स्वर्ण-पर्पटी •

(२८) हिंगलू से निकाला पारा २ तोले, शुद्ध आमलासार गन्धक २ तोले और स्वर्ण-भस्म १॥ माशे ला कर रख लो।

पहले पारे और गन्धक को खरल में डाल कर घोटो और कज्जली बना लो। बाद में सोने की भस्म उसी में डाल कर घोटो। जब तीनों एक-दिल हो जायँ लोहे की बड़ी कटोरी या छोटी-सी कढ़ाही में उस घुटी कज्जली को रख कर, कोयलों की मन्दी-मन्दी आग पर चढ़ा दो। जब कज्जली लेई-सी पतली हो जाय, उसे पूरे केले के पत्ते पर रख कर, ऊपर से दूसरा केले का पत्ता रख, खूब दबा दो। पीछे उस पर गोबर रख दो। दो-तीन घण्टे बाद पापड़ी-सी को उठा कर शीशी में भर लो। इसके सेवन से अतिसार, संग्रहणी और क्षय-रोग अवश्य नष्ट हो जाते हैं। मात्रा—१ रत्ती से १ माशे तक। मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए। अगर रोगी निर्बल हो, तो चार चावल भर ही देना अच्छा होगा। अनुपान— शहद, दही या नागर-पान का रस। शहद के साथ दे कर हमने बहुत लाभ उठाया है।

☞ नोट—अगर स्वर्ण-भस्म न हो, तो उतने ही सोने के वर्क़ डालने से भी काम चल जायगा। यह 'स्वर्ण-पर्पटी' हमारी कितनी ही बार की आज़माई है। देश, काल और पात्र का विचार करके देने से यह शीघ्र ही अपना चमत्कार दिखाती है।

• कुटज-बटिका •

(२६) कौरैया की जड़ को धो कर छाल निकाल लो। पीछे आग पर उबाल कर उसका रस तैयार करो। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। छने हुए जल को फिर कढ़ाही में डाल, चूल्हे पर चढ़ाओ। जब रस गाढ़ा-सा हो जाय, तब उसमें नीचे लिखी हुई दवाएँ पीस कर मिला दो—सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जायफल, माजूफल, जावित्री, लौंग, वायविडङ्ग, मरोड़फली, नर्म बेल की गिरी और नागकेशर—सबको मिला कर चलाओ और झट उतार लो। बाद में चने-समान गोलियाँ बना लो। सेवन-विधि—अतिसार और संग्रहणी में ये गोलियाँ, छाछ में हींग मिला कर उसी से देनी चाहिए; अथवा मीठे दही, सोंठ के काढ़े या घी के साथ भी दी जा सकती हैं। छोटे बालकों को भी यह दवा बड़े काम की है। इन गोलियों से अतिसार, संग्रहणी, पांडु और जीर्णज्वर—ये आराम होते हैं। पांडुरोग में यह गोलियाँ गोमूत्र के साथ दी जा सकती हैं। परीक्षित हैं।

☛ नोट—कौरैया की छाल ५ सेर लेकर कूट लो और २५ सेर जल में औटाओ। जब सवा छह सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो। छने हुए काढ़े को फिर आग पर चढ़ा कर गाढ़ा करो। गाढ़ा होने पर, उसमें ऊपर लिखी हुई दवाओं का एक-एक तोला पिसा-छना चूर्ण मिला दो और चला कर उतार लो। पीछे गोलियाँ बना लो।

• जातीफलादि बटी •

(३०) जायफल ६ माशे, छुहारा ६ माशे और शोधी हुई अफीम ६ माशे—इन तीनों को खरल में डाल, पान के रस के साथ खूब घोटो। घुट जाने पर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। दिन भर में दो या तीन गोलियाँ माठे के साथ खाने से भयानक अतिसार भी, सात दिन में आराम हो जाता है। परीक्षित है।

• कर्पूरादि बटी •

(३१) शुद्ध कपूर, शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध अफ़ीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल—इन सबको ६-६ माशे ले कर, खरल में डाल, अदरख के रस के साथ घोटो। घुट जाने पर रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से सब तरह के अतिसार, रक्तातिसार, अधिक पतले दस्त, पुराने दस्त, मरोड़ी के दस्त, पेट में गुड़गुड़ होना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। मात्रा—१ या २ गोली। समय—सवेरे, शाम या जब उचित समझा जाय। परीक्षित हैं।

☛ नोट—ये गोलियाँ अनेक बार आज़माई हैं। अमीरों को ये गोलियाँ मुफ्त बांटनी चाहिए।

• चन्द्रकला बटी •

(३२) भुना सुहागा १ माशे, शुद्ध शिगरफ २ माशे और अफीम ४ माशे—इनको खरल में घोट कर गोलमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। अगर दस्त रात को अधिक होते हों, तो एक-एक गोली 'शहद' मिला कर खिलाओ। अगर दिन में ज्यादा दस्त होते हों, तो नीबू के रस में गोली खिलाओ। ऐसे दस्तों के लिये ये गोलियाँ परीक्षित हैं।

• विजयावलेह •

(३३) एक भाग भांग, एक भाग जायफल और दो भाग इन्द्रजौ—इन तीनों को कूट-पीस कर कपड़-छन कर, 'शहद' में मिला कर रख दो। इस अवलेह के चाटने से सब तरह के अतिसार नष्ट होते हैं।

• बिल्वादि चूर्ण •

(३४) बेलगिरी, मोचरस, लोध, धाय के फूल, आम की गुठली की मींगी और अतीस—इन छहों को बराबर-बराबर ले कर, चूर्ण बना कर, सेवन करने से समुद्र के वेग के समान दस्त भी बन्द हो जाते हैं। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। एक खूराक में दवा से आधी मिश्री मिला कर फांक जाना चाहिए और ऊपर से दो-एक घूंट जल पी लेना चाहिए। परीक्षित है।

☛ नोट—इन्हीं ६ दवाओं का अवलेह भी बनता है। एक मात्रा दवा 'शहद' में भी चाटी जा सकती है।

• अतिसार-गज-केशरी चूर्ण •

(३५) इन्द्रजौ, मोथा, धाय के फूल, कच्ची बेलगिरी, लोध, सोंठ और मोचरस—इन सातों को कूट-पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इसकी भी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। यह भी, दवा की मात्रा की आधी मिश्री मिला कर सेवन किया जाता है और ऊपर से दो-चार घूंट जल पीना होता है।

☛ नोट—यह नुसख़ा शास्त्रोक्त है। शास्त्रों में गुड़ और माठे के साथ सेवन करने की विधि लिखी है। यह भारी-से-भारी अतिसारों को आराम करता है। सैकड़ों बार का परीक्षित है।

• खदिरादि बटी •

(२७) कत्था, सोंठ, शुद्ध अफ़ीम, कालीमिर्च, जायफल और बबूल के पत्ते—इन सबको बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस लो। फिर बबूल की ताज़ा छाल ले कर उसका काढ़ा बना लो। खरल में ऊपर का पिसा हुआ मसाला डाल, बबूल की छाल के तैयार किये हुए काढ़े के साथ खूब घोट कर चने बराबर गोलियाँ बना लो। जवान आदमी एक बार में दो गोलियाँ तक जल के साथ खा सकता है। सवेरे, दोपहर और शाम को गोलियाँ सेवन करनी चाहिए। इनके सेवन से सब तरह के अतिसार, पेट फूल कर दस्त होना और दस्तों में दुर्गन्ध आना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

• अतिसारान्तक चूर्ण •

(३७) सौंफ, सोंठ, आम की गुठली की मींगी, सफ़ेद ज़ीरा भुना हुआ, अनार के फूल, ख़सख़स की डोडी—ये सब बराबर-बराबर ला कर कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्ण के वज़न से दूनी मिश्री पीस कर मिला दो। इस चूर्ण से सब तरह के अतिसार निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। जवान के लिए तीन माशे की मात्रा है। हर दो-दो घंटे पर एक-एक मात्रा फाँक कर, ऊपर से दो-चार घूंट ताज़ा जल पी लेना चाहिए।

☛ नोट—दवा के ऊपर उतना-सा जल पीना चाहिए, जितने से दवा गले से नीचे उतर जाय, क्योंकि अधिक जल पीना अतिसारों में मना है। रक्तातिसार और आम-खून के दस्तों में हमने इस नुसख़े की परीक्षा की है।

वैद्यक और यूनानी सर्व अतिसार-नाशक नुसख़े

□ परीक्षित ग़रीबी नुसख़े □

(३८) भाँगरे का रस दही के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं।

(३९) तालमखाने दही में मिला कर खाने से अतिसार आराम होता है। परीक्षित है।

(४०) रात के समय भाँग को भून कर 'शहद' में लेने से नींद आती और अतिसार, संग्रहणी तथा मन्दाग्नि नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(४१) कौरैया की छाल ला कर काढ़ा बनाओ। जब आठवाँ भाग जल रह रह जाय, उतार कर मल-छान लो और 'अतीस का चूर्ण' मिला कर पिलाओ। इससे सब तरह के अतिसार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४२) कौरैया की जड़ की छाल और अतीस, इन दोनों को कूट-पीस कर छान लो। इस चूर्ण को शहद के साथ देने से भी सब तरह के अतिसार नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(४३) रत्ती-भर अफ़ीम, बकरी के दूध में घोल कर पीने से अतिसार और अजीर्ण नष्ट होते हैं।

(४४) दशमूल के काढ़े में सोंठ मिला कर पीने से अतिसार, सूजन, संग्रहणी, खाँसी, अरुचि, कंठ-रोग और हृदय-रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—सरिवन, पिथवन, कटेरी, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, अरणी, अरलू (टेंटू), गम्भारी और पाड़री—यही दशमूल की दस दवाएँ है। पहले पाँच वृक्षों की जड़ों को 'लघुपंचमूल' और पिछले पाँचों की जड़ों को 'बृहत्पंचमूल' कहते हैं।

(४५) पाढ़ और आम के वृक्ष की भीतरी छाल को, गाय के दही में पीस कर पीने से अतिसार, पीड़ा और दाह तत्काल आराम होते हैं।

(४६) ठीकरे में ज़रा-सी अफ़ीम भून कर खाने से हर तरह का पक्वातिसार नष्ट होता है।

(४७) श्योनाक की छाल और सोंठ को, चावलों के जल के साथ सेवन करने से पक्वातिसार नष्ट हो जाता है।

(४८) आम की कोंपल और कैथे के गूदे को, चावलों के जल में पीस कर सेवन करने से पक्वातिसार नष्ट हो जाता है।

(४९) बबूल के पत्तों का रस पीने से सब तरह के दुस्तर और भयानक अतिसार आराम हो जाते हैं।

(५०) धतूरे के फलों का रस पीने से सब तरह के अतिसार नष्ट होते हैं।

(५१) भाँग को तवे पर भून कर, उसका चूर्ण, शहद के साथ रात के समय खाने से अतिसार, संग्रहणी, मंदाग्नि, और नींद न आने का रोग—ये सब नष्ट होते हैं। कई वार परीक्षा की है।

(५२) प्याज को कूट कर रस निकाल लेने और पीछे उसमें ज़रा-सी अफ़ीम मिला कर खाने से अतिसार में अवश्य लाभ होता है।

(५३) कुड़े या कौरैया की छाल का स्वरस पिलाने से अथवा इसी का रस, पुटपाक की विधि से निकाल कर, शहद मिला कर पीने से निश्चय ही अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५४) जायफल खाने से अतिसार आराम हो जाते देखा है। अगर अतिसार के साथ प्यास, वमन और नींद न आने का रोग हो, तो वह भी आराम हो जाता है।

☛ **नोट**—नींद न आती हो, तो ज़रा-सा जायफल घी में घिस कर पलकों पर लगा दो, फ़ौरन नींद आयेगी। परीक्षित है।

(५५) दो माशे जावित्री, दही की मलाई या गाय के दही के साथ, सात दिन तक लगातार खाने से भयानक अतिसार में भी लाभ होता है। आमातिसार में तो शीघ्र ही फायदा होता है परीक्षित है।

(५६) चार माशे मोचरस पीस कर और उसमें मिश्री मिला कर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५७) सेमर की ताजा छाल ला कर, उसे सिल पर पीस कर, कपड़े में छान कर, रस निचोड़ लो। इस रस के पीने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

☛ **नोट**—सेमर की छाल या जड़, जल के साथ घिस कर पिलाने से भी अतिसार नष्ट होता है। परीक्षित है।

(५८) अफ़ीम १ माशे और केसर १ माशे—दोनों को मिला कर १६ गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली शहद में मिला कर खाने से अतिसार और अजीर्ण दोनों में लाभ होता है।

(५९) अजमोद, मोचरस, सोंठ और धाय के फूल—इन चारों को कूट-पीस कपड़ छन कर, गाय के माठे के साथ सेवन करने से सब प्रकार के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

(६०) नागरमोथा, इन्द्रजौ, बेलगिरी, पठानी लोध, मोचरस और धाय के फूल—इनका चूर्ण गुड़ और गाय के माठे के साथ लेने से सब प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६१) अनारदाना १६ तोले, मिश्री १६ तोले, पीपर ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, अजवायन ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, धनिया ४ तोले, सफ़ेद जीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, बंसलोचन ८ माशे, दालचीनी ८ माशे, इलायची ८ माशे और

नागकेशर ८ माशे — इन सब दवाओं को कूट-पीस कपड़-छन कर बर्तन में रख दो। इस चूर्ण के सेवन से सब तरह के अतिसार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६२) शुद्ध कुचला, अफ़ीम और सफेद गोलमिर्च—इन तीनों को तोले-तोले भर ले कर, कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद इस चूर्ण को खरल में डाल कर, अदरख के रस के साथ ख़ूब घोटो। घुट जाने पर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड़ के साथ खाने से आमातिसार और हैज़ा निश्चय ही नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—कुचले के बीजों को तवे पर घी डाल कर इस तरह भूनो कि जलने न पायें। बाद में ऊपर का छिलका उतार डालो। पीछे बीजों को बीचों-बीच से चीर कर, अन्दर की जिभली निकाल डालो। इस काम के बाद कुचले को शुद्ध समझो।

दूसरी तरकीब कुचला शोधने की यह है, कि कुचले के बीजों को गोमूत्र में उबाल कर, छिलका और अन्दर की जिभली निकाल डालो। बिना इस तरह शोधे कुचला काम में न लाना चाहिए। यह एक प्रकार का ज़हर है। क़ायदे से सेवन किया जाय, तो अमृत है। सम्भोग-शक्ति बढ़ाने में तो यह अव्वल दर्जे की चीज़ है।

(६३) शुद्ध शिंगरफ, लौंग, अफीम और मिश्री—सबको बराबर-बराबर लेकर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। दिन में तीन दफा या दो दफा, इन गोलियों को जल के साथ लेने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

(६४) शुद्ध कपूर, अफ़ीम और भुनी हींग—इन तीनों को पीस कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे, शाम और दोपहर को या दो ही समय निगलवा कर, ऊपर से चावलों का धोवन पिला दो। इससे दस्त, पेट का दर्द और क़य होना—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(६५) कसौंदी की जड़ ६ माशे, ४ तोले चावलों के धोवन में पीस कर पीने से बालक और बूढ़ों के दस्त फौरन बन्द हो जाते हैं। वैसे यह नुसखा नये-पुराने सभी अतिसारों में फ़ायदे मन्द है।

(६६) लोहे की कटोरी या तवे पर जरा-सा 'घी' डाल कर 'हरड़' भून लो और उसमें से तीन या चार माशे दस्त वाले को खिलाओ। दस्तों में जरूर लाभ होगा। कमज़ोर रोगी के लिए तो बहुत ही उत्तम दवा है।

(६७) कुटज या कौरैया की ताज़ा छाल चार तोले लाकर, आध सेर जल में औटाओ। जब आधा पाव जल रह जाय, चूल्हे से उतार, मल-छान कर पिला दो। अवश्य दस्त बन्द हो जायेंगे।

(६८) आम की गुठली की गिरी १ तोला और बेलगिरी १ तोला—दोनों को आध सेर पानी में औटाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। पीछे मल-छान कर, उसमें शहद ६ माशे और मिश्री ३ माशे मिला कर पी जाओ। इससे क़य और दस्त दोनों बन्द हो जाते हैं।

(६९) ३ माशे कैथ के बीज भून कर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है।

(७०) गूलर का दूध १ माशा, बताशे में भर कर, आठ-दस दिन खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(७१) आमले की पत्ती, बबूल की पत्ती और आम की पत्ती—इन तीनों को ला कर अलग-अलग, बिना पानी डाले, सिल पर कूट-पीस कर कपड़े में रस निकाल लो। इन तीनों पत्तों का स्वरस दो-दो माशे तैयार कर के उसमें ६ माशे शहद मिला कर पीने से सब तरह के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(७२) जावित्री, जायफल, नागकेशर, लौंग और अफ़ीम—इन पाँचों को चार-चार माशे ले कर, महीन पीस कर, जल के साथ खरल कर, रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना, छाया में सुखा लो। फिर चार रत्ती सफ़ेद ज़ीरा और ४ रत्ती सोंठ को पीस कर रख लो। इसी चूर्ण के साथ ऊपर की गोली फाँक जाओ और ऊपर से चार-पाँच तोले शीतल जल पी जाओ। इससे भयानक प्यास वाला अतिसार एक मात्रा में ही आराम हो जाता है। यह योग अनेक बार का परीक्षित है; कभी फेल नहीं होता।

(७३) छिले हुए मसूर भून कर खाने से अनेक बार दस्त बन्द हो जाते हैं। मसूर की दाल रोज़-रोज़ खाने से पेट में गुड़गुड़ शब्द होना, पेट फूलना, दर्द होना और कच्चे-पक्के दस्त होना—ये सब आराम हो जाते हैं। आँतों को ठीक रखने में मसूर सब से बढ़ कर है।

(७४) भुनी हुई मूंग और भुने हुए चावल, दोनों बराबर-बराबर ले कर काढ़ा बनाओ। काढ़ा हो जाने पर, उसे चूल्हे से उतार, शीतल कर लो। पीछे उसमें शहद ६ माशे और मिश्री ३ माशे मिला, रोगी को पिला दो। इससे प्यास, दाह, पेट की जलन और दस्त आराम हो जाते हैं।

(७५) चावलों का माँड़ दिन में कई दफा पिलाने से भी दस्त आराम हो जाते हैं।

(७६) वेलगिरी या कच्चे वेल को जल में उवाल कर, शहद के साथ कुछ दिन सेवन करने से सव तरह के अतिसार और प्रवाहिका रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७७) अधपके बेल को आग में भून कर उसका गूदा, मिश्री और अर्क्-गुलाव के साथ मिला कर, सवेरे ही खाली पेट में खाने से सव तरह के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

(७८) वेल का मुरब्वा आमाशय-सम्वन्धी रोगों में वहुत हितकारी होता है। अतः हम उसके वनाने की सीधी विधि लिखते है—पहले वेल के फल लाकर, उनका गूदा निकाल लो और उस गूदे को हाँड़ी या क़लईदार बर्तन में रख, आग पर चढ़ा, जरा जोश दे दो। जव गूदा कुछ गल जाय, तब उसे खाँड़ की चाशनी में डाल, चला दो। शीतल होने पर, अमृतवान या काँच के वर्तन में भर कर रख दो। दो महीने वाद खोलो। अगर वह अच्छी तरह गल गया हो, तो सेवन करो। इससे दस्तों में वहुत लाभ होता है।

(७९) बवूल के कोमल पत्ते ज्यादा जल में पीस कर पीने से अतिसार आराम होता है।

☞ नोट—जव गुदा की सम्वरणी-वलि की कमज़ोरी से रोगी का पाखाना, अज्ञात अवस्था में, निकल जाय, उस समय ववूल के काढ़े की पिचकारी लगाना लाभदायक है। इससे आँतों की झिल्ली में चिकनापन होता है।

(८०) इलायची, जायफल, दालचीनी और सोंठ—इनको समान भाग ले कर, सबको एकत्र पीस कर और सबके वरावर मिश्री मिला कर, ३-४ माशे की मात्रा से, दिन में दो वार सेवन करने से अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसख़ा अतिसार की निराम या पक्वावस्था में देते हैं।

(८१) सफ़ेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, छोटी इलायची, दालचीनी और घी में भुनी भाँग— प्रत्येक दवा चार-चार माशे ले कर, सव को पीसो और ज़रूरत के माफ़िक़ 'सेंधानोन' मिला दो। इसमें से ३ माशे चूर्ण, दिन में दो-तीन वार फाँकने से अतिसार आराम हो जाता है।

(८२) इलायची, सौंफ और मस्तगी—इन तीनों को समान भाग ले कर, सब के वरावर मिश्री मिला कर खाने से अतिसार और उपद्रव दूर होते हैं।

(८३) वेलगिरि, नागरमोथा, इन्द्रजौ, धाय के फूल, सोंठ और मोचरस—इन को बरावर-बरावर ले कर, एकत्र पीस कर, चूर्ण बना लो। अथवा इन छहों

दवाओं का काढ़ा बना कर और मिश्री मिला कर पी जाओ। इसके पीने से सब तरह के अतिसार और उपद्रव शान्त होते हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—यद्यपि हमने अनेक नुसख़े लिखे हैं, और जो लिखे हैं, वे क़रीब-क़रीब आज़मूदा हैं, पर जब किसी से लाभ न हो, तब 'कुटज-पुटपाक' ज़रूर तैयार करो। सब प्रकार के अतिसारों का नाश करने में 'कुटज-पुटपाक' सबका राजा है। पुटपाक-विधि से रस निकाल कर और शहद मिला कर पीने से अवश्य लाभ होता है। पुटपाक-विधि हमने इसी अध्याय में कई जगह लिखी है। पानी जितना ही ज्यादा औटा कर दोगे, उतना ही लाभ होगा।

□ यूनानी नुसखे □

(८४) बीजों समेत मुनक्का ७ दाने, आम की गुठली की मींगी १ दाना और अफ़ीम ४ रत्ती—इन सबको कूट-पीस कर जल के साथ सात गोलियाँ बना लो। हर रोज़ एक गोली खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(८५) भुनी हुई सोंठ, माँई, पठानी लोध, सफ़ेद राल, धाय के फूल, इन्द्रजौ, मीठी बेलगिरी, मोचरस, आम की गुठली की मींगी, भुना खुरमा और कालीमिर्च—इन ग्यारह दवाओं को कूट-पीस, जल के साथ जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे, दोपहर और शाम को एक-एक गोली जल के साथ खाने से अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

(८६) भुनी हुई भाँग, बेर की पत्तियाँ और नरकचूर बराबर-बराबर ले कर, चने समान गोलियाँ बना, सवेरे-शाम एक-एक गोली खा जाने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

(८७) शीतरज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी और धाय के फूल—इन सातों को कूट-पीस और छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे, दोपहर और शाम को एक-एक मात्रा फांक कर, ज़रा-सा जल पीने से सब तरह के अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

(८८) भुनी हुई सोंठ, भुनी हुई सौंफ और बड़ी इलायची का छिलका—इन सबको बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। यह चूर्ण क़ाबिज़—ग्राही और पाचक है। सवेरे-शाम हथेली-हथेली भर चूर्ण फांक, ऊपर से ज़रा-सा जल पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(८९) मस्तगी, कालीमिर्च, बंसलोचन, अनारदाना, आम की गुठली की गिरी, मुलहठी, माँई, धाय के फूल और माजू—इन ९ दवाओं को बराबर-

बराबर ला कर, कूट-पीस और छान कर, खरल में डाल, पोस्त के डोडों के जल के साथ घोटो। घुट जाने पर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक दाम भर (३ माशे के करीब) गोली, साँठी चावलों के जल के साथ खाओ। पथ्य में मूँग और भात खाओ। इससे अतिसार और ख़ूनी बवासीर आराम हो जाते हैं।

(६०) जिस तरह बालकों के दस्तों को 'अतीस' आराम करता है, उसी तरह बड़ों के दस्तों का भी नाश करता है। जवान को ६ माशे से १ तोले तक 'अतीस' जल में पीस कर देना चाहिए। अगर इसमें मात्रा के माफ़िक़ 'गुलनार' भी मिला दिया जाय, तो और भी लाभ हो।

(६१) रूमी मस्तगी, अनार की कली, बच, वंसलोचन, आम की गुठली की गिरी, लोध, मुलहठी, धाय के फूल, मोचरस, कुड़े की छाल, जायफल, बबूल की कली और माँई—ये सब एक-एक तोला लो। सफ़ेद कत्था २६ तोला और कुम्हड़े के बीजों की गिरी ५२ तोला लो। इन सबको कूट-पीस कर छान लो। पीछे पोस्त के डोडों का काढ़ा तैयार कर लो। ऊपर के पिसे-छने चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से पोस्त के डोडों का जल डाल-डाल कर घोटो। खूब घुट जाने पर चार-चार माशे की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे-शाम, चावलों के धोवन के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ अनेक बार की परीक्षित हैं। पथ्य दही-भात है।

(६२) करेले के पत्तों का स्वरस ३ माशे, अनार के पत्तों का स्वरस ३ माशे और बकरी का दूध १ तोला—इन तीनों को मिट्टी या पत्थर के बर्तन में मिला दो। इस रस में रूई का फाहा भिगो-भिगो कर नाभि पर रखने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं।

☛ नोट—ईश्वर की महिमा का पार नहीं। उसने एक-से-एक बढ़ कर जड़ी-बूटी पैदा की हैं। हुरहुज के बीजों का तेल नाभि पर लगाने से दस्त लग जाते हैं और वही तेल त्रिकस्थान—चूतड़ों के ऊपर की तीन हड्डियों के जोड़ पर लगा देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(६३) मोचरस, माँई, सफ़ेद राल, बेलगिरी, आम की गुठली की मींगी, धाय के फूल, पोस्त का डोड़ा और सफ़ेद ज़ीरा—ये सब बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर कपड़े में छान लो। इसमें से चार माशे चूर्ण, हर दिन, काला नमक और कालीमिर्च-मिले गाय के माठे के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम होते हैं। परीक्षित है।

(९४) सूखे आमले, बंसलोचन, छोटी इलायची और धनिया—ये सब समान भाग लो। इनको कूट-पीस कर, सब के वज़न के बराबर मिश्री मिला लो। इसमें से ६ माशे सवेरे और ६ माशे शाम को सेवन करने से अतिसार और रक्तातिसार आराम हो जाते हैं।

(९५) एक जायफल ले कर, उसमें चाकू से छेद करो। उस छेद में चार रत्ती अफ़ीम भर दो। पीछे एक काग़ज़ी नीबू के दो टुकड़े करके, एक टुकड़े में उस अफ़ीम-भरे जायफल को रख दो। ऊपर से दूसरा नीबू का टुकड़ा रख कर, उस पर कपड़-मिट्टी कर दो। पीछे आरने या जंगली कण्डों की आग में उसे पकने को रख दो। जब पक कर लाल हो जाय, आग से निकाल कर मिट्टी और नीबू को अलग करके, जायफल को खरल में डाल कर घोटो और १० या १२ गोलियाँ बना लो। चार-चार घण्टे पर, एक-एक या दो-दो गोली खाने से अतिसार आराम हो जाते हैं। दस्त बन्द होते ही दवा बन्द कर दो। **बालक को यह दवा न देना।**

(९६) शुद्ध सिंगरफ, सुहागे की खील, जायफल, छुहारा और अफ़ीम—ये सब समान भाग ले, इनमें ज़रा सा कपूर डाल, सब को खरल में रख, पान के रस के साथ घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो और धूप में सुखा कर शीशी में रख दो। एक-एक गोली, चार-चार घण्टे बाद, जल के साथ खाने से अतिसार आराम हो जाता है।

(९७) अफ़ीम साढ़े ३ माशे, अकरकरा ७ माशे, झाऊ के फल १४ माशे, सामक १४ माशे; और हुब्बुल्लास १४ माशे—सबको खरल में डाल, बबूल के गोंद के रस में घोटो और एक-एक माशे की गोली बना, सेवन करो, तो एक घण्टे में दस्त बन्द हो जायँगे।

☛ **नोट**—ग्रन्थ में दो माशे की गोली लिखी है; पर हमारी समझ में एक माशे की काफी है।

• बिना दवा खाये दस्त आराम •

(९८) छटाँक भर या आधी छटाँक आमले ला कर खूब महीन पीसो। पीछे उस पिसे आमलों के चूर्ण को घी में पीस कर चटनी-सी बना लो। दस्त वाले रोगी को चित्त या सीधा सुला कर, उसकी नाभि के चारों ओर, उस घी में पिसे आमलों का थामड़ा या दीवार-सी बना दो। दीवार ज़रा ऊँची रहे तो अच्छा। दीवार के बीच के गड्ढे में अदरख का स्वरस भर दो और उसे कम-से-कम दो घण्टे तक ऐसे ही रहने दो; रोगी लेटा रहे। इस उपाय से समन्दर के समान बहते

हुए दस्त भी आराम हो जायेंगे। यह नुसख़ा 'मुजर्रबात अकबरी' का है और हमारा कई बार का आज़माया हुआ है। यह दस्त बन्द करने वाली सभी दवाओं का बादशाह है।

नोट—आमलों को, घी न होने पर, जल में भी पीस लेते हैं।

(६६) आम की छाल, दही के तोड़ में पीस कर, नाभि के चारों ओर लगाने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१००) बड़ का दूध नाभि में भर देने और उसके चारों ओर लगा देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१०१) आमलों को घी में भूँज कर और पानी में पीस कर नाभि के चारों ओर लगा दो। साथ ही ज़रा-सी अफ़ीम अदरख के रस में घोट कर दो-तीन बूंद नाक में टपका दो। परमात्मा की दया से फौरन दस्त बन्द हो जायेंगे।

(१०२) कलौंजी के बीज ४ माशे, ख़तमी ४ माशे, सोंठ ४ माशे, गावज़ुबाँ ४ माशे और मरोड़फली ४ माशे—इन सब को एकत्र कूट-कर १ छटाँक पानी में पकाओ। जब आधा पानी बाकी रह जाय, तब उसमें एक तोला मिश्री डाल कर, प्रातः काल और सन्ध्या के समय पिलाओ। इससे फौरन दस्त बन्द हो जाते हैं।

□ गर्भवती के दस्तों के लिये नुसखे □

(१०३) केवल बकरी के दूध का सेवन करने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

(१०४) ४ माशे ईसबगोल को, २ तोले जल में भिगो कर, थोड़ी मिश्री डाल कर, भोजन के मध्य में खाने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

(१०५) आम की पुरानी गुठली की मींगी, बेलगिरी, लोध और धनिया—यह चारों औषधियाँ समान भाग ले कर, सबका एकत्र चूर्ण बना कर और चूर्ण के बराबर मिश्री मिला कर, उसमें से ३-३ माशे की मात्रा दही में मिला कर सेवन करने से गर्भावस्था का अतिसार दूर होता है।

(१०६) सूखे आमले, मस्तगी, धनिया और छोटी इलायची—सबको समान भाग ले कर, एकत्र पीस कर, ३-३ माशे की मात्रा, बेल के शर्बत के साथ खाने से विशेष लाभ होता है।

(१०७) भुनी भाँग ४ रत्ती, बड़ी इलायची ६ रत्ती, ज़ीरा १ माशे, काला ज़ीरा १ माशे, सूखा अनारदाना १ माशे, सोंठ १ माशे और धनिया ३ माशे—

इन सबको एकत्र पीस कर, इसमें से २-२ माशे गाय के मीठे-माठे के साथ खाने से सब प्रकार के दस्त बन्द होते और अग्नि दीपन होती है।

□ बाल अतिसार-नाशक नुसखे □

(१०८) कौरैया की जड़ और मुगलाई अरण्ड (रतनजोत) की जड़, छाछ के पानी में घिस कर, थोड़ी हींग मिला कर देने से बालक का भयंकर अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर बदहज़मी के दस्त हों तो खाली कौरैया की जड़, छाछ के पानी में घिस कर, थोड़ी हींग मिला कर देने से लाभ होता है।

(१०९) अगर छोटे बालक को मरोड़ी के दस्तों की आशंका हो, तो जन्म-घूंटी में मरोड़फली घिस कर दो। अगर मरोड़ चलती हों, तो माठे में मरोड़फली की जड़ घिस कर दो। परीक्षित है।

(११०) काकड़ासिंगी का एक या डेढ़ माशे चूर्ण, 'शहद' के साथ देने से अतिसार आराम हो जाता है।

(१११) बाग़ में पैदा हुई कपास के ताज़ा फूलों को गरम राख में भून कर रस निकालो और बालक को पिलाओ। इससे बालक का अतिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—बहुत छोटा बच्चा हो, तो माता कपास के फूलों को मुंह में चबा कर उनका रस बालक के मुंह में डाल सकती है।

लघुब्राह्मी के पत्तों का रस, इसी तरह निकाल कर, बालकों को पिलाने से भी बालकों का अतिसार नष्ट हो जाता है। लघुब्राह्मी का पौधा सदा गन्दी ज़मीन में उगता है और बाग़ों में भी होता है। इसका बड़ा विस्तार फैलता है; पत्ते दो-दो अंगुल चौड़े और चूहे के कान-जैसे होते हैं। इसके ताजा पत्ते रोज़ सवेरे खिलाने से बालकों की जीभ का मोटापन और कड़ापन नष्ट होकर तुतलाना मिट जाता है।

(११२) बालक को बारम्बार पतले दस्त होते हों, तो असली केसर के एक या दो चावल घी में मिला कर चटाओ। इस उपाय में दस्त बन्द हो जायेंगे। परीक्षित है।

(११३) केसर, अफ़ीम और हींग—इन तीनों को समान-समान ले कर, पानी में पीस कर, बाजरे-जितनी बड़ी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे और शाम को, माँ के दूध में या शहद में घिस कर चटाने से बालक का बहुत पुराना अतिसार नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(११४) ख़सख़स के दानों को जल में पीस, हलवा बना कर खिलाने से बालकों के आँव-मरोड़ी के दस्तों में बहुत लाभ होता है।

(११५) ख़सख़स के दानों को गाय के दूध में पीस, जल में थोड़ा-सा दूध और मिश्री मिला कर पकाना चाहिए। जब गाढ़ी-गाढ़ी-सी खीर हो जाय, तब उसे उतार, शीतल कर, बालकों को चटाना चाहिए। इससे दस्तों की बीमारी आराम हो जाती है और ताक़त आती है।

☛ नोट—कम उम्र के बालकों को थोड़ी खीर देनी चाहिए। चार या छह महीने से नीचे के बालक को तो देनी ही न चाहिए।

(११६) सौंफ को जल में भिगो दो। चार पहर बाद पानी को छान लो। उसमें जल से चौगुनी चीनी मिला, क़लईदार बर्तन में शर्बत पका लो। इसके ज़रा-ज़रा चटाने से बालकों के दस्त, पेट का दर्द, मन्दाग्नि और पेशाब का लाल होना आराम हो जाता है।

(११७) अनार की कली १ माशे, बबूल की हरी पत्ती १ माशे, घी में भुनी सोंफ १ माशे, ख़सख़स या पोस्त के दानों की राख ३ माशे—इन सबको एक में मिला, पीस-छान लो। दो-दो या तीन-तीन रत्ती यही दवा, माँ के दूध में देने से बालक के दस्त आराम हो जाते हैं। यह दवा सवेरे, दोपहर और शाम को देनी चाहिए।

(११८) बेलगिरी १ माशे और सफ़ेद कत्था १ माशे—दोनों को महीन पीस कर रख लो। चार-चार रत्ती, माँ के दूध के साथ देने से बालक के दाँत निकलने के समय के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(११९) अतीस चार-चार रत्ती, माँ के दूध में घिस कर, दिन में दो या तीन बार देने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२०) बड़ का दूध ६ माशे नाभि में भर देने से भी बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२१) आम की छाल १ तोला लाकर, दही या सिरके में चन्दन की तरह घिस कर, सूँडी के चारों ओर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२२) बेलगिरी को सोंफ के अर्क़ में घिस कर, बालक को चटाने से बालक के लाल-हरे दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२३) बेलगिरी, सोंठ, जायफल, नागकेशर और बड़ी इलायची—सबको बराबर-बराबर ला कर, पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से ख़सख़स का काढ़ा डाल कर घोटो। पीछे चने-समान गोलियाँ बना लो। बालक को उम्र के मुताबिक, एक या आधी गोली, माँ के दूध में घिस कर पिलाने से हरे और लाल दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१२४) बेल की जड़ के काढ़े में मिश्री मिला कर पिलाने से बालक का आम गिरना बन्द हो जाता है।

(१२५) अलसी के भुने बीज किसी तरह भी खाने से खाँसी और दस्त बन्द हो जाते हैं।

□ विशेष चिकित्सा □

नोट—सामान्य चिकित्सा में अतिसार की एक ही दवा सब तरह के अतिसार को आराम करती है। उसमें, वातातिसार है या पित्तातिसार है या रक्तातिसार है, इस तरह की परीक्षा करने की आवश्यकता नहीं; पर विशेष चिकित्सा में अतिसार की क़िस्म जाननी पड़ती है; अर्थात् यह वातातिसार है या रक्तातिसार है इत्यादि। फिर वातातिसार का नुसख़ा पित्तातिसार रोगी को नहीं दे सकते। ऐसा करने से रोग के बढ़ने और रोगी की जान ख़तरे में पड़ने का भय है। हाँ, इस चिकित्सा से रोग आराम जल्दी होता है; पर रोग की किस्म, दोषों के अंशांशों का जानना और फिर वैसी ही दवा तजवीज़ करना आवश्यक है। यह काम अच्छे अनुभवी और विद्वान् वैद्य ही कर सकते हैं।

नीचे हम वातातिसार प्रभृति प्रत्येक प्रकार के अतिसारों पर नुसख़े लिखेंगे। रोग-परीक्षा में भूल न होने से हमारे लिखे नुसख़े रामबाण या तीरे-हदफ का काम करेंगे; पर रोग-परीक्षा ठीक होनी चाहिए। भूल से अगर पित्तातिसार को कफातिसार समझ लिया जायगा और रोगी को गरम दवा दे दी जायगी, तो 'रक्तातिसार' हो जायगा—दस्तों में ख़ून आने लगेगा। वजह यह है कि कफातिसार में गरम दवा दी जानी चाहिए और पित्तातिसार में शीतल। जब उल्टी चिकित्सा होगी, तो फल भी उल्टा ही होगा। अतः हर तरह से अतिसार का भेद समझ और निश्चय करके दवा तजवीज करना अच्छा होगा। अगर ऐसा किया जायगा, तो इधर दवा दी जायगी और उधर लाभ होगा; क्योंकि हम इस पुस्तक में जो नुसख़े या योग लिख रहे हैं, उनमें से ९० फीसदी मुजर्रब या परीक्षित हैं; बिना आज़माये नुसखे बहुत

ही कम हैं। जो अनेक बार आजमाये हैं, उनके सामने 'परीक्षित है' ये दो शब्द लिखे हैं। जिनके सामने ये दो शब्द नहीं लिखे हैं, वे भी हमारे या और वैद्यों के एकाध बार के परीक्षित हैं।

वातातिसार-नाशक नुसखे

(१२६) बच, अतीस, नागरमोथा और इन्द्रजो—इनका काढ़ा वातातिसार-नाशक है।

(१२७) इन्द्रजो, नागरमोथा, लोध, बेलगिरी, आम की गुठली और धाय के फूल—इन सबका चूर्ण, सवेरे के समय, भैंस की छाछ के साथ पीने से प्रबल वातातिसार आराम हो जाता है। इसको 'कलिङ्गादि क्वाथ' कहते हैं। परीक्षित है।

(१२८) दुर्गन्ध करंज, पीपल, सोंठ, खिरेंटी, धनिया और हरड़—इनका काढ़ा सन्ध्या-समय पीने से वातातिसार अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

(१२९) हालिम का चूर्ण, शक्कर के साथ खाने से वादी के दस्त आराम हो जाते हैं।

पित्तातिसार-नाशक नुसखे

(१३०) बेलगिरी, इन्द्रजो, नागरमोथा, सुगन्धवाला और अतीस—इनके काढ़े से आम-युक्त पित्तातिसार नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१३१) रसौत, अतीस, कुड़े के बीज और छाल, धाय के फूल और सोंठ—इनको कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। समय पर, शहद में मिला कर, चावलों के जल के साथ सेवन करो। इस चूर्ण से भयंकर पित्तातिसार नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण अग्नि को दीप्त करता और शूल को फौरन नष्ट करता है। परीक्षित है।

(१३२) लजवन्ती, धाय के फूल, बेलगिरी, कालानोन, विड़नोन और अनार का छिलका—इनको एकत्र पीस कर, चावलों के जल के साथ, शहद मिला कर पीने से पित्त का अतिसार और पित्त का उदर-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१३३) दारुहल्दी, धमासा, बेलगिरी, सुगन्धवाला और लाल चन्दन—इनका काढ़ा भी पित्तातिसार का नाश करता है।

☛ नोट—पित्तातिसार-रोगी की गुदा में जलन प्रभृति अनेक उपद्रव हो जाते हैं। उनके उपाय और सभी ग्रन्थकारों ने पित्तातिसार के नीचे ही लिखे हैं; पर हमने गुदा की जलन, वेदना, कांच का निकलना प्रभृति को आराम करने वाले नुसखे तो इसी अध्याय में लिखे हैं; हां, रक्तातिसार-नाशक नुसखे जरा आगे लिखे हैं।

कफातिसार की चिकित्सा

☛ **नोट**—कफातिसार में पहले लंघन कराना चाहिए, फिर पाचन तथा आमातिसार नाशक औषधि देनी चाहिए।

(१३४) चव्य, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इनका काढ़ा कफातिसार को नष्ट करता है।

(१६५) भुनी हींग, कालानोन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड़, अतीस और वच—इनका चूर्ण, गरम जल के साथ खाने से कफातिसार नष्ट होता है।

(१३६) चव्य, अतीस, कूट, कच्चे बेल का गूदा, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इनका काढ़ा वमन और कफातिसार-नाशक है।

(१३७) हरड़, चीता, कुटकी, पाढ़, बच, पीपरामूल, कुड़े की छाल और सोंठ—इनका काढ़ा आमातिसार-नाशक है।

(१३८) हरड़, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और काकड़ा-सिंगी—इनके काढ़े से कफातिसार आराम होकर बल और वर्ण की वृद्धि होती है।

(१३९) चीता, पीपलामूल, पीपल और गजपीपल—इनके काढ़े से भी कफातिसार नष्ट होता है।

(१४०) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, लौंग और अकरकरा—ये सब बराबर-बराबर ४-४ माशे और अफ़ीम ८ माशे लो। पीछे इनको पीस-कूट कर, अदरख के रस में खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन में दो या तीन बार एक-एक गोली खानी चाहिए। इन गोलियों से कफातिसार नष्ट होता है।

(१४१) सौंफ को घी में इतनी भूनो कि लाल हो जाय। पीछे उसे कूट-पीस कर छान-लो और बराबर की चीनी मिला लो। इसमें से ७ माशे शीतल जल के साथ खाओ। इससे कफातिसार आराम होता, कोठा बलवान होता और गुदा की हवा निकल जाती है।

वातपित्तातिसार-नाशक नुसखे

(१४२) कायफल, मुलेठी और अनार का छिलका—इनका कल्क बना कर, चावलों के जल के साथ सेवन करने से वातपित्तातिसार नष्ट होता है।

(१४३) इन्द्रजौ, बच, नागरमोथा, देवदारु और अतीस—इनका कल्क या लुगदी, चावलों के जल के साथ सेवन करने से वातपित्तातिसार नष्ट हो जाता है।

☛ नोट—मल में झाग हों, ख़ून ज़्यादा आये, अत्यन्त वेदना हो और अनेक रंग के दस्त आयें—तो समझो कि वातपित्तातिसार है।

वातकफातिसार-नाशक नुसखे

(१४४) बायबिड़ङ्ग, वच, बेलगिरी, पाढ़, धनिया और कायफल—इनका काढ़ा वायु और कफ से उत्पन्न हुए अतिसार का नाश करता है।

(१४५) कायफल, मुलेठी, लोध और अनार का छिलका—इन सबका चूर्ण बना कर, चावलों के पानी के साथ पीने से वातकफातिसार नष्ट होता है।

(१४६) चीता, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ हरड़—इनका काढ़ा वातकफातिसार को नष्ट करता है

☛ नोट—दस्त पतले हों, झाग हों, आम-गन्ध हो, आवाज हो, वेदना हो, आम-सहित, गुड़गुड़ाहट के साथ मल उतरे; तन्द्रा, मूर्च्छा, भ्रम एवं क्लम हो और सन्धि, कमर, घुटने, जाँघ, पीठ और हड्डियों में शूल हो—यही 'वातकफातिसार' के लक्षण हैं।

पित्तकफातिसार-नाशक नसखे

(१४७) नागरमोथा, अतीस, चुरनहार, वच और कुड़े की छाल—इनके काढ़े में 'शहद' डाल कर पीने से पित्तकफातिसार नष्ट होता है।

(१४८) लोध, चन्दन, मुलेठी, दारुहल्दी, पाढ़, सागोन, कमल और स्योनाक की छाल—इन सबको चावलों के जल में पीस कर गोला बना लो। पीछे पुटपाक की विधि से पका कर और आग से निकाल कर, उसमें से रस निकालो। रस में शहद मिला कर सेवन करने से कफपित्तातिसार आराम होता है।

☛ नोट—(क) पुटपाक की विधि और मात्रा वगैरः पीछे पृष्ठ २४ में लिखी हैं।

(ख) काढ़े के समान पतला, मन्द वेग वाला, मन्द पीड़ा-युक्त, भारी, सेमल के गोंद के समान लिबलिबा, कमल के पत्ते के समान चिकना, शंख के समान सफ़ेद, लाल-लाल बूँदों सहित मल उतरे, भूख और प्यास बहुत लगे, तो 'पित्तकफातिसार' समझना चाहिए।

सन्निपात-अतिसार-नाशक नुसखे

(१४९) पंचमूल, खिरेंटी, बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, चिरायता, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा त्रिदोषज अतिसार, ज्वर, वमन, शूल के उपद्रव सहित श्वास और दुस्तर खाँसी को नष्ट करता है।

☛ नोट—सामान्य रीति से, पित्त के रोग में लघु पंचमूल और वात-कफ के रोग में वृहत्पंचमूल लेना चाहिए।

(१५०) हरड़, सोंठ, नागरमोथा और पुराना गुड़—ये चारों बराबर-बराबर ले कर गोलियाँ बना लो इन 'चतुःसम' नामक गोलियों से सब तरह के अतिसार, आमातिसार, अफारा, मलबन्ध, हैजा, कृमिरोग और अरुचि—ये सब नष्ट होकर अग्नि दीप्त होती है।

(१५१) नीली कुड़े की छाल १६ तोले ला कर, चावलों के पानी में पीस कर, गोला-सा बना लो। पीछे उस गोले पर जामुन के पत्ते लपेट कर ऊपर से डोरा बाँध दो। इसके बाद उस पर गेहूँ का आटा लपेट दो। इसके बाद उस पर मिट्टी का लेप कर दो। शेष में, उस गोले को आरने कण्डों की आग में पकाओ। जब लाल हो जाय, निकाल लो। पीछे शीतल होने पर, उसमें से दवा निकाल, कपड़े में रस निचोड़ लो और उस रस को 'शहद' के साथ सेवन करो। इसे 'कुटज-पुटपाक' कहते हैं। इससे सब तरह के अतिसार, पुराने अतिसार और रक्तातिसार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५२) कुड़े की छाल का काढ़ा बना कर, कपड़े में छान कर, शीतल कर लो। पीछे उसमें आठवाँ भाग 'अतीस का चूर्ण' मिला कर सेवन करो। इससे त्रिदोषातिसार नष्ट होता है।

रक्तातिसार-नाशक नुसखे

☛ नोट—उधर लिखे हुए अतिसारों के सिवा 'रक्तातिसार' एक अलग अतिसार है। इस अतिसार में ख़ून के दस्त होते हैं। कभी केवल ख़ून के दस्त होते हैं और कभी मल के साथ ख़ून आता है। और अतिसारों के पुराने होने पर भी ख़ून आया करता है। यह अतिसार पित्तज अतिसार होने अथवा उसके होने के कुछ दिन पहले, पित्त कुपित करने वाले पदार्थ खाने-पीने से होता है। इसमें रोगी को बड़ा कष्ट होता है।

• वत्सकादि क्वाथ •

(१५३) कुड़े की छाल, अतीस, बेलगिरी, नागरमोथा और ख़स—इन पाँचों का काढ़ा शूल या वेदना-सहित रक्तातिसार का नाश करता है।

☛ नोट—कोई-कोई इस काढ़े में 'ख़स' की जगह 'नेत्रबाला' डालते हैं। हमारा परीक्षित है। इसमें ख़ून, आँव और मरोड़ी तीनों आराम होते हैं। रसिक शिरोमणि पंडितवर लोलिम्बराज महोदय कहते हैं—

वाले बाललता प्रबाल ललिता कारांघ्रिहस्ताधरे ।
मल्ली नाल्यलसत्कुचक्षितिधरे रत्नज्वलन्मेखले ।
चंचलकुण्डलमण्डले विजयते रक्तामशूलान्विता-
तीसारं कुटजाब्द विल्वकविषे दीच्यैः कषायः कृतः ॥

हे वाले ! हे षोडशी ! कोमल लता के नये-नये पत्तों के समान सुर्ख हाथ-पैरों और होठों वाली ! तेरे पर्वत-जैसे कुचों पर चमेली के हार पड़े हुए हैं, तेरे गालों पर प्रकाशमान कुण्डल झूल रहे हैं और रत्नों से शोभायमान मेखला पड़ी है। ऐ सुन्दरी ! कुड़े की छाल, नागरमोथा, बेलगिरी, अतीस और नेत्रवाला—इनका काढ़ा रक्त, आम और शूल वाले अतिसार को जीतता है ।

• रसांजनादि चूर्ण •

(१५४) रसौत, अतीस, कुड़े की छाल, धाय के फूल, सोंठ और इन्द्रजौ—इन छहों को कूट-पीस कर चूर्ण कर लो । इस चूर्ण में शहद मिला कर, चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से 'रक्तातिसार' निश्चय ही आराम होता है । यह भी हमारा परीक्षित है ।

• पथ्यादि चूर्ण •

(१५५) हरड़, वच, अतीस, संचर-नोन, हींग और इन्द्रजौ—इनको कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण के सेवन करने से आम, मलबन्ध और गुदा के शूल-समेत रक्तातिसार का नाश होता है । परीक्षित है ।

• कुटजादि क्वाथ •

(१५६) कुटजा या कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाला, लोध, लाल चन्दन, धाय के फूल, अनार का छिलका और पाढ़—इनका काढ़ा बना कर, शीतल होने पर, उसमें 'शहद' मिला कर पीने से रक्तातिसार से उत्पन्न हुए दाह और शूल तथा सब तरह के अतिसार आराम होते हैं ।

□ ग़रीबी नुसखे □

(१५७) अनार के कच्चे फल का छिलका और कुड़े की छाल—इन दोनों के काढ़े में, शीतल होने पर, 'शहद' डाल कर पीने से तत्काल रक्तातिसार आराम होता है । परीक्षित है ।

☞ नोट—दोनों दवाएँ एक-एक तोले ले कर अठगुने यानी १६ तोले जल में पकाओ। जब आठवाँ भाग यानी दो तोले जल रह जाय, तब मल-छान और शीतल कर, उसमें डेढ़ माशे शहद मिला कर रोगी को पिला दो।

(१५८) नौनी या लोनी घी को शहद और मिश्री के साथ खाने से रक्तातिसार आराम होता है।

(१५९) सफ़ेद चन्दन घिस कर, उसमें शहद और चीनी मिला कर, चावलों के धोवन के साथ पीने से रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्यास, दाह और प्रमेह - ये सब नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(१६०) शतावर को जल के साथ पीस कर लुगदी-सी बना कर दूध के साथ पीने से रक्तातिसार नष्ट होता है। इस नुसख़े पर दूध पीना बहुत ज़रूरी है।

☞ नोट—(क) शतावर के रस में चीनी मिला कर पीने, अथवा शतावर की जड़ का रस दूध के साथ पीने से रक्तातिसार निश्चय ही आराम होता है।

(ख) दो तोले शतावर को आध पाव जल में औटाओ। जब एक जल छटाँक रह जाय, तब छान कर उसमें एक छटाँक बकरी का दूध मिला कर पी जाओ। इस तरह भी ख़ून के दस्त आराम हो जाते हैं।

(१६१) काले तिलों को सिल पर जल के साथ पीस कर लुगदी-सी बना लो। पीछे जितनी लुगदी हो, उसका पाँचवाँ भाग चीनी उसमें मिला दो। उस चीनी-मिली लुगदी को दूध के साथ निगल जाओ। इस कल्क या लुगदी से रक्तात्तिसार फौरन आराम होता है।

(१६२) कच्चे बेल के गूदे में गुड़ मिला कर खाने से रक्तातिसार, आमशूल, मल-बन्ध और कुक्षिरोग आराम हो जाता है। इसके सिवा ख़ून के अनेक रोग भी आराम होते हैं। मात्रा दो तोले। परीक्षित है।

(१६३) जामुन, आम और आँवले के नये-नये पत्ते ला कर, सिल पर पीस कर कपड़े में रख कर ६ माशे रस निकाल लो। उस रस में 'शहद' ६ माशे मिला कर बकरी के दूध के साथ पी जाओ।

☞ नोट—तीनों तरह के पत्तों का स्वरस वज़न में दो तोला होना चाहिए। मगर एक मित्र-वैद्य की राय में तीनों का स्वरस ६ माशे, शहद ३ माशे और बकरी का दूध १ तोला मिला कर पीना अच्छा होगा। परीक्षित है।

(१६४) बकरी के दूध में बेलगिरी डाल कर औटाओ। औटने पर, दूध में मिश्री, मोचरस और इन्द्रजौ का पिसा-छना चूर्ण डाल कर पी जाओ। इस योग से रक्तातिसार नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

☛ नोट—बकरी के दूध में बेलगिरी डाल कर औटाने और पीने से भी रक्तातिसार आराम हो जाता है।

(१५६) मुलेठी, काले तिल, कमल की केसर और कमल—इन सबको पीस कर, इनकी लुगदी में शहद और मिश्री मिला कर, बकरी के दूध के साथ सेवन करने से रक्तातिसार नष्ट हो जाता है।

(१६६) कुरैया की ताज़ी छाल आठ तोले ले कर अठगुने जल में औटाओ और आठवाँ भाग यानी आठ तोले पानी रहने पर उतार कर छान लो। फिर अनार के फल का छिलका आठ तोले ले कर, उसी तरह ६४ तोले जल में औटाओ और ८ तोले जल रहने पर उतार कर छान लो। पीछे दोनों काढ़ों को एक में मिला कर औटाओ। जब गाढ़ापन आ जाय, उतार लो। इसमें से एक तोले की ख़ूराक खाकर ऊपर से दही का माठा पीने से रक्तातिसार निश्चय ही नष्ट होता है।

(१६७) कुकुर-भाँगरे को जल में पीस कर गोली बना लो और उसे खा जाओ। इससे आमातिसार, शूल और रक्तातिसार सब आराम होते हैं।

(१६८) नौनी या लोनी घी और नागकेशर को मिला कर खाने से गुदा से ख़ून गिरना बन्द हो जाता है; चाहे ख़ूनी अतिसार में ख़ून गिरता हो और चाहे बवासीर से। ख़ूनी बवासीर का ख़ून बन्द करने में यह नुसख़ा अच्छा काम देता है

(१६९) काली मिट्टी, मुलेठी, कुड़े की छाल और इन्द्रजौ—इनको एकत्र पीस और शहद मिला कर, चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से रक्तातिसार या गुदा से ख़ून गिरना बन्द हो जाता है।

(१७०) जामुन की छाल अथवा आम की छाल—इन दोनों में से किसी एक छाल को पीस कर, दूध या शहद के साथ पीने से रक्तातिसार आराम होता है।

(१७१) जल-चौलाई और कच्चे बेल को पका लो। पीछे इनमें नौनी घी मिला कर सेवन करो। इससे शूल-युक्त संग्रहणी और रक्तातिसार आराम हो जाते हैं।

(१७२) कुड़े की छाल ४ तोले लेकर ३२ तोले जल में पकाओ। काढ़ा हो जाने या ४ तोले जल रहने पर, उसमें ४ तोले अनार का रस डाल दो और फिर पकाओ। जब पकते-पकते ख़ूब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। शेष में ८ माशे माठा मिला कर पी जाओ। इससे रक्तातिसार से मरने वाला रोगी बच जाता है। रामबाण है।

(१७३) मिश्री और शहद मिला कर पीने, घी पीने, या माठा पीने से दस्त से पहले या पीछे ख़ून का गिरना बन्द हो जाता है।

(१७४) चौलाई की जड़ को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। पीछे चावलों के जल में शहद और मिश्री मिला कर, इस जल से उस लुगदी को खा जाओ। इस नुसख़े से भी गुदा से ख़ून गिरना बन्द हो जाता है।

(१७५) आठ तोले कुड़े की ताज़ा छाल को सवा सेर जल में औटाओ। जब चौथाई या पाँच छटाँक जल रह जाय, उसमें आठ तोले बकरी का दूध डाल दो और पकाओ। जब पकते-पकते केवल दूध रह जाय, उतार लो। शीतल हो जाने पर, उसमें ८ माशे शहद मिला कर पी जाओ। इसको 'कुटज-क्षीर' कहते हैं। इससे रक्तातिसार नष्ट हो जाता है।

(१७६) प्याज़ को काट कर उसका ज़ीरा बना लो और खूब धो डालो। पीछे उसे ताज़ा दही के साथ खाओ। इससे आम और ख़ून के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७७) ज़ीरा, धनिया और बच—तीनों को दस-दस माशे ले कर अठगुने या २० तोले जल में काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग या अढ़ाई तोले रहने पर उतार कर मल-छान लो। इसके पीने से रक्तातिसार, आमातिसार और खाँसी—ये रोग आराम होते हैं।

(१७८) नीबू के रस में अफ़ीम मिला कर और उसे दूध में डाल कर पीने से रक्तातिसार और आमातिसार आराम हो जाते हैं।

(१७९) अफ़ीम ४ माशे, जायफल २ माशे, शुद्ध धतूरे के बीज २ माशे, अभ्रक भस्म २ माशे और भुना सुहागा २ माशे—इन सबको खरल में पीस, ऊपर से प्रसारिणी के पत्तों का रस डाल कर घोटो और चने-बराबर गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे-शाम 'शहद' के साथ सेवन करने से रक्तातिसार, आमातिसार और संग्रहणी—तीनों निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१८०) गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा, छिले हुए कौंच के बीज और बेलगिरी—इन सबको कूट-पीस-छान, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे-शाम, जल के साथ खाने से वह रक्तातिसार, जिसमें सुद्दे या गाँठें नहीं होती, आराम हो जाता है तथा आँतों के छिल जाने से हुआ रक्तातिसार भी अच्छा हो जाता है।

(१८१) चने की भूसी २ तोले, कोरी हाँड़ी में डाल, ऊपर से दो सेर पानी डाल भिगो दो और कोई तीन पहर बाद उस जल को छान कर रख लो। इस जल को रोगी को बारम्बार पिलाने से भीतर का दाह और ख़ून के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१८२) चावलों के धोवन में मिश्री मिला कर पिलाने से ख़ून के दस्त, रक्त प्रदर और भीतरी दाह नष्ट हो जाते हैं।

☛ नोट—अकेले देने के बजाय, यदि नं० १८१ और नं० १८२ में से कोई एक, किसी प्रधान औषधि के साथ बीच-बीच में दिया जाय, तो अच्छा फल होगा।

(१८३) खूब पके हुए मीठे अनार का रस आध सेर ले कर और उसमें मिश्री डाल कर क़लईदार कढ़ाही में पकाओ। जब लेई के समान चाशनी हो जाय, तब उसमें बंसलोचन, छोटी इलायची, धनिया, मस्तगी, गिलोय का सत्त, अनारदाना, बेलगिरी, पोदीना, दालचीनी, जायफल और नागकेशर—इन सबको चार-चार माशे कूट-पीस-छान कर मिला दो और चूल्हे से नीचे उतार कर अमृतबान में रख दो। इसको 'दाड़िमावलेह' कहते हैं। सवेरे-शाम एक-एक तोला खाने से रक्तातिसार, प्रवाहिका और मन्दाग्नि आदि रोगों को आराम करता है। यह अवलेह रुचि बढ़ाने वाला, जठराग्नि दीपन करने वाला और हृदय को हित है।

(१८४) बेलगिरी को पुराने गुड़ में मिला कर खाने से दस्त के साथ ख़ून जाना, आम-मरोड़ी और हवा का रुकना—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१८५) बेलगिरी और पाढ़—दोनों को समान भाग ले कर, चूर्ण बना लो। पीछे चूर्ण के वज़न के बराबर मिश्री मिला दो। इसमें से ४ माशे चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन करने से ख़ूनी बवासीर और रक्तातिसार आराम होते हैं।

(१८६) बेलगिरी १ तोला, धनिया १ तोला और मिश्री २ तोले—एकत्र पीस कर, छह-छह माशे, सवेरे, दोपहर और शाम को, शीतल जल के साथ लेने से, दस्त के साथ ख़ून गिरना और गुदा में जलन होना, ये सब आराम हो जाते हैं।

(१८७) बेलगिरी, नागकेशर और रसौत—सबको समान भाग लेकर पीस-छान लो। चार-चार माशे यही चूर्ण, चावलों के धोवन के साथ लेने से रक्तातिसार, ख़ूनी बवासीर और स्त्रियों के श्वेत और रक्त प्रदर आराम हो जाते हैं।

☛ सूचना—बेल का कच्चा फल ही गुणकारी होता है। पकने पर यह दोषल हो जाता है, पर वह बिलकुल बेकाम नहीं होता। पके फल से भी कितने ही रोग जाते हैं। कच्चा बेल अधिक दीपन और पाचन होता है। इस कारण आमाशय और मन्दाग्नि आदि रोगों में कच्चा बेल ही अधिक उपयोगी समझा जाता है। हृदय-रोग, रक्तामाशय और पित्त के रोगों में पका बेल हितकर होता है।

(१८८) पके बेल के गूदे को सुखा कर और उसमें उसके बराबर सौंफ मिला कर दोनों को एकत्र पीस कर दोनों के वज़न के बराबर मिश्री मिला कर, शीतल जल के साथ चार-चार माशे चूर्ण फाँकने से ख़ून के दस्त बन्द हो जाते हैं।

□ हकीमी नुसखे □

(१८९) कनीचे के बीज, खुरफे के बीज, सौंफ के बीज, हमाल के बीज, खीरे के बीज, अलसी के बीज और बीज रिहाँ—इनको सात-सात माशे लो और गिले अरमनी, बंसलोचन, गोंद तथा निशास्ता—ये सब एक-एक तोले लो। इन सब को कूट-पीस कर छान लो। शेष में, इस चूर्ण में सात माशे ईसबगोल मिला कर रख लो। इसकी मात्रा जवान को ९ माशे की है। एक मात्रा खा कर, ऊपर से शर्बत हुब्बुल्लास पियो। इससे गरमी के दस्त और ख़ून के दस्त तथा सब तरह के अति-सार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९०) ख़ून के दस्त होते हों, तो रोगी को 'शर्बत अंजबार' दो या 'शर्बत हुब्बुल्लास' दो अथवा दोनों मिला कर दो। बीच-बीच में सेब या बीह का मुरब्बा भी खिला दो। इस तरह एक हफ्ते में आराम होगा। खाने को दही, भात और मिश्री।

☛ नोट—अगर बुखार न हो, खाली आँव-ख़ून के दस्त हों तो दही-भात और मिश्री दो। ज्वर में दही-भात देना अनुचित है। अनेक बार केवल दही-भात और मिश्री के खाने से आँव और ख़ून के दस्त मिट जाते हैं, पर भात खूब बढ़िया पुराने चावलों का होना ज़रूरी है।

(१९१) मरोड़ी के साथ आँव और ख़ून के दस्त होते हों, तो शर्बत अंजबार दो। इस रोग में यह शर्बत बहुत गुणकारी है। इससे नाभि के नीचे की पीड़ा

भी आराम हो जाती है। शर्बत ख़सख़ास या बेल का मुरब्बा भी अच्छा काम देता है।

(१६२) गाय का दूध ५ तोले, मक्खन १ तोले, मिश्री ६ माशे और शहद ३ माशे—इन सबको मिला कर पीने से दस्तों द्वारा ख़ून गिरना बन्द हो जाता है।

(१६३) आधा पाव दही में १ तोला शहद मिला कर पीने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१६४) ईसबगोल की भूसी ३ माशे, शक्कर ३ माशे—दोनों को मिला कर आधा पाव शर्बत या शीतल जल के साथ सेवन करने से बहुत पुराने ख़ून के दस्त भी आराम हो जाते हैं।

(१६५) आम के पत्ते, आमले के पत्ते और बबूल के पत्तों का दो-दो माशे स्वरस निकाल कर, उसमें ६ माशे शहद मिला कर सेवन करने से सब तरह के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६६) धनिया, कासनी, आमले, गुलाब के फूल, छोटी इलायची, ईसबगोल की भूसी और मिश्री—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा जवान को २ माशे की है। सवेरे, शाम और दोपहर को एक-एक मात्रा दवा जल से खा जाने से आँव और ख़ून के दस्त निश्चय ही आराम हो जाते हैं। साथ ही पेशाब की जलन, पेशाब का लाल होना, पेट जलना और जी घबराना प्रभृति शिकायतें भी मिट जाती हैं। परीक्षित है।

(१६७) ईसबगोल चार माशे, आधा पाव दूध और आधा पाव जल में पकाओ। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, उसमें थोड़ी, मिश्री डाल कर खाओ। इससे ख़ून के दस्त, प्यास और दाह आदि मिटते हैं। यह खीर अत्यन्त वीर्यवर्द्धक और स्तम्भक है। इससे खूब रुकावट और धातु-पुष्टि होती है।

आमातिसार या पेचिश की चिकित्सा

आमातिसार में करीब-करीब वही लक्षण होते हैं, जो प्रवाहिका में होते हैं। प्रवाहिका के वर्णन में हम इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिख आये हैं और आगे भी लिखा है। वहाँ पढ़ लेना चाहिए। इस बीमारी की चिकित्सा में संचित मल को निकाल देना अच्छा है। अगर रोगी कमज़ोर न हो, तो दो तोले अरण्डी का तेल गरम दूध में अथवा सोंठ के काढ़े में मिला कर दे दो। इससे मल निकल कर पेट साफ हो जायगा और फिर साधारण धारक दवा देने से भी आराम हो

जायगा। इस रोग में प्रवाहिका की तरह मरोड़े चल-चल कर दस्त होते हैं, दस्त जाते समय कांखना होता है और वहीं बैठे रहने को मन चाहता है। नाड़ी तेज चलती है, ज्वर भी हो जाता है, तथा जीभ पर सफेद थर जम जाता है। आमातिसार में बड़ी आंतों में सूजन हो जाती है, अस्तर लाल हो जाता है और घाव पड़ जाते हैं, जिससे पहले ख़ून और आंव पड़ते हैं तथा पीछे पीव आती है। अगर यह रोग २१ या ३१ दिन तक रह जाय, तो फिर पुराना कहलाता है। पुराना रोग बड़ी कठिनाई से जाता है।

इस रोग का इलाज हाथ में लेकर पहले रोगी का पेट देखो कि सूजन है या नहीं। दबाने से जहाँ दर्द हो, वहाँ सूजन समझो और वहाँ सेक करो। जरूरत हो, तो राई का पलस्तर धरो। इस रोग में अरण्डी के तेल का जुलाब, आरम्भ में देना बहुत ही हितकर है। अफ़ीम इस रोग में अक्सीर है, पर अरण्डी के तेल से मल निकाल कर पीछे उसका देना उचित है। अनेक वैद्य अरण्डी के दो तोले तेल में दो तोले 'शर्बत सन्तरा' मिला कर भी देते हैं। इससे भी संचित मल निकल जाता है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(१६८) धनिया ४ माशे, सोंठ ४ माशे, नागरमोथा ४ माशे, सुगन्धबाला ४ माशे और बेलगिरी ४ माशे—इनको एकत्र पीस कर ३० तोले जल में पकाओ। जब ८ तोले जल रह जाय, उतार कर छान लो। इन काढ़े से आम पच जाता है। परीक्षित है।

(१६९) शहद के साथ हरड़ सेवन करने से, गुदा का शूल-समेत आमातिसार आराम होता है।

(२००) अफ़ीम, शुद्ध कुचला और सफ़ेद मिर्च—इन तीनों को बराबर-बराबर ले कर और महीन पीस कर, खरल में डाल, अदरख का रस दे-दे कर घोटो। जब घुट जाय, गोलमिर्च के समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड़ के साथ मिला कर सेवन करने से आम और मरोड़ी के दस्त या पेचिश, ये फौरन आराम हो जाते हैं। इस नुसख़े से पेट वग़ैर: नहीं फूलता और पुराने-से-पुराना भयानक अतिसार चार-पाँच गोलियों से आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२०१) पाढ़ की जड़ का काढ़ा पीने से आंव और मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२०२) चिरचिरे की जड़ जल में घिस कर पीने से आंव और मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२०३) पीपल और हरड़ पीस कर फाँकने और ऊपर से गरम जल पीने से पाख़ाना साफ होता है और आमातिसार की मरोड़ी मिट जाती है। परीक्षित है।

(२०४) जावित्री २ या २।। माशे पीस कर दही की मलाई या दही में मिला कर खाने से, सात दिन में, भयानक-से-भयानक आमातिसार एवं अन्य प्रकार के अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०५) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, हींग, कुड़े की छाल और चीता—इन छहों का काढ़ा बना कर पीने से आमातिसार नष्ट हो जाता है।

☛ नोट—इन्हीं छहों दवाओं को कूट-पीस-छान कर, चूर्ण बना लो। गरम जल, शराब अथवा धान की काँजी के साथ इस चूर्ण के सेवन करने से भोजन पच कर आमातिसार नष्ट हो जाता है।

(२०६) धनिया दो तोले ले कर काढ़ा बनाओ और मिश्री मिला कर पी जाओ। इससे पेचिश में अवश्य लाभ होता है।

(२०७) धनिया २ तोले और सौंफ २ तोले—दोनों को घी में भूँज कर, २ तोले मिश्री मिला दो और दिन में ३-४ बार छह-छह माशे फाँको। ऊपर से जरा-सा जल पी लो। इस नुसख़े से आमातिसार, पेचिश, भीतरी जलन और मामूली खाँसी—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२०८) सौंफ को जरा भून कर और उसमें बराबर की मिश्री मिला कर, दिन में ४-५ बार फाँकने से आँव और मरोड़े के दस्त आराम होते हैं। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। परीक्षित है।

(२०९) चिरचिरे के बीजों को पानी के साथ भाँग की तरह पीस कर लुगदी-सी बना लो और उसे चावलों के धोवन में घोल कर पी जाओ। इससे भी पेचिश और मरोड़ी नष्ट होती है। परीक्षित है।

(२१०) अफ़ीम, जायफल, लौंग, केसर और कपूर—सब बराबर-बराबर ले कर, जल के साथ घोट कर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। हर बार सवेरे-शाम एक-एक गोली, गरम जल के साथ लेने से आमराक्षसी, आमातिसार और हैजा—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२११) पीपल और हरड़ का चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गरम जल पीने से आमातिसार की पीड़ा मिट जाती है। परीक्षित है।

(२१२) पीपल, मँजीठ, नागरमोथा और काकड़ासिंगी—चारों समान-समान कर ले चूर्ण बना लो। एक या दो माशे चूर्ण 'शहद' में देने से बालकों का क्षतिसार, ज्वर, खाँसी और वमन नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(२१३) पीली हरड़ का छिलका, सोंठ मरोड़फली और सेंधा नमक— चारों बराबर-बराबर ले कर, कूट-छान कर रख लें। मात्रा ८ माशे। दिन में दो-तीन बार गरम पानी से लेने से आमातिसार और रक्तातिसार मिट जाते हैं।

(२१४) सौंफ के पानी में गेहूँ का आटा भिगो कर सानो और रोटी बना कर खाओ। इससे पेचिश में बहुत फ़ायदा होता है।

(२१५) ख़सख़ास के बीज महीन पीस कर और दही में मिला कर खाने से आंव या मरोड़े के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२१६) गाय के माठे में सोंठ, सेंधानोन और काली मिर्च पीस कर मिलाने और पी जाने से पेचिश या आमातिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१७) गुड़ चार तोले और सोंठ दो तोले— इन दोनों को पीस-कूट कर मिला दो। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। इसके सेवन से पेचिश या आमातिसार आराम होता है।

(२१८) आम की छाल उतार कर, उसके ऊपर की काली-काली छाल फेंक दो और भीतर की पीली-पीली छाल ले लो। इस छाल को पानी में घिस कर और ज़रा-सा जल मिला कर पियो। इस दवा से ३ दिन में पेचिश या आम-मरोड़े के दस्त आराम हो जाते हैं।

☛ नोट—इस दवा को जल में घोलते ही पी जाना चाहिए। देर करने से जम जाती है; फिर पीने लायक़ नहीं रहती। बहुत क्या—एक सेकण्ड में ही ख़राब हो जाती है।

(२१९) फालसे की जड़ जौ-कुट करके, रात के समय, एक हाँड़ी में भिगो दो। सवेरे उसे मल-छान कर, उसका लुआब निकाल लो। एक तोला 'साबत ईसबगोल' फांक कर, ऊपर से इस फालसे की जड़ के लुआब को पी जाओ। इससे पेचिश ५-६ दिन में फ़ौरन आराम हो जाती है।

(२२०) साफ अफ़ीम और साफ चूना बराबर-बराबर ले कर, मसूर या कालीमिर्च के दाने के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली जल के साथ निगल जाने से आमातिसार या सादिक ज़हीर यानी पेचिश आराम हो जाती है। परीक्षित है।

☛ नोट—एक बार इस नुसख़े से हमने एक असाध्य रोगी को आराम किया है। कितनी ही दवाएँ देकर जब हार गये, शेष में निराश होकर यही गोली दी। इससे रोगी की आँतों का सड़ा हुआ मल निकल गया और रोगी को चैन आ गया। जिस रोगी को क्षण-भर चैन न पड़ता था, वह एक दस्त होते ही सुख से सो गया; एक दस्त में कोई दो-अढ़ाई सेर मवाद निकाला।

(२२१) साढ़े चार माशे खजूर पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२२) अनार की पत्तियाँ पीस कर और एक प्याले जल में घोल कर पीने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२३) क़तीरा रात को पानी में भिगो कर और सवेरे ही चीनी मिला कर पी जाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२४) लिसोढ़े की कोपलें पीस कर, गोली-सी बना कर, खाते जाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२५) सुपारी की राख दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२६) सफ़ेद ज़ीरा पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

☛ नोट—सफ़ेद ज़ीरा भूँज कर और दही में मिला कर खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(२२७) माजू ४ भाग, अफ़ीम २ भाग और अजवायन १ भाग—इन सब को कूट-छान कर, चने-समान गोलियाँ बना कर, रोज़ सवेरे १ गोली खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२८) पिसी हुई मुल्तानी मिट्टी, बिहीदाने और ईसबगोल के लुआब में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

पहले बिहीदाना १ तोला और ईसबगोल १ तोला ला कर, कोरी हाँड़ी में रात को भिगो दो। सवेरे रेज़ी के कपड़े में मल-छान कर लुआब निकाल लो। पीछे उसमें ६ माशे मुलतानी मिट्टी मिला कर पी जाओ। परीक्षित है।

(२२९) मुण्डी और सोंफ बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, फिर दोनों के वज़न के बराबर मिश्री मिला कर, जल के साथ, सेवन करने से आमातिसार आराम होता है।

(२३०) सुहागे की खील २ माशे, शुद्ध शिंगरफ १ माशे और शुद्ध अफ़ीम ४ रत्ती—सब को जल के साथ खरल कर, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। हर दिन सवेरे-शाम एक-एक गोली जल के साथ सेवन करने से आमातिसार या बिना आम का अतिसार दोनों आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२३१) बेल के कच्चे फल को आग में भून कर खाने से दस्त और मरोड़ी आराम होते हैं।

(२३३) बेलगिरी और आम की गुठली की मींगी—दोनों समान-समान ले कर पीस-छान लो। इसमें से ४ माशे चूर्ण शीतल जल या चावलों के माँड़ के साथ सेवन करने से आमातिसार और ऐंठन आराम होते हैं।

☛ नोट—बेलगिरी और अदरख—दोनों समान-समान ले कर पीस लो। पीछे खाँड़ की चासनी में मिला कर अवलेह बना लो। ऊपर से ज़रा-सी छोटी इलायची पीस कर मिला दो। इस अवलेह से आमातिसार के कारण बन्द हुई भूख खुल जाती है।

(२३३) बेल की जड़ और सौंफ चार-चार माशे ले कर, पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाकी रहे, तब उतार कर छान लो। फिर इसमें डेढ़ तोला मिश्री डाल कर पी जाओ। इससे आम, शूल और ज्वरातिसार आराम होते हैं।

(२३४) यदि आमातिसार में मल थोड़ा-थोड़ा और दिक्कत से निकले और मरोड़ी हो, तो बड़ी हरड़ का बक्कल ४ माशे, दाख ४ माशे, सौंफ ४ माशे और गुलाब के फूल ४ माशे—इन सबको १ पाव जल में औटा कर, चौथाई पानी रहने पर मल-छान कर पिलाओ। इससे कोठा हल्का हो जाता है।

(२३५) छोटी हरड़ ४ माशे और छोटी पीपल ४ माशे—दोनों को एकत्र कर, १ छटाँक जल में पीस कर, कुछ गरम करके पीने से एकाध दस्त साफ आ जाता है। आमातिसार वाले को आरम्भ में यह नुसख़ा देने से लाभ होता है।

(२३६) धनिया, सोंठ, कच्ची बेलगिरी, ख़स और नागरमोथा—इनका काढ़ा शूल-युक्त आमातिसार को नष्ट करता तथा ज्वर को भी आराम करता है। यह दीपन और पाचन है। परीक्षित है।

(२३७) पीपल, पीपरामूल, गजपीपर, चीता, सोंठ, अतीस और काला नमक—इन सबको मिला कर २ तोले ले लो। पीछे कूट-पीस कर ज़रा-सी भुनी

हींग मिला दो और सेवन करो। इससे एकाध दस्त हो कर आम और पेट का दर्द शान्त होता है।

☛ नोट—(क) अगर पेट में पीड़ा या अफारा हो, तो उत्तम हींग, सेंधा नमक, पीपल का चूर्ण, कालीमिर्च का चूर्ण और सोंठ का चूर्ण—समान भाग लेकर, जल डाल कर एकत्र पीसो और पेट पर लेप कर दो। इस उपाय से पेट का अफारा और पीड़ा निश्चय ही शान्त हो जाती है। ज़रूरत पड़ने से इस लेप को अवश्य लगाना चाहिये। अनेक बार देखा जाता है कि इसलेपसे रोते रोगी हँसने लगते हैं।

अथवा

☛ (ख) अलसी की पतली पुल्टिस में ज़रा-सा कपूर डाल कर पेट पर बांधो। इससे शूल, अफारा और वेदना—सब उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

(२३८) २० माशे मरोड़फली पानी में भिगो कर और मल कर खिलाने से पेचिश आराम होती है।

(२३९) कालीज़ीरी ४ तोले, हरड़ ४ तोले और हालों १ तोला—इन सबको 'घी' में भून कर पीस लो। उधर खाँड़ की चाशनी बना कर उस पिसे मसाले को चाशनी में मिला दो और ऊपर से ६ माशे मस्तगी भी मिला कर रख दो। ख़ूराक २ तोला। रोज सवेरे-शाम सेवन करने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२४०) कीकर का गोंद, ईसबगोल, तुख्म-रिहाँ और निशास्ता—सबको समान भाग ले कर, पीस-कूट कर रख लो। मात्रा—२ से ४ तोले तक। पेचिश पर मुफ़ीद है।

☛ नोट—ईसबगोल को छोड़ कर और सबको कूटो-पीसो। ईसबगोल सदा साबत ही काम में लिया जाता है; यह कूटा-पीसा नहीं जाता। तुख्म-रिहाँ काली तुलसी के बीजों को कहते हैं।

(२४१) छोटी हरड़ और सौंफ—दोनों को 'घी' में भून कर पीस लो और मिश्री मिला कर १ तोला रोज़ खाओ। यह नुसख़ा पेचिश के लिये मुफ़ीद है।

(२४२) बेलगिरी १ तोला, कुरैया की छाल २ तोले, सौंफ १ तोले, छोटी हरड़ १ तोले, ईसबगोल ६ माशे और मिश्री ३ माशे—ये सब लेकर रखो। सबसे पहले ३ तोले हरड़ 'घी' में भून लो। ईसबगोल को छोड़ कर, ऊपर की सब दवाओं को कूट-पीस लो। इसके बाद घी में भुनी हरड़ को पीस कर उन्हीं में मिला दो। शेष में ईसबगोल को मिला दो। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। सवेरे-

शाम खाने से आम और खून के दस्त, मरोड़ी और पेचिस--ये रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(२४३) सोंठ का चूर्ण ५ तोले लेकर, उसे 'घी' में सान कर गोला बनाओ। उस गोले पर अरण्डी के पत्ते लपेट कर डोरा बाँधो। इसके बाद उस पर दो-दो अंगुल मिट्टी चढ़ाओ और सुखा लो। शेष में उसे जंगली कण्डों की आग में पकाओ। जब पक जाय, निकाल लो। मिट्टी और पत्ते अलग कर, भीतर से सोंठ को निकाल कर रख लो। इस सोंठ के चूर्ण में से ४ या ६ माशे ले कर, उसमें मिश्री मिला लो और सवेरे-शाम खाओ। इस पुटपाक से आमातिसार निश्चय ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

☛ नोट—शुण्ठी-पुटपाक की विधि हम उधर लिख आये हैं। सिर्फ लपेटने के पत्तों में भेद है, और सब एकही बात है। आमातिसार या पेचिश वालों के लिए यह पुटपाक रामबाण है।

प्रवाहिका की चिकित्सा

☛ नोट—आमातिसार, आमाशय या प्रवाहिका को साधारण लोग पेचिश या आँवलोही या मरोड़ों के दस्त कहते हैं। इन सबमें ध्यान देने योग्य अन्तर है। प्रवाहिका के सम्बन्ध में उधर हिदायतें लिख आये हैं; पर हम डाक्टरी और यूनानी मत का दिग्दर्शन कराना भूल गये और उक्त दोनों मतों की हिदायतें चिकित्सक के लिये हैं बड़ी लाभदायक। डाक्टर-हकीमों ने प्रवाहिका के सम्बन्ध में बहुत-सी नयी-नयी और उपयोगी हिदायतें बड़ी खोज से लिखी हैं, जो हमारे वैद्यक-शास्त्र में नहीं हैं। नौसिखिये वैद्यों को उन हिदायतों को खूब समझ कर, उनके अनुसार काम करना चाहिये। उनसे उन्हें चिकित्सा में अवश्य बड़ी सहायता मिलती है।

□ प्रवाहिका पर वैद्यक, हिकमत और डाक्टरों की हिदायतें □

इस रोग में मल के साथ थोड़ा-थोड़ा कफ निकलता है। पहले बदबूदार, चिकना और चिपका हुआ कफ मिला मल निकलता है, पीछे खून भी आने लगता है। इसके बाद ज्वर, प्यास, भूख न लगना, ऐंठनी चलना प्रभृति लक्षण नज़र आते हैं। पाख़ाने जाते समय बारम्बार काँखना पड़ता है। इसी से इसे 'प्रवाहिका' कहते हैं।

खुलासा यों समझिये कि पेट में ऐंठनी हो कर जो बारम्बार सादा या गुलाबी रंग का आम-मिला दस्त होता है, उसी को 'प्रवाहिका' कहते हैं। इसमें

जब आम के साथ ख़ून आता है, तब इसे 'रक्त-प्रवाहिका', कहते हैं। हिन्दी में 'आम-रक्त' (आमलेही के दस्त), बंगभाषा में 'आमाशय', या 'रक्तामाशय', अँग्रेजी में 'डिसेन्ट्री' और हिकमत में 'पेचिश' कहते हैं। जब रक्त या खून ज्यादा आता है तब 'रक्तातिसार' कहते हैं। रक्त-प्रवाहिका में गुदा के ऊपर आँतों में अनेक घाव हो जाते हैं; इसी वजह से आम के साथ ख़ून गिरता है। किसी-किसी रोगी को पहले कई दिन क़ब्ज़ रहता है। उसके बाद यह रोग उत्पन्न होता है। किसी-किसी को पहले साधारण अतिसार के समान पतले दस्त हो कर पीछे खाली आँव गिरता है। ३-४ दिन आँव-मिला दस्त होने के बाद, आँव के साथ ख़ून भी दिखाई देता है और क्षण-क्षण में आँव और लोहू दस्त में आती है, पेट में ऐंठन होती है, दस्त जाते समय ज़ोर करना पड़ता है और यही दिल चाहता है कि बैठे रहें। इसके पहले दर्जे में पतले दस्त मरोड़ी दे कर आते हैं। दूसरे दर्ज़े में आँव और ख़ून के दस्त आते हैं। तीसरे दर्ज़े में हरे, पीले और स्याह दस्त आते हैं, भूख नष्ट होती चली जाती और रोगी कमज़ोर हो जाता है।

नोट—आमातिसार छोटी आँत में और प्रवाहिका स्थूल आँत में होती है, आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रव पदार्थ अपक्व मल के साथ निकलते हैं, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या ख़ून-मिला कफ निकलता है। जाहिरा दोनों समान ही मालूम होते हैं; पर दोनों में यह विशेष अन्तर है।

कभी-कभी आम के साथ थोड़ा-थोड़ा या ज्यादा ज्वर आता है, नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है और जीभ के ऊपर सफ़ेद मलाई-सी जम जाती है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता है त्यों त्यों आँव और ख़ून ज्यादा-ज्यादा गिरते हैं। साथ ही, ऐंठन और पीड़ा भी बढ़ने लगती है। आरम्भ में बड़ी आँतों में सूजन होती है; इसी से उनकी तह लाल हो जाती है और पीछे लम्बे-लम्बे या गोल-गोल घाव हो जाते हैं। आँव और ख़ून के पुराने होने के बाद पीप गिरने लगती है।

इसका इलाज प्रायः अतिसार की तरह ही किया जाता है; लेकिन कभी-कभी इसका ख़ास इलाज भी किया जाता है। हमने उधर आमातिसारः रक्तातिसार और पेचिश पर नुसख़े लिखे हैं। फिर भी, पाठकों के सुभीते के लिये, खास-खास नुसख़े आराम करने वाले फिर लिखते हैं। प्रवाहिका के इलाज में भी पक्व और अपक्व का विचार, अतिसार के लक्षणों के अनुसार करना होता है।

अगर पहले अत्यन्त क़ब्ज होकर रोग हुआ हो, या मल-परीक्षा करने पर आँव के साथ मल की छोटी-छोटी कड़ी गाँठें नजर आयें, तो पहले रोगी को साफ़

अरण्डी का तेल २ तोले, थोड़े गरम दूध में दो। जब जमा हुआ कठिन मल निकल जायगा, तब मामूली धारक औषधि से आराम हो जायगा।

अगर साधारण उपाय करने से लाभ न हो, दस्त ज़ोर से होते रहें, ज्वर हो, नाड़ी तेज़ी से चलती रहे और दर्द हो, तो समझो कि आँतों में अभी तक सूजन और घाव हैं। उस दशा में 'कुटजाष्टक क्वाथ' दो।

अनार के पत्तों का या अनार के कच्चे फल का रस अथवा कुरैया की छाल का काढ़ा इस रोग में बहुत अच्छा है; पर रोग के आरम्भ में कुरैया की छाल न देनी चाहिये।

पेट का दर्द आराम करने के लिए तारपीन का तेल पेट पर मलना चाहिये।

तीन माशे मैगनेशिया, एक छटाँक सौंफ के अर्क़ में घोल कर, चार-चार घण्टे के अन्तर पर, ३-४ बार सेवन कराने से २-३ दस्त हो जायेंगे और पीछे रोग जल्दी आराम होगा। यह उपाय आज़मूदा है।

इस रोग में, यानी आमातिसार, आमाशाय, रक्तातिसार, रक्तामाशय अथवा प्रवाहिका रोग में रेंडी के तेल का जुलाब अमृत का काम करता है।

छोटी हरड़ या सोंठ २ तोले ले कर काढ़ा बना लो। काढ़ा हो जाने पर, उसमें अरण्डी का तेल दो तोले मिला कर पिला दो। इस उपाय से बहुधा यह रोग आराम ही हो जाता है, बशर्ते कि रोग के शुरू होते ही यह उपाय किया जाय। इससे मल निकल जाता है, दस्त साफ हो जाता है और ऐंठनी बन्द हो जाती है। अगर एक दिन अरण्डी का तेल देने से मल न निकले, तो एक दिन बीच में दे कर फिर अरण्डी का तेल दे सकते हो। पर ध्यान रहे कि सोंठ के काढ़े में रेंडी का साफ़ तेल देने से वायु नष्ट हो कर दस्त साफ होता है।

आमातिसार, रक्तातिसार या प्रवाहिका अथवा पेचिश वाला स्नान न करे, हवा या सर्दी में न रहे, खाट पर आराम से पड़ा रहे। इन रोगों के रोगियों को दूध-चावल या दाल का पानी देना चाहिये। पुराने रोग में अगर ज्वर आदि न हों, तो भैंस का दही या माठा देना अच्छा है।

आमाशय या आमातिसार में अफ़ीम बड़ी उपकारी चीज़ है। हिंग्वाष्टक चूर्ण के साथ गेहूँ के एक दाने-बराबर अफ़ीम मिला कर रात को खा कर सो जाने से बहुत लाभ होता है; लेकिन अरण्डी के तेल द्वारा मल निकाल कर रोगी को अफ़ीम देनी चाहिये। बिना अरण्डी का तेल दिये अफ़ीम देना हानिकारक है, क्योंकि अफ़ीम उल्टे मल को रोकती है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(२४४) बेलगिरी, गुड़, लोध, तेल, और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र करके अवलेह बनाओ। इससे प्रवाहिका तत्काल नष्ट होती है।

(२४५) धाय के फूल, बेर के पत्ते, कैथ का रस, शहद और लोध—इन सबको मिला कर, दही के साथ सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट हो जाती है।

(२४६) तेल, घी, दही, शहद, मिश्री, सोंठ का चूर्ण और राल—इन सबको एकत्र करके पीने से प्रवाहिका आराम हो जाती है।

(२४७) पीपल या कालीमिर्चों का कल्क, दूध के साथ पीने से बहुत दिनों की प्रवाहिका तीन दिनों में आराम हो जाती हैं।

(२४८) 'कुटजावलेह' के सेवन से प्रवाहिका में बड़ा उपकार होता है। इसके बनाने की विधि पहले लिख आये हैं।

(२४९) सफेद राल और मोचरस—प्रत्येक चार-चार रत्ती ले कर, एकत्र पीस कर, दूध के साथ तीन-तीन घण्टे पर देने से प्रवाहिका में ख़ूब जल्दी फायदा होता है। परीक्षित है।

(२५०) कुड़े की जड़ की छाल १ तोला और अनार के फल का छिलका १ तोला—दोनों का काढ़ा बना लो। शीतल हो जाने पर, उसमें ६ माशे 'शहद' मिला कर सेवन करने से आंव-ख़ून के दस्त या प्रवाहिका सहज में आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२५१) कच्ची इमली के पेड़ की छाल दो माशे ले कर घोल या माठे के साथ पीस कर, दिन में २-३ बार सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट होती है।

(२५२) कुरैया की छाल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सुगन्धबाला, मोचरस, बेलगिरी, अतीस और अनार का बक्कल—प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर आधा सेर जल में पकाओ। आध पाव पानी रहने पर उतार लो। इसको दिन में तीन बार पीने से ज्वर-सहित या ज्वर-रहित आमरक्त और रक्तातिसार आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५३) बेल का कच्चा गूदा और मिश्री आम-रक्त की उत्तम दवा है। अगर ख़ून ज्यादा गिरता हो, तो इसमें २ माशे नागकेशर मिला दो। परीक्षित है।

☛ नोट—बेल का गूदा, गुड़ और दही में देने से आमातिसार निश्चय ही शान्त हो जाता है।

(२५४) मोचरस और नागकेशर प्रत्येक दो-दो माशे लेकर, ६ माशे शहद में मिला कर देने से आमरक्त या रक्तातिसार में बहुत ख़ून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२५५) गाय के दूध में उतना ही जल मिला कर औटाओ। जब दूध मात्र रह जाय, मिश्री मिला कर पियो। इससे रक्तपित्त और प्रवाहिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

(२५६) सफ़ेद राल का चूर्ण और चीनी समान-समान ले कर मिला लो। इसमें से दो-दो माशे चूर्ण, दिन में २-३ बार खाने से बहुत लाभ होता है। आमातिसार या प्रवाहिका पर परीक्षित है।

(२५७) जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, लौंग १ तोला, मोचरस १ तोला, बड़ की कोंपल १ तोला, अफ़ीम ६ माशे और शुद्ध शिंगरफ १ तोला— इन सबको पोस्त के छिलकों के काढ़े में घोट कर मटर-समान गोलियाँ बना लो। दिन में तीन-चार दफ़े एक-एक गोली, मिश्री के शर्बत या मिश्री-मिले चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से पुराना अतिसार, प्रवाहिका, और संग्रहणी प्रभृति रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५८) बेलगिरी १ तोला, आध पाव बकरी के दूध और पाव-भर जल में पकाओ। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, उसे कपड़े में छान, थोड़ी मिश्री मिला कर पी जाओ। इससे रक्तातिसार और प्रवाहिका आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५९) एक तोला तुलसी के पत्तों के रस में ज़रा-सी मिश्री डाल कर, सन्ध्या समय सेवन करने से पुराना आमाशय और रक्तामाशय या प्रवाहिका आदि रोग आराम हो जाते हैं।

(२६०) सेमल के फूल के ऊपर के बक्कल को, रात के समय जल में भिगो कर, सवेरे, उस जल को छान कर, उसमें ज़रा-सी मिश्री डाल कर पीने से रक्तातिसार, प्रवाहिका, मलबद्धता और शूल आदि उपद्रव-युक्त आमाशय आराम होता है।

शोकातिसार और भयातिसार की चिकित्सा

शोकातिसार और भयातिसार के लक्षण वातातिसार की तरह होते हैं। इन अतिसारों में रोगी का शोक दूर करना और उसे तसल्ली देना उचित है एवं वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

अत्यन्त शोक होने से शोकातिसार पैदा होता है। उसी तरह अत्यन्त भय लगने से भयातिसार होता है। इनमें चिरमिटी की तरह लाल ख़ून-मिला मल निकलता है, अथवा केवल ख़ून गिरता है। अगर ख़ून के साथ मल होता है, तो उसमें बड़ी बदबू आती है और ख़ाली ख़ून होता है, तो उसमें गन्ध नहीं आती। अगर रोगी का शोक या भय दूर न किया जाय, तो आराम होना अतीव कठिन है। इसकी चिकित्सा वातातिसार के समान की जाती है। फिर भी यहाँ एक नुसख़ा लिखे देते हैं।

(२६१) पिथवन, बरियारा, बेलगिरी, नीलकमल, सोंठ, धनिया, वायविड़ङ्ग, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, अम्बष्टा और कुरैया की छाल—इन सबको बराबर-बराबर दो-दो या अढ़ाई-अढ़ाई माशे ले कर, एक कोरी हाँडी में, काढ़े की विधि से, काढ़ा बना कर छान लो। शेष में, कालीमिर्च पीस कर और मिला कर पी जाओ। इससे शोकातिसार नष्ट होता है।

छर्द्यातिसार (कय के साथ दस्त) की चिकित्सा

(२६२) आम की गुठली की गिरी १ तोला और बेलगिरी १ तोला—इन दोनों के काढ़े में शहद और मिश्री मिला कर पीने से भयंकर छर्द्यातिसार यानी वमन-वाला अतिसार आराम होता है।

☛ नोट—आधा सेर जल में काढ़ा बनाओ। जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय, उतार कर शीतल करो; और मल-छान कर उसमें ६ माशे शहद और ३ माशे मिश्री मिला कर पी लो।

(२६३) भुने हुए मूँगों के काढ़े में खील, शहद और मिश्री मिला कर पीने से वमन, अतिसार, ज्वर, प्यास, दाह और भ्रम—ये सब नष्ट होते हैं।

(२६४) फूलप्रियंगू, रसौत और नागरमोथा—इनके चूर्ण में शहद मिला कर, चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से प्यास, अतिसार और वमन—ये सब नष्ट होते हैं।

(२६५) बेलगिरी और गिलोय—प्रत्येक चार-चार माशे ले कर पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाक़ी रहे, उतार कर छान लो। इस काढ़े से वमन और अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

विष, कीड़े या बवासीर की चिकित्सा

• कल्याण अवलेह •

(२६६) मिश्री, धाय के फूल, लोध, पाढ़, स्योनाक, पीपल, मंजीठ, मोचरस और कमल-केसर—इनको बराबर-बराबर लेकर अवलेह बना कर सेवन करने से विष, बवासीर और कृमि-दोष से पैदा हुए अतिसार आराम होते हैं। इसका नाम 'कल्याण अवलेह' है।

अजीर्ण-जन्य अतिसार की चिकित्सा

(२६७) एक तोले जायफल को पीस कर, गुड़ में मिला कर, तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो। आध-आध घण्टे में एक-एक गोली खा कर, ऊपर से गरम जल पीने से अजीर्ण या बदहज़मी से हुए दस्त अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—नीबू के रस में जायफल घिस कर चाटने से दस्त साफ़ हो जाते हैं।

(२६८) चूने के पानी में मिश्री मिला कर पिलाने से बदहज़मी या भारी चीज़ खाने से हुए दस्त आराम हो जाते हैं।

(२६९) कपूर, अजवायन का फूल और पिपरमिन्ट का फूल—इन तीनों को बराबर-बराबर ले कर एक साफ शीशी में रख दो। बारह घण्टों में ये गल कर पानी हो जायेंगे। इसको 'अमृतधारा' या 'सुधाधारा' कहते हैं। इसकी ८-१० बूंद चीनी में देने से अजीर्ण के दस्त आराम हो जाते हैं। गृहस्थों के लिये यह अमृत है।

नाभि सरक जाने के कारण से हुए अतिसार की चिकित्सा

(२७०) नकछिकनी की राख १ तोला, अजवायन १ तोला और सोंठ १ तोला—इन तीनों को पीस-कूट और छान कर, इसमें ३ तोले पुराना-गुड़ मिलाओ और जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली १ माशे 'घी' के साथ खाने से नाभि टलने से हुए दस्त फौरन बन्द हो जाते हैं।

(२७१) फिटकरी १ तोला और माजूफल १ तोला—इन दोनों को महीन पीस, सिरके में मिला, नाभि पर लगा, ऊपर से कपड़े की पट्टी कस कर बाँध दो, तो नाभि टलने से हुए दस्त आराम हो जायँगे।

जमालगोटा खाने से हुए दस्तों का इलाज

(२७२) तीन माशे कतीरा पीस कर और दही में मिला कर खाने से जमालगोटे के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२७३) पिसी हुई सुपारी ३ माशे, दही में मिला कर खाने से जमालगोटे के खाने से हुए दस्त मिट जाते हैं।

शोथातिसार की चिकित्सा

(२७४) पुनर्नवा, इन्द्रजौ, पाढ़, वेलगिरी, अतीस, नागरमोथा और कालीमिर्च—इनका काढ़ा पीने से शोथातिसार नष्ट होता है, यानी सूजन सहित दस्तों का रोग आराम हो जाता है।

□ ज्वरातिसार नाशक नुसखे □

• उत्पलष्टक क्वाथ •

(२७५) पृश्निपर्णी, खिरेंटी, वेलगिरी, धनिया, सोंठ और कमल—इनका काढ़ा वना कर और ठण्डा करके पीने से ज्वर और अतिसार नष्ट होते हैं। इसे 'उत्पलष्टक क्वाथ' कहते हैं।

• कणादि क्वाथ •

(२७६) पीपल, गज-पीपल और खीलों का काढ़ा वना कर, शहद और मिश्री डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार और प्यास—ये सब आराम होते हैं। इसे 'कणादि क्वाथ' कहते हैं।

• नागरादि क्वाथ •

(२७७) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, चिरायता और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा सब तरह के ज्वरों और भयानक अतिसार को नष्ट करता है। इसे 'नागरादि क्वाथ' कहते हैं।

• गुडूच्यादि क्वाथ •

(२७८) गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धवाला, पाढ़, चिरायता, इन्द्रजौ, लाल चन्दन, खस और पित्तपापड़ा—इनके काढ़े में, शीतल होने पर, 'शहद' डाल कर पीने से ज्वर-सहित अतिसार, ओकारी, प्यास, दाह, अरुचि और वमन—ये सब नष्ट होते हैं।

• व्योषाद्य चूर्ण •

(२७९) त्रिकुटा, इन्द्रजौ, नीम की छाल, चिरायता, भाँगरा, चीता, कुटकी, पाढ़, दारुहल्दी, अतीस और वच—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोला लेकर, सबके बराबर ११ तोले कुड़े की छाल लो। सबको पीस-कूट कर चूर्ण कर लो। इसका नाम 'व्योषाद्य चूर्ण है। इसको चावलों के पानी या शहद के साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, कामला, संग्रहणी, गुल्म, प्लीहा, प्रमेह, पीलिया और

सूजन—ये सब आराम होते हैं। यह पाचन, मल रोकने वाला, अग्नि दीपन करने वाला, प्यास और अरुचि को नष्ट करने वाला है।

• कर्पूर रस •

(२८०) कपूर, शुद्ध शिगरफ, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल, शुद्ध अफ़ीम इन सबको बराबर-बराबर लेकर, अदरख़ के रस में घोट कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के जल के साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, संग्रहणी, अतिसार, रक्तातिसार—आराम होते हैं। परीक्षित है।

• कर्पूरादि बटिका •

(२८१) उधर पक्वातिसार में लिखी हुई 'कर्पूरादि बटिकाओं' के सेवन करने से ज्वरातिसार, केवल अतिसार, रक्तातिसार और छहों तरह की संग्रहणी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(२८२) कमल, अनार की छाल और कमल की केसर—इनका चूर्ण बना कर, चावलों के जल के साथ पीने से ज्वरातिसार नष्ट होते हैं।

(२८३) बेलगिरी, सुगन्धबाला, चिरायता, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पाचन है। इससे सूजन-सहित ज्वरातिसार नष्ट होता है।

(२८४) सोंठ, अतीस, बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पाचन है। इस काढ़े से सूजन-सहित ज्वरातिसार नष्ट होता है।

(२८५) दशमूल के काढ़े में एक तोले-भर सोंठ का चूर्ण डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार, और सूजनयुक्त संग्रहणी—ये सब आराम होते हैं।

(२८६) इन्द्रजौ, देवदारु, कुटकी और गज-पीपल—इनके काढ़े से ज्वरातिसार नष्ट होता है, विशेषकर दाह नष्ट होता है।

(२८७) गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ़ और अजवायन—इनके काढ़े से ज्वरातिसार और दाह नष्ट होता है।

(२८८) लजवन्ती, धाय के फूल, नागकेशर और नीलकमल—इनको एकत्र पीस कर, चावल के जल के साथ सेवन करने से ज्वरातिसार शान्त होता है।

☛ **नोट**—ज्वरातिसार-नाशक नुसखे एवं ज्वरातिसार के चिकित्सा-सम्बन्धी नियम '**चिकित्सा-चन्द्रोदय**' दूसरे भाग में लिखे हैं।

गुदा में जलन होने, उसके पकने और काँच निकलने की चिकित्सा

☛ **नोट**—अगर बहुत दस्त होने के कारण पित्त से, गुदा में दाह या जलन हो अथवा गुदा पक जाय, तो गुदा को दवाओं के काढ़े से धोना, अथवा उस पर दवा के काढ़े को सींचना अथवा कोई लेप करना चाहिये।

(२८६) पटोल-पत्र और मुलेठी का काढ़ा बना कर और शीतल करके उस जल से गुदा को धोना और उसी से गुदा को सींचना चाहिये।

(२९०) गुदा में दाह हो और वह पक गई हो, तो बकरी के दूध में मिश्री और शहद मिला कर पीना चाहिये और उसी से गुदा को सींचना चाहिये। परीक्षित है।

(२९१) चूहे का मांस पका कर उसका बफारा गुदा को देना चाहिये। इस बफारे से बहुत दस्तों के कारण हुआ गुदा का दर्द आराम हो जाता है।

(२९२) गेहूँ के आटे में पानी मिला कर उसे पकाना चाहिये और घी मिला कर, उसका गोला-सा बना कर, उससे गुदा पर सुहाता-सुहाता सेक करना चाहिये। इससे भी गुदा का दर्द मिट जाता है।

(२९३) अगर दस्तों के कारण काँच बाहर निकल आये, तो उस पर घी या तेल प्रभृति लगा कर उसे भीतर घुसा देना चाहिये। इसके बाद चूहे के मांस को काँजी में पका कर, उसे अरण्ड के पत्ते पर रख कर, उससे धीरे-धीरे गुदा को सेंकना चाहिये।

(२९४) घोंघे का मांस पका कर, उसमें तेल और नमक डाल कर, उससे गुदा को बफारा देना चाहिये, मगर बफारा देने से पहले गुदा पर घी मल देना चाहिये। इस उपाय से काँच निकलना फ़ौरन बन्द हो जाता है।

(२९५) चूहे की चर्बी का गुदा पर अच्छी तरह लेप करने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(२९६) गुदभ्रंश या काँच निकलने के रोग में 'चाँगेरी घृत' सर्वोत्तम है। इस घी के पीने से काँच निकलने का रोग निश्चय ही आराम हो जाता है।

बनाने की तरकीब—चौपतिया खट्टी लूनिया (चाँगेरी) ला कर उसको पीस-छान कर कपड़े में छान कर एक सेर रस निकालो। चाँगेरी का रस निकालते समय जल न मिलाओ। बेर-वृक्ष की जड़ का काढ़ा एक सेर तैयार कर लो। खट्टा दही एक सेर लाकर रख लो। सोंठ अढ़ाई तोले और जवाखार अढ़ाई तोले—दोनों को पीस कर लुगदी बना लो। पीछे एक पाव घी और ऊपर की सब चीजें कढ़ाही में डाल

कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब पकते-पकते घी मात्र रह जाय, उतार लो। यही 'चाँगेरी घृत' है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है।

नोट—घी या तेल तैयार करने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए उन सबको आगे दूसरे अध्याय संग्रहणी वर्णन में 'विशेष-चिकित्सा' के अन्तर्गत देखें।

(२९७) कमलिनी की कोपलें ला कर सुखा लो। सूखने पर कूट-पीस कर महीन कर लो। इस चूर्ण में मिश्री मिला कर खाने से कुछ दिनों में काँच निकलना अवश्य ही बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कमल और कमलिनी के पत्तों का चूर्ण मिश्री मिला कर खाने और चूहे की चर्बी का गुदा पर लेप करने या चूहे का माँस पका कर उससे गुदा को सेकने से अवश्य ही गुदा की सब शिकायतें मिट जाती हैं। अनेक बार परीक्षा करके देखा है।

(२९८) चूहा और दशमूल—इनको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बना लो और इन्हीं को बराबर-बराबर लेकर, पीस कर लुगदी भी बना लो। पीछे कढ़ाही में लुगदी रख कर, काले तिलों का तेल और काढ़ा भर दो। फिर चूल्हे पर रख कर, मन्दी-मन्दी आग पर पकाओ। तेल-मात्र रह जाने पर उतार लो और शीतल होने पर छान कर बोतल में भर लो। इस तेल के लगाने से गुदभ्रंश—काँच निकलना और भगन्दर दोनों आराम हो जाते हैं।

(२९९) अगर किसी स्त्री की काँच निकल आये, तो वह 'हुरहुज के फूल' ला कर रस निकाल ले। पीछे उसे हाथों में मल कर, गुदा के मुख पर वही हाथ रखे। तीन-चार दिन ऐसा करने से अवश्य लाभ होता है—यानी गुदभ्रंश या काँच निकलना आराम हो जाता है।

नोट—हुरहुज को सूरजमुखी का फूल भी कहते हैं। यह सदा सूरज के सामने रहता है।

(३००) पुरानी चलनी का चमड़ा जला कर, उसकी राख गुदा पर बुरकने से काँच निकलना बन्द हो जाता है। अथवा लिहसौड़े को जला कर उसकी राख गुदा पर बुरकने से लाभ होता है, पर दवा छिड़कने से पहले गुदा पर तेल लगा देना ज़रूरी है।

(३०१) अपना पेशाब एक बर्त्तन में रख लो। पीछे पाख़ाने से निपट कर उसी पेशाब से गुदा को धोओ और उसके बाद पानी से धोओ। इस तरह तीन-चार दिन करने से काँच निकलने का रोग, विशेष कर बालकों का काँच निकलना आराम हो जाता है।

☛ नोट—अतिसार-रोग में भी बहुत दस्त आने से काँच निकलने का रोग हो जाता है। पर दोनों हालतों में इलाज एक-सा ही किया जाता है। देखने में आया है, बालकों को अतिसार होने के बाद, यह रोग अक्सर हो जाता है। सूखे और कमज़ोर को यह रोग ज़्यादा होता है।

(३०२) बबूल की फली और पत्ते तथा धाय के फूल—इनको औटा कर काढ़ा बना लो। इसी काढ़े से आबदस्त लेने और इसी काढ़े में रोज़, कुछ देर बैठने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०३) आम के पत्ते, जामुन के पत्ते और इन दोनों की छाल—इनको जौ-कुट कर काढ़ा बनाओ और उस काढ़े से गुदा को धोओ। इस तरह करने से भी काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०४) अगर गुदा सूज गई हो, सूजन के कारण भीतर न जाती हो, तो गुदा पर 'गुलरोग़न' मलो और रोगी को सुहाते-सुहाते गरम जल में बैठाओ। गुलरोग़न अत्तारों के यहाँ मिलता है। परीक्षित है।

(३०५) बकरी के सुम की राख, माजू, अनार के फूल, अनार की छाल और भुनी हुई फिटकरी—इन सबको बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस और छान कर, गुदा पर बुरको। इससे काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०६) अण्डे की सफ़ेदी गुदा पर, भीतर और बाहर लगाने से गुदा की सूजन और पीड़ा शान्त होती है।

(३०७) जौ का आटा, मसूर का आटा और अण्डे की सफ़ेदी—इनको 'गुलरोग़न' में मिला कर लेप करने से गुदा की सूजन और पीड़ा वग़ैरह में निश्चय ही फ़ायदा होता है।

(३०८) अगर दस्त वाले रोगी की गुदा में जलन हो, काँच निकलती हो प्यास का ज़ोर हो, पैरों में आग-सी लगती हो, तो चनों के छिलके २ तोले, धनिया ३ माशे, सौंफ की जड़ ६ माशे और कासनी की जड़ ६ माशे—इन सबको एक बड़ी कोरी हाँडी में भर कर, ऊपर से ताज़ा पानी भर दो। इस हाँड़ी में पहले एक छेद उसी तरह कर लेना, जिस तरह कि, शिवजी के ऊपर रखे जाने वाले घड़े में करते हैं। फिर उस छेद में एक कपड़े का टुकड़ा इस तरह लगा देना कि उसमें से बूंद-बूंद पानी गिरता रहे। इस हंडिया के नीचे दूसरी हाँड़ी रख देना। नीचे की हाँड़ी में पानी बूंद-बूंद गिरेगा। उसमें से ही रोगी को जब-जब प्यास लगे, पानी पिलाना। इससे पतले दस्त, प्यास और जलन में बड़ा लाभ होता है।

□ परमावश्यक प्रश्नोत्तर □

■ **प्रश्न**—अतिसार आराम हो जाने के क्या लक्षण है ?

□ **उत्तर**—**विनोत्सर्गम्भवेन्मूत्रं तथा वायुः प्रवर्त्तते ।**
कोष्ठे लघुत्वं दीप्ताग्निर्गतस्तस्योदरामयः ।।

अगर पेशाब करते समय पाख़ाना न होता हो, अधोवायु—गुदा की हवा—खुलती हो, कोठा हल्का हो और अग्नि दीप्त हो, तो समझो कि अतिसार गया ।

वृन्द महोदय ने भी कहा है :—

दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः ।
ज्ञेयः कार्य्यो विरक्तः स तत्तद्दोषकरं पदैः ।।

अगर अतिसार-रोगी की अग्नि प्रबल और कोठा हल्का हो जाय, तो समझो कि उदर-विकार शान्त हो गया । लेकिन फिर भी कुछ दिनों तक अतिसार पैदा करने वाले और वातादि दोषों को बढ़ाने वाले पदार्थों से रोगी को अलग रखो ।

■ **प्रश्न**—(२) आमातिसार और प्रवाहिका में क्या भेद है ?

□ **उत्तर**—स्थूल दृष्टि से देखने पर, इन दोनों में बाहर से समानता मालूम होती है, पर बारीक नज़र से देखने पर विशेष अन्तर जान पड़ता है । आमातिसार छोटी आँत में होता है, किन्तु प्रवाहिका स्थूल आँत में, कफ के संचित होने से होता है । आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रवरूप पदार्थ, अपक्व या कच्चे मल के साथ निकलते हैं, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या ख़ून-मिला कफ निकलता है । जब वायु कुपित होकर स्थूल आँत की श्लेष्म-कला में संचित हुए कफ को बल-पूर्वक खींच कर मल के साथ, मल-मार्ग से निकालती है, तब कहते हैं, 'प्रवाहिका' रोग है । प्रवाहिका को अँगरेजी में 'डिसेन्ट्री' (Dysentery) कहते हैं ।

■ **प्रश्न**—(३) रक्तातिसार और रक्तार्श में क्या भेद है, ख़ासकर दस्तों में ।

□ **उत्तर**—रक्तातिसार क्षुद्र अन्त्र (आँत) में उत्पन्न होता है, किन्तु रक्तार्श गुदा की वलि या आँटे में । रक्तातिसार में प्रायः मल के साथ ख़ून गिरता है, किन्तु रक्तार्श में मल के साथ मिल कर बहुत कम गिरता है । रक्तार्श या ख़ूनी ववासीर में मल के पहले या पीछे ही ख़ून गिरा करता है । दोनों रोगों के ख़ून में अधिक अन्तर नहीं पाया जाता, पर रक्तार्श में ख़ून कुछ अधिक लाल और चमकदार होता है ।

★★

दूसरा अध्याय

संग्रहणी-वर्णन

ग्रहणी की सम्प्राप्ति

अतिसारे निवृतेऽपि मन्दाग्नेरहिताशनः ।
भूयः सन्दूषितो वह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत् ॥

अतिसार[1] के आराम हो जाने पर भी, [2]मन्दाग्नि वाले के अपथ्य सेवन करने से, जठराग्नि दूषित होकर, ग्रहणी को[3] दूषित करती है ।

खुलासा यह कि अतिसार-रोग के आराम हो जाने पर भी, अगर मन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है, बदपरहेज़ी करता है, तो जठराग्नि ख़राब हो जाती है । वही बिगड़ी हुई जठराग्नि, आमाशय और पक्वाशय के बीच में रहने वाली पित्तधरा नामक छठी कला—ग्रहणी—को बिगाड़ कर 'संग्रहणी' रोग पैदा करती है । [4]किन्तु जो मनुष्य अतिसार के आराम हो जाने पर भी दोष, और आत्मा के प्रकृतिस्थ होने तक विरेचन—जुलाब के समान परहेज़ करता है, बदपरहेज़ी नहीं करता, उसे संग्रहणी रोग नहीं होता ।

---

१. अतिसार और संग्रहणी में यही भेद है, कि अतिसार में पतली धातुएँ निकलती हैं और संग्रहणी में बँधा हुआ मल निकलता है । यह भी याद रखना चाहिये, कि संग्रहणी, अतिसार और बवासीर—इन तीनों रोगों के हेतु—कारण समान हैं ।

२. विना अतिसार हुए भी संग्रहणी-रोग हो जाता है । कोई-कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि अतिसार-रोग आराम नहीं होता कि, बीच में ही संग्रहणी रोग हो जाता है ।

३. अन्न को ग्रहण करने के कारण इसे ग्रहणी कहते हैं । ग्रहणी एक आँत है । ग्रहणी के ख़राब हो जाने से अच्छी तरह नहीं पचता—बारम्बार मिला हुआ मल गुदा से निकलता है ।

४. एक विद्वान् ने संक्षेप में इस तरह लिखा है—

षष्ठीकला पित्तधरा मता या पक्वाशयामाशयमध्यगाताम् ।
वदन्ति वैद्य ग्रहणीं प्रदुष्टां मुञ्चेदपक्वं बहुशो हि भुक्तम् ॥

अन्न का अधिष्ठान 'अग्नि' है। अग्नि अन्न को ग्रहण करती है, इसी से उसे ग्रहणी कहते हैं। यह अग्नि नाभि के ऊपर रहती और कच्चे यानी बिना पके हुए अन्न को धारण करती एवं पके हुए को नीचे गिरा देती है। ग्रहणी का बल अग्नि ही है और वह अग्नि के ही आश्रय से रहती है, इसलिये अग्नि के ख़राब होने से ग्रहणी भी ख़राब हो जाती है।

☛ **नोट**—ग्रहणी एक आँत का नाम है। इसका काम है कच्चे अन्न को ग्रहण करना और पके हुए को गुदा की राह से बाहर निकाल देना। उसी ग्रहणी नामक आँत में जब कुछ दोष हो जाता है, तब वह ग्रहणी आँत कच्चे अन्न को ग्रहण करती और बिना पकाये कच्चे को ही गुदा के बाहर निकाल देती है, यानी कच्चे दस्त होने लगते हैं।

ग्रहणी रोग के सामान्य लक्षण

जब वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष अलग-अलग या मिल कर दूषित हो जाते हैं, तब वही ग्रहणी को दूषित कर देते हैं। दूषित ग्रहणी कच्चे और पके मल को गुदा की राह से नीचे गिरा देती है। उस समय पीड़ा होने लगती है, मल कभी पतला आता है और कभी गाढ़ा आता है और उसमें बदबू आया करती है। जब ऐसे लक्षणों वाला रोग होता है, तब वैद्य उसे 'ग्रहणी'* कहते हैं।

आमाशय और पक्वाशय के बीच में छठी पित्तधरा कला है। उसे ही वैद्य ग्रहणी कहते हैं। वह कुपित हो कर खाये हुए अन्नादि पदार्थों को प्रायः कच्चा ही निकाल देती है।

'चरक' में लिखा है, कि कोठे में अग्नि के रहने का स्थान है वह अन्न को ग्रहण करता है, इसलिए उस स्थान को 'ग्रहणी' कहते हैं। यह ग्रहणी बिना पके हुए अन्न को ग्रहण करती और पके हुए को नीचे गिरा देती है। इस ग्रहणी में जो अग्नि रहती है, वह भी ग्रहणी कहलाती है। अग्नि-दूषित होने से मन्दी हो जाती है, इससे उसका स्थान—ग्रहणी भी दूषित हो जाता है।

* आमवायु संग्रह होने से 'संग्रहणी' कहते हैं। संग्रहणी ग्रहणी की अपेक्षा अधिक भयंकर रोग है।

संग्रहणी की परीक्षा के लिये जानने योग्य लक्षण

ग्रहणी कच्चे अन्न को ग्रहण करती है, इससे पीछे पेट फूल कर कच्चे दस्त होते हैं। दस्त होते ही रहें, यह नियम नहीं। कभी कुछ दिनों तक दस्त बन्द रहते हैं और फिर होने लगते हैं। कभी एक-दो दस्त होते हैं और कभी बहुत-से होते हैं। खाया हुआ अन्न पच गया हो या पच रहा हो, तब पेट फूलता है, फिर भोजन करने से शान्ति होती है। ऐसी शङ्का होती है, मानो तिल्ली बढ़ गई हो, वायुगोला हो, या छाती में कोई रोग हो। अनेक बार बारम्बार पतला या सूखा और कच्चा दस्त आवाज़ के साथ होता है। शरीर गलने और ख़ून उड़ने लगता है। अन्त में, शरीर में शोथ या सूजन हो कर प्राणी बातें करता-करता मर जाता है। अनेक बार संग्रहणी के दस्तों में राध,लोहू वगैरह भी गिरते है। मरोड़ी के दस्तों की-सी, पर उससे कुछ कम ऐंठनी होती है, पेट कटता है एवं बारम्बार दस्त होते और बन्द होते हैं।

हिकमत और डाक्टरी मत से संग्रहणी के कारण और लक्षण

हिकमत वाले संग्रहणी को 'ज़रब' कहते हैं। यह रोग पाचन-शक्ति के नाश होने से होता है। इस रोग में रोगी को बारम्वार दस्त आते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है, तब जो कुछ खाया जाता है, वह कच्चा ही गुदा द्वारा निकल जाता है।

डॉक्टरी पुस्तकों में लिखा है—संग्रहणी रोग, जिसे डाक्टर क्रॉनिक डिसेन्ट्री या क्रॉनिक डायरिया (Chronic diarrhoea) कहते हैं, अजीर्ण और अतिसार से पैदा होता है। विशेष कर, अतिसार का अच्छा इलाज न होने से यह रोग पैदा होता है। इस रोग में, कभी-कभी १०-५ दिन के लिये दस्त बन्द हो जाते हैं और फिर होने लगते हैं। जब यह रोग कुछ दिनों का हो जाता है, तब इसमें बुख़ार भी बराबर बना रहता है। इस रोग में आम-मिला हुआ मल उतरता है और दस्त होते समय आवाज़ होती है।

☛ **नोट**—कितने ही डॉक्टर लिखते हैं, भारी चीजें खाने और शरीर के दुर्बल होने से भी संग्रहणी रोग होता है।

होमियोपैथी वाले कहते हैं, इस रोग के शुरू में जो लक्षण नज़र आते हैं, पुराना होने पर वह बदल जाते हैं। स्थान बदलने अथवा जलवायु के परिवर्तन से अक्सर यह रोग चला जाता है। इस रोग के बढ़ने से, इसके साथ, और भी बहुत से रोग पैदा हो जाते हैं और रोगी के मरने की नौबत आ जाती है। होमियोपैथी वाले इस रोग में कुछ दिनों तक फॉस्फोरस सेवन कराना, रस्टक्स या पल्सेटिला देना हितकर समझते हैं।

☛ नोट—वैद्यक शास्त्र में जिसे आमातिसार कहते हैं, साधारण लोग उसे ही मरोड़ी के दस्त कहते हैं। आमातिसार और अतिसार जब पुराने हो जाते हैं, तब उन्हीं को संग्रहणी कहते हैं। असल में, ये एक ही रोग है, पर अवस्था-भेद से इनके अलग-अलग नाम हैं। मतलब यह, पुराने आमातिसार या मरोड़ी के दस्तों को संग्रहणी कहते हैं। जिन कारणों से तेज़ मरोड़ी के दस्त होते हैं, उन्हीं कारणों से संग्रहणी होती है; अथवा तीक्ष्ण मरोड़ी के दस्त मिटने पर मन्दाग्नि वाला अगर अपथ्य पदार्थ या मिथ्या आहार-विहार सेवन करता है, तो उसे दस्तों का रोग फिर हो जाता है। फिर हो जाने वाले दस्तों के इसी रोग को पुरानी मरोड़ी या संग्रहणी कहते हैं।

ग्रहणी रोग के पूर्वरूप

जब ग्रहणी रोग होने वाला होता है, तब ये लक्षण नज़र आते हैं—प्यास आलस्य, ताक़त का कम होना, अन्न पचते समय आग-सी जलना और अन्न का देर में पचना तथा शरीर का भारी होना।

ग्रहणी रोग की किस्में

(१) वातज ग्रहणी, (२) पित्तज ग्रहणी, (३) कफज ग्रहणी, (४) सन्निपातज ग्रहणी।

और भी भेद

ग्रहणी के दो भेद और भी हैं—(१) संग्रहणी, (२) घटीयन्त्र।

☛ नोट—वैद्यक-शास्त्र में ग्रहणी और संग्रहणी में बहुत थोड़ा भेद बतलाया गया है। ग्रहणी जब 'आमवायु' का संग्रह करती है, तब उसे 'संग्रहणी' या संग्रह-ग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी से संग्रहणी बहुत भयंकर है।

वातज ग्रहणी होने के कारण

कड़वे, चरपरे, कसैले, बहुत रूखे और शीतल पदार्थ खाने, संयोग-विरुद्ध भोजन करने, भोजन-पर-भोजन करने, बहुत खाने, एक भोजन के बिना पचे दूसरा भोजन करने, उपवास करने, थोड़ा खाना खाने, बहुत रास्ता चलने, मल-मूत्र आदि वेगों के रोकने और अत्यन्त मैथुन करने से वात कुपित हो कर, अग्नि को दूषित करके, वातज ग्रहणी रोग पैदा करता है।

वातज ग्रहणी के लक्षण

वादी की ग्रहणी वाले को अन्न बड़े कष्ट से पचता है और उसका पाक खट्टा होता है, शरीर खरदरा या कड़ा-सा हो जाता है, कण्ठ और मुख सूखते हैं, भूख

और प्यास लगती है, आँखों के सामने अँधेरा आता है, कानों में आवाज़ आती है, पसवाड़े, जाँघ, पेड़ू और कंधों में दर्द होता है; हैजा हो जाता है; यानी गुदा और मुँह दोनों राहों से कच्चा अन्न निकलता है, हृदय में वेदना होती है; शरीर दुबला हो जाता है; जीभ का स्वाद जाता रहता है; गुदा में कतरनी की-सी पीड़ा होती है; मीठा प्रभृति सब रसों के खाने की इच्छा होती है;मन में ग्लानि होती है; अन्न पचने के बाद पेट फूल जाता है; भोजन करने से सुख मालूम होता है; पेट में वायुगोला, हृदय-रोग और तिल्ली की आशंका होती है; वात के योग से खाँसी और श्वास क़ी पीड़ा होती है; बहुत देर में बड़े कष्ट से पतला, सूखा, थोड़ा कच्चा, आवाज के साथ झागदार मल उतरता है।

पित्तज ग्रहणी होने के कारण

चरपरे, कड़वे, दाहकारक, खट्टे औप क्षारादि पदार्थों का सेवन करने से बढ़ा हुआ पित्त, जठराग्नि को उसी तरह नष्ट कर देता है, जिस तरह गरम पानी आग को नष्ट कर देता है।

☛ **नोट**—अगर कोई शंका करे कि पित्त तो स्वयं अग्नि के गुणों-वाला है, वह अग्नि को कैसे नष्ट कर सकता है ? तो उसे यह जवाब देना चाहिये कि जिस तरह गरम जल, अग्नि के गुणों वाला होने पर भी, अग्नि को भिगो कर नष्ट कर देता है, उसी तरह पित्त भी, अग्नि के गुणों वाला होने पर भी, जठराग्नि को नष्ट कर देता है।

पित्तज ग्रहणी के लक्षण

जठराग्नि के नष्ट होने से मनुष्य पीला पड़ जाता है। उसके अजीर्ण से नीला, पीला और पतला मल उतरता है; अत्यन्त खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं; छाती और गले में जलन होती है; अन्न पर अरुचि रहती है और प्यास का ज़ोर होता है।

कफज ग्रहणी होने के कारण

भारी, अत्यन्त चिकने और शीतल आदि पदार्थ खाने, अत्यन्त मैथुन करने, भोजन-पर-भोजन करने और खाना खाते ही तत्काल सो रहने से कफ कुपित हो कर जठराग्नि को नष्ट कर देता है। उस समय ग्रहणी पैदा हो जाती है।

कफज ग्रहणी के लक्षण

कफ से जठराग्नि के नष्ट होने पर, खाया हुआ अन्न कष्ट से पचता है, हृदय में पीड़ा होती है, उबकाइयाँ आती हैं, वमन और अरुचि होती है, मुख कफ से लिहसा रहता है, मुख का स्वाद मीठा रहता है, खाँसी आती है, बारम्बार थूक निकलता है, जुकाम रहता है, छाती जकड़ी रहती है, पेट भारी और पत्थर-सा

रहता है। डकारें दूषित और मीठी-मीठी आती हैं, ग्लानि होती है, स्त्री-प्रसंग को इच्छा नहीं होती, विष्ठा पतली, कच्ची, कफ मिली हुई और भारी निकलती है, ताक़त नहीं रहती; पर शरीर पुष्ट दीखता और आलस्य बना रहता है।

त्रिदोषज ग्रहणी के निदान और लक्षण

वात की, पित्त की और कफ की ग्रहणी के जो निदान—कारण और लक्षण लिख आये हैं, वे सब निदान और लक्षण एक साथ मिलें, तो त्रिदोषज ग्रहणी समझना चाहिए।

ग्रहणी के भेद

ग्रहणी के दो भेद होते हैं—(१) संग्रहणी; (२) घटीयन्त्र।

संग्रहणी

अगर पन्द्रह दिन में, तीस दिन में, दस दिन में या रोज़ ही पतला, गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कमर की पीड़ा-समेत, कच्चा, बहुत लिबलिबा, आवाज करके और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरे, आँतें गूँजे, आलस्य हो, कमज़ोरी हो और ग्लानि हो, तो 'संग्रहणी' समझनी चाहिये। यह रोग दिन में कुपित होता और रात में शांत रहता है। संग्रहणी आम-वात के संग्रह से होती है; बहुत मुश्किल से जानी जाती है; बड़ी कठिनता से आराम होती है और बहुत समय तक रहती है।

नोट—(१) यह दिन में कोप करती और रात को शान्त रहती है। यह इस व्याधि का प्रभाव है।

(२) ग्रहणी और संग्रहणी में यही भेद है, कि जब ग्रहणी 'आमवायु' का संग्रह करती है, तब उसे संग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी की अपेक्षा संग्रहणी भयंकर है।

घटीयन्त्र

इस रोग में नींद बहुत आती है, पसलियों में दर्द होता है। जिस तरह रहँट के घड़े से पानी निकलते समय आवाज़ होती है, उसी तरह इसमें मल निकलते समय 'घग-घग' आवाज़ होती है। इसे 'घटीयन्त्र' कहते हैं। यह असाध्य ग्रहणी रोग है। इसके होने पर मरण होता है।

□ संग्रहणी रोग में पथ्यापथ्य □

अपथ्य

फस्द वग़ैर से ख़ून निकलवाना, रात में जागना, बहुत-सा पानी पीना, स्नान करना, स्त्री-प्रसंग करना, मल मूत्रादि वेगों को रोकना, नस्य सूँघना, अंजन लगाना,

पसीना निकालना, बफारा लेना, धूम्रपान करना, मिहनत करना, विरुद्ध भोजन करना, धूप या आग का सेवन करना; गेहूँ, लोबिया, उड़द, जौ, पोई, बथुआ, मकोय, मटर, तूम्बी, सहँजना, कन्द, पान, ईख, बेर, कच्चे-पके आम, ककड़ी, खीरा, सुपारी, लहसुन, धान की खील, काँजी, दूध, गुड़, दही का पानी, नारियल, कटेरी का फल, पत्तों के साग, गोमूत्र, कस्तूरी, दाख, खटाई, नमकीन रस, भारी अन्न-जल, पूआ-पूरी और मँगौड़ी—ये सब संग्रहणी वाले को त्याग देने चाहिये।

पथ्य

सोना, वमन करना, लंघन करना, पुराने साँठी चावल, खीलों का माँड़, मसूर, अरहर और मूँग का यूष, गाय के दूध का निकाला हुआ मक्खन, दही, बकरी का दूध, बकरी के दूध से निकाला हुआ दही, घी, तिल का तेल, मदिरा, शहद, कमल का कन्द, मौलसरी, दोनों तरह के अनार, नये फल, केले के फूल-फल, नयी बेलगिरी, सिंघाड़े, चूके का साग, भाँग, कैथा, कुड़े की छाल, ज़ीरा, कसेरू, छाछ-माठा, चौपतिया, जायफल जामुन, धनिया, कुचला, बकायन, मँजीठ, अफ़ीम, हिरन या तीतर का मांस-रस, सब तरह की छोटी मछली, सब तरह के कषैले पदार्थों का रस, नाभि से दो अंगुल नीचे हटा कर तथा रीढ़ की जड़ में अर्द्ध चन्द्रमा के सदश गरम लोहे से दागना, आबहवा बदलना, समुद्र की सैर करना और माठा पीना—ये सब संग्रहणी रोग में पथ्य है।

संग्रहणी रोग में पंचकोल, (पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ) आदि से संयुक्त हल्का अन्न, पेया आदि अग्नि को दीपन करने वाले पदार्थ तथा माठा—ये सब हितकारी हैं।

कैथ, बेलगिरी, चाँगेरी (नोनिया या चूका), माठा और अनार के द्वारा सिद्ध की हुई यवागू आम को पचाती और मल को बाँधती है।

☛ **नोट**—ज्वर और अतिसार में यवागू परम पथ्य है।

मूँग का यूष, हल्का और दस्त रोकने वाला मांस का रस, धनिया, ज़ीरा और सेंधा नमक—मिले हुए तक्र—माठे को 'षड्यूषण' कहते हैं। यह 'षड्यूषण' ग्रहणी रोग में हितकारी है।

ढाक के बीज, चीता, बिजौरे की केसर, हरड़, पीपल, पीपरामूल, पाढ़, धनिया और सोंठ—इन सबको एक-एक तोले ले कर एक सेर जल में पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इस काढ़े के द्वारा यवागू

पका कर रोगी को दो। यह यवागू कफज संग्रहणी-रोगी को अत्यन्त हितकारी है।

नोट—यूष, मांस-रस या अन्य पथ्य पदार्थ बनाने की विधि के लिये 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरा भाग देखिये।

माठा संग्रहणी में अत्यन्त हितकारी है, इसलिए नीचे हम माठे के भेद और गुण प्रभृति लिखते हैं।

सुश्रुत आदि मुनियों ने माठे या तक्र के चार भेद कहे हैं :—

(१) तक्र, (२) घोल, (३) मथित, (४) उदश्वित।

जो मलाई-युक्त दही, बिना जल के मथा जाता है, उसे 'घोल' कहते हैं। जो दही मलाई निकाल कर, बिना जल के मथा जाता है, उसे 'मथित' कहते हैं। जो दही चौथा भाग जल डाल कर मथा जाता है, उसे 'तक्र' या माठा कहते हैं। जो दही आधा जल डाल कर मथा जाता है, उसे 'उदश्वित' कहते हैं।

घोल—वातपित्त-नाशक है। मथित—कफपित्त-नाशक है। उदश्वित—कफकारक, बलदायक, श्रमविनाशक और परम हितकारक है।

तक्र या माठे के गुण

तक्र—मलरोधक, कषैला, खट्टा, मधुर, अग्नि-दीपन करने वाला, हल्का, उष्णवीर्य, बलकारक, वृष्य, तृप्तिकारक और वात-नाशक होता है। आठ प्रकार के दहियों के अनुसार ही उनके तक्रों में गुण होते हैं।

तक्र—ग्रहणी आदि रोगों में पथ्य है। हल्का होने के कारण मलरोधक है; अम्ल और सान्द्र होने के कारण वात-विनाशक है। तत्काल का मथा हुआ तक्र दाहकारक नहीं होता, पाक में मधुर होता है; किन्तु अन्त में पित्त को कुपित करता है। कषैला, उष्ण-विकासी और रूखा होने के कारण वह तक्र कफ को भी दूर करता है।

जिसमें से सारा ही घी निकाल लिया गया हो, वह माठा पथ्य और विशेषकर हल्का होता है। जिसमें से थोड़ा-सा घी निकाला गया हो, वह माठा भारी, वीर्यवर्द्धक और कफ-नाशक होता है। जिसमें से कुछ घी न निकाला गया हो वह माठा भारी, गाढ़ा, पुष्टिकारक और बल बढ़ाने वाला होता है।

रोग-विशेष में तक्र-विशेष

वात रोग में—खट्टे माठे में सेंधानोन डाल कर सेवन करना चाहिये।

पित्त रोग में—खट्टा और मीठा माठा मिश्री मिला कर पीना चाहिये।

कफ रोग में—माठे में जवाखारादि और त्रिकुटे का चूर्ण डाल कर पीना चाहिये।

संग्रहणी और अतिसार में—घोल नामक माठे में हींग, जीरा और सेंधा नमक मिला कर पीना चाहिये। यह घोल वातनाशक, रुचिकारक, पुष्टिदायक, बलकारक और वस्ति या पेड़ू को शान्त करने वाला है।

पीनस, श्वास और खाँसी प्रभृति में—औटाया हुआ माठा पीना चाहिये। कच्ची छाछ कोठे के कफ को दूर करती है, किन्तु कण्ठ में कफ पैदा करती है; इसलिये पीनस और श्वास प्रभृति में पकाई हुई छाछ पीनी चाहिये।

तक्र की तारीफ़

न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगः।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥

तक्र सेवन करने वाला कभी रोगी नहीं होता। तक्र से नष्ट हुए रोग फिर कभी नहीं होते। जिस तरह स्वर्ग में देवताओं के लिये अमृत सुखदायी है, उसी तरह पृथ्वी पर मनुष्यों के लिए माठा हितकारी है।

तक्र की मनाही

गरमी के मौसम में घाव वाले रोगी को, दुर्बल को, मूर्च्छित को, भ्रम, दाह और रक्तपित्त-रोगी को माठा न देना चाहिये।

किसका माठा उत्तम होता है

गाय का दही—उत्तम, बलकारक, पाक में मधुर, पवित्र, अग्निदीपक, चिकना, पुष्टिकारक और वात-नाशक होता है। सब तरह के दहियों में गाय का दही उत्तम होता है; इसलिए गाय के दही का माठा भी उत्तम होता है।

भैंस का दही—अत्यन्त चिकना, कफकारक, वात-पित्तनाशक, स्वादु, पाकी, अभिष्यन्दी, वृष्य और भारी होता है तथा रुधिर को दूषित करता है। भैंस के दही का माठा भी इन्हीं गुणों वाला होता है।

बकरी का दही—उत्तम, मलरोधक, हलका, त्रिदोषनाशक, अग्नि को दीपन करने वाला तथा श्वास, खाँसी, बवासीर, क्षय और कृशता—दुबलेपन में हितकारी है। बकरी का दही श्रेष्ठ और ग्राही—क़ाबिज़—होने के कारण, ग्रहणी रोग में अत्यन्त हितकारी है।

संग्रहणी वालों को गाय का माठा अमृत है

संग्रहणीवालों के हक़ में गाय का माठा अमृत है; क्योंकि माठा दीपन, पाचन, हलका और पथ्य है। माठे का पाक मधुर होता है, इसलिए वह पित्त को कुपित नहीं करता। माठा कषैला, गरम, रूखा और सन्धियों को शिथिल करने वाला होने से कफ़ में भी हितकारी है। स्वादिष्ट, खट्टा और सान्द्र होने की वजह से वात में हितकारी है। माठा तत्काल गुण करता और दाह नहीं करता। 'वंगसेन' में लिखा है—

ग्रहणीरोगिणां तक्रं संग्राहि लघु दीपनम् ।
सेवनीयं सदा गव्यं त्रिदोषशमनं हितम् ॥
दुःसाध्यो ग्रहणी दोषों भेषजैर्नैव शाम्यति ।
सहस्रशोऽपि विहितैर्विना तक्रस्य सेवनात् ॥
यथा तृणचयं वह्निस्तमांसि संविता यथा ।
निहन्ति ग्रहणी रोगं तथा तक्रस्य सेवनम् ॥

संग्रहणी वाले को तक्र—माठा मल को रोकने वाला, हल्का और अग्नि-दीपक है। इसलिये संग्रहणी-रोगियों को सदा गाय का माठा सेवन करना चाहिये। गाय का माठा अत्यन्त हितकारी और त्रिदोष-शमन करने वाला है।

दुःसाध्य संग्रहणी, बिना माठा सेवन किये, हजारों दवाओं से भी आराम नहीं होती; अर्थात् माठा सेवन करने से दुःसाध्य संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

जिस तरह तृण-समूह को अग्नि और अन्धकार-समूह को सूर्य नष्ट करता है, उसी तरह संग्रहणी रोग को तक्र या माठा नष्ट करता है।

भिन्न-भिन्न रंग की गायों का दूध भिन्न-भिन्न रोग-नाशक

रोगी के तक्र पीने के लिये उत्तम गायें रखनी चाहिये। गायों के दूध के गुण, उनके रंगों के अनुसार होते हैं।

पीले रंग की गाय का दूध वातनाशक होता है। सफ़ेद रंग की गाय का दूध पित्त-रोग-नाशक होता है। लाल गाय का दूध कफ़-नाशक होता है। काली गाय का दूध त्रिदोष-नाशक होता है।

गायों के चराने की विधि

गायों को ऐसे वन में चराना चाहिये, जहाँ बहुत से वृक्ष और लता न हों। चराने के बाद उन्हें विश्राम कराना चाहिये और पीछे साफ़-निर्दोष जल पिलाना

चाहिये। गायों को धीरे-धीरे चराना चाहिए। अगर गायों को उत्तम चारा और उत्तम जल मिलेगा, तो उनका दूध भी उत्तम होगा। अगर गायें दूषित चारा और दूषित जल पियेंगी, तो उनका दूध भी दूषित होगा।

रोगानुसार दूध औटाने और जमाने की विधि

वात-रोग में कच्चा दूध लेना चाहिए। पित्त-रोग में दूध को ज़रा औटा कर चूल्हे से उतार लेना चाहिए। कफ़ और त्रिदोष के रोग में दूध को ऐसा औटाना चाहिए कि सेर का तीन पाव रह जाय; केवल एक पाव दूध जले। औटाये हुए दूध को ज़रा-सी खटाई से जमा देना चहिए। दही गाढ़ा जमाना चाहिये। पीछे ज़रा-सा जल डाल कर, रई से मथ कर, घी निकाल लेना चाहिए।

संग्रहणी-नाशार्थ तक्र-सेवन-विधि

तक्र और सोंठ का चूर्ण इनको एकत्र मिला कर, रोज़ सेवन करना चाहिए। तक्र के सेवन करने और अन्न के छोड़ने से कमज़ोरी हो, शरीर रूखा हो, मूत्र और नेत्रों में सफ़ेदी हो, तो ज़रा-सी चिकनाई यानी घी-समेत तक्र पीना चाहिए। कुछ दिन बाद नवनीत या मक्खन समेत तक्र पीना चाहिए।

तक्र या माठा, नौनी घी और सोंठ—इन तीनों को मिला कर पीना चाहिए। धीरे-धीरे, क्रम से, अन्न को घटाना चाहिए और उसी हिसाब से माठे को बढ़ाना चाहिए। तक्र को यहाँ तक बढ़ाना चाहिए, कि अन्न बिल्कुल छूट जाय; केवल तक्र का ही आहार रह जाय। जब जब भूख और प्यास लगे, तब तक सोंठ का चूर्ण मिला हुआ तक्र पीना चाहिए।

जब इस तरह तक्र सेवन किया जाय, तब बहुत परिश्रम—मेहनत, बहुत बोलने, मैथुन और क्रोध से परहेज़ करना चाहिए। इस तरह तक्र सेवन करने से संग्रहणी शीघ्र ही इस तरह नष्ट हो जाती है, जिस तरह जूआ खेलने वाले की लक्ष्मी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

जब संग्रहणी आराम हो जाय, तब अन्न सेवन करना चाहिए। आराम होने पर एकदम अन्न न बढ़ा देना चाहिए। जिस तरह पहले अन्न घटाया था, उसी तरह क्रम-क्रम से माठा त्याग करना चाहिए, और अन्न को बढ़ाना चाहिए।

संग्रहणी में तक्र को कायदे से सेवन करना चाहिए। संग्रहणी का नाश करने के लिए तक्र से बढ़ कर और दवा नहीं है। यद्यपि संग्रहणी में तक्र हितकारी है, तथापि बेक़ायदे सेवन किया हुआ तक्र साक्षात् कालकूट-विष के समान है।

नोट—(क) केवल सोंठ के चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है।

(ख) चीते का चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी आराम हो जाती है।

(ग) हरड़ के वृक्ष की छाल माठे में पीस कर, सेवन करने से आम और रक्त-युक्त संहग्रणी आराम हो जाती है।

संग्रहणी-रोग की चिकित्सा में ध्यान रखने योग्य बातें

(१) संग्रहणी-रोग की, लंघनों से तथा अग्नि को दीपन करने वाली अतिसार की औषधियों से, अजीर्ण की तरह, चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोग में भी 'दोषों की सामता और निरामता का', अतिसार की तरह ख़याल रखना चाहिये और अतिसार की तरह ही सामता और निरामता को समझना एवं अतिसार में लिखी हुई तरकीबों से ही आम को पचाना चाहिए।

(२) अग्नि-दीपक पंचकोल—(पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ) युक्त अन्नपान, तक्र—माठा, पेया, यवागू, मण्ड और यूषादिक हल्के अन्न ग्रहणी रोग में सदा देने चाहिए। अग्नि-दीपक पदार्थ संग्रहणी में परम हितकारी होते हैं।

(३) वातज संग्रहणी के पक जाने पर, उसे दीपन औषधियों से सिद्ध किये घृतों अथवा ऐसे ही क्वाथ वग़ैरः से जीतना चाहिए। 'शुण्ठी घृत', 'बृहत् चाँगेरी घृत' अथवा 'शुण्ठ्यादि क्वाथ' प्रभृति वातज संग्रहणी में अच्छा काम करते हैं।

(४) पित्तज संग्रहणी में—जठराग्नि को दूषित करने वाले पित्त को, विरेचन और वमन के द्वारा, शांत करना चाहिए। इसके बाद हल्के, मल को रोकने वाले, अग्नि को दीपन करने वाले, किन्तु दाह करने वाले, पदार्थ सेवन करने चाहिए। पित्तज संग्रहणी में 'रसांजनादि चूर्ण' अच्छा काम करता है।

(५) कफज संग्रहणी वाले को तीक्ष्ण औषधियों से वमन करानी चाहिए तथा नमकीन, खट्टे, कड़वे और खारे द्रव्यों से, क्रम-पूर्वक, जठराग्नि को दीपन करना चाहिए। 'पुष्यादि चूर्ण' माठे के साथ सेवन कराने से तथा पीछे लिखी हुई 'यवागू' सेवन कराने से कफज संग्रहणी में निश्चय ही लाभ होता है।

(६) जीर्ण हुआ आम या संग्रहणी-रोग साधारण उपायों से आराम नहीं होता। चिकित्सक को पुरानी संग्रहणी में बड़ी-बड़ी कठिइनायों का सामना करना पड़ता है। संग्रहणी में रोगी का जठर—पेट इतना ख़राव या दूषित हो जाता है कि साधारण खाना भी उसे नहीं पचता।' संग्रहणी वाले की हालत एक बच्चे की-सी

हो जाती है। अतः संग्रहणी-रोग यदि आराम करना हो, तो वैद्य रोगी को बालक समझ ले और बालक समझ कर उसे हल्के-से-हल्का पथ्य—खाना वग़ैरः दे।

(७) संग्रहणी-रोगी के लिए माठा अमृत है। माठा ही उसकी जीवन-रक्षा कर सकता है। वैद्य को चाहिए कि उसे दवा और भोजन दोनों के एवज़ में माठा ही सेवन कराये। भुनी हींग, भुना ज़ीरा और सेंधानोन मिला कर माठा लगातार पिलाये जाना परम हितकारी है। छाछ से संग्रहणी-रोगी को भोजन के समान बल रहता है और अग्नि तेज़ होती है। जब अग्नि तेज़ हो जाय, तब उसे पुराने चावल प्रभृति हल्के भोजन देने में हानि नहीं। हमने देखा है कि जिनके शरीर में ख़ून और मांस का नाम भी नहीं रहता था, जिनमें केवल हाड़-ही-हाड़ दीखते थे, जिनको डाक्टरों ने असाध्य कह दिया था, वे रोगी, कितने ही महीनों तक, विश्वास और श्रद्धा के साथ एकमात्र छाछ सेवन करने से चंगे हो गये। संग्रहणी जैसे भयंकर रोग की महर्षियों ने अनेक उत्तमोत्तम महौषधियाँ लिखी हैं, और वे उपकारी भी हैं; पर छाछ से सब का दर्ज़ा नीचा है। इधर मरण-शय्या पर पड़ा, जीवन से निराश रोगी माठा सेवन करने लगता है और उधर उसका रोग घटने और नया ख़ून जमा होने लगता है।

(८) लाई चूर्ण, दुग्धवटी, ह्रीवेरादि क्वाथ, षड्रूषण, जातीफलादि चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, कनक रस, चन्द्रकला चूर्ण, ग्रहणी-कपाट रस और ग्रहणी-वज्र-कपाट रस—ये सब संग्रहणी पर रामबाण हैं। हमने इनके बनाने और सेवन करने की विधि आगे लिखी है। यों तो संग्रहणी-नाशक हज़ारों नुसख़े हैं; पर उपरोक्त नुसख़े हमारे आज़माये हुए हैं और प्रसिद्ध भी हैं। इनको उचित अनुपान और पथ्य के साथ सेवन करने से संग्रहणी निश्चय ही नष्ट हो जाती है।

(९) माठा पीना, आबहवा बदलना, दरिया या समुद्र की सैर करना—इस रोग में परम हितकारी है। ज़्यादा नहाना, ज़्यादा पानी पीना, चिकने पदार्थ खाना, जागना और मेहनत करना हानिकारक है।

□ विशेष चिकित्सा □

☞ नोट—चिकित्सा दो तरह की होती है—(१) सामान्य, और (२) विशेष। सामान्य से विशेष चिकित्सा अच्छी है; क्योंकि वह अपना फल शीघ्र दिखाती है; पर उस चिकित्सा से दोषों के अंशांश की कल्पना करनी पड़ती है। किन्तु यह काम हर किसी का नहीं। विद्वान् और अनुभवी वैद्य ही दोषों का ठीक अन्दाज़ा कर सकते हैं। और जो वैद्य रोग के निदान और लक्षणों से दोषों के अंशांशों की कल्पना कर

लेते हैं, फिर दोषों के अनुसार ही दवा तजवीज करते हैं, उन्हें निश्चय ही सफलता मिलती है।

वातज ग्रहणी की चिकित्सा

(१) पंचकोल का यूष, अनार का रस और चिकने पदार्थ—वातज ग्रहणी में हितकारी हैं।

(२) कैथ, बेलगिरी, चूका, माठा और अनार—इनसे बनाई हुई यवागू आम को पचाती और मल को बाँधती है।

(३) सोंठ, कुड़े की छाल, पीपल, कटाई, कटेरी, चीता, सारिवा, पाढ़, जवाखार और पाँचों नमक—इनका चूर्ण गरम जल या काँजी अथवा गाय के दही के साथ सेवन करने से अग्नि बढ़ती और कोठे की वायु दूर होती है।

☛ नोट—पाँचों नमकों के नाम आगे लिखे हैं।

(४) धनिया, अतीस, सुगन्धवाला, अजवायन, नागरमोथा, सोंठ, खिरेंटी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी और बेलगिरी इनका काढ़ा दीपन और पाचन है।

(५) अजवायन, सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, सेंधानोन, सफ़ेद ज़ीरा, काला ज़ीरा और भुनी हींग—इन आठों के चूर्ण को 'हिंग्वाष्टक चूर्ण' कहते हैं। इस चूर्ण को 'घी' में मिला कर, पहले ग्रास में रख कर, खाने से अग्नि दीप्त होती और वात नष्ट होती है।

(६) चीता, पीपरामूल, जवाख़ार, सज्जीख़ार, कालानोन, सेंधानोन, विरिया-संचरनोन, रेहगवाँ नोन, समन्दर नोन, सोंठ, मिर्च, पीपर, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इनको एकत्र पीस-छान कर, बिजोरे नीबू के रस में अथवा अनार के रस में मिला कर गोलियाँ बना लेनी चाहिए। ये गोलियाँ आम को पचाती और अग्नि को दीपन करती हैं।

☛ **नोट**—वातज संग्रहणी परिपक्व हो जाय, तब दीपन औषधियों के द्वारा सिद्ध किये हुए घी से चिकित्सा करनी चाहिए।

(७) सोंठ, पीपरामूल चीता, गजपीपल, गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ़ और अजवायन—इन सब का पिसा हुआ चूर्ण आठ तोले लो। शुद्ध गाय का घी ६४ तोले लो। चाँगेरी या नोनिया अथवा चूके का स्वरस २५६ तोले (३ सेर ३ छटाँक १ तोले) लो और २५६ तोले दही की छाछ लो। शेष में, सबको पीतल की क़लईदार कढ़ाही में चढ़ा कर, मन्दाग्नि से, पकाओ। जब पतले पदार्थ जल कर घी-मात्र रह जाय, उतार लो। इस 'वृहत् चाँगेरी घृत' के सेवन से सब तरह के कफ-

वात-रोग, सब तरह की बवासीर, सब तरह की संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, प्रवाहिका, गुदभ्रंश—काँच निकलना और अफारा—ये सब नष्ट हो जाते हैं।

(८) सोंठ को सिल पर जल के साथ पीस कर, पीछे उस लुगदी और घी को कढ़ाही में पकाने से जो घी तैयार होता है, उसे 'शुण्ठी घृत' कहते हैं। यह घी वात को अनुलोमन करता तथा संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली और ज्वर का नाश करता है।

☛ **नोट**—अगर सोंठ की पिसी हुई लुगदी ४ तोले हो, तो घी १६ तोले लो और जल ६४ तोले लो। इन सबको मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार लो*।

(६) सोंठ के कल्क और दशमूल के काढ़े के साथ जो घी पकाया जाता है, वह सूजन, संग्रहणी और आमवात को नष्ट करता है।

☛ **नोट**—अगर सोंठ का कल्क ४ तोले हो, तो घी १६ तोले और दशमूल का काढ़ा ६४ तोले लेना। पीछे सबको मन्दाग्नि से पका लेना।

(१०) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा और अतीस—इनको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बना कर, वातज संग्रहणी में देने से निश्चय ही लाभ होता है। यह

---

* कल्क की औषधियों से चौगुना घी लेना चाहिए। घी से चौगुना दूध, गोमूत्र या काढ़ा प्रभृति लेना चाहिए। पीछे सबको मिला कर, चूल्हे पर चढ़ा कर, मन्दाग्नि से पकाना चाहिए। जब पतले पदार्थ—दूध, जल, मूत्र, या काढ़े प्रभृति जल जायँ, केवल घी या तेल रह जाय, तब चूल्हे से उतार और छान कर रख लेना चाहिए।

घी या तेल के पकने की परीक्षा यह है कि जब घी के सब झाग शान्त हो जायँ, तब घी को सिद्ध हुआ समझना चाहिए। किन्तु तेल पर झाग आने लगें, तब तेल को सिद्ध हुआ समझना चाहिए।

घी या तेल के कल्क को आग पर डालने से आवाज़ न हो, तथा उँगलियों के पोरुओं पर लगा कर मलने से बत्ती-सी बन जाय, तब समझ लेना चाहिए कि घी या तेल अच्छी तरह पक गया।

घी या तेल का पाक तीन तरह का होता है :—(१) मृदु, (२) मध्यम (३) खर। नस्य-कर्म के लिए मृदु पाक उत्तम होता है। सब कामों के लिए मध्यम पाक उत्तम है। मालिश के लिए खर पाक श्रेष्ठ हैं।

नुसख़ा आमातिसार और आम-युक्त संग्रहणी में, जिसमें पहले मल और पीछे आम निकलता हो, परम लाभदायक है। इससे अग्नि भी बढ़ती है। यह आरम्भ में ही दिया जा सकता है। परीक्षित है।

पित्तज ग्रहणी की चिकित्सा

(११) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, सोंठ और धाय के फूल—इन सबको एकत्र पीस कर, शहद और चावलों के पानी के साथ सेवन करने से पित्त की संग्रहणी बवासीर, रक्तपित्त और नष्ट होता है। परीक्षित है। इसको 'रसांजनादि चूर्ण' कहते हैं।

(१२) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल और धाय के फूल—इनके चूर्ण को शहद और चावलों के जल के साथ लेने से पित्त की संग्रहणी आराम होती है। इसको भी 'रसांजनादि चूर्ण' कहते हैं।

☛ नोट—यह नुसख़ा अनेक वार का परीक्षित है। इसमें और ऊपर के में भेद इतना ही है, कि इसमें सोंठ नहीं है। इसमें सोंठ छोड़ कर ५ दवाएँ हैं और उसमें सोंठ समेत ६ हैं।

घी या तेल, अधिक पाक होने से यदि जल जायँ, तो दाह करते हैं और कच्चे रह जायँ तो अग्नि मन्द कर सकते हैं।

कल्क से चौगुना घी या तेल लेना चाहिए। घी या तेल से चौगुना काढ़ा लेना चाहिए। दूध, दही, स्वरस अथवा माठा डाल कर घी या तेल बनाना हो, तो घी या तेल का आठवाँ भाग कल्क डालना चाहिए। जिस घी-तेल में कल्क न हो, उसे पतले पदार्थों से सिद्ध करना चाहिए।

घी, तेल, गुड़, प्रभृति बनाने हों, तो एक ही दिन में न बनाने चाहिए। पहले दिन इनकी दवाओं को भिगो देना चाहिए। दूसरे दिन घी-तेल आदि तैयार करने चाहिए।

काढ़े की दवाएँ चौगुना पानी डाल कर औटानी चाहिए। जब चौथाई जल रह जाय, काढ़ा उतार लेना चाहिए। गुडूच आदि नरम दवाओं में चौगुना जल डालना चाहिए। अमलताश आदि कड़ी दवाओं में अठगुना जल डालना चाहिए। पद्माख आदि बहुत ही कड़ी दवाओं में १६ गुना जल डालना चाहिए।

कल्क का उत्तम पाक होने के लिये घी या तेल से चौगुना पानी डालना चाहिए।

(१३) कुटकी, रसौत, सोंठ, धाय के फूल, हरड़, इन्द्रजौ, नागरमोथा, कुड़े की छाल और भाँगरा—इनका काढ़ा अत्यन्त बढ़ी हुई गुदाशूल-युक्त पित्तज संग्रहणी को आराम करता है। इसका नाम 'तिक्तादि क्वाथ' है। परीक्षित है।

(१४) पाढ़, इन्द्रजौ, चीता और सोंठ—इनका काढ़ा पित्त-कफ से पैदा हुई संग्रहणी तथा सब तरह के शूल का नाश करता है। इनका चूर्ण बना कर, गरम जल के साथ सेवन करने से भी वही लाभ होता है।

(१५) पाढ़, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, नागरमोथा, कुटकी, धाय के फूल, रसौत और बेलगिरी—इनके चूर्ण को 'शहद' मिला कर चावलों के जल के साथ सेवन करने से प्रवाहिका, रक्तातिसार, गुदा की पीड़ा, संग्रहणी और बवासीर—ये रोग नष्ट होते हैं।

नोट—इस नुसख़े में सोंठ और मिला दें, तो दस दवाइयाँ हो जाती हैं। इसको 'नागरादि चूर्ण' कहते हैं। इसके सेवन से पित्त की संग्रहणी, रुधिर की बवासीर, गुदा की पीड़ा और प्रवाहिका आराम हो जाती है। यह नुसख़ा बिना सोंठ और सोंठ-सहित दोनों तरह परीक्षा किया हुआ है। हर हालत में यह नुसख़ा शहद और चावलों के साथ ही सेवन किया जाता है।

चार तोले चावलों को अधकचरा करके (आटा-सा न हो जाय) ३२ तोले जल में २ घण्टे तक भिगो कर छान लेना चाहिए। यही चावलों का पानी है।

(१६) चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपर, नागरमोथा और इन्द्रजौ—ये सब एक-एक तोले लेने चाहिए। चीते की छाल दो तोले लेनी चाहिए और कुड़े की छाल १६ तोले लेनी चाहिए। पीछे, सबको एकत्र करके, कूट-पीस-छान कर, चूर्ण कर लेना चाहिए। इस चूर्ण को 'भूनिम्बादि चूर्ण' कहते हैं। इस चूर्ण को पुराने गुड़ और शीतल जल के साथ लेने से संग्रहणी, गोला, कामला, पीलिया, ज्वर, प्रमेह, अरुचि और शरीर का पीलापन आराम हो जाता है।

नोट—पुराने गुड़ को, शीतल जल में घोल कर छान लेना चाहिए। यही गुड़ का शर्बत है। इसका स्वाद और रंग गुड़ के-जैसा ही होता है। 'भूनिम्बादि चूर्ण' खाकर ऊपर से यही गुड़ का शर्बत पीना चाहिए।

(१७) पाढ़, बेलगिरी, चीता, त्रिकुटा, जामुन, अनार का छिलका, धाय के फूल, कुटकी, अतीस, नागरमोथा, हल्दी, चिरायता और इन्द्रजौ—ये सब एक-एक तोले लेने चाहिए और १३ तोले कुड़े की छाल लेनी चाहिए। पीछे सबको एक जगह करके, पीस-कूट-छान कर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण को शहद और

चावलों के जल के साथ सेवन करने से ज्वर, अतिसार, वमन, संग्रहणी, दाह, शूल, अरुचि और अग्नि-मन्दता—ये सब नष्ट होते हैं।

(१८) आम की गुठली की मींगी, सोंठ, अतीस और कुड़े की छाल—बराबर-बराबर लेकर, आम के पत्तों के रस में, तीन दिन घोटो और शीशी में रख दो। इसको मिश्री मिला कर खाने से पित्त की संग्रहणी, ज्वरातिसार और तेज़ी से ख़ून गिरना—ये सब आराम होते हैं। मात्रा ४ से ६ माशे तक। समय—सवेरे-शाम।

कफज ग्रहणी की चिकित्सा

(१९) सोंठ, नागरमोथा और बायबिड़ङ्ग—इनके चूर्ण को माठा या गरम पानी के साथ सेवन करने से कफ की संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है।

(२०) हरड़, पीपल, सोंठ और चीता—इनका चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से कफ की संग्रहणी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) केवल सोंठ का चूर्ण, माठे के साथ सेवन करने से शूल-युक्त कफ की संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) पीपल, पीपरामूल, जवाखार, सज्जीखार, पाँचों नमक, बिजौरा, नीबू, हरड़, रास्ना, कचूर, कालीमिर्च और सोंठ—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को निवाये गर्म जल या मन्दोष्ण जल के साथ, सवेरे के समय, नित्य सेवन करने से कफ की संग्रहणी आराम हो जाती है। साथ ही बल, मांस और जठराग्नि की वृद्धि होती है।

(२३) त्रिकुटा, आम की छाल और कुड़े की छाल—इनको एकत्र पीस कर चावलों के पानी के साथ सेवन करने से संग्रहणी, कामला, पीलिया, प्रमेह, अरुचि, अतिसार, गोला, सूजन और ज्वर—ये नष्ट हो जाते हैं।

(२४) थूहर की लकड़ी १६ तोले, तीनों नमक १२ तोले, बैंगन १६ तोले, आक ८ तोले, बेलगिरी ८ तोले और चीता ८ तोले लो। बैंगन को छोड़ सबको एकत्र करके आग में जला लो। पीछे बैंगन को पका कर उसका रस निकाल लो। उस रस में इस जले हुए मसाले को मिला कर गोलियाँ बना लो। भोजन के बाद इन गोलियों के खाने से भोजन शीघ्र ही पच जाता और संग्रहणी आराम हो जाती है। इसके सिवा श्वास, खाँसी बवासीर, विशूचिका, प्रतिश्याय—जुक़ाम और हृदय-रोग में भी ये गोलियाँ विशेष रूप से फ़ायदा दिखाती हैं—इनको 'वार्तांकु गुटिका' या 'बैंगन की गोलियाँ' कहते हैं।

☛ **नोट**—(१) जहाँ तीन नमक लिखे हों, वहाँ सेंधा, सञ्चर और विड़नोन लेना चाहिये। (२) आक और चीते की जड़ की छाल लेना। बैंगन, रस निकालने को अलग रख लेना। जब सब चीजें जला लो, तब बैंगनों का रस निकालो।

(२५) सज्जी, जवाखार, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता. सोंठ, मिर्च, पाँचों नोन, भुनी हींग और अजवायन—इन १५ दवाओं को ले कर कूट पीस कर चूर्ण कर लो। पीछे अम्लवेत, विजौरा नीबू और झड़वेरों का रस निकाल लो। उसी रस में इस चूर्ण को खरल करके रोगी को खिलाओ। इससे कफवातज संग्रहणी और बवासीर निश्चय ही आराम होती है। यह चूर्ण अग्नि दीपन करने और अन्न पचाने में अपना सानी नहीं रखता। परीक्षित है।

☛ **नोट**—पाँचों नमकों के नाम ये हैं—सेंधा, संचर, विड़, समन्दर और काँच नमक।

(२६) नौ पीपलों को महीन पीस कर और शहद में मिला कर, एक घड़े में लेप कर दो। पीछे उस घड़े में अगर की धूनी दो। इसके बाद, उस घड़े में ४ सेर शहद और ४ सेर पानी भर दो। इसके भी बाद उस घड़े में निम्नलिखित चीजों को डाल दो :—वायविड़ङ्ग ८ तोले, पीपल १६ तोले, बंसलोचन ४ तोले; नागकेशर १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले, कचूर १ तोले, सुपारी १ तोले, अतीस १ तोले, नागरमोथा १ तोले, रेणुका १ तोले, एलुआ १ तोले, तेजवल १ तोले, पीपरामूल १ तोले और चीते की छाल १ तोले।

घड़े में सब चीजों को डाल कर उसका मुँह वन्द करके और मुद्रा देकर, १ मास तक, उसे रखा रहने दो। १ मास पूरा होने पर, घड़े को खोल कर दवा की मात्रा से सेवन करने से मन्दाग्नि दीप्त होती है, विषमाग्नि समान होती है तथा हृदय-रोग, पीलिया, संग्रहणी, कोढ़ बवासीर, सूजन, ज्वर और वातकफ के रोग नष्ट होते हैं। इसको 'मध्वारिष्ठ' कहते हैं।

☛ **नोट**—शीशी पर काग लगा कर, उसे मिट्टी से, अथवा कभी-कभी गुड़ और चूने से और कभी-कभी शहद और चूने से वन्द कर देते हैं, इसी को 'मुद्रा' कहते हैं। मतलब यह है, घड़े पर सराई रख कर, उसकी सन्धियों को मिट्टी और कपड़े से अथवा मिट्टी, रूई, राख और लोहे के मैल को खूब कूट कर, लुगदी-सी वना कर, उसी लुगदी से, पुटीन लगाने की तरह, वन्द कर देने को भी मुद्रा कहते हैं। मुख ऐसा वन्द करना चाहिये, जिससे साँस न निकले।

(२७) बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल, अरणी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, गोखरू, कटेरी, बड़ी कटेरी, हल्दी, जीवक ऋषभक और चीता—इन चौदह दवाओं को बीस-बीस तोले ले आओ। पीछे इनको ६४ सेर जल में डाल कर पकाओ। जब १६ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इस छने हुए काढ़े में ३२ तोले पुराना गुड़ और ३२ तोले शहद मिला दो। इसके बाद फूलप्रियंगू ४ तोले, मंजीठ ४ तोले, वायविडंग ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, पीपल ४ तोले और सफ़ेद लोध ४ तोले—इन छहों को पीस कर मिला दो। शेष में, घड़े का मुख अच्छी तरह से बन्द करके, मुद्रा दे कर, १५ दिन तक ज़मीन में गाड़ रखो। इसके बाद निकाल लो। इसको 'दशमूल आसव' कहते हैं। यह आसव अग्नि को दीपन करता, रक्तपित्त, अफारा, कफ, हृदय-रोग, पीलिया और शरीर की ग्लानि का नाश करता है।

नोट—आसव और अरिष्ट का भेद ऊपर के दोनों नुसख़ों से सहज में समझ सकोगे।

(२८) काली मिर्च, सोंठ, पीपल, लौंग और अकरकरा—इनमें से प्रत्येक को साढ़े तीन-तीन माशे लो और अफ़ीम सात माशे लो। सबको कूट-पीस छान कर खरल में डालो, साथ ही अफ़ीम भी डाल दो और अदरख का रस दे-देकर घोटो। घुट जाने पर, चने समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे शाम देने से कफ के दस्त और संग्रहणी आराम होती है।

सन्निपातज ग्रहणी की चिकित्सा

(२९) बेलगिरी, मोचरस, नेत्रबाला, नागरमोथा, इन्द्रजौ और कुड़े की छाल—इन छहों को बकरी के दूध में डाल कर पकाने से जो दूध तैयार होता है, उस दूध के सेवन करने से सन्निपातज ग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३०) नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी और इन्द्रजौ—इनको समान समान ले कर, महीन-कूट-पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को 'शहद' में मिला कर चाटने से त्रिदोषजन्य संग्रहणी आराम हो जाती है। इनका नाम 'मुस्तकादि चूर्ण' है।

नोट—सामान्य चिकित्सा में दोषों के अंशांश की कल्पना नहीं करनी पड़ती, केवल रोग की पहचान करनी पड़ती है। दोषों के अंशांशों की कल्पना करने की अपेक्षा रोगको पहचानना सहज है। यह संग्रहणी रोग है, ऐसा जानना सहज है;

पर वातज है या पित्तज है अथवा कफज है, इसमें कितने अंश वात के, कितने पित्त के, और कितने कफ के हैं, यह जानना बहुत कठिन है। सब वैद्य ऐसा कर नहीं सकते; इसी से आचार्यों ने सामान्य चिकित्सा लिखी है :—

अंशांश यत्र दोषाणां विवेक्तु नैव शक्नुयात्।
साधारणीं क्रियां तत्र विदध्यात्तु चिकित्सकः॥

जहाँ वैद्य दोषों के अंशांश को न जान सके, वहाँ साधारण चिकित्सा करे। वही साधारण चिकित्सा हम आगे लिखते हैं।

सामान्य चिकित्सा

□ संग्रहणी नाशक नुसखे □

• जातीफलादि चूर्ण (१) •

(३१) जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, सफ़ेद चन्दन, सफ़ेद तिल, वंसलोचन, तगर, आमले, तालीसपत्र, पीपल, हरड़, कलौंजी, चीता, सोंठ, वायविडङ्ग और कालीमिर्च—इन वीसों दवाओं को एक-एक तोले ले लो और धुली भाँग बीस तोले ले लो। कुल चालीस तोले माल को पीस-कूट कर छान लो। पीछे इस चूर्ण के बराबर ही चालीस तोले मिश्री मिला लो और एक अमृतवान या चौड़े मुँह की साफ शीशी में भर कर रख दो। इसको 'जातीफलादि चूर्ण' कहते हैं। इसके सेवन से, संग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, क्षय और वातश्लेष्मा का जुक़ाम—ये सब आराम होते हैं।

मात्रा और सेवन-विधि—इस चूर्ण की मात्रा 'शार्ङ्गधर' और 'भावप्रकाश' में १ कर्ष या १ तोले लिखी है। अगर रोगी को १ तोले की मात्रा खिलाई जाय, तो ४ माशे भाँग १ मात्रा में आती है। इतनी भाँग को वर्दाश्त करना सब किसी का काम नहीं है। हाँ, अन्धाधुन्ध भाँग पीने की आदत वाला बेशक वर्दाश्त कर सकेगा। थोड़ी भाँग पीने वालों या क़तई न पीने वालों के लिए तो संकट खड़ा हो जायगा। इस लिये, भाँग न पीने वालों को पहले १ माशे की मात्रा से यह चूर्ण आरम्भ करना चाहिये। १ माशे की मात्रा में कोई ढाई रत्ती भाँग आयेगी। अगर नशा न चढ़े, सह जाय, तो फिर बढ़ाते जाओ और चार माशे तक बढ़ाओ। इसकी एक ख़ूराक शहद के साथ चटानी चाहिये। संग्रहणी में सवेरे-शाम दोनों समय इसे दे सकते हो। परीक्षित है।

☛ **नोट**—संग्रहणी, राजयक्ष्मा और खाँसी में इसे हमने आज़माया है। राज-यक्ष्मा और खाँसी वालों को हम सन्ध्या समय इसे चटा कर ऊपर से गरम दूध मिश्री मिला कर पिलाते थे। बड़ी अच्छी चीज़ है। इसकी मात्रा कभी अधिक न देनी चाहिये। बादी-सर्दी के जुकाम में एक मात्रा चटा कर गरम दूध पिलाना चाहिये।

• जातीफलादि चूर्ण (२) •

(३२) जायफल, बायविड़ंग, चीता, तगर, तालीस-पत्र, सफ़ेद चन्दन, सोंठ, लौंग, कलौंजी, कपूर, हरड़, आमला, कालीमिर्च, पीपर, वंसलोचन, तज, तेजपात, सफ़ेद इलायची और नागकेशर—इन सबको एक-एक तोले लो। शुद्ध धुली भाँग २८ तोले और मिश्री ४७ तोले लो। सबको कूट-पीस-छान कर रख लो। तीन या चार माशे चूर्ण माठे के साथ सेवन करो। इससे संग्रहणी नष्ट हो जाती है।

☛ **नोट**—यह भी 'जातीफलादि चूर्ण' है। दालचीनी और सफ़ेद तिल प्रभृति दो-तीन औषधियों का इसमें और पहले लिखे जातीफलादि चूर्ण में भेद है; और कुछ नहीं। संग्रहणी में माठा हर तरह उपकारी है, इसमें संशय सहीं। माठे का अनुपान सबसे अच्छा है। देवास-निवासी वैद्यवर मोतीलाल किशनलाल जी ने भी इसे माठे के साथ ही देने को राय दी है। उनका आज़माया हुआ नुसख़ा है; अवश्य उपकारी होगा, इसी से हमने लिखा है।

• लाई चूर्ण (१) •

(३३) शुद्ध गन्धक १ तोले और शुद्ध पारा आधा तोला लेकर, दोनों को खरल में डाल कर खरल करो। जब कजली तैयार हो जाय, उसमें सोंठ, कालीमिर्च और पीपर का चूर्ण ३ तोले, पाँचों नोन १॥ तोले, भुनी हींग १ तोले, स्याह जीरे का चूर्ण १ तोले, सफ़ेद जीरे का चूर्ण १ तोले और सबसे आधी यानी ४॥ तोले भाँग मिला दो। इसको 'लाई' चूर्ण कहते हैं।

सेवन विधि—तीन माशे चुर्ण, माठे के साथ या बेल के गूदे के साथ सेवन करना चाहिये।। यह संग्रहणी में परम हितकारी है। आजकल के-से दुर्बल आदमियों को १ या १।। माशे की मात्रा देनी चाहिये। जो बहुत ही कमज़ोर हों, उन्हें और भी कम मात्रा में यह दवा देनी चाहिये।

• लाई चूर्ण (२) •

(३४) गन्धक १ तोला, शोधा हुआ पारा ६ माशे—इनकी उत्तम कजली कर लो। पीछे इसमें निम्नलिखित चीज़ें महीन पीस कर मिला दो—सोंठ १ तोला,

कालीमिर्च १ तोला, पीपर १ तोला, सेंधानोन १॥ तोले, सञ्चर नोन १॥ तोले, बिड़नोन १॥ तोले, ओद्भिद नोन १॥ तोले, समन्दर नोन १॥ तोले, अजमोद २ तोले, भुना ज़ीरा २ तोले, भुनी हींग २ तोले, भुना हुआ सुहागा २ तोले, स्याह ज़ीरा २ तोले और भुनी भाँग ८ तोले—इन सबके मिलाते ही चूर्ण तैयार हो जायगा।

यह चूर्ण अग्नि दीपन करता तथा सब तरह की संग्रहणी और अतिसारों को आराम करता है। इन रोगों के सिवा बवासीर, शूल, कृमिरोग और प्रबल यक्ष्मा को निश्चय ही आराम करता है। यह चूर्ण रसायन, बुद्धि-प्रकाश करने वाला और अनेक रोगों का नाश करने वाला है। परीक्षित है।

सेवन-विधि—शास्त्र में इनकी मात्रा ४ माशे की लिखी है। परन्तु हमने इसे १ माशे से २ माशे तक रोगियों को दिया और अच्छा फल पाया। इसकी १ मात्रा माठे के साथ अथवा जंभीरी नीबू के रस के साथ सेवन करनी चाहिये।

नोट—इस चूर्ण और पहले लाई चूर्ण में विशेष भेद नहीं है। हमने इस चूर्ण को इसी रीति से बनाया और आजमाया है। संग्रहणी रोग में यह चूर्ण और जातीफलादि चूर्ण अव्यर्थ महौषधि हैं। ८० फीसदी रोगी इनसे आराम होते हैं।

• कनक रस •

(३५) शुद्ध शिंगरफ, कालीमिर्च, शुद्ध गन्धक, पीपल, शुद्ध सुहागा शुद्ध, वत्सनाभ विष और शुद्ध धतूरे के बीज—इन सबको भाँग के रस में पूरे तीन घण्टों तक खरल करके, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इसको 'कनक रस' कहते हैं। इस रस में संग्रहणी नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

सेवन-विधि—बलाबल देखकर चौथाई या आधी गोली देनी चाहिये।

नोट—गन्धक, पारा, वत्सनाभ विष, धतूरे के बीज और शिंगरफ वग़ैरः के शोधने की तरकीबें चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भाग के अन्त में लिखी हैं।

• चित्रकादि बटिका •

(३६) चीता, पीपरामूल, जवाखार, पाँचों नोन, त्रिकुटा, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इन सबको बराबर-बराबर ले कर चूर्ण कर लो। पीछे बिजौरे नीबू के रस में या अनार के रस में खरल करके गोलियाँ बना लो। इनका नाम 'चित्रकादि वटिका' है। आरम्भ में देने से ये गोलियाँ आम को पचातीं और जठराग्नि को दीपन करती है।

• चन्द्रकला चूर्ण •

(३७) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, मिर्च, पीपल—इन सातों को एक-एक तोले लो। कुड़े की छाल १६ तोले और चीते की छाल २ तोले लो। सबको मिला कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण की एक मात्रा में दूना पुराना गुड़ मिला कर शीतल जल के साथ खाने से पीलिया, ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, वायुगोला और प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। इसका नाम 'चन्द्रकला चूर्ण' है। परीक्षित है।

• महाकल्याण गुड़ •

(३८) पीपल, पीपरामूल, चीता, गजपीपल, धनिया, वायविडंग, अजवायन, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, नील सफ़ेद जीरा, सेंधानोन, रेहगवाँ नोन, कालानोन, समन्दर नोन, बिरिया-संचरनोन, अमलताश का गूदा, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, कलोंजी, सोंठ और इन्द्रजौ—इनमें से प्रत्येक को एक-एक तोला लो। दाख १६ तोले लो; निशोथ ३२ तोले लो, गुड़ २२० तोले लो, तिली का तेल ३२ तोले लो और आमलों का रस ३ सेर लो।

सबको मिला कर क़लईदार कड़ाही में डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। अग्नि का बलाबल विचार कर, हर दिन, गूलर के फल के बराबर या आमले के बराबर अथवा बेर के बराबर खाओ। इसको 'महाकल्याण गुड़' कहते हैं।

इस गुड़ का सेवन करने से सब तरह के ग्रहणी रोग, बीस प्रकार के प्रमेह, उरोघात, ज़ुकाम, कमज़ोरी, मन्दाग्नि और सब तरह के ज्वर नष्ट होते हैं। पीलिया, रक्तपित्त, मल की रुकावट, धातुक्षीण, अवस्था-क्षीण, स्त्री से क्षीण, क्षय से क्षीण और बाँझ स्त्री—इन सबको यह गुड़ परम हितकारी है।

• कूष्माण्ड कल्याण गुड़ •

(३९) अच्छा पका हुआ पेठा लाकर छील लो और उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। बाद में तोल कर पाँच सेर पेठे के टुकड़े ले लो। ताँबे की कड़ाही या देगची में ३ सेर घी डाल कर, मन्दी-मन्दी आग लगाओ। जब घी आ जाय, तब पेठे के टुकड़े डाल दो और खूब मन्दी-मन्दी आग लगने दो।

पीपल, पीपरामूल, चीता, गजपीपल, धनिया, वायविडंग, सोंठ, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, इन्द्रजौ, सफ़ेद जीरा, सेंधानोन—इन सबको ४-४ तोले ले लो। निशोथ ३२ तोले, तिल का तेल ३२ तोले, गुड़ अढ़ाई सेर और आमलों का स्वरस ३ सेर ले लो। सबको मिलाकर कायदे से पका लो। जब तक

कलछी से न लगने लगे, मन्दी-मन्दी आग से पकाते जाओ। जब कलछी से लगने लगे, उतार लो। इसका नाम 'कूष्माण्ड कल्याण गुड़' है।

सेवन-विधि—हर रोज अग्नि का बलाबल विचार कर, गूलर के समान, आमले के समान, अथवा बेर के समान यह 'गुड़' सेवन करना चाहिये। यह गुड़ सब तरह के ग्रहणी-रोग, बवासीर, भगन्दर, ज्वर, अफारा, हृदय-रोग, वायुगोला, उदर-रोग, विशूचिका, कामला, पीलिया, बीस प्रकार के प्रमेह, वातरक्त, विसर्प, दाद, राजयक्ष्मा, हलीमक, वातपित्त और समस्त कफ के रोगों को दूर करता है। रोग-क्षीण, आयुक्षीण और स्त्री-प्रसंग से क्षीण पुरुषों के लिये यह गुड़ परम हितकारी है तथा बाँझ स्त्री को पुत्र देने वाला, वीर्य पैदा करने वाला बलकारक, पुष्टिकारक और अवस्था का स्थापन करनेवाला है।

• ग्रहणी कपाट रस •

(४०) चाँदी की भस्म, मोती भस्म, सुवर्ण भस्म और लोहा-भस्म—इन चारों को एक-एक भाग लो। शुद्ध गन्धक २ भाग और शुद्ध पारा १ भाग लो। पीछे इन सबको खरल में डाल कर खरल करो। इसके बाद खरल किये मसाले को कैथे के रस में घोट कर, हिरन के सींग में दाब-दाब कर भर दो। इसके बाद, उसे सींग पर कपड़-मिट्टी करके आरने कण्डों की मध्यम अग्नि दो। जब शीतल हो जाय, निकाल लो।

उसे फिर खरल में डाल कर खिरेंटी के रस की ७ पुट दो। इसके बाद ओंगे के स्वरस में ३ भावना दो। उसके बाद लोध, अतीस, नागरमोथा, धाय के फूल, इन्द्रजौ और गिलोय के स्वरस में तीन-तीन भावना दो। जिस दवा का स्वरस न निकले, उसका काढ़ा बना कर उसमें इस रस को घोटो। जब सूखने पर आये, तब एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। इसी को 'ग्रहणी-कपाट रस' कहते हैं।

इसकी १ गोली कालीमिर्च के चूर्ण के साथ शहद मिला कर सेवन करने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग नष्ट होते तथा अग्नि दीप्त होती है।

• ग्रहणी-वज्रकपाट रस •

(४१) पारे की भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक, जवाखार, शुद्ध सुहागा, अरनी की जड़ और बच—इन सातों को बराबर-बराबर ले कर पीस लो। पीछे एक दिन अरनी के रस में खरल करो, एक दिन जम्भीरी नीबू के रस में खरल करो और तीसरे दिन भाँगरे के रस में खरल करके गोला बना लो।

उस गोले को सुखाकर, लोहे की कड़ाही में रख कर ऊपर से मिट्टी की सरावा रख कर ढक दो और कड़ाही तथा सरावे की सन्धियों को कपड-मिट्टी से बन्द कर दो। पीछे कड़ाही चूल्हे पर रख कर नीचे मन्दी-मन्दी आग चार घड़ी या १ घण्टा ३६ मिनट तक लगाओ। पीछे चूल्हे से कड़ाही को उतार लो। जब शीतल हो जाय, गोले को निकाल लो। इसके बाद गोले के वज़न के बराबर अतीस का चूर्ण और मोचरस का चूर्ण मिला दो और खरल में डाल कर, कैथे के रस की सात पुट और भाँग के रस की सात पुट दो। इसके बाद उसे धाय के फूलों के रस में घोटो। उसके बाद इन्द्रजी के रस में, उसके बाद नागरमोथा के रस में, उसके बाद लोध के रस में, उसके बाद बेलफल के रस में और शेष में गिलोय के रस में घोटो। जब लुगदी ज़रा गीली रहे, तब ४-४ माशे की गोलियाँ बना लो। इसको 'ग्रहणी वज्रकपाट रस' कहते हैं।

जिसे संग्रहणी रोग हो, उसे यह रस शराब के साथ देना चाहिये, और उसके ऊपर तत्काल चीता, सोंठ, बिड़नोन, बेलगिरी और सेंधा नौन—इन पाँचों का चूर्ण गरम जल के साथ खिलाना चाहिये। इससे सब तरह की संग्रहणी आराम हो जाती है।

• सग्रहणी-कपाट रस •

(४२) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, अभ्रक-भस्म, शुद्ध शिगरफ, जायफल, बेलगिरी, मोचरस, सिंहमुहरा, अतीस, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, धाय के फूल, घी में सिकी हरड़, कैथ, अजमोद, चीते की छाल, अनारदाना, इन्द्रजो, शुद्ध धतूरे के बीज, गजपीपल और अफ़ीम—इन सबको समान-समान ले लो। पहले गन्धक और पारे को घोट कर कज्जली बना लो। इसके बाद उसमें अभ्रक-भस्म, शिगरफ और सार मिला कर घोटो। उधर शेष दवाओं को कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। चूर्ण तैयार होने पर खरल की दवाओं में चूर्ण को मिला कर पोस्त के डोडों का रस ऊपर से डाल-डाल कर घोटो। जब घुट जाय कालीमिर्च के समान गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो।

रोग-नाश—इस रस से अतिसार और संग्रहणी रोग नष्ट होते हैं। अनुपान—दही या माठा अथवा बेल का अर्क़। मात्रा—४ चावल से १ रत्ती तक। समय—सवेरे-शाम।

• कपित्थाष्ट चूर्ण •

(४३) कैथ का गूदा ८ तोले, मिश्री ६ तोले, अनारदाना ३ तोले, इमली ३ तोले, बेलगिरी ३ तोले, धाय के फूल ३ तोले, अजमोद ३ तोले, पीपल ३ तोले, कालीमिर्च १ तोले, सफ़ेद ज़ीरा १ तोले, धनिया १ तोले, पीपरामूल १ तोला, नेत्रबाला १ तोले, साँभर नोन १ तोले, अजवायन १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची के दाने १ तोले, तेजपात १ तोले, नागकेशर १ तोले, चीते की छाल १ तोले और सोंठ १ तोले—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसका नाम 'कपित्थाष्ट चूर्ण' है। इसके सेवन से कण्ठ के रोग अतिसार, संग्रहणी क्षय और गुल्म आराम होते हैं।

• वृहत् दाड़िमाष्टक •

(४४) अनार दाना ३२ तोले, मिश्री ३२ तोले, पीपल ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, अजमोद ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, धनिया ४ तोले, सफ़ेद जीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, वंसलोचन १ तोले, दालचीनी ८ माशे, तेजपात ८ माशे, छोटी इलायची के बीज ८ माशे और नागकेशर ८ माशे—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको 'वृहत् दाड़िमाष्टक' कहते हैं। इसके सेवन करने से अतिसार, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, कंठरोग, मन्दाग्नि, पीनस और खाँसी—ये रोग आराम हो जाते हैं।

• चपला बटी •

(४५) शोधा हुआ कुचला ३ माशे और लौंग १ माशे—इनको खरल में डाल कर, अदरख़ के रस में घोट कर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। हर एक गोली शहद में मिला कर चाटने से संग्रहणी, आम-मरोड़ी के दस्त और शीत-ज्वर नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

• लवणभास्कर चूर्ण •

(४६) समन्दर नोन ८ तोले, सञ्चर नोन ५ तोले, बिड़नोन २ तोले सेंधानोन २ तोले, धनिया २ तोले, पीपल २ तोले, पीपरामूल २ तोले, काला ज़ीरा २ तोले, तेजपात २ तोले, नागकेशर २ तोले, तालीसपत्र २ तोले, अम्लवेत २ तोले, कालीमिर्च १ तोले, सफ़ेद ज़ीरा १ तोले, सोंठ १ तोले, अनारदाना सूखा ४ तोले, दालचीनी ६ माशे और छोटी इलायची के बीज ६ माशे—इनको कूट-पीस कर चूर्ण कर लो।

इसका नाम 'लवणभास्कर चूर्ण' है। इसकी मात्रा ३ माशे की है। इसके सेवन से वात-कफ से होने वाला गोला, तिल्ली, उदर-रोग, बवासीर, संग्रहणी, मन्दाग्नि, दस्त-क़ब्ज़, सूजन, शूल, श्वास, खाँसी, आमवात प्रभृति रोग आराम होते हैं। इससे अग्नि तेज़ होकर भोजन पचता है। यह चूर्ण दही के पानी, दही की मलाई, माठा और शराब वग़ैरः से सेवन किया जाता है। गाय की छाछ के साथ लेने अथवा सौंफ के अर्क़ के साथ लेने से संग्रहणी और मन्दाग्नि रोग आराम होते हैं। गरम जल के साथ लेने से दस्त साफ़ होता है।

• हंस पोटली रस •

(४७) कौड़ी की भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपर, भुना सुहागा, शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारा—इन सबको बराबर-बराबर ले कर, नीबू के रस की भावना देकर, एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। इनमें से एक गोली, काली-मिर्च और घी के साथ सेवन करने से संग्रहणी रोग आराम होता है। पथ्य—माठा और भात। इसका नाम 'हंस पोटली रस' है।

☛ नोट—मात्रा बलाबल देख कर देनी चाहिये। हमारी राय में रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ ठीक होंगी। हमने यह रस 'रसेन्द्र-चिन्तामणि' से लिया है। उसमें बड़ी तारीफ़ लिखी है। हमारा आजमाया नहीं है। सींगिया और पारा वग़ैरः के शोधने की तरकीबें 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे भाग के अन्त में लिखी हैं।

• शम्भुनाथ रस •

(४८) शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हिंगलू, शुद्ध संखिया, शुद्ध सुहागा: शुद्ध बच्छनाग और भुनी फिटकरी—ये सब एक-एक माशे; शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा और शुद्ध अफ़ीम—ये सब सात-सात माशे लो।

जो दवाएँ कूटने-पीसने लायक़ हों, उन्हें कूट-पीस लो। फिर गन्धक और पारे की कजली करके, यानी खरल में घोट कर अलग रख लो। इसके बाद सबको एक जगह कर लो और खरल में डाल कर सात दिन भाँग के रस में घोटो। फिर सात दिन गुड़ के रस में, फिर सात दिन नीबू के रस में और फिर सात दिन धतूरे के रस में घोटो। इस तरह २८ दिन तक घुटाई हो जाने पर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

पुरानी संग्रहणी में बारम्बार ज्वर चढ़ जाता है और बहुत ही भयंकर संग्रहणी में तो कभी ज्वर उतरता ही नहीं। ऐसी दशा में इस 'शम्भुनाथ रस' की

गोलियाँ, अदरख़ के रस में लेने से ज्वर बहुत जल्दी हल्का हो जाता है तथा दस्त भी वन्द हो जाते हैं।

• कफहरिहर रस •

(४६) कॉफी, चाय, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, कोको, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, खाने के काम में आने वाला पीला रंग और अफ़ीम—सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर छान लो और शीशी में रख़ दो। इसको उचित अनुपान के साथ देने से खाँसी, कफ, दमा, शीत-ज्वर, अतिसार, संग्रहणी और हृद्रोग आराम होते हैं। मात्रा २ रत्ती की है।

• दुग्ध बटी •

(५०) अफ़ीम १।। माशे, शुद्ध बच्छनाग विष १।। माशे, लोह भस्म ५ रत्ती और अभ्रक-भस्म ६ रत्ती—सबको एकत्र दूध में घोट कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली दूध के साथ सेवन करने से सूजन-सहित पुरानी संग्रहणी, विषम ज्वर, अनेक तरह की सूजन, मन्दाग्नि और पाण्डु-रोग आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

सूचना—जव तक ये गोलियाँ सेवन करो, नमक और जल क़तई छोड़ दो। खाने और पीने के लिये केवल दूध को काम में लाओ। प्यास लगने पर भी दूध ही पीयो। जव तक इस तरह पथ्य पर चल सको, अच्छी बात है। ख़ूब लाभ होगा।

• अहिफेनादि बटी •

(५१) अफ़ीम २ माशे, जायफल १ माशे, शुद्ध सुहागा १ माशे, अभ्रक-भस्म १ माशे और शुद्ध धतूरे के बीज १ माशे—इन सब को खरल में डाल कर, ऊपर से प्रसारिणी के पत्तों का रस देकर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से आमातिसार, रक्तातिसार और संग्रहणी में अवश्य लाभ होता है। प्रत्येक बार एक गोली शहद में मिला कर देनी चाहिये। परीक्षित है।

नोट—गर्भवती को अफ़ीम या अफ़ीम-मिली दवा कभी न देनी चाहिये।

• दूसरी दुग्धबटी •

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा विष, ताम्र-भस्म, अभ्रक-भस्म, लोह-भस्म, शुद्ध शिगरफ, सेमर का खार और अफ़ीम—इन सबको एक-एक माशे, ले कर खरल में डाल दूध में घोटो और आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—इन गोलियों के सेवन करने से सूजन वाली संग्रहणी में निश्चय ही लाभ होता है। विशेष कर पुरानी संग्रहणी में इन गोलियों से बहुत लाभ होते देखा है। पर, इन गोलियों का सेवन करने में इस बात का पूरा विचार रखना चाहिये, कि रोगी नमक और पानी भूल कर भी न पिये। प्यास लगे तो भी पानी की जगह दूध देना चाहिये। अगर दूध से रोगी का जी ऊब जाय, तो दूध और भात देना चाहिये। अगर पानी बिना रोगी रहे ही नहीं, हज़ार बार कहने पर भी पानी-ही-पानी चिल्लाये, तो गरम पानी देना चाहिये; मगर बहुत थोड़ा।

(५२) सज्जीखार, जवाखार, खारानोन, कालानोन, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, अजमोद, चीता, पीपलामूल, भुनी हींग, ज़ीरा और सौंफ—इन १५ दवाओं को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को निवाये जल, अयवा झड़बेरी के काढ़े के साथ, अथवा माठे के साथ सेवन करने से हृदय-रोग, भूख न लगना, वायुगोला, बवासीर और संग्रहणी—ये रोग आराम हो ज़ाते हैं। और दवाओं से यह दवा उत्तम है। परीक्षित है।

(५३) बादाम की गिरी, नारियल की गिरी, छुहारा, जायफल, चरस और अफ़ीम—ये सब बराबर-बराबर ६-६ माशे ले लो। चरस को घी में भून कर शेष सबके साथ मिला कर, कूट-पीस कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। प्रत्येक दिन एक गोली चावलों के पानी के साथ खिलाने से संग्रहणी आराम हो जाती है। सात दिन तक यही गोलियाँ खिलानी चाहिये। खाने को पुराने चावलों का भात वगैर: हल्का भोजन देना चाहिये। एक हकीम साहब इसे अपना आज़माया हुआ नुसख़ा बताते हैं।

(५४) कपूर, शोधा हुआ (शुद्ध) शिंगरफ, अफ़ीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल—इन को एक-एक माशे ले कर, अदरख के रस में घोट कर, मटर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से सब तरह की संग्रहणी और अतिसार तथा ज्वरातिसार नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(५५) शुद्ध सुहागा २ माशे, शुद्ध शिंगरफ २ माशे और अफ़ीम ४ माशे—इनको खरल में डाल कर, जल के साथ घोटो और कालीमिर्च के समान गोलियाँ बना लो। अगर रात को दस्त ज़्यादा होते हों, तो शहद के साथ एक-एक गोली रोगी को खिलाओ। अगर दिन में ज़्यादा दस्त होते हों, तो नीबू के रस के साथ गोली खिलाओ। इन गोलियों के कुछ दिन सेवन करने से सब तरह की संग्रहणी और वायु शान्त होती है।

(४६) सोंठ, काली मिर्च, पीपर, नीम का गोंद, शुद्ध (धुली) भाँग, ब्रह्म-दण्डी—ऊँटकटारी के पत्ते, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और शुद्ध अफ़ीम—ये सब चीजें ६-६ माशे ले लो और कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद, दो रत्ती फ़ी तोले के हिसाब से, नौ रत्ती कस्तूरी मिला कर, उसे शीशी में रख दो। यह चूर्ण सब तरह की सर्दी और दस्तों की बीमारी में अच्छा है। मात्रा—१ से २ रत्ती तक।

◻ ग़रीबी नुसखे ◻

(५७) कालीमिर्च १ तोला, चीते की जड़ की छाल १ तोला और सेंधा नोन एक तोला—इन तीनों को कूट-पीस-छान कर चूर्ण बना लो। इसमें से ३ माशे चूर्ण, माठा में डाल कर पीने से संग्रहणी, मन्दाग्नि, बवासीर, गुल्म और उदर-रोगों में लाभ होता है। परीक्षित है।

(५८) दशमूल और सोंठ का काढ़ा बना कर पीने से संग्रहणी, सूजन-अतिसार, खाँसी, अरुचि, कण्ठ-रोग और हृदय-रोग आराम होते हैं। सूजन-वाली पुरानी संग्रहणी में परीक्षित है।

(५९) हींग, जहरमोहरा-खताई, कालीमिर्च और शुद्ध अफ़ीम—ये चीजें बराबर-बराबर ले, खरल में डाल, घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, नीबू के रस के साथ सेवन करने से संग्रहणी और सब तरह के उदर-रोग नष्ट होते हैं।

(६०) शीतल-चीनी १ तोला, बड़ी इलायची १ तोला और सोनागेरू १ तोला—इन सबको कपास के पत्तों के रस में घोट कर, बेर के बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली, जल के साथ लेने से संग्रहणी आराम होती है। परीक्षित है।

(६१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, लौंग, आक की जड़ की छाल और अफ़ीम—इन सबको कूट-पीस-छान कर, शीशी में रख दो। इसके सेवन से खाँसी, दमा, कफ, अतिसार, संग्रहणी और कफ-पित्त रोगों में बड़ा लाभ होता है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

(६२) कच्चे बेल का गूदा और सोंठ का चूर्ण बराबर-बराबर ले कर और उनसे दूना पुराना गुड़ मिला कर, उनकी लुगदी-सी कर लेनी चाहिये। इसको बलाबल-अनुसार सेवन करके, ऊपर से माठा भोजन करने से अत्यन्त उग्र संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६३) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुगन्धबाला और मोचरस—इनको बकरी के दूध में डाल कर, दूध को पका कर, तीन दिन तक पीने से अत्यन्त बढ़ी हुई बहुत पुरानी, आम और रुधिर—ख़ून वाली असाध्य संग्रहणी भी आराम होती है। परीक्षित है।

नोट—चार तोले सब दवा ले कर, ३२ तोले दूध में डाल देनी चाहिए और दूध से चौगुना १२८ तोले (१ सेर १० छटाँक) जल भी मिला देना चाहिए। पीछे मन्दाग्नि से दूध को पकाना चाहिये। जब सब पानी जल जाय, केवल दूध-मात्र रह जाय, उतार कर छान लेना चाहिये। पीछे यही दूध पीना चाहिये।

(६४) चीता, चव्य, बेलगिरी और सोंठ—इन चारों को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को खाने से भारी दुखदायी संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६५) कालानोन, चीते की छाल और कालीमिर्च—इन तीनों को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से बवासीर, संग्रहणी, वायु-गोला, उदर-रोग, तिल्ली और भूख का न लगना—ये सब नष्ट हो हो जाते हैं।

नोट—यह चूर्ण लगातार सेवन करने से उक्त रोगों में बड़ा लाभ दिखाता है। जल्दबाज़ी न करनी चाहिये। काले नोन के स्थान में साँभर नोन भी लेते हैं।

(६६) तीन माशे आम के फूल, महीन पीस कर, बासी जल के साथ पीने से संग्रहणी चली जाती है।

(६७) चार या छह माशे राल, छह माशे गुड़ या चीनी में मिला कर खाने और ऊपर से बकरी का दूध पीने से संग्रहणी नष्ट होती है।

(६८) बबूल का गोंद नौ माशे, आध पाव शीतल जल के साथ तीन दिन खाने से संग्रहणी चली जाती है।

नोट—अगर दस्त ज़्यादा होते हों तो इसी गोंद की १ खुराक में ३ माशे ख़सख़स के बीज मिला कर खाने से संग्रहणी फौरन चली जाती है।

(६९) खजूर के फल ६ माशे, गाय के ७ तोले दही के साथ खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७०) ६ माशे कतीरा रात को आध पाव जल में भिगो दो और सवेरे मल कर, उसमें १ तोला शक्कर मिला कर खा जाओ। इससे भी संग्रहणी चली जाती है।

(७१) लिहसौड़े की ३ माशे नर्म-नर्म पत्तियाँ पीस कर खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७२) सफ़ेद जीरा आधा तोला, गाय के दो तोले दही में मिला कर खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७३) तीन दाने चिकनी सुपारी की राख, गाय के दो तोले दही में मिला कर खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७४) काली मूसली ६ माशे, खूब महीन पीस कर, आध पाव गाय की छाछ या माठे के साथ पीने से संग्रहणी जाती रहती है।

(७५) दो तोले मसूर, १५ तोले जल, में भिगो दो और पीछे काढ़ा बनाओ। जब तिहाई जल रह जाय, उसमें ६ माशे बेलगिरी मिला दो। जब वह गल जाय, उतार कर छान लो और शीतल करके पी लो। इससे संग्रहणी, पीलिया, कामला, आम और कोख का दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं।

(७६) शुद्ध अफ़ीम और केसर 'शहद' में घिस कर एक चावल भर देने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी नष्ट हो जाते हैं।

(७७) २ माशे (धुली) भाँग को भून कर, ३ माशे शहद के साथ चाटने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है।

(७८) माठे में सोंठ और काला नमक डाल कर पीने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है।

☛ **नोट**—ग्रहणी रोग में, मल न उतरने की हालत में, काला नमक और अजवायन बराबर-बराबर लेकर, और पीस कर, तीन माशे फ़ाँक कर, गरम जल पीने से दस्त साफ़ हो जाता है। अथवा सेंधा नमक गाय के घी में मिला कर सेवन करने से भी मल पतला हो कर निकल जाता है।

(७९) अफ़ीम १ माशे और सीप का चूना १ माशा—दोनों को पानी में पीस कर, मसूर के दाने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग आराम हो जाते हैं।

(८०) काली मूसली का चूर्ण छाछ में अथवा चावलों के धोवन में मिला कर पीने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है; पर ऊपर से छाछ या माठा मिला कर भात खाना ज़रूरी है। परीक्षित है।

त्याज्य या असाध्य संग्रहणी रोगी

वृद्धस्य शोथयुक्तस्य गतवह्निबलस्य च ।
ग्रहण्यार्तस्य भिषजा क्रिया त्याज्या यशोर्थिना ।।

यश चाहने वाला वैद्य ऐसे संग्रहणी वाले का इलाज न करे, जो बूढ़ा हो, जिसके सूजन आ रही हो और जिसकी पाचन-शक्ति नष्ट हो गई हो ।

संग्रहणी और अतिसार में भेद

'वंगसेन'-प्रभृति अनेक ग्रन्थों के अनुवादक, वैद्य-सम्पादक, पण्डितवर शंकरलाल हरिशंकर जी लिखते हैं—

'अतिसार शरीर की जलीय धातु के क्षुब्ध होने से उत्पन्न होता है; पर संग्रहणी शरीर की ग्रहणी-कला के दूषित होने से उत्पन्न होती है । यद्यपि अतिसार और संग्रहणी दोनों ही अन्त्र-सम्बन्धी—आँतों के रोग हैं, किन्तु संग्रहणी में ग्रहणी-कला के दूषित होने से अर्थात् ग्रहणी नामक आँत की ग्रहणी शक्ति का ह्रास होने से परिपाक-यन्त्र ख़राब हो जाता है; लेकिन अतिसार में सम्पूर्ण देह की जलीय धातु के क्षुब्ध होने से परिपाक-यन्त्र की क्रिया ख़राब होती है—यन्त्र में कुछ विकृति नहीं होती है । इसके सिवाय अतिसार में पतला मल उतरता है; किन्तु संग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है । संग्रहणी में कभी गाढ़ा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है ।

आमातिसार में पेट में शूल, ऐंठनी शरीर से भारीपन और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं, वे संग्रहणी में नहीं होते । संग्रहणी में पेट और आँतों में पीड़ा होती है; परन्तु आमातिसार की अपेक्षा बहुत कम । आमातिसार में क्षुधा—भूख एकदम कम हो जाती है, पर संग्रहणी में कभी-कभी अत्यन्त भूख लगती है । और सब प्रकार के रसों का सेवन करने की इच्छा बलवती होती है । आमातिसार में अनेक प्रकार की धातुएँ अपक्व—आमयुक्त मल के रूप में निकलती हैं, परन्तु संग्रहणी में आमातिसार के समान मल में विविध वर्णता, आम-गन्ध आदि लक्षण भी नहीं होते ।'

☛ **नोट**—'अतिसार और संग्रहणी' एवं 'प्रवाहिका और आमातिसार' तथा 'रक्तार्श और रक्तातिसार' प्रभृति इन कई रोगों में अन्तर ज़रूर है, पर यह अन्तर बड़ी बारीक नज़र से जाना जाता है । इसीसे हमने इनका अन्तर खूब खुलासा कर के लिख दिया है । प्रवाहिका और अमातिसार का अन्तर उधर अतिसार-वर्णन के अन्तिम

पृष्ठ में लिख आये हैं। संग्रहणी और आमातिसार का अन्तर ऊपर लिख कर दिखाया है। वैद्यक सीखने वाले को यह अन्तर खूब अच्छी तरह समझ-समझ कर हृदयंगम कर लेना चाहिए, जिससे रोग-परीक्षा या मर्ज़ की तशख़ीश में भूल न हो। वैद्य का पहला और मुख्य काम रोग-परीक्षा ही है। रोग-परीक्षा ठीक होने से ही चिकित्सा में सफलता हो सकती है। इन भेदों को तथा और भी बहुत-सी जानने योग्य बातों को, आगे, हम 'प्रश्नोत्तर' के रूप में भी दिखलाते हैं :—

□ परमावश्यक प्रश्नोत्तर □

■ प्र० (१) संग्रहणी और अतिसार किस तरह होते हैं ?

□ उ०—ग्रहणी नामक आँत के ख़राब होने से संग्रहणी होती है, पर अतिसार शरीर की जलीय धातु के क्षुब्ध होने से होता है।

■ प्र० (२) क्या अतिसार और संग्रहणी दोनों ही आँतों के रोग नहीं हैं ?

□ उ०—बेशक, दोनों ही आँतों के रोग हैं।

■ प्र० (३) अगर दोनों आँतों के रोग हैं, तो इनमें भेद क्या है ?

□ उ०—संग्रहणी में परिपाक-यन्त्र ख़राब हो जाता है, पर अतिसार में परिपाक-यन्त्र ख़राब नहीं होता; उसकी क्रिया-मात्र ख़राब होती है।

■ प्र० (४) संग्रहणी और अतिसार के दस्तों में क्या भेद है ?

□ उ०—अतिसार में पतला मल उतरता है, किन्तु संग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है। संग्रहणी में कभी गाढ़ा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है, कभी दस्त बन्द हो जाते हैं और कभी फिर होने लगते हैं।

■ प्र० (५) संग्रहणी और अतिसार के लक्षणों में क्या भेद हैं ?

□ उ०—अतिसार में पेट में दर्द, मरोड़ी-ऐंठनी, शरीर में भारीपन और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं। संग्रहणी में भी पेट और आँतों में पीड़ा होती है, परन्तु अतिसार की अपेक्षा बहुत कम।

■ प्र० (६) अतिसार में तो भूख एकदम से मारी जाती है। क्या संग्रहणी में भी भूख नहीं लगती ?

□ उ०—आमातिसार में तो भूख बन्द हो जाती है, खाने का नाम भी बुरा लगता है; पर संग्रहणी में कभी-कभी बड़ी भूख लगती है और रोगी तरह-तरह के मीठे-खट्टे आदि रस खाना चाहता है।

☐ उ०—अतिसार में अनेक प्रकार की धातुएँ अपक्व (आम-युक्त) मल-रूप में निकलती हैं, परन्तु संग्रहणी में केवल अपक्व या पक्व मल ही निकलता है। इसके सिवा संग्रहणी में आमातिसार की तरह मल में विविध रंग और कच्ची दुर्गन्ध आदि लक्षण नहीं होते।

■ प्र० (८) आमातिसार और प्रवाहिका के मल में क्या अन्तर है ?

☐ उ०—आमातिसार में अनेक प्रकार के पतले पदार्थ कच्चे मल के साथ निकलते हैं; किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या ख़ून मिला कफ निकलता है।

■ प्र० (९) प्रवाहिका को और संग्रहणी को अँगरेजी में क्या कहते हैं ?

☐ उ०—प्रवाहिका को डिसेन्ट्री 'और संग्रहणी को' 'क्रॉनिक डिसेन्ट्री' कहते हैं।

■ प्र० (१०) वैद्य को कैसे संग्रहणी-रोगी का इलाज करना चाहिए ?

☐ उ०—बूढ़े, पाचन-शक्ति नष्ट हो जाने वाले और सूजन वाले संग्रहणी-रोगी का इलाज करने से वैद्य की बदनामी होती है।

■ प्र०—(११) क्या वृद्ध मनुष्य की संग्रहणी आराम नहीं होती ?

☐ उ०—बेशक, बूढ़े की संग्रहणी आराम नहीं होती। यदि हो भी जाती है, तो जड़ से आराम नहीं होती। कहा है :—

वृद्धस्य नूनं ग्रहणी विकारो हन्त तनुं नो विनिवर्त्तते च।

बूढ़े का ग्रहणी-रोग हरगिज़ नहीं जाता। यदि दैवयोग से चला भी जाता है, तो निर्मूल नहीं होता।

■ प्र० (१२) अतिसार आराम होने पर संग्रहणी कैसे हो जाती है ?

☐ उ०—अतिसार आराम हो जाने पर भी यदि मन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है, तो अग्नि दूषित हो कर ग्रहणी नामक आँत को दूषित कर देती है। ग्रहणी के दूषित होने से संग्रहणी हो जाती है।

■ प्र० (१३) इस रोग का नाम संग्रहणी क्यों रखा गया है ?

☐ उ०—क्योंकि यह ग्रहणी नामक आँत के दूषित होने से होती है।

■ प्र० (२४) क्या ग्रहणी-रोग और संग्रहणी-रोग में कुछ भेद है ?

☐ उ०—हाँ, भेद है; जब ग्रहणी आमवात का संग्रह करती है, तब ग्रहणी-रोग को संग्रह ग्रहणी या संग्रहणी कहते हैं।

■ प्र० (१५) ग्रहणी-रोग भारी है या संग्रहणी ?

☐ उ०—ग्रहणी से संग्रहणी भयंकर है।

■ प्र० (१६) क्या संग्रहणी में नित्य एक नियम से दस्त नहीं होते ?

□ उ०—नहीं; संग्रहणी में पन्द्रह दिन में, महीने भर में, दस दिन में अथवा नित्य पतला, गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कच्चा, आवाज और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरता है।

■ प्र० (१७) संग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात को शान्त रहती है, इसका क्या कारण है ?

□ उ०—संग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात में शान्त रहती है, यह व्याधि का प्रभाव है।

■ प्र० (१८) संग्रहणी के सिवा ग्रहणी रोग का और भी कोई भेद है ?

□ उ०—हाँ, घटीयन्त्र।

■ प्र० (१९) घटीयन्त्र नाम क्यों पड़ा ?

□ उ०—जिस तरह घड़े में से पानी निकलते समय 'घग-घग'-आवाज होती है, उसी तरह 'घटीयन्त्र' रोग में मल उतरते समय 'घग-घग' आवाज होती है। इसी से इसका नाम 'घटीयन्त्र' रखा गया है।

■ प्र० (२०) क्या घटीयन्त्र रोग असाध्य है ?

□ उ०—हाँ, घटीयन्त्र असाध्य ग्रहणी रोग है। उसके शरीर में व्याप्त होने से मृत्यु ही होती है।

■ प्र० (२१) क्या संग्रहणी में भी अतिसार की तरह सामता और निरामता—कच्चापन और पक्कापन होता है ?

□ उ०—हाँ, संग्रहणी में भी, अतिसार की तरह कच्चेपन और पक्केपन का ख़याल करना पड़ता है। अतिसार की तरह ही आम को पचाना होता है।

मतलब यह कि संग्रहणी-रोग की भी अपक्व अवस्था में, यानी कच्चे रहने की हालत में, मल रोकने वाली दवा न देनी चाहिए। अपक्व अवस्था में पाचक दवा और पथ्य देना चाहिए। जब आम पच जाय, तब दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहिए। आम पचाने के लिए सामान्य चिकित्सा में लिखी 'चित्रकादि गुटिका' देना अच्छा है। अथवा धनिया, अतीस, नेत्रवाला, अजवायन, नागरमोथा, सोंठ, बरियारा, सरिवन, पिथवन और बेलगिरी—इन दस दवाओं का काढ़ा पिलाना, चाहिए। इस काढ़े से आम पच कर अग्नि तेज होती है। अथवा सोंठ, नागरमोथा, इलायची और गिलोय—इन चारों का काढ़ा देना चाहिए। आम पचाने के लिए ये तीनों नुसख़े परीक्षित हैं।

■ प्र० (२२) ग्रहणी रोग में आम को पचाने के लिये क्या पथ्य देना चाहिये ?

□ उ०—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनसे बनायी पेया और तक्र (माठा) देना चाहिये। कैथा, बेलगिरी, खट्टा नोनिया, छाछ-माठा और अनार के रस से पकाई यवागू आम को पचाती और गाढ़ा करती है।

■ प्र० (२३) संग्रहणी रोग में कौन-कौन चीज़ें हितकारी हैं ?

□ उ०—अग्नि-दीपक पंचकोल—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—से बना हुआ अन्न-पान, छाछ, पेया, यवागू, मण्ड और यूप प्रभृति हल्के अन्न संग्रहणी में हितकारी है।

■ प्र० (२४) पेया और यवागू आदि बनाने की विधि कहाँ लिखी है ?

□ उ०—'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे भाग में।

■ प्र० (२५) वातज, पित्तज और कफज संग्रहणी में क्या अन्तर है ?

□ उ०—(१) बादी की संग्रहणी में बहुत देर में और बड़े कष्ट से पतला, सूखा और कच्चा मल निकलता है। (२) पित्त की संग्रहणी में पीला, बहुत ही गर्म और बदबूदार मल निकलता है। (३) कफज संग्रहणी में चिकना, सफेद और कफ-मिला मल उतरता है।

☞ नोट—वातज संग्रहणी में पहले मल और पीछे आँव निकलता है। कभी-कभी निरन्तर आँव मिला मल भी निकलता है।

■ प्र० (२६) वातज, पित्तज और कफज संग्रहणी रोग में कौन-कौन से नुसखे शीघ्र फलप्रद हैं ?

□ उ०—वातज में शुण्ठ्यादि क्वाथ अच्छा है। पित्तज में रसांजन चूर्ण और तिक्तादि क्वाथ अच्छे हैं। कफज में पथ्यादि चूर्ण अच्छा है।

■ प्र० (२७) आम तौर पर भयानक संग्रहणी में कौन से नुसखे अच्छे हैं ?

□ उ०—एक ही दवा सभी रोगियों को आराम नहीं कर सकती; चाहे वह कैसी ही अच्छी क्यों न हो। फिर भी, संग्रहणी रोग में जातीफलादि चूर्ण, कनक रस, लाई चूर्ण, ग्रहणीकपाट-रस, ग्रहणी-वज्र कपाट-रस, हंसपोटली रस और लवण-भास्कर चूर्ण आदि उत्तम दवाएँ हैं। हमने अनेक रोगी 'लवणभास्कर चूर्ण' को छाछ के साथ सेवन करा कर और जल के स्थान में केवल सौंफ का अर्क पिला कर आराम किये हैं। हम पहले बहुधा 'लवणभास्कर' ही दिया करते हैं। अगर कोई रोगी इससे आराम नहीं होता; तो कनक-रसादि देते हैं। अगर सूजन भी होती

है, तो बहुधा 'दुग्धवटी' या 'दशमूल का काढ़ा' सोंठ डाल कर देते हैं। अगर पुरानी संग्रहणी होती है, तो 'लौहपर्पटी' या 'स्वर्णपर्पटी' भी देते हैं। गरीबों के लिए हमने ग़रीबी नुसख़े लिखे हैं। ध्यान रखें, जितने नुसख़े लिखे हैं वे सब हमारे आज़मूदा हैं। पर ध्यान रख कर अतिसार की तरह संग्रहणी में भी अपक्व आम की दशा में दस्त बन्द करने वाली दवा देनी चाहिये। पहले चित्रकादि बटी प्रभृति से आम पचाना चाहिये, इसके बाद दस्त बन्द करने वाली दवा देनी चाहिये।

प्र० (२८) संग्रहणी में, पुरानी हो जाने पर, बहुधा बारम्बार ज्वर चढ़ आता है या चढ़ा ही रहता है, उस दशा में कौन-सी दवा देनी चाहिये, जिससे ज्वर भी हल्का पड़े और दस्त भी बन्द हो जायँ।

☐ उ०—उस हालत में 'शम्भुनाथ रस' की गोलियाँ अदरख के रस में देने से ज्वर हल्का होता है और दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

■ प्र० (२९) ग़रीबों के लये संग्रहणी में सर्वोत्तम दवा क्या है ?

☐ उ०—ग़रीबों के लिये, पहले लिखी हुई विधि से, एकमात्र माठा सेवन कराना सबसे अच्छा है; अथवा 'सामान्य चिकित्सा' में लिखे ग़रीबी नुसख़े देने चाहिये।

■ प्र० (३०) क्या माठा पित्त को कुपित नहीं करता ?

☐ उ०—नहीं।

■ (३१) पुरानी संग्रहणी में रोग के लिये क्या देना चाहिये ?

☐ उ०—रोगी का बलाबल, रोग की अवस्था और दोषों का विचार करके 'दुग्धवटी', 'स्वर्णपर्पटी' या 'लौहपर्पटी' देनी चाहिये। परीक्षित है। पुरानी संग्रहणी में शोथ या सूजन आदि उपद्रव हों, तो संग्रहणी वाले को 'शम्भुनाथ रस' देना अच्छा है। पुरानी ग्रहणी में 'चाँगेरी घृत' देना अच्छा है। बिल्व तेल का सेवन भी हितकारी है।

☛ नोट—'स्वर्णपर्पटी' प्रभृति बनाने की विधि अतिसार में लिखी हैं। वहीं, अतिसार के अध्याय में, संग्रहणी-नाशक और भी नुसख़े लिखे हैं। इस बात को न भूलना चाहिये कि अतिसार-नाशक अनेक नुसख़े संग्रहणी का भी नाश करते हैं। जैसा रोग हो, ज़रा विचार कर, वैसी ही दवा देनी चाहिये। अतिसार और अर्श रोग में लिखे हुए घी, तेल आदि चिकने पदार्थ ग्रहणी रोग में भी लिये जा सकते हैं, क्योंकि इन तीनों के कारण—हेतु समान ही है।

दुग्धवटी हमने दो तरह की लिखी है। दोनों ही अच्छी हैं। पर सूजन का ज़ोर अधिक होने की दशा में पिछली अच्छी है।

■ प्र० (३२) अगर ग्रहणी या संग्रहणी में मल न निकले, तो क्या करना चाहिये ?

□ उ०—काला नोन और अजवायन बराबर-बराबर ले कर, पीस-कूट कर छान लो। फिर उस चूर्ण में से तीन-तीन माशे चूर्ण, गरम जल के साथ फँकाओ। इससे कड़ा मल निकल जायगा।

■ प्र० (३३) संग्रहणी रोगी को सबसे अच्छा पथ्य क्या है ?

□ उ०—सब तरह के संग्रहणी रोगों में एकमात्र माठा सर्वोत्तम है। इसके सिवा ग्रहणी रोग में कैथ का गूदा, बेल का गूदा और अनार का छिलका—इन सबको दो-दो तोले कर और अन्दाज़ से दही का माठा ले कर, यवागू बना कर खिलाना भी अच्छा पथ्य है।

■ प्र० (३४) क्या अतिसार और संग्रहणी में कम जल पीना अच्छा है ?

□ उ०—बेशक। अतिसार, संग्रहणी और मन्दाग्नि एवं सूजन प्रभृति रोगों में कम जल पीना अच्छा है। बहुत जल पीने से ये रोग निश्चय ही बढ़ते हैं।

■ प्र० (३५) क्या अतिसार और संग्रहणी में शीतल जल भी मना है ?

□ उ०—हाँ। संग्रहणी, अतिसार, नवीन ज्वर, अफारा वायुगोला और ज़ुक़ाम प्रभृति में शीतल जल देना मना है।

नोट—'चरक' में लिखा है—अत्यन्त पित्त-कोप के दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसार-युक्त ज्वरों में गरम जल न देना चाहिये। इनमें गरम जल देने से भ्रम, प्रलाप और अतिसार अत्यन्त बढ़ जाते हैं।

■ (३६) अतिसार और संग्रहणी में अगर शीतल जल मना है, तो कैसा जल देना चाहिये ?

□ उ०—दाह, अतिसार, पित्त, रुधिर-विकार, पीलिया और पित्त के रोगों में जल को औटा कर शीतल कर लेना चाहिये और रोगी को बहुत प्यास लगने पर फिर वही जल थोड़ा-थोड़ा देना चाहिये। कहा है—

दशांशं षोडशांशं वा शतांशं वा भृतं जलम्।
सुशीतं पाचनं ग्राही दीपनं दोषनाशनम्।
यथा यथा भृतं तोयं ज्वरातिसारिणो भवेत्।
दीपनं पाचनं ग्राही आरोग्यं च तथा तथा॥

जल औटाने के बाद, दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग अथवा सौवाँ भाग रह जाय, तो, शीतल होने पर, वह पाचन, ग्राही—क़ाबिज़ और अग्नि-दीपन करने वाला होता है। जल जितना ही अधिक औटाया जाता है, ज्वरातिसार वाले को उतना ही वह अधिक गुणों वाला, आरोग्य प्रदान करने वाला, दीपन, पाचन और ग्राही होता है।

दस्त के रोगियों को आरोग्योदक, यानी सेर का पाव भर जल भी अच्छा होता है। यह सदैव पथ्य है। यह मल को रोकने वाला, अग्नि को दीपन करने वाला, पाचक और हल्का है तथा अफारा, शूल, ववासीर, सूजन और वायुगोला प्रभृति का नाश करने वाला है।

☛ **नोट**—हमने जल के सम्बन्ध में यहाँ इतना लिख दिया है; फिर भी, जल को किस तरह औटाना, उसे ढक्कन देकर औटाना या बिना ढक्कन, रात का औटाया रात को देना या न देना, कहाँ का पानी लेना प्रभृति विषयों को जानने के लिए 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे भाग में ज़रूर देख लें।

■ प्र० (३७) अगर अतिसार-रोगी को कोई भी पथ्य पदार्थ न पचे, तो क्या दिया जाय ?

□ उ०—हारीत कहते हैं :—

क्षीणे ज्वरातिसारे च सामे च विषमज्वरे।
मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पयः फेनं प्रशस्यते॥

क्षीण, ज्वर-अतिसार, आम-ज्वर और कफ-प्रधान मन्दाग्नि में 'दुग्धफेन' या 'दूध के झाग' देना अच्छा है।

जब जीर्ण-ज्वरी या अतिसार-रोगी को कुछ भी नहीं पचता, उसकी अग्नि एकदम मन्दी हो जाती है, तब 'दूध के झाग' देकर रोगी के प्राण बचाये जाते हैं। संग्रहणी-रोगी को तो जितना ही हल्का पथ्य दिया जाय, उतना ही अच्छा है। दुग्धफेन तैयार करने की विधि 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे भाग के 'पथ्यापथ्य-वर्णन' में लिखी है।

★★

तीसरा अध्याय

अर्श-वर्णन

★

□ अर्श की सम्प्राप्ति □

बवासीर

वातादिक दोष—वात, पित्त और कफ—चमड़ा, माँस और मेद को दूषित कर के गुदा में जो मांस के अंकुर उत्पन्न करते हैं, उनको ही अर्श या बवासीर कहते हैं ।

नोट—सिर्फ गुदा में होने वाले मस्सों को ही अर्श या बवासीर नहीं कहते हैं । मशहूर तो गुदा की बवासीर ही है; लेकिन अर्श या मस्से गुदा के सिवा नाक, कान, नाभि और लिङ्ग में भी होते हैं, यह 'सुश्रुत' का मत है । लिङ्ग की सुपारी पर छोटे-छोटे लाल-लाल अंकुर-से पैदा हो जाते हैं, उनको 'लिङ्गार्श' और नाक में होने वालों को 'नासार्श' कहते हैं । कार्य-चिकित्सक गुदा में होने वाले मस्सों को ही बवासीर कहते हैं । दूसरों को वे अधिमांस कहते हैं; क्योंकि नाक और लिङ्ग प्रभृति में जो अर्श होता है, उसमें पूर्व-रूप के लक्षण नहीं मिलते ।

अर्श या बवासीर का स्थान

ऊपर लिख आये हैं कि गुदा में जो अंकुर या मस्से होते हैं, उन्हीं को अर्श या बवासीर कहते हैं । ये मस्से गुदा की प्रवाहिणी, सर्जनी और ग्राहिणी या संवरणी नाम की तीनों वलियों में होते हैं । जो गुदा के बाहरी भाग में होते हैं, उनको बाह्यार्श और जो भीतरी भाग में होते हैं उनको आभ्यान्तरार्श कहते है । भीतरी अर्श से बाहरी अर्श सुख-साध्य हैं ।

नोट—मनुष्य की गुदा में तीन आँटे होते हैं । उन्हीं को संस्कृत में आवर्त्त या वलि कहते हैं । एक आँटा ऊपर, दूसरा नीचे और तीसरा बीच में होता है । ऊपर के आँटे को 'प्रवाहिणी' कहते हैं; उसका काम मल और हवा को बाहर निकालना है । बीच के आँटे या वलि का नाम सर्जनी है । उसका काम मल और पवन को बाहर पटक देना है । तीसरे आँटे का नाम ग्राहिणी या संवरणी है । उसका काम मल और हवा को बाहर निकाल कर, गुदा को ज्यों-की-त्यों कर देना है । पहली और दूसरी वलियों का परिमाण डेढ़-डेढ़ अंगुल है और तीसरी ग्राहिणी

वलि का परिमाण एक अंगुल है। बाकी आधे अंगुल में गुदा-द्वार का जो हिस्सा है उसे गुदा का ओठ कहते हैं। इन तीनों आँटों में ही अर्श या बवासीर अथवा मस्से होते हैं।

आयुर्वेदानुसार अर्श के भेद

शास्त्र में छह प्रकार की अर्श या बवासीर लिखी हैं—(१) वातज। (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सन्निपातज, (५) रक्तज, (६) सहज।

☛ नोट—आयुर्वेद में छह प्रकार की बवासीर लिखी हैं; लेकिन हिकमत में ख़ूनी और बादी—दो तरह की ही लिखी हैं और सर्वसाधारण भी दो तरह की ही कहते हैं।

अर्श या बवासीर के सामान्य लक्षण

साधारणतया अर्श या बवासीर में क़ब्ज़, अजीर्ण, पाख़ाना सख़्ती से होना और उस समय दर्द होना तथा ख़ून गिरना—ये लक्षण होते हैं। ख़ून किसी के दो-चार बूंद गिरता है, किसी के दो-चार तोले और किसी-किसी के तीस-चालीस तोले तक। जब बीमारी ज़ोर पर होती है, तब उकड़ू बैठने या पेशाब करने के समय भी ख़ून गिरने लगता है, इसीसे किसी-किसी की धोती पीछे से ख़ून से तर हो जाती है।

वातज-अर्श के कारण

जो मनुष्य कड़वा, कसैला, चरपरा, रूखा, ठण्डा और बहुत ही हल्का भोजन करता है, बहुत ही थोड़ा खाता है, भोजन के समय भोजन नहीं करता, तेज़ शराब पीता है, बहुत ही ज्यादा-स्त्री-प्रसंग करता है, उपवास या व्रत करता है, ठण्डे देश में रहता है, जाड़े में गरम नहीं रहता, अधिक दण्ड-मुग्दर फेरता और कसरत करता है, शोक करता और हवा तथा धूप में फिरता है—उसकी वायु कुपित होकर वातज-बवासीर उत्पन्न करती है।

☛ नोट—हारीत मुनि ने नमकीन और विदाही पदार्थों का सेवन, मलमूत्र और हवा का रोकना प्रभृति कारण वातज अर्श के अधिक लिखे हैं।

वातज-अर्श का समय

वातज बवासीर के पैदा होने या ज़ोर पकड़ने का समय हेमन्त-काल या जाड़े का मौसम है।

वातज अर्श के लक्षण

वायु की अधिकता से गुदा के अंकुर या मस्से सूखे होते हैं। उनसे स्राव नहीं होता, यानी ख़ून वग़ैरः नहीं गिरता, परन्तु एक तरह की पीड़ा होती रहती है। इस बवासीर के मस्से मुरझाये हुए, काले, लाल, टेढ़े, कठोर, खरदरे, बाँके, तीखे, फटे मुंह के, कंदूरी, बेर, खजूर या कपास के फूलों के जैसे होते हैं। ये एक-से नहीं होते। कोई सरसों के समान और कोई कदम्ब के फूलों-जैसे होते हैं। सिर, पसवाड़े, कन्धे, कमर, जाँघ और पेड़ू में वेदना होती है। छींक और डकार नहीं आतीं, हृदय जकड़ा-सा मालूम होता और पेट भारी रहता है। अरुचि, खाँसी, श्वास, कानों में आवाज़ होना, कभी अन्न का न पचना और कभी न पचना और भ्रम—ये उपद्रव होते हैं। इस बवासीर वाले के पत्थर-समान कड़ा, थोड़ा, आवाज के साथ, वात की प्रवाहिका के लक्षणों वाला, शूल-सहित, झागदार और चिकना दस्त धीरे-धीरे होता है। इस बवासीर वाले के चमड़े का रंग तथा पाख़ाना, पेशाब, आँखें और मुख—ये काले-से हो जाते हैं। वायुगोला, ताप-तिल्ली और अष्ठीला नामक वायु की गाँठ—इन रोगों के उपद्रव इस वातज-अर्श में होते हैं।

पित्तज अर्श के कारण

जो मनुष्य कड़वा, खट्टा और नमकीन रस ज़्यादा सेवन करता है, अधिक दण्ड-कसरत करता हैं, आग के सामने या धूप में रहता है, बहुत मिहनत करता है, गरम देश में रहता है, क्रोध करता है, शराब पीता है, पराया धन या उन्नति देख कर जलता है, दाहकारक और गरम पदार्थ खाता-पीता है—उसको पित्त की बवासीर होती है।

पित्तज अर्श का समय

पित्तज बवासीर गरमी के मौसम में होती या ज़ोर करती है।

पित्तज अर्श के लक्षण

पित्तज की बवासीर वाले के मस्सों के मुंह नीले, लाल, पीले और सफ़ेदी लिये होते हैं। उन मस्सों से महीन धार से ख़ून चूता और ख़ून में बदबू आती है। मस्से महीन, कोमल और शिथिल होते हैं। उनका आकार तोते की जीभ, कलेजा, और जोंक के मुख के समान होता है। देह में दाह होता है, गुदा पक जाती है, ज्वर, पसीना, प्यास, मूर्च्छा, अरुचि और मोह—ये उपद्रव होते हैं। मस्सों से पतला-पतला ख़ून चूता है और कभी-कभी वे पक जाते हैं। नीला, पीला या लाल

रंग का मल-भेद होता है। रोगी का चमड़ा, नाख़ून और नेत्र वगैरः हरताल के समान हरे, पीले और हल्दी के-जैसे हो जाते हैं।

कफज बवासीर के कारण

जो मनुष्य मीठे, चिकने, शीतल, खारे, खट्टे और भारी पदार्थ खाता है, व्यायाम—मिहनत नहीं करता, दिन में सोता, गद्दे-तकियों पर पड़ा रहता, पूरब की हवा खाता, शीतल देश में रहता, शीतकाल में अपने को गरम नहीं रखता और चिन्ता को पास नहीं आने देता, उसे 'कफ की बवासीर' होती है।

कफ की बवासीर का समय

कफ की बवासीर शीत काल और शीत-प्रधान देश में ज़ोर करती या पैदा होती है।

कफज बवासीर के लक्षण

इस बवासीर वाले के मस्से महामूल यानी गहरी जड़ वाले, कठिन, मन्दी-मन्दी पीड़ा करने वाले, सफ़ेद, लम्बे, मोटे, चिकने, कड़े, गोल, भारी, स्थिर, गाढ़े कफ से लिहसे और मणि के समान साफ़ चमकदार होते हैं। उनमें खुजली बहुत होती और वह प्यारी लगती है। मस्से करील या कटहल के काँटों के समान अथवा गाय के थनों के सदृश होते हैं। उनकी वजह से पेट में अफारा तथा गुदा, मूत्र-स्थान और नाभि में पीड़ा होती है। श्वास, खाँसी, ख़ाली ओकारी, अरुचि, पीनस, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर, नपुंसकता, अग्निमान्द्य, अतिसार और संग्रहणी आदि रोग होते हैं। इस रोग में लक्षण-युक्त, कफ-मिला, चर्बी की तरह का बहुत-सा मल आता है। मस्सों में से ख़ून नहीं गिरता। गाढ़ा मल होने से भी मस्से नहीं फूटते। शरीर का रंग चिकना और पीला होता है। नाख़ून और मल-मूत्र आदि भी चिकने और पाण्डु-वर्ण—पीले-से होते हैं।

द्वन्द्वज बवासीर के कारण

दो-दो दोषों के कारण और लक्षण मिलें, तो द्वन्द्वज बवासीर समझनी चाहिये।

त्रिदोषज बवासीर के कारण

अलग-अलग वातादि दोषों की बवासीरों के जो कारण लिखे हैं, वे सब त्रिदोष की बवासीर के कारण हैं। सहज बवासीर के लक्षण इससे मिलते हैं।

सन्निपातज और सहज बवासीर के लक्षण

जिसमें वात, पित्त और कफ की बवासीरों के लक्षण एकत्र मिलें, वही त्रिदोषज या सन्निपातज बवासीर है। इसके जो लक्षण हैं, वही सहज बवासीर के लक्षण हैं।

सहज अर्श के लक्षण*

अगर माँ या बाप को बवासीर हो और पुत्र के जन्म-समय में उनके द्वारा अर्श रोग पैदा करने वाले आहार-विहार सेवन किये गये हों, तो उनकी वजह से पुत्र को भी बवासीर हो जाती है। उसी को 'सहज-अर्श' कहते हैं। इस रोग में मस्से कठोर, लाल रंग के या पीले-से होते हैं और उनका मुख भीतर की तरफ रहता है। इस रोग वाला दुबला, कम खाने वाला, मन्दी आवाज़ वाला और क्रोधी होता है। उसके सारे शरीर में नस-जाल दीखता है। उसके आँख, कान, नाक और सिर में पीड़ा रहती है, पेट में गुड़गुड़ाहट की आवाज होती है, आँतें गूँजती हैं तथा अरुचि और मन्दाग्नि आदि उपद्रव भी होते हैं। अगर रोगी के शरीर में वायु की अधिकता होती है तो सहज बवासीर में वातज अर्श के; अगर पित्त की अधिकता होती है तो पित्तज अर्श के और कफ की अधिकता होती है तो कफज अर्श के लक्षण मिलते हैं।

रक्तार्श के कारण

पित्तज अर्श के जो कारण हैं, वही सब कारण रक्तार्श या ख़ूनी बवासीर के हैं; अर्थात् जिन कारणों से पित्त की बवासीर होती है, उन्हीं कारणों से ख़ून की बवासीर होती है।

रक्तार्श के लक्षण

रक्तार्श में मांस के अंकुर या मस्से चिरमिटी के समान लाल-लाल और बड़ के अंकुरों-जैसे होते हैं। कड़ा मल निकलने से मस्से दब जाते हैं और उनसे गरम और ख़राब ख़ून निकलता है। ख़ून के बहुतायत से गिरने के कारण, मनुष्य वर्षा-काल के मेढ़क के समान पीला हो जाता है। चमड़ा कठोर हो जाता है, नाड़ी शिथिल चलती है, खट्टी और शीतल चीजों की इच्छा से रोगी दुखी रहता है। रोगी हीन-वर्ण, बल-हीन, उत्साह-रहित और पराक्रम-शून्य हो जाता है एवं

* सहज या स्वाभाविक अर्श को सर्वसाधारण जन्म की या ख़ानदानी बवासीर कहते हैं। यह असाध्य समझी जाती है।

सारी इन्द्रियाँ व्याकुल हो जाती हैं। दस्त में रूखा, कड़ा और काला मल निकलता है। अपान-वायु—गुदा की हवा नहीं निकलती, ये सब लक्षण रुधिर या ख़ून की बवासीर के हैं।

वातानुबन्धीय रक्तार्श

रक्तज अर्श के साथ वातज अर्श के लक्षण प्रकाशित होने से उसे 'वातानुबन्धीय रक्तार्श' कहते हैं। अगर रक्तज बवासीर में वात का अनुबन्ध होता है, तो मस्सों से ख़ून थोड़ा लाल और झागदार निकलता है। कमर, जाँघ और गुदा में दर्द होता है। अगर कमज़ोरी ज्यादा हो जाय और रूखापन भी हो—तो समझो कि रक्तार्श से वात या वायु का सम्बन्ध है।*

कफानुबन्धीय रक्तार्श

जिस रोगी को शिथिल, सफ़ेद, पीला, चिकना, भारी और शीतल दस्त हो; ख़ून गाढ़ा, तांतुदार, पीला और बुलबुलेदार निकले और गुदा बबूले-युक्त और गीली-सी मालूम हो, तो समझो कि रक्तार्श से कफ का सम्बन्ध है।

बवासीर के पूर्वरूप

अगर अन्न अच्छी तरह न पचे, वह कोख में रहा आये, देह में दुर्बलता हो, कोख में अफारा हो, अग्नि मन्द हो, डकार बहुत आयें, जाँघों में पीड़ा हो, दस्त थोड़ा-थोड़ा हो, संग्रहणी और पाण्डु रोग के-से लक्षण नज़र आयें और उदर-रोग की शंका हो, तो समझो कि इस मनुष्य के बबासीर रोग होगा।

■ **शंका—केवल गुदा में दोषों के कुपित होने से बवासीर रोग होता है, फिर रोगी की सारी देह दुर्बल और काली कैसे हो जाती है ?**

□ **उत्तर—गुदा के तीन आंटों में मस्से पैदा होने से पांच प्रकार की वायु, पांच प्रकार के पित्त और पांच प्रकार के कफ कुपित होते हैं। इससे बवासीर रोग अनेक प्रकार के दुःख और व्याधियाँ करके, सारी देह को दुर्बल और काली कर देता तथा कृच्छ्रसाध्य और कष्टसाध्य हो जाता है।**

---

* वातनुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषा में यह मतलब है कि, बवासीर ख़ून के कुपित होने से हुई हो, पर उसमें वायु के कुपित होने के भी लक्षण हों। इसी तरह कफानुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषा में यही मतलब है कि, बवासीर तो ख़ून से हुई हो, पर उसका कफ से सम्बन्ध हो; यानी उसमें कफ की बवासीर के लक्षण भी पाये जाते हों।

□ अर्श की साध्यासाध्यता □

सुखसाध्य अर्श के लक्षण

जो बवासीर बाहर के आँटे में होती है, जिसमें तीन में से किसी एक दोष की प्रधानता होती है और जो एक बर्ष से कम की होती है, वह बवासीर सुखसाध्य होती है; यानी आसानी से आराम हो जाती है।

कृच्छ्साध्य अर्श के लक्षण

जो बवासीर दो दोषों से पैदा होती है, जो दूसरे आँटे में होती है, जिसे पैदा हुए एक साल हो जाता है, वह बवासीर कृच्छ्साध्य होती है; यानी कठिनाई से आराम होती है। पर आराम हो जाती है, बशर्ते वैद्य अनुभवी और विद्वान् हो तथा रोगी और परिचारक—रोगी की सेवा-सुश्रूषा करने वाला, वैद्य की आज्ञा पर चलने वाले हों।

जो बवासीर बाहर के आँटे में, दो दोष-प्रधान होती है वह भी कृच्छ्साध्य होती है।

याप्य अर्श के लक्षण

अगर बवासीर तो असाध्य हो पर रोगी की उम्र बाकी हो; वैद्य, औषधि, परिचारक और रोगी जैसे होने चाहिए, वैसे हों,* रोगी की जठराग्नि प्रदीप्त हो,

---

* वैद्य, रोगी, औषधि और रोगी की सेवा करने वाला—ये सब सिद्धि प्राप्त करने के लिए 'चिकित्सा के चार पाद' हैं। अगर ये चारों ठीक हों, तो कदाचित् आराम हो सकता है।

वैद्य—जिसने गुरु से शास्त्र पढ़ा हो, दूसरे वृद्ध वैद्य की चिकित्सा देखी हो, आपको स्वयं अनुभव हो, जिसका इलाज करता हो, वही आराम हो जाता हो, पवित्र रहने वाला और साहसी हो तथा उत्तमोत्तम औषधियाँ और रसादिक तैयार रखता हो, जिसकी बुद्धि तेज़ हो, जो बुद्धिमान और लोक-व्यवहार जानने वाला हो, प्रिय और सत्य वचन बोलने वाला और धर्मात्मा हो, वही वैद्य अच्छा होता है। ऐसा वैद्य असाध्य को साध्य कर सकता है। जो वैद्य मैले वस्त्रों वाला, कड़वा बोलने वाला, अभिमानी और बिना बुलाये रोगी के यहाँ जाने वाला हो, वह वैद्य निकम्मा होता है।

रोगी—उम्र वाला, बलवान, साध्य, धनवान, ज्ञानी, आस्तिक और वैद्य की आज्ञा मानने वाला रोगी अच्छा होता है।

तो उसे 'याथ' समझना चाहिए; यानी वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से किसी तरह आराम हो जायगी। अगर इसके विपरीत बवासीर असाध्य हो, रोगी की उम्र बाकी न हो, रोगी और परिचारक वैद्य की आज्ञा पर चलने वाले न हों, जैसी दवा की दरकार हो वैसी दवा प्रस्तुत न की जा सके तथा रोगी की अग्नि क़तई मारी गई हो, उससे कुछ भी न खाया जाता हो, भूख लगती ही न हो, तो वैद्य को वैसे रोगी का इलाज हाथ में न लेना चाहिए; क्योंकि ऐसे रोगी से शेष में बदनामी ही होगी।

असाध्य अर्श के लक्षण

जो बवासीर जन्म से होती है, जो तीनों दोषों से होती है और तीसरे या अन्त के आँटे में होती है, वह असाध्य होती है; यानी वह आराम नहीं हो सकती।

हारीत मुनि कहते हैं :—

बाह्यत: सुखसाध्य: स्यान्मध्ये कष्टेन सिद्ध्यति ।
असाध्योऽन्तर्बली जातो गुदजो भिषजां वर: ॥

☛ नोट—गुदा के बाहर और भीतर तीन वलि या आँटे होते हैं। वही तीनों आँटे बवासीर के स्थान हैं। उन्हीं में मस्से होते हैं। बाहर के आँटे की बवासीर सुखसाध्य, बीच के आँटे की कष्टसाध्य और गुदा की अन्तिम वलि वाली असाध्य होती है।

गुदा के बाहरी आँटे के मस्से वैद्य को दीख सकते हैं, अतः वह उन्हें क्षार प्रभृति से जला कर या तेल, मरहम आदि लगा कर आराम कर सकता है; पर भीतर के आँटों के मस्से दीखते नहीं वहाँ दवा नहीं लगायी जा सकती; इससे वह सहज में आराम हो भी नहीं सकते।

साध्यासाध्य के और भी लक्षण

उपद्रव-रहित बवासीर साध्य है और उपद्रव सहित असाध्य है।

औषधि—उत्तम स्थान में पैदा हुई, शुभ दिन में उखाड़ी गई, थोड़ी-सी देने से बहुत गुण करने वाली, अच्छी सूरत और उत्तम रस वाली औषधि अच्छी होती है।

परिचारक—नई, उम्र, का, जवान, ताकतवर, वैद्य की आज्ञानुसार काम करने वाला, रोगी का भला चाहने वाला और आलस्य-रहित परिचारक अच्छा होता है।

बवासीर के उपद्रव

हारीत लिखते हैं—अगर हाथ, पाँव, मुख, नाभि, लिङ्ग और गुदा में सूजन और शोष हो, ज्वर हो, श्वास हो, अँधेरी आये, वमन होती हों, मोह—बेहोशी हो, हृदय में दर्द हो, पसली में शूल हो, अरुचि हो, मल की रुकावट या क़ब्ज़ हो अथवा अतिसार हो तो समझो कि बवासीर-रोगी नहीं बचेगा; क्योंकि ये बारह उपद्रव हैं। ऊपर लिख आये हैं, कि सोपद्रव यानी उपद्रव-सहित बवासीर आराम नहीं हो सकती।

उपद्रवों के कारण असाध्यता

'माधव-निदान' में लिखा है :—जिसके हाथ, पैर, गुदा, नाभि, मुख और फोतों में सूजन हो, हृदय और पसवाड़ों में पीड़ा हो, इन्द्रियों और मन में मोह हो, वमन होती हो, अंगों में वेदना हो, ज्वर चढ़ा हो, प्यास का ज़ोर हो, गुदा पक गई हो, यानी उस पर पीले-पीले फोड़े हो गये हों, अरुचि हो, शूल चलते हों, ख़ून ज़ोर से गिरता हो, सूजन और अतिसार हों—वह रोगी असाध्य है। उसे बवासीर नष्ट करके छोड़ेगी।

'वैद्यविनोद' में लिखा है :—

शोथातिसारौ वमिरंगसादस्तृष्णा ज्वरोऽरोचक वह्निमान्द्यम् ।
गुदस्यपाको हृदयेतिशूलो ह्यर्शो विकारी विजहाति जीवम् ॥

सूजन, अतिसार, वमन, अंगों की शिथिलता, प्यास, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि गुदा का पकाव और हृदय में दर्द—ये लक्षण जिस बवासीर वाले में हों, वह निश्चय ही मर जाता है।

अर्श के अरिष्ट लक्षण

जिस बवासीर वाले के हाथ, पैर, मुख, नाभि, फोते, हृदय और पसवाड़ों में सूजन या वरम हो, वह नहीं बचेगा। बवासीर-रोगी के हृदय और पसवाड़ों में शूल चलते हों, बेहोशी हो, वमन होती हो, सारे शरीर में दर्द हो, ज्वर और प्यास का ज़ोर हो और गुदा में ज़ख़्म हो, वह रोगी मर जायगा।

जिस रोगी को प्यास बहुत हो, अन्न पर रुचि न हो, शूल चलते हों, मस्सों से बहुत ही ज़्यादा खून गिरता हो, शरीर में सूजन हो और दस्त लगते हों, वह अर्श-रोगी मर जायगा।

□ डाक्टरी मत से अर्श के कारण और लक्षण □

ऐलोपैथिक मत

घोड़े की वहुत सवारी करने, बारम्बार दस्तावर दवा सेवन करने तथा पेशाब की इन्द्रिय की पीड़ा से अर्श या बवासीर रोग होता है।

गुदा के नीचे जो ख़ून को बहाने वाली नाड़ी—नस है, उसी में किसी प्रकार व्यतिक्रम या गड़बड़ होने को 'बवासीर' कहते हैं।

बवासीर दो तरह की होती है :—

(१) इन्टरनल (Internal)=भीतर की=आभ्यन्तरार्श।

(२) ऐक्सटरनल (External)=बाहर की=बाह्यार्श।

और भेद

(१) ख़ूनी। (२) बादी।

ख़ूनी बवासीर

अगर सुर्ख़ रंग के मस्से हो कर ख़ून पड़ता हो, तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं। अगर पीड़ा, खाज और सूज़न ज्यादा हो, तो उसे 'बादी बवासीर' कहते हैं। दस्त की क़ब्ज़ियत इसका प्रधान लक्षण है।

होमियोपैथी मत

अनेक लोगों का विश्वास है कि निकम्मे बैठे रहने या दस्त-क़ब्ज़ होने से बवासीर होती है। इसमें गुदा के ऊपर या भीतर मस्से हो जाते हैं। उनमें से कभी-कभी ख़ून निकलता है। इस रक्तस्राव या ख़ून गिरने के लिए कोई समय नियत नहीं है; जब चाहे तब गिरने लगता है।

हिकमत के मत से बवासीर

'इलाजुल गुर्बा' में लिखा है—बवासीर दो तरह की होती है—(१) ख़ूनी बवासीर। (२) बादी बवासीर।

जिसमें गुदा के किनारों पर मस्सों की अधिकता होती है और उनमें से खून गिरता है, उसको ख़ूनी बवासीर कहते हैं।

जिसमें मस्से नहीं होते, पर पेट में कड़ापन होता है और खून नहीं गिरता, उसे बादी बवासीर कहते हैं।

एक और हकीम साहब कहते हैं* कि गुदा की बवासीर दो तरह की होती हैं :—(१) ख़ूनी, और (२) सूखी। जिसमें एक या कम-ज्यादा मस्से होते हैं और उनसे ख़ून पड़ता है। वह ख़ूनी होती है। सूखी से ख़ून नहीं पड़ता, परन्तु रोगी को तकलीफ़ होती है।

यह रोग हर स्त्री-पुरुष को होता है। जब तक आहार-विहार ठीक रहता है, यह रोग दबा रहता है; लेकिन ज्योंही खाने-पीने वग़ैरः में गड़बड़ होती है, यह कोप कर उठता है। खुश्की की वजह से बवासीर कोप करती है। जब बवासीर साधारण होती है, तब कभी-कभी क़ब्ज होता है; लेकिन जब इसका कोप हो जाता है, तब मस्सों से ख़ून जारी हो जाता है। यहाँ तक ख़ून गिरता है, कि रोगी के शरीर में ख़ून रहता ही नहीं। रोगी एकदम कमज़ोर हो जाता है।

□ बवासीर की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें □

(१) हारीत मुनि ने कहा है कि वातव्याधि, प्रमेह, कोढ़, बवासीर, भगन्दर, पथरी, मूढ़गर्भ और उदर-रोग—ये आठ महा-व्याधियाँ हैं। ये स्वभाव से ही दुश्चिकित्स्य है। अगर इन महारोगों के साथ बलक्षय, मांसक्षय, श्वास, शोष, वमन, ज्वर, मूर्च्छा, अतिसार और हिचकी प्रभृति हों, तब तो इनके आराम होने का ख़्याल करना भी भूल है। जो वैद्य यश की इच्छा रखता हो, जो अपनी नामवरी चाहता हो, वह ऐसे रोगियों का इलाज हाथ में न ले, यानी अगर बवासीर-रोग के साथ ज्वरादिक उपद्रव न हों, वह नयी और बाहर की हो, तब तो सुख-साध्य समझ कर इलाज हाथ में ले; पर फिर भी सावधानी और चतुराई से

---

* आपका कहना है कि बवासीर हाथ, पाँव, नेत्र नाक, मुंह और गुदा ६ स्थानों में होती है। जिसके हाथ में होती है, वह कुछ-न-कुछ करता ही रहता है; निचला नहीं बैठता। जिसके पैर में होती है, वह चलता ही रहता है; एक जगह उसका दिल नहीं जमता। जिसकी नाक में होती है, उसकी नाक बहती रहती है। जिसके मुंह में होती है, वह कभी चुप नहीं रहता। अगर कोई बातें करने वाला नहीं होता, तो आप ही अपने आप से बातें करता रहता है। जिसके नेत्रों में होती है, उसके नेत्र लाल और दबे से रहते हैं।

हारीत स्पष्ट लिखते हैं, कि बवासीर गुदा, नाक, कान; मुंह, नेत्रों के कोने और योनि के बीच में होती है। अन्यत्र लिङ्ग में होना लिखा है। चर्म-कील भी एक प्रकार की बवासीर है, जो चमड़े पर होती है।

काम करे, क्योंकि सुखसाध्य होने पर भी, अनाड़ी वैद्य के लिये वही कष्ट-साध्य है।

(२) अगर वैद्य पूर्ण शास्त्रज्ञ और अनुभवी हो, उसने दूसरे वृद्ध वैद्यों की चिकित्सा देखी हो और आप भी चिकित्सा की हो, जिसके पास नाना प्रकार के चूर्ण, गोली, क्षार, लेप, धूप और अवलेह प्रभृति हों, जो शस्त्र-क्रिया और क्षार-कर्म में दक्ष हो, वही बवासीर का इलाज करने का साहस करे। अनाड़ी वैद्य मस्सों को काट देते हैं, पर जब खून की धारा बहने लगती है, तब घबरा जाते हैं और उनसे कुछ करते-धरते नहीं बनता। अगर उस समय कोई दूसरा अनुभवी वैद्य नहीं होता, तो रोगी को बिना मौत मरना पड़ता है। इसलिये बवासीर-नाशक पूरा सामान होने पर और उसके इस्तेमाल की पूरी विधि जानने पर ही बवासीर-रोगी पर हाथ डालना चाहिये।

(३) अगर बवासीर याप्य हो, यानी कठिनता से आराम होने वाली हो और आपको इलाज करना ही हो, तो यह देख लें कि रोगी आपकी आज्ञा ईश्वर की आज्ञा की तरह मानेगा या नहीं। अगर रोगी का आप में विश्वास हो, वह आपकी आज्ञा पालन करे तथा धनवान और उदार हो और उसकी टहल करने वाला उसका सच्चा शुभचिन्तक, आपकी आज्ञानुसार चलने वाला और निरालसी हो, आप जैसी भी कीमती दवा बनाना चाहें, रोगी उसके लिए बिना आनाकानी किए धन दे सकता है, तो आप ऐसी बवासीर का इलाज करें, कोई हानि नहीं, आपको ईश्वर-कृपा से सिद्धि मिलेगी। अगर रोगी और रोगी की टहल करने-वाला—इन ऊपर के लक्षणों के विपरीत लक्षण-वाले हों, तो भूल कर भी इलाज हाथ में मत लें।

(४) जिन कारणों से रोग होता है, उन कारणों के बन्द किये बिना आराम नहीं हो सकता। हज़ार उत्तम-से-उत्तम अमृत-समान दवा दें; कोई लाभ न होगा। मसलन, सदा बैठे रहने से, बहुत देर में हज़म होने वाले या अत्यन्त रूखे पदार्थ खाने, धूप में फिरने और शराब पीने प्रभृति से बवासीर होती है। अगर रोगी इन सबको छोड़ न देगा, तो उसे कभी आराम न होगा। इसलिये चतुर वैद्यों को दवा देने से पहले रोग के कारण जानने चाहिये, और कारण जान कर रोगी से उनको त्याग देने की ज़ोर से हिदायत कर देनी चाहिये। अगर रोगी दवा भी न खाय, लेकिन अपथ्य को त्याग कर पथ्य सेवन करे, तो बिना दवा के भी आराम हो सकता है। अगर आराम भी न होगा, तो रोग की बढ़ती तो रुक ही जायगी।

बहुत वैद्य दवा तो दिये जाते हैं, पर रोगी को ऐसे-ऐसे उपदेश नहीं देते, उसे रोग के बीज कारण के छोड़ने की सलाह नहीं देते। उन्हें निराश होना पड़ता है। जिसे शराब पीने से बवासीर हुई है, वह जब तक शराब न छोड़ेगा, बवासीर कैसे आराम होगी ?

(५) ध्यान रखें, बवासीर, अतिसार और संग्रहणी—ये तीनों रोग प्रायः परस्पर कारण हैं और ये तीनों ही गुदा में होते हैं। जब अग्नि मन्द हो जाती है, तब ये बढ़ते हैं; इसीलिए बवासीर की चिकित्सा अग्निमांद्य रोग की तरह की जाती है; क्योंकि अग्नि के बलवान होने से ही बवासीर रोग नष्ट हो जाता है। उत्तम प्रकार से बनाया हुआ हल्का, जल्दी हज़म होने वाला, चिकना भोजन और नियमित व्यायाम या मिहनत अर्श में हितकारी हैं। तेल, लाल मिर्च, राई, सरसों आदि अत्यन्त तीक्ष्ण पदार्थ हानिकर हैं। तरकारियों में ज़मीकन्द और फलों में अरण्ड ककड़ी या अरण्ड-ख़रबूजा अच्छे हैं। माठा तो बवासीर का काल और इस भूमण्डल का अमृत ही है। जिस दवा और पथ्य से बवासीर-रोगी को दस्त साफ़ होता रहे, अग्नि दीप्त होती रहे, भूख बढ़े, हवा खुलती रहे और पेट हल्का रहे, वही दवा और पथ्य बवासीर-रोगी को बताना चाहिए।

बवासीर के साथ मलावरोध या क़ब्ज़ की शिकायत लगी हुई रहती है। और बवासीर-रोग मन्दाग्नि की ही एक क़िस्म है। जब अन्न अच्छी तरह नहीं पचता और उसका पृथक्करण नहीं होता, तभी बवासीर होती है। हकीम लोग भी कहते हैं कि बवासीर मेंदे की कमजोरी से होती है; अतः वही काम करने चाहिए, जिनसे मेदा बलवान हो, भूख बढ़े और दस्त रोज़ साफ़ होता रहे। अगर वैद्य रोगी को दस्त साफ़ करने और भूख बढ़ाने वाली दवा न देगा या इसके लिये और उपाय न करेगा, तो उसका रोगी आराम न होगा।

(६) बवासीर की चिकित्सा चार प्रकार की होती है; यानी औषधि क्षार, शस्त्र और अग्नि से बवासीर की चिकित्सा की जाती है। बुद्धिमान वैद्य को लेप, स्वेद और भोजन प्रभृति से बवासीर जीतनी चाहिए। हारीत मुनि कहते हैं कि लेप, बत्ती और स्वेदन प्रभृति से बाहर के आँटे की बवासीर को नष्ट करना चाहिए। बीच के आँटे वाली को अस्त्र-शस्त्र से जीतना चाहिए और अन्तिम आँटे वाली यानी भीतर की बवासीर को दवाओं से नष्ट करना चाहिए। जैसे—

(क) अगर मस्से बाहर दीखते हों, सेंहुड़ के दूध में हल्दी का चूर्ण मिला कर, एक बूंद उसमें से मस्से पर लगाना चाहिए।

(ख) तोरई की जड़ पीस कर मस्सों पर उसका लेप करना चाहिए।

(ग) रूई के डोरे पर हल्दी का चूर्ण लगा कर, उस पर सेंहुड़ का दूध बारम्बार लगाना चाहिए। इसके बाद उसी डोरे से मस्से को बाँध देना चाहिए। इस तरह मस्सा कट कर गिर पड़ेगा।

(घ) 'कासीसादि तेल' मस्सों पर लगाना चाहिए। मस्से नष्ट करने के लिए यह तेल और 'बृहत् काशीसादि तेल' रामबाण हैं। बनाने की विधि बवासीर-नाशक नुसख़ों में लिखेंगे।

☛ नोट—हमने लेप वग़ैर: के दो-तीन नमूने दिखाये हैं। सब तरह के बवासीर-नाशक नुसख़े आगे लिखेंगे।

डॉक्टर लोग भी भीतरी बवासीर में एक ग्रेन सलफर आफ़ आयरन को एक औंस जल में मिला कर, गुदा में उसकी पिचकारी देते हैं। अगर मस्से बाहर होते हैं, तो इन पर काष्टिक लोशन लगाते हैं अथवा हेनीमिलिस लोशन से उन्हें धोते हैं। अगर मस्सों में जलन होती है, तो गरम जल से उन्हें धोते हैं। पुल्टिश या पोस्त के डोडों से उन्हें सेकते हैं। जोंक लगवा कर खराब ख़ून निकलवा देते हैं। भीतर के मस्सों को नाइट्रिक एसिड से जला देते हैं और बाहर के मस्सों को नश्तर से काट देते हैं। चीर-फाड़ करना कोई बच्चों का खेल नहीं है। जो इस काम में सिद्धहस्त हों, उन्हें ही चीर-फाड करनी चाहिए।

(७) बवासीर रोगी की बवासीर का नाश करने वाली, बल बढ़ाने वाली, रक्तपित्त को शान्त करने वाली और वायु को कुपित न होने देने वाली चिकित्सा करनी चाहिए। बवासीर-रोग में पहले पाचन औषधि देनी चाहिए इसके बाद दूसरी दवा देनी चाहिए; यानी जिस उपाय से अग्निबल बढ़े और वायु अनुलोम हो, वही उपाय करना चाहिए।

☛ नोट—होमियोपैथी वाले सब तरह की बवासीर में पहले कास्टर आयल या अरण्डी के तेल का जुलाब दे कर कोठा शुद्ध करते हैं, तब और दवा देते हैं। वह कहते हैं, इस तरह यह रोग जल्दी जाता है।

(८) बवासीर के मस्से बहुत ही फूले हों और उनकी वजह से बड़ी तकलीफ़ हो, तो दिन में दो बार, पाँच-पाँच तोले, अलसी का तेल पिलाओ। इस उपाय से दस्त खुल कर होंगे और मस्से मुरझा जायँगे। परीक्षित है।

(९) बवासीर-रोग की चिकित्सा, यदि दस्त पतले होते हों, तो वातातिसार की तरह और यदि मल गाढ़ा हो, तो उदावर्त्त की तरह करनी चाहिए। अगर

बवासीर में ख़ून गिरता हो, तो रक्तपित्त के समान, और क़ब्ज़ हो तो विबन्धनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) अगर बवासीर से ख़ून गिरता हो, तो वैद्य को फ़ौरन ही ख़ून बन्द न करना चाहिये। अगर ख़राब ख़ून न निकलेगा—रुक जायगा, तो वह गुदा में पीड़ा, अफारा और रक्त-विकार के रोग पैदा कर देगा। लेकिन अगर ख़ून बन्द न करने से रोगी के प्राण-नाश की सम्भावना हो, तो फ़ौरन ही बन्द कर देना चाहिये। वंगसेन ने कहा है :—

रक्ताशं सामुपेक्षेत् रक्तमादौ स्रवेद्भिषक।
दुष्ठास्त्रे निगृहीते हि शूलानाहाद्यसृग्गदाः॥

ख़ूनी बवासीर में पहले ही ख़ून को बन्द नहीं करना चाहिये, क्योंकि ख़ून बन्द करने से शूल, आनाह और रुधिर-विकार उत्पन्न होते हैं।

(११) वैद्य को रोगी को तक्र या माठा अवश्य सेवन कराना चाहिये; क्योंकि माठे से नष्ट हुए मस्से फिर नहीं होते। माठे से बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि दोती है तथा शरीर के स्रोत शुद्ध हो कर उनमें अच्छी तरह रस का संचार होता और कफ-वात के सैकड़ों विकार नष्ट होते हैं।

(१२) उधर हम लिख आये हैं कि डाक्टर लोग जोंक लगाते हैं। हमारे यहाँ भी जोंक लगवाने की आज्ञा है। कहा है :—

शस्त्रैर्वापि जलौकाभिः प्रोच्छूनकठिनार्शसः।
शोणितं संचितं दृष्ट्वा हरेत्प्राज्ञः पुनः पुनः॥

गुदा के अंकुर कड़े और सूजन-युक्त हों तथा उनमें ख़ून जमा हो गया हो, तो शस्त्र या जोंकों द्वारा बारम्बार ख़ून निकलवाना चाहिये।

सब तरह की गुदा की बवासीरों में, वहाँ का ख़ून जोंकों द्वारा, उसी समय निकलवा देना चाहिये, जिससे रोग फिर न हो जाय।

(१३) अर्श, अतिसार और संग्रहणी—ये तीनों एक दूसरे से होते हैं, यानी अर्श से अतिसार और अतिसार से संग्रहणी अथवा अतिसार से अर्श। इनमें अग्नि ही ख़ास कारण है। जब अग्नि तेज़ रहती है, रोग दबे रहते हैं; पर अग्नि के निर्बल होते ही उखड़ आते हैं। अतः इन तीनों के इलाज में विशेष कर अग्नि की रक्षा करनी चाहिये। वायु को अनुलोम करने वाले और अग्नि का बल बढ़ाने वाले अन्न-पान और औषधियाँ अग्नि बढ़ाने के लिये देनी चाहिये।

(१४) जो बवासीर थोड़े दिनों की पैदा हुई हो, जिसमें थोड़े दोषों के लक्षण और उपद्रव हों, उसको औषधि-साध्य समझो, यानी ऐसी बवासीर दवा खिलाने से आराम हो जाती है।

जो बवासीर मृदु, फैली, जमी-सी, गाढ़ी और आगे से ऊँची हो, उसको क्षार-साध्य समझो, यानी वह क्षार से आराम हो जाती है।

जिस बवासीर के मस्से कर्कश, कठिन, मोटे, मज़बूत और कठोर हों, उसकी चिकित्सा अग्निकर्म से की जाती है।

जिस बवासीर के मस्से पतली जड़ वाले, आगे से उठे हुए और चेपदार हों, उसकी चिकित्सा शस्त्र या नश्तर से होती है।

वात और कफ की बवासीर की चिकित्सा केवल क्षार और अग्नि द्वारा की जाती है।

पित्तरक्त से पैदा हुई बवासीर की चिकित्सा केवल क्षार से की जाती है। क्षार-कर्म और अग्नि-कर्म प्रभृति उसे करने चाहिये, जिसे इनका पूर्ण अभ्यास हो। अगर जलाने या क्षार-कर्म करने से दाह पैदा हो जाय, तो उस जगह सौ बार के धोये घी' का लेप करना चाहिये। इस लेप से फौरन जलन मिट कर शान्ति होती है।

□ बवासीर में पथ्यापथ्य □

पथ्य

पुराने चावलों का भात, मूँग या चने की दाल, कुलथी की दाल, शालि चावल बथुआ, साँठी चावल, सौंफ, परवल, करेला, तोरई, ज़मीकन्द, सरसों की डाकल, गुड़, तक्र, छोटी मूली, कच्चा पपीता, केले का फूल, दूध, घी, मक्खन, मिश्री, किशमिश, अंगूर, पका बेल, छोटी इलायची, जौ, लहसन, जीवन्ती, चूक, आमले, संचर नोन, कैथा, सरसों का तेल, काँजी, मदिरा, सोंठ, हरड़, कंकोल, ऊँट का मूत्र, भिलावे, गोमूत्र और माठा—ये सब पथ्य हैं।

जुलाब लेना, ख़ून निकालना, तेज़ाब या क्षार से मस्से जलाना, अग्नि-कर्म करना या दागना, शस्त्र-कर्म करना या चीरना-फाड़ना, लेप करना, बफारे लेना, और धूनी लेना—ये भी बवासीर में हितकारी हैं।

वात-नाशक और अग्निकारक अन्न-पान बवासीर में हितकारी हैं। वृन्द ने कहा है—

यद्वायोनुलोम्याय यदग्निबलवृद्धये ।
अन्नपानौषध सर्वं तत्सेव्यं नित्यमर्शसि ।।

बवासीर-रोग में वायु को अनुलोमन करने वाले और अग्निबल बढ़ाने वाले अन्न, जल और औषधियाँ सेवन करनी चाहिये ।

बवासीर और संग्रहणी में माठा सबसे अच्छा पथ्य और रोग-नाशक है । वृन्द ने कहा है :—

विड्विबन्धे हितं तक्रं यवानीविड्संयुतम् ।
न विरोहन्ति गुदजा. पुनस्तक्रसमाहता ।।

अजवायन और बिड़नोन मिली 'छाछ' मल के विबन्ध का नाश करने में हितकारी है । गुदा के रोग छाछ से नष्ट होकर फिर पैदा नहीं होते ।

एक भाग वढ़िया पुराने चावल और दो भाग धुली मूँग की दाल मिला कर, पतली खिचड़ी बनाने, और उसमें 'ताजा घी' डाल कर खाने से दस्त-क़ब्ज़ वालों को बहुत फ़ायदा होता है । खुश्की मिटाने से मल ढीला हो कर आसानी से निकल जाता है; इसलिए बवासीर रोगी को पुराने चावलों की खिचड़ी लाभदायक है ।

नोट—बिनौलों की गिरी फाँक कर, ऊपर से दूध पीने से मल फूल जाता है; यानी यह पक्की मुन्जिस की तरह मल को फुलाती और पकाती है । इसके जुलाब देने से दस्त सहज में हो जाते हैं ।

अपथ्य

पिट्ठी, उड़द, दही, सेम, भारी पदार्थ, भुने हुए पदार्थ, सिके हुए पदार्थ, घीया, धूप या आग की तपत, पूरब की हवा, मल, मूत्र और अपान-वायु आदि का रोकना, घोड़े हाथी वगैरः की सवारी, स्त्री-प्रसंग और कड़े आसन पर बैठना—ये सब बवासीर-रोगी को अपथ्य या हानिकारक हैं ।

अनूप देश के पशु-पक्षियो का मांस, मछली, तिल की खली, मैदा के पदार्थ, टैंटी, बेलगिरी, पोई का साग, तूम्बी या घीया, पका आम, धूप में फिरना, नदी का पानी पीना, वमन, गुदा में पिचकारी लेना (वस्ति-कर्म), उज्जैन के पूरब-पश्चिम बहने वाली नदियों का जल, विरुद्ध पदार्थ-उकडू बैठना, बार-बार जल पीना, दिन में सोना, अत्यन्त भोजन, भारी अन्न, कलह और तेज़ाब प्रभृति लगाना—ये सब अपथ्य हैं ।

अतिसार और बवासीर-रोग में वायु और अतिसार पैदा करने वाले तथा अग्नि-बल का नाश करने वाले पदार्थ भूल कर भी न देने चाहिये, क्योंकि अग्नि-बल

के नष्ट होने से ही तो बवासीर, अतिसार और संग्रहणी रोगों की वृद्धि होती है। कहा है—

त्रयो विकाराः प्रायेण ये परस्पर हेतवः ।
अर्शासिचातिसारश्च ग्रहणी रोग एव च ॥
तेषामग्निबले हीने वृद्धि-वृद्धे परिक्षय ।
तस्मादग्नि समारक्षेदेषू त्रिषु विशेषतः ॥

बवासीर, अतिसार और ग्रहणी रोग—ये तीनों परस्पर एक दूसरे को पैदा करने वाले हैं, जिसे इनमें से एक रोग होगा, उसे शेष दो भी हो सकते हैं। अग्निवल के नष्ट होने से बवासीर, अतिसार और संग्रहणी रोग बढ़ते हैं और अग्निबल के बढ़ने से ये तीनों नष्ट होते जाते हैं; अतः इन तीनों रोगों में अग्निबल की रक्षा करनी चाहिये।

नोट—अगर बवासीर-रोग में ख़ून बहुत ज्यादा गिरता हो, तो रक्त-पित्त रोग की तरह पथ्यापथ्य पालन करना चाहिये। कहा है—

यत्पथ्यं यदपथ्यं च बक्ष्यन्ते रक्तपित्तिनाम् ।
रक्तार्शो रोगिणां तत्तदपि विद्याद्विशेषतः ॥

रक्तपित्त में जो चीजें पथ्य और अपथ्य हैं, वह ख़ूनी बवासीर वाले को पथ्य और अपथ्य जाननी चाहिए *।

---

* **रक्तपित्त-रोग में पथ्य**—पुराने चावल, मूंग, चना, अरहर, मोंठ, गाय या बकरी का घी, दूध, भैंस का घी, कटहल, चिरौंजी, केले की फली, जल-चौलाई, परवल, अदरख, पुराना पेठा, ताड़फल, अडूसा, अनार, खजूर, सौंफ, नारियल की गिरी, कसेरू, सिंघाड़े, कैथ, कमल, फालसे, तरबूज, खीलों का सत्तू, दाख, मिश्री, शहद, ईख, शीतल जल, झरने का जल, सौ बार का धोया घी, शीतल हवा, चन्दन लगाना, चाँदनी, मोती, हीरा, पन्ना, केले के भीतर के पत्ते या कमल के पत्तों की शय्या, रेशमी कपड़े, बगीचा, कमल-वाला तालाव, सुन्दर गाना, शीतल रेत और कपूर प्रभृति आहार-विहार 'रक्तपित्त'-रोगी को पथ्य हैं।

रक्तपित्त में अपथ्य—कसरत-कुश्ती, पैदल चलना, धूप में फिरना, मल-मूत्रादि वेग को रोकना, चपलता करना, हाथी घोड़े पर चढ़ना, पसीना निकालना, हुक्का पीना, मैथुन करना, क्रोध करना, गुड़, बैंगन, तिल, उड़द, सरसों, दही, कुएँ का जल, पान, मदिरा, लहसन, सेम, विरुद्ध भोजन, चरपरे पदार्थ, खट्टे, नमकीन और दाहकारक पदार्थ रक्तपित्त वाले को अपथ्य हैं।

☐ विशेष चिकित्सा ☐

☛ नोट—पहले हम सामान्य चिकित्सा न लिख कर 'विशेष चिकित्सा' लिखते हैं। इसमें दवा देने का फर्ज है कि वह बवासीर की क़िस्म को समझ कर दवा दे; यानी यह देखे कि बवासीर वातज, पित्तज या कफज है अथवा ख़ूनी बवासीर है। इस तरह परीक्षा करके दवा देने से फ़ौरन आराम होगा। इसके आगे हम 'सामान्य-चिकित्सा' लिखेंगे। जो इस तरह बवासीर का निर्णय न कर सकें, उन्हें 'सामान्य-चिकित्सा' ही करनी चाहिए।

वातज बवासीर की चिकित्सा

(१) आक के पीले पत्ते और पाँचों नमक—इनको तेल और खटाई में पीस कर, मिट्टी के कुल्हड़े में भर कर, ऊपर से सराई रख कर कपड़-मिट्टी कर दो और गजपुट में फूंक दो एवं स्वांग शीतल होने पर निकाल लो। इस क्षार को मद्य अथवा गर्म जल के साथ सेवन करने से वातज-बवासीर आराम हो जाती है। बादी बवासीर के लिए यह योग रामबाण है। परीक्षित है।

पित्तज बवासीर की चिकित्सा

(२) काले तिलों का चूर्ण, नागकेसर और मिश्री—सबको पीस कर, मक्खन में मिला कर खाने से पित्तज बवासीर आराम होती है। परीक्षित है।

(३) सुगन्धवाला और सोंठ को बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस कर छान लो। इसकी २ माशे की एक मात्रा चावलों के जल में पीस कर और शहद मिला कर पीने से पित्त की बवासीर नष्ट हो जाती है।

☛ नोट—पित्तज बवासीर में पहले जुलाब देकर दवा देना अच्छा है।

कफज बवासीर की चिकित्सा

(४) अदरख का काढ़ा नित्य पीने से कफज बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

☛ नोट—अदरख के अभाव में सोंठ ले सकते हैं।

(५) चीता, हाऊबेर, हींग और नमक—इन चारों को कूट-पीस कर माठा में मिला कर पीने से बवासीर आराम होती है।

(६) पंचकोल का काढ़ा पीने से कफज बवासीर शीघ्र ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचों को, 'पंचकोल' कहते हैं।

□ रक्तार्श चिकित्सा □

खूनी बवासीर का इलाज

• कुटजाद्य घृत •

(७) इन्द्रजो, कुड़े की छाल, नागकेशर नील कमल, लोध और धाय के फूल—इनके कल्क द्वारा 'घी' पका कर सेवन करने से ख़ूनी बवासीर मय पीड़ा के जाती रहती है।

• कुटज-लेह •

(८) कुड़े की छाल साढ़े बारह सेर ले कर, एक मन चौदह सेर जल में औटाओ। जब आठ सेर रह जाय, उतार कर छान लो। इसके बाद खाली काढ़े को फिर चूल्हे पर चढ़ा कर औटाओ। जब गाढ़ा हो जाय, नीचे लिखी चीजों का चूर्ण उसमें मिला दो :—

शुद्ध भिलावे ८ तोले, वायविडंग ८ तोले, त्रिकुटा ८ तोले, अतीस ८ तोले, चीते की छाल ८ तोले, इन्द्रजौ ८ तोले, रसौत ८ तोले, बच ८ तोले, अतीस ८ तोले, बेलगिरी ८ तोले, पुराना गुड़ ३॥ सेर, घी १ सेर, शहद १ सेर। सबको मिला कर अमृतबान में रख दो।

मात्रा—६ माशे की। अनुपान—शीतल जल, माठा या बकरी का दूध। इस 'कुटज-लेह' का सेवन करने से ख़ूनी बवासीर, रक्तपित्त और रक्तातिसार अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(९) लाल चन्दन, चिरायता, धमासा और सोंठ—इनका काढ़ा रक्तार्श या ख़ूनी बवासीर का नाश करता है।

(१०) दारुहल्दी, ख़स और नीम की छाल—इनका काढ़ा भी ख़ूनी बवासीर का नाश करता है।

(११) नौनी घी और तिलों को मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१२) नागकेसर, मिश्री और नौनी घी—इन तीनों को मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१३) चूका, नागकेशर और कमल—इनके द्वारा खीलों की पेया बना कर पीने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१४) खिरेंटी और पिठवन के द्वारा पेया बना कर पीने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(१५) लज्जवन्ती, कमल, मोचरस, लोध और चन्दन—इनको बकरी के दूध में औटा कर पीने से ख़ूनी बवासीर जाती रहती है।

(१६) असीस, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और रसौत—इनके चूर्ण को शहद में मिला कर, चावलों के जल के साथ लेने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१७) नागकेसर और मिश्री ६-६ माशे ले कर, नौ माशे ताज़ा मक्खन में मिला कर, सवेरे-शाम खाने से सात दिन में ख़ूनी बवासीर में आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) काले तिल १ तोला, तोले-भर मक्खन में मिला कर सवेरे ही रोज़ खाने से आठ दिन में ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

☛ नोट—दो तोले मक्खन में बिना छिलकों के तिल मिला कर खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(१९) सूरन या ज़मीकन्द का भुरता बना कर, दही के साथ रोज़-रोज़ खाने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२०) जंगली गोभी की तरकारी घी में पका कर और सेंधा नमक डाल कर, रोटी के साथ, आठ दिन खाने से छहों प्रकार की बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

(२१) कमल-केसर ३ माशे, नागरकेसर ३ माशे, शहद ३ माशे, चीनी २ माशे और मक्खन ६ माशे—सबको मिला कर, रोज़ खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) महानीम के बीज ११ और शक्कर ६ माशे मिला कर, जल के साथ रोज़ फाँको। इस दवा से ख़ूनी बवासीर ज़रूर नष्ट हो जाती है।

(२३) चाकसू १ तोले, बंसलोचन ६ माशे, छोटी इलायची के बीज ६ माशे कत्था सफ़ेद ६ माशे, मूली के बीज ६ माशे, रसौत ६ माशे और तन्तरीक की छाल ५ तोले—सबको कूट-पीस कर छान लो और पानी के साथ

खरल करके जंगली बेर के समान गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो। हर दिन सवेरे, एक गोली पानी के साथ खाने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(२४) चिरचिरे के बीज चावलों के धोवन में पीस कर पीने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) माठा मे पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२६) विदारीकन्द और तिलों का चूर्ण, शहद और दूध के साथ पीने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) छिले हुए, बिना छिलकों के काले तिल १ तोले ले कर पीस लो और ६ माशे चीनी में मिला कर फाँक जाओ और ऊपर से १ छटाँक बकरी का दूध पियो; फ़ौरन बवासीर का ख़ून बन्द होगा। दूध में सबको मिला कर पीने से भी लाभ होता है। परीक्षित है।

☛ नोट—कोई-कोई काले तिलों की पिट्ठी में बराबर की मिश्री मिलाते हैं।

(२८) कमल का नरम पत्ता पीस कर, मिश्री के साथ खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(२९) सवेरे ही बकरी का दूध पीने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(३०) रसौत ७ माशे, बीज समेत मुनक्के १४ माशे और कतीरा ७ माशे—सबको कूट-पीस-छान जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। हर सवेरे एक गोली खाओ। और ऊपर से रोटी के दो कौर (ग्रास) घी के साथ खाओ। इससे बवासीर का ख़ून बन्द हो जायगा।

(३१) मुचुकुन्द के फूल महीन कूट-पीस और छान कर, चीनी और घी में डाल कर हलवा बनाओ और १ तोला खाओ। इससे ख़ूनी बवासीर आराम हो जायगी।

(३२) एक नारियल के ऊपर का छिलका ले कर जलाओ और उसकी राख के बराबर शक्कर मिला कर, तीन खूराक बनाओ। इसकी एक-एक खूराक रोज सेवन करने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जायगा, परन्तु एक बरस तक मैथुन नहीं करना चाहिये।

(३३) जली हुई इस्पन्द और जले हुए गेहूँ बराबर लेकर पीस लो। इसमें से ६ माशे की मात्रा, २ तोले घी के साथ खाओ। इससे बवासीर के दस्त बन्द हो जायेंगे।

(३४) निर्मली जला कर और उसमें थोड़ी-सी शक्कर मिला कर खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(३५) इमली के चीयों की राख, दही के साथ खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है। मात्रा १ से २ माशे तक।

(३६) गेरू और खड़िया-मिट्टी बराबर-बराबर ले कर पीस लो। इसमें से आधा दाम, रोज़, दही और चावलों के साथ खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(३७) ज़मीकन्द के टुकड़े-टुकड़े करके छाया में सुखा लो। फिर छील-छील कर और कूट-छान कर एक दाम नित्य सवेरे ही खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(३८) कुरैया की छाल, गोपीचन्दन, नागकेसर और रसौत बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस-छान लो। हर दिन ८ माशे फाँकने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(३९) कमल की केसर शहद, ताजा मक्खन, चीनी और नागकेसर सबको एक में मिला कर खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४०) करील की जड़ ला कर, छाया में सुखा कर, जौकुट कर लो और तीन सेर पानी में औटाओ। जब आध सेर जल रह जाय, उतार कर पानी छान लो। पाव भर जल सवेरे और पाव भर शाम को पियो। इस तरह ७ या १० दिन करने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जायगा और मस्से गल जायँगे।

(४१) आम की कोंपल पानी में पीस-छान कर, थोड़ी शक्कर मिला कर पीने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(४२) दो तोले कसौंधी आध पाव जल में पीस छान कर और २-३ माशे गेरू का चूर्ण मिला कर पीने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(४३) गेंदे की पत्तियाँ ६ माशे से १ तोले तक और कालीमिर्च २ माशे से ३ माशे तक एकत्र कर लो और पीस-छान कर पी जाओ। इससे बवासीर का ख़ून बन्द हो जायगा।

(४४) सूखे या हरे गूलर पानी में पीस कर और मिश्री मिला कर पीने से ख़ूनी बवासीर, ख़ूनी अतिसार, ख़ूनी वमन और मासिक के ख़ून का ज़्यादा गिरना आराम हो जाता है।

(४५) हुलहुल का साग, दही के साथ खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(४६) दही की मलाई और माठा बहुत दिनों तक सेवन करने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(४७) ककोड़े की गाँठ का चूर्ण चीनी के साथ फाँकने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(४८) करेलों का रस अथवा करेलों के पत्तों का रस निकाल लो। उसमें से २ तोले रस, १ तोले मिश्री मिला कर सात दिन तक सवेरे ही पियो। इससे ख़ूनी बवासीर निश्चय ही शान्त हो जाती है। कोई पं० नरोत्तम जी शर्मा इसे अपना आज़माया हुआ लिखते हैं।

(४९) कुड़े की छाल, कुड़े की जड़, कमल-केसर, खैर की जड़ और धव की जड़—इन सबको २ तोले ले कर, दूध में पकाओ और दूध के बराबर पानी मिला दो। दूध मात्र रहने पर मल-छान कर पियो। इससे बवासीर नष्ट होती है। ग्यारह दिन तक पीना चाहिए।

(५०) माजूफल ८ दाने, सज्जी ३ माशे, आम के पत्ते ६ नग—इनको कूट-पीस कर, तमाकू की तरह चिलम में रख कर पीने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(५१) मक्खन और काले तिल मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(५१) केवल नागकेसर को पीस कर और मक्खन में मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(५२) गाय के दही को कुछ चला कर, बिना 'घी' निकाले, माठा पीने से शीघ्र ही ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(५४) करेले के पत्तों या फलों का रस निकाल कर, उसमें चीनी मिला कर पीने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५५) कुकरौंधे के पत्तों के २ तोले रस को १ तोले गाय के घी में मिला कर, सात दिन पीने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। पर इसके साथ कौए के पंख, मोर के पंख, या चमगादड़ की लेंड़ी—इन तीनों में से जो मिले, उसी की धूनी गुदा में सात या चौदह दिन तक देते रहने से निश्चय ही बड़ा फ़ायदा होता है। विनायक रामचन्द्र जी इसे अपना परीक्षा किया हुआ नुसख़ा बताते हैं।

□ सामान्य चिकित्सा □

• परीक्षित दन्त्यरिष्ट •

(५६) दन्ती की जड़ ८ तोले और दशमूल की दसों दवाएँ ८-८ तोले, हरड़ ८ तोले, बहेड़ा ८ तोले, आमला ८ तोले और पुराना गुड़ २॥ सेर—इनको ला कर तैयार रखो।

पहले दन्ती और दशमूल की दसों दवाओं को कूट कर ६४ सेर जल में पकाओ। पकते-पकते हरड़, बहेड़े आमले का पिसा-कुटा चूर्ण इसमें मिला दो। जब जलते-जलते चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो और उसमें वही गुड़ मिला कर, घी की चिकनी हाँड़ी में भर कर, मुँह बन्द करके एक मास तक ज़मीन में गाड़े रहो, और पीछे निकाल कर काम में लाओ। मात्रा—६ माशे से १॥ तोले तक। बवासीर के आराम करने में यह अरिष्ट रामबाण है।

☛ नोट—क़ोई ज़मीन में गाड़ते हैं और कोई इसी तरह घर में रखते हैं।

• अभयारिष्ट •

(५७) हरड़ १ सेर, आमले २ सेर, कैथ की गिरी आध सेर, इन्द्रायण ४ तोले, वायविडङ्ग ८ तोले, पीपर ८ तोले, लोध ८ तोले, कालीमिर्च ८ तोले और एलुआ ८ तोले—इन सबको कूट कर, सवा छह मन जल में औटाओ। जब १ मन १२॥ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इसमें पच्चीस सेर पुराना गुड़ मिला कर, घी के चिकने बर्तन में एक मास तक रखा रहने दो। इसकी मात्रा १ तोले से १॥ तोले तक है। इसके सेवन से बवासीर, संग्रहणी, अग्निमांद्य, हृद्रोग, तिल्ली, कोढ़ और ज्वर नष्ट होते हैं।

• कल्याण लवण •

(५८) शुद्ध भिलावे, त्रिफला, दन्ती की जड़ और चीता—सबको बराबर-बराबर लेकर और इन सबके वजन से दूना सेंधा नमक लेकर रखो। इन सबको कूट-पीस कर नारियल के खप्पर में भर दो और जंगली कण्डों की आग में मन्दाग्नि से पकाओ। पक जाने पर उतार कर रख लो। यह नमक बवासीर-रोगियों को बड़ा प्यारा और हितकारी है।

• समशर्कर चूर्ण •

(५९) सोंठ ७ तोले, पीपर ६ तोले, कालीमिर्च ५ तोले, नागकेसर ४ तोले, तेजपात ३ तोले, इलायची १ तोला और मिश्री २६ तोले—सबको एकत्र

मिला कर रख दो। इस चूर्ण की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। अनुपान जल है। इससे ववासीर में खूब लाभ होता है।

• व्योषाद्य चूर्ण •

(६०) त्रिकुटा, चीता, शुद्ध भिलावे, बायविड़ंग, तिल और हरड़—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो और चूर्ण के वज़न के बराबर गुड़ मिला दो। इसके सेवन करने से बवासीर, सूजन, विष-दोष, कोढ़, मन्दाग्नि और कृमिरोग आराम होते हैं। मात्रा—३ से ६ माशे तक। अनुपान—जल।

• मरिचादि चूर्ण (१) •

(६१) कालीमिर्च १ तोले, पीपल २ तोले, सोंठ ३ तोले, चीता ४ तोले और ज़मीकन्द १६ तोले—सबका चूर्ण करके, गुड़ के साथ सेवन करने से बवासीर नष्ट होती है। मात्रा—६ माशे। अनुपान—गरम जल।

• मरिचादि चूर्ण (२) •

(६२) कालीमिर्च, पीपल, सेंधानोन, सफ़ेद ज़ीरा, मीठा कूट, बच, हींग सोंठ, बायविड़ंग हरड़, चीते की जड़ और अजवायन—इन सबको २-२ माशे लेकर-पीस-कूट और छान लो। फिर इसमें ४ तोले पुराना गुड़ मिला दो। इसकी मात्रा ४ से ६ माशे तक है। इस चूर्ण से भी बवासीर नष्ट हो जाती है।

• पर्पटी रस •

(६३) शुद्ध पारा १ तोला और शुद्ध गन्धक १ तोला—दोनों को खरल में डाल कर खूब घोटो। जब चमक न रहे, एकदम काली कजली हो जाय, उसमें ३ माशे घी और ४ तोले बोल मिला दो। सबको लोहे के कलछे से पकाओ। जब लेई-सी पतली हो जाय, चूल्हे से उतार कर केले के पूरे पत्ते पर फैला दो और ऊपर से दूसरा केले का पत्ता रख कर, खूब दबाओ, ताकि पपड़ी-सी हो जाय। जब पपड़ी शीतल हो जाय, उसे शीशी में रख दो। इसके लगातार कुछ ही दिन सेवन करने से, सब तरह की बवासीर और उनकी वेदना दूर हो जाती है। मात्रा—चार चावल भर। परीक्षित है।

• जातीफलादि बटी •

(६४) जायफल, लौंग, पीपल, सेंधानोन, सोंठ, शुद्ध धतूरे के बीज, शुद्ध शिंगरफ और शुद्ध सुहागा—इनको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस-छान कर महीन कर लो। पीछे इस चूर्ण को जामुन के अर्क़ में घोट कर, रत्ती-रत्ती भर की

गोलियाँ बना लो। इनके खाने से सब तरह की बवासीर निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

☞ नोट—अगर जामुन का अर्क़ न मिले, तो नीबू के रस में घोट सकते हैं।

• आर्द्रकावलेह •

(६५) गुड़ २॥ सेर और अदरख १॥ सेर—दोनों को क़लईदार देगची या मिट्टी की हाँड़ी में पकाओ। जब अवलेह के समान गाढ़ा हो जाय, उसमें अजवायन २ तोले, नागरमोथा २ तोले, धनिया २ तोले, दालचीनी २ तोले, तेजपात १ तोले, इलायची २ तोले, सफ़ेद जीरा २ तोले और लोह-भस्म २ तोले—इन सबका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और थोड़ा-सा 'घी' मिला कर चलाओ और आग से उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें थोड़ा-सा असली शहद मिला कर अमृतवान या काँच के बर्तन में रख दो। इसका नाम 'आर्द्रकावलेह' है। यह बोपदेव ने लिखा है। इसके सेवन से बवासीर, शूल, खाँसी, क्षय, जुकाम और गुल्म रोग खूब लाभ होता है। मात्रा—६ माशे से १ तोले तक है।

• वृहत्सूरण मोदक •

(६६) सूखे ज़मीकन्द का चूर्ण १६ तोले, चीते की जड़ की छाल ८ तोले, सोंठ ४ तोले, कालीमिर्च २ तोले, त्रिफला ४ तोले, पीपलामूल ४ तोले, तालीस-पत्र ४ तोले, शुद्ध भिलावे ४ तोले, वायबिडंग ४ तोले, मुलेठी ८ तोले, विधारा के बीज १६ तोले, दालचीनी २ तोले और इलायची २ तोले—इन सबको कूट-पीस-छान कर चूर्ण बना लो। जितना चूर्ण हो, उससे दूना पुराना गुड़ मिला कर लड्डू बना लो। काम और धन की इच्छा करने वाले पुरुष को ये लड्डू सेवन करने चाहिये। जो मनुष्य इन लड्डुओं का सेवन करते हैं और इन पर भारी और पुष्ट भोजन नहीं करते, उनके अनेक उपद्रवों को यह लड्डू शान्त कर देते हैं। इस योगराज के प्रभाव से पहले अगस्त्य ऋषि को भस्माग्नि हो गई थी और भीमसेन को भस्मानल हो गया था। इसीसे वे दोनों अत्यन्त भोजन करते थे। ये लड्डू अग्नि और बल बढ़ाने में रामबाण हैं। ये शस्त्र, क्षार और अग्नि-कर्म के बिना ही बवासीर को नष्ट कर देते हैं। इनके सेवन से सूजन, श्लीपद—हाथीपाँव, कफवात की संग्रहणी, हिचकी, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। सूखी बवासीर नष्ट करना तो इनका प्रधान कर्म है। यह मैथुन-शक्ति के बढ़ाने वाले और रसायन हैं।

नोट—इसमें त्रिफला ४ तोले लिखा है। कोई-कोई त्रिफले की तीनों चीज़ें चार-चार तोले लेते हैं। कोई-कोई मुलेठी की जगह मूसली डालते हैं। ऐसा ही ठीक है। हमने इसी तरह परीक्षा की है। बवासीर की यह प्रसिद्ध दवा है।

• सूरण वटक •

(६७) सूखे ज़मीकन्द का चूर्ण ३२ तोले, चीते की जड़ की छाल १६ तोले, सोंठ ४ तोले और कालीमिर्च २ तोले—सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। फिर चूर्ण के वज़न के बराबर 'पुराना गुड़' मिला कर गोली बना लो। इन गोलियों के खाने से छहों तरह की बवासीर आराम होती है। इसके सिवा गोला, उदर-रोग हाथी-पाँव और अग्निमांद्य रोग भी आराम होते हैं। मात्रा—१ तोला। अनुपान-जल।

नोट—यह नुसख़ा शार्ङ्गधर का है। कोई-कोई वैद्य ज़मीकन्द १६ भाग, चीनी ८ भाग, सोंठ ४ भाग और काली मिर्च २ भाग लेते हैं।

• अगस्त्य मोदक •

(६८) हरड़ १२ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, दालचीनी ३ तोले, तेजपात ३ तोले और गुड़ २० तोले—इन सबको एकत्र पीस कर लड्डू बना लो। ये अगस्त्य मोदक सूजन, बवासीर, संग्रहणी खाँसी और उदावर्त्त-नाशक हैं।

• प्राणदा गुटिका •

(६९) सोंठ १२ तोले, कालीमिर्च १६ तोले, पीपल ८ तोले, चव्य ४ तोले, तालीसपत्र ४ तोले, नागकेसर २ तोले, पीपरामूल ८ तोले, तेजपात ७ माशे, छोटी इलायची १ तोले, सफ़ेद ज़ीरा १ तोले, काला ज़ीरा १ तोले, दालचीनी १ तोले, ख़स १ तोले और अजमोद १ तोले—इन सब को कूट-पीस कर छान लो। पीछे इस चूर्ण में १२० तोले या १॥ सेर पुराना गुड़ मिला कर ६-६ माशे की गोलियाँ बना लो। मात्रा—६ माशे से १ तोले तक। समय—भोजन के पहले या पीछे। अनुपान—पानी।

इन गुटिकाओं का सेवन करने से सहज बवासीर, ख़ूनी बवासीर, वात, पित्त और कफ की बवासीर, सन्निपात की बवासीर, पानात्यय रोग, मूत्रकृच्छ्र रोग, बाल-रोग, गलग्रह, विषम-ज्वर, पित-ज्वर, पांडुरोग, कृमि रोग, हृदय-रोग, गुल्म, शूल, वमन, अतिसार, कामला और हिचकी—ये सब आराम होते हैं।

सूचना

☛ (१) अगर इन्हें मलरोधक और पित्त की बवासीर में देना चाहो, तो सोंठ की जगह 'हरड़' डालो और गुड़ के स्थान में चूर्ण से चौगुनी 'चीनी' मिलाओ। इन्हें अम्ल-पित्त, मन्दागिन और गुदा के रोगों में दे सकते हैं।

☛ (२) कफ के रोगों में अनुपान के रूप में ४ तोले पानी पियो और पित्त के रोगों में १२ तोले।

☛ (३) वात-रोग में फलों की काँजी, धानों की काँजी, रसौदन और मदिरा का अनुपान है।

☛ (४) पित्त के रोगों में ईख का रस और शीतल जल का अनुपान है।

☛ (५) कफ के रोगों में गरम जल और यूष का अनुपान है।

जिस तरह जल में डालने से तेल तत्काल फैल जाता है, उसी तरह अनुपान से औषधि शीघ्र ही शरीर में फैल जाती है। हमने अलग-अलग अनुपान लिखे हैं। रोग में जिस दोष की अधिकता हो या जिस दोष का रोग हो, उसी के अनुसार अनुपान तजवीज करो, तो तत्काल सिद्धि मिलेगी।

० भल्लातक गुड़ ०

(७०) २००० भिलावे ले कर १६ सेर जल में पकाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। उस छने काढ़े में ४०० तोले गुड़ डालो और उन सीजे हुए भिलावों में से ५०० भिलावे टुकड़े कर-कर के, उसी में डाल कर पकाओ। जब पक जायं तब त्रिफला, त्रिकुटा, अजवायन, नागरमोथा, सेंधानोन, दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर—इनमें से प्रत्येक का चूर्ण एक-एक तोला मिला दो। यही 'भल्लातक गुड़' है। इनमें से बलाबल देख कर हर दिन खाओ। इस गुड़ के सेवन से कोढ़, बवासीर, कामला, संग्रहणी, पांडु, तिल्ली, खाँसी और भगन्दर प्रभृति रोग आराम होते हैं*।

---

* गुड़ और खाँड़ की ६ तोले, ४ तोले या २ तोले की उत्तम, मध्यम और हीन मात्रा होती है।

जल से भरे हुए बर्तन में गुड़ को डालो। यदि वह गुड़ जल में न डूबे, निश्चल भाव से ठहर जाय, चारों तरफ़ को न फैले, तथा पकते-पकते कलछी से लगने लगे, जिससे तन्तु-से छूटने लगें, तो गुड़ का पाक हुआ समझो। यही गुड़-पाक की विधि है। जो हाथ से छूने और मलने से नरम हो जाय, जो गन्ध वर्ण और रस

• अर्शकुठार रस •

(७१) (क) शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले—इन दोनों को खरल में डाल कर धीरे-धीरे घोटो, जिससे पारा खरल से निकल कर उछल न जाय। जब काजल के समान काली और चिकनी कजली हो जाय, उसे निकाल कर एक काँच या चीनी के प्याले में रख लो। इसी को 'कज़ली' कहते हैं। यह एक काम हुआ।

(ख) अभ्रक-भस्म २ तोले और फौलाद-लौह-भस्म १ तोले—इन दोनों को एक प्याले में मिला कर रख लो। यह दूसरा काम हुआ।

(ग) बेलगिरी १ तोले, बड़ी हरड़ १ तोले, चीते की जड़ की छाल १ तोले, सोंठ १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, पीपर १ तोले और शुद्ध जमालगोटा १ तोले—इन सब को अलग-अलग ला कर पीसो-छानो और इन पिसे-छने चूर्णों को एक-एक तोले ले कर एक प्याले में अलग रखो। यह तीसरा काम हुआ।

(घ) सुहागे को आग पर फुला लो। जब खील-सी हो जाय, ५ तोले उसमें से अलग रख लो। इसी में ५ तोले सैंधानोन और ५ तोले जवाखार भी रख दो। पीछे इन तीनों को महीन पीस लो। यह चौथा काम हुआ।

(ङ) गोमूत्र ३२ तोले और थूहर का दूध ३२ तोले ला कर अलग रख लो। यह पाँचवाँ काम हुआ।

से पूर्ण हो तथा अँगुलियों से मलने से जिनकी बत्ती-सी हो जाय, वह गुड़-पाक अच्छा हुआ जानो। अगर भिलावे तैयार करते-करते कहीं सूजन पैदा हो जाय, तो नीचे के उपायों से काम लो—

(क) देवदारु, सरसों और नागरमोथा—बराबर-बराबर ले कर मक्खन में मिला कर उस स्थान पर लेप करो। इस लेप से भिलावों का विकार निश्चय ही आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(ख) मक्खन, तिल, दूध और मिश्री—इनका लेप करने से भी भिलावों का विकार शान्त होता है। केवल घी और मिश्री के लेप से भी लाभ होता है। परीक्षित है।

(ग) आमलों के पत्तों का रस शरीर पर मलने से भिलावे की महाव्याधि नष्ट होती है; पर साथ ही मिश्री और नींबू का रस पीना भी जरूरी है। परीक्षित है।

(च) अब ऊपर की क, ख, ग, घ, ङ, में तैयार रखी हुई सभी चीजों को एकत्र मिला कर, लोहे की ख़ूब साफ़ कढ़ाही में चढ़ा कर, चूल्हे पर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो और खरल में डाल कर घोटो। घुटने पर एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। सेवन-विधि—रोज़ सवेरे ही एक या दो गोली, बलाबल-अनुसार, गर्म जल के साथ सेवन करो। इस रस से बवासीर अवश्य नष्ट हो जाती है।

☛ नोट—रसायनसार से ले कर हमने यह नुसख़ा आज़माया था। २-२ माशे की मात्रा से हमने किसी-किसी को हानि देखी, इसी से १ माशे सेवन कराया और लाभ उठाया। यह नुसख़ा परमोत्तम है।

☐ ग़रीबी नुसखे ☐

(७२) कड़वे नीम के पके हुए फलों का गूदा ३ माशे ले कर, ६ माशे गुड़ में मिला कर, सात दिन तक खाने से बवासीर में निश्चय ही आराम मालूम होता है। परीक्षित है।

(७३) करंज, चीते की छाल, सेंधानोन, इन्द्रजौ और अरलू की छाल—इन सब को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण बना लो। उस चूर्ण को 'छाछ' के साथ फाँकने से ख़ूनी, बादी और सहज बवासीर आराम होती है। परीक्षित है।

(७४) प्याज़ के महीन-महीन टुकड़े कर के धूप में सुखा लो। सूखे टुकड़ों में से १ तोला प्याज़ ले कर 'घी' में तलो। पीछे उसमें १ माशे तिल और २ तोले मिश्री मिला कर रोज सवेरे खाओ। इससे बवासीर आराम हो जायगी। परीक्षित है।

(७५) प्याज़ के रस में घी और चीनी मिला कर खाने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(७६) कड़वे नीम के २१ पत्ते महीन पीस कर, मूंग की बिना छिलकों की धोई दाल में मिला कर, गाय के घी में उसकी पूरी-सी बना लो। शेष में जो घी कढ़ाही में रहे, उस घी को खाने से बवासीर के मस्से गिर जाते हैं। पूरी को खाने की दरकार नहीं, रोज़ इसी तरह पूरी पका कर घी निकाल लो और पूरी फेंक दो। 'समन्दरनोन' न खाना चाहिये। हाँ, सेंधानोन थोड़ा-सा खा सकते हो। इसके सिवा और वायु-नाशक हल्के पदार्थ खाओ। पर घी रोज़ तैयार करके, २१ दिन तक खाना ज़रूरी है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। परीक्षित है।

(७७) ग़ंगावती का रस १ तोला और घी १ तोला मिला कर खाने से बवासीर नष्ट होती है। परीक्षित है।

(७८) कालीमिर्च, चीते की जड़ की छाल और सेंधानोन—तीनों बराबर-बराबर ले कर चूर्ण कर लो और शीशी में भर कर रख दो। इसमें से १॥ माशे से ३ माशे तक चूर्ण, माठे में मिला कर सेवन करने से गुल्म, मन्दाग्नि, बवासीर और संग्रहणी तथा पेट के अन्य रोगों में निश्चय ही लाभ होता है। परीक्षित है।

(७९) ढाक के पत्तों की राख २० तोला, पानी ६० तोला, सोंठ ५ तोला, कालीमिर्च ५ तोला, पीपर ५ तोला और गाय का घी ५ तोला ला कर रखो। कलईदार कढ़ाही में पानी, घी, ढाक के पत्तों की राख और सोंठ, मिर्च, पीपर का चूर्ण सब को डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब पानी जल जाय, घी रह जाय, उतार कर छान लो और किसी चिकने बर्तन में रख दो। इसमें से २ तोले 'घी' १० तोले 'दूध' के साथ साँझ-सवेरे पीना चाहिये। पं० नन्दकिशोर जी प्रयाग से लिखते हैं कि इसके सेवन से गुदा के मस्से गिर पड़ते हैं।

(८०) एलुआ ५ तोले, रसौत ५ तोले और शुद्ध गूगल २॥ तोले—इन तीनों को एक सेर मूलियों के रस में घोट कर चने के बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली बासी पानी के साथ खाने से हर तरह के मस्से, विशेष कर ख़ूनी मस्से, आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८१) गर्भवती स्त्री को गर्भ की हालत में बहुधा क़ब्ज़ रहता है। इससे बवासीर हो जाती है। अगर गर्भ रहने से पहले बवासीर होती है, तो गर्भावस्था में और भी जोर पकड़ जाती है। गर्भावस्था में पैदा होने वाली बवासीर, बच्चा जनने के बाद, अपने-आप शान्त हो जाती है। गर्भवती को बवासीर, की वजह से अधिक तकलीफ़ हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये। ये उपाय आज़मूदा हैं, अवश्य लाभ दिखाते हैं।

(क) बवासीर में ऐसा उपाय करना बहुत ज़रूरी है, जिससे रोज़ दस्त साफ़ होता रहे। २ तोले मुनक्के—दाख (बीज निकाल कर) एक पाव जल में औटा कर, चौथाई जल रहने पर उतार लो और मल-छान कर पिला दो। इससे दस्त साफ़ होता रहेगा और गर्भवती को हानि नहीं होगी। अथवा ४ माशे 'त्रिफले का चूर्ण' थोड़ी-सी 'मिश्री' मिला कर खिलाओ। इससे भी दस्त साफ़ आता रहेगा।

(ख) माजूफल को खूब महीन पीस कर, उसमें ज़रा-सी अफ़ीम मिला कर, पानी में गाढ़ा-गाढ़ा लेप-सा बना कर मस्सों पर लगा दो अथवा रसौत को

जल में पीस कर लेप करो; अथवा हरड़ को जल में पीस कर लेप करो। ये तीनों उपाय उम्दा हैं। इनमें से किसी एक से काम लो।

(ग) अगर मस्सों में खुजली, दर्द और सूजन प्रभृति से बहुत कष्ट हो, तो 'भाँग' को जल में पीस कर, उसकी लुगदी को 'घी' में सान कर और कुछ गरम करके, टिकिया-सी बना कर, गुदा-द्वार पर रख कर बाँध दो। इससे फौरन शांति आयेगी।

(८१) जिससे वायु की चाल ठीक रहे, अग्नि दीपन हो और रोज़-रोज़ दस्त साफ़ होता रहे—ऐसी दवा और पथ्य का सेवन ही बवासीर का सच्चा और कारगर इलाज है। हम चन्द परीक्षित उपाय नीचे लिखते हैं।

(क) हर दिन बड़ी खजूर पाँच दाने और मुनक्का—दाख १ तोले ले कर दोनों को गाय के दूध में डाल कर औटाओ; पर औंटाने से पहले दूध में कुछ पानी जरूर मिला दो। दूध पानी को मन्दी-मन्दी आग से पकाते रहो। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, उतार कर कपड़े में छान लो और पी जाओ। इस तरह रोज़-रोज़ करने से दस्त साफ़ आयेगा और ताक़त बढ़ेगी।

(ख) बवासीर-रोगी, अगर हरड़ का मुरब्बा, दाख, गुलकन्द या पके अंजीर—इनमें से कोई-न-कोई चीज़ रोज़ सेवन करता रहे, तो उसे बड़ा आराम मिलेगा। ये नरम दस्तावर चीज़ें हैं। बवासीर में रोज़ दस्त साफ होना परम आवश्यक है।

(ग) बड़ी हरड़ को घी में भून कर, उसके बराबर बिरिया-संचर नोन या विड़नोन मिला कर चूर्ण करके रख लो। रात को सोते समय इसमें से ३ माशे चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गरम जल पी लेने से सवेरे ही दस्त साफ होगा, कोठा शुद्ध हो कर वायु नीचे को खुलेगी और बड़ा आराम मालूम होगा।

(घ) काले तिल ला कर धो लो और छिलके उतार लो। पीछे उन्हें किसी बर्तन में रख दो। रोज़ सवेरे १ तोले यही तिल, मक्खन और मिश्री में मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर की तकलीफ़ मिट जाती है।

(ङ) घोल (बिना पानी मिला माठा) बवासीर में बड़ा हितकारी है। इसमें भुना हुआ ज़ीरा और सेंधानोन मिला कर, दिन में रोज़ सेवन करने से बवासीर में बड़ा लाभ होता है।

(च) बन्दाल के सूखे फल को, बिना धुएँ के अँगारों या कोयलों की आग पर रख कर, पाख़ाने से आते ही उसकी धूनी मस्सों को दो। तीन चार दिन ऐसा करने से बवासीर आराम हो जाती है।

☛ नोट—बन्दाल को देवदाली या घूंघरबेल भी कहते हैं। यह लता गुर्च की लता की तरह पेड़ पर चढ़ती है।

(८३) रसौत और कलमी शोरा—दोनों को बराबर-बराबर ले कर मूली के रस में घोट कर, चने-समान गोलियाँ बना लो। हर दिन, सवेरे-शाम, एक-एक गोली खा कर बासी जल पीने से ख़ूनी और बादी बवासीर आराम हो जाती है। अनेक बार की परीक्षित है।

मात्रा—१ से ४ गोली तक है। बलाबल देख कर कम-ज़्यादा देनी चाहिए।

(८४) नीम की निबौलियाँ, रसौत और हरड़—इन तीनों को महीन कूट पीस-छान कर खरल में डालो और ऊपर से 'अर्क-गुलाब' दे-दे कर घोटो। घुट जाने पर तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ बना कर खाओ। इस दवा से बवासीर निश्चय ही शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

पकी नीम की निबौलियाँ पुराने गुड़ में मिला कर खाने से बवासीर आराम हो जाती है।

☛ नोट—(क) नीम की निबौली और रसौत दोनों को एकत्र घी में पीस कर और गरम करके, मस्सों पर सुहाता-सुहाता गरम लेप करने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

(ख) यूनानी चिकित्सा में नीम के मद की बड़ी तारीफ़ लिखी है। बवासीर और भगन्दर में इस मद की पिचकारी देने से बड़ा लाभ होता है।

(८६) हरड़ को घी में भून कर और उसमें गुड़ और पीपल का चूर्ण मिला कर सेवन करने से दस्त ठीक होता और बवासीर वालों को सुख मिलता है।

(८७) चिरचिरे की जड़ के चूर्ण में तिल और शुद्ध भिलावों का चूर्ण मिला कर, जल या चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से अग्नि ख़ूब बढ़ती है। यह नुसखा कोढ़ को नष्ट करता और बवासीर को तो जड़ से ही उड़ा देता है।

(८८) बैंगन को त्रिकुटे के काढ़े और क्षार में उबालो। इसके बाद निकाल कर घी में भूनो और गुड़ के साथ खाओ और ऊपर से थोड़ा सा 'माठा' पियो। इससे अत्यन्त बढ़ी हुई बवासीर और सहज बवासीर भी आराम होती है।

(८९) कंघी की पत्तियाँ २१ और कालीमिर्च २१ ले कर—दोनों को पानी में पीस, सात गोलियाँ बना लो। सुबह-शाम एक-एक गोली खाने से ख़ूनी और बादी बवासीर आराम होती है।

(६०) नीम के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी, शुद्ध गूगल, रसौत, एलुआ, कालीमिर्च और गेरू—इन सबको पीस-कूट कर खरल में डालो और ऊपर से मकोय की पत्तियों का रस डाल कर घोटो और जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली खाने से ख़ूनी और बादी, दोनों तरह की बवासीर नष्ट हो जाती हैं।

(६१) रसौत दो भाग, अनार की छाल चार भाग और गुड़ आठ भाग, इनको कूट-छान कर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, सोलह-सोलह माशे खाने से ख़ूनी और बादी दोनों बवासीर नष्ट हो जाती हैं।

(६२) कुसुम के फूल ३ माशे, जल में पीस कर दही में खाने से ख़ूनी और बादी दोनों बवासीरें आराम हो जाती हैं।

(६३) काली ज़ीरी १२ माशे ले कर, आधी कच्ची रखो और आधी को भून लो। इसी में से हर दिन ५ माशे, साँठी चावलों के पानी के साथ खाने से, ख़ूनी और बादी दोनों बवासीरें आराम होती हैं।

(६४) हुलहुल के बीज एक भाग और शक्कर दो भाग मिला कर रख लो। २ माशे रोज़, सवेरे-शाम खाने से ख़ूनी और बादी दोनों बवासीर आराम हो जाती हैं।

(६५) गाय का दूध आध सेर कटोरे में ले कर मुंह के पास रखें और एक घूंट पियें। उसी समय कोई दूसरा आदमी फौरन ही, एक या आधे कागजी नीबू का रस उस दूध में टपका दे और आप झट पी जायँ। एक सेकण्ड की भी देर न करें। इससे बवासीर आराम हो जाती है। और तीन दिन में ही गुण नजर आता है। परीक्षित है। बड़ा ही चमत्कारक उपाय है।

(६६) लहसन २० माशे, सज्जी २० माशे, हींग २० माशे, निबौली की गिरी २० माशे और गुड़ ८० माशे—सबको एक में मिला कर, १२-१२ माशे की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाने से छहों तरह की बवासीर नष्ट हो जाती है।

(६७) बबूल की पतली फलियाँ, जिनमें बीज न पड़े हों, ला कर छाया में सुखा लो। सूखने पर कूट-पीस कर छान लो। पन्द्रह दिन तक, इनमें से ६ माशे चूर्ण जल के साथ खाने से सब तरह की बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

(९८) सीप का चूना पानी डाल कर खरल में घोटो। घुट जाने पर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के २१ दिन तक खाने से बवासीर आराम हो जाती है।

(९९) हारसिंगार के बीजों की मींगी १ तोला और कालीमिर्च ३ माशे, इन दोनों को पीस कर, जल के साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। एक गोली रोज़ सवेरे खाने से बवासीर निश्चय ही आराम हो जाती है।

(१००) कुकरौंधे का स्वरस १ सेर ले कर, क़लईदार कड़ाही में औटाओ। जब गाढ़ा हो जाय, उसमें ६ माशे कालीमिर्च मिला दो और जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो और उनको छाया में सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से बवासीर अवश्य नष्ट हो जाती है। मगर कम-से-कम तीन हफ़्ते ये गोलियाँ सेवन करनी चाहिए।

☛ **नोट**—अगर यही गोलियाँ सरसों के तेल से पीस कर, रोज़ गुदा-द्वार पर लगायी जायँ, तो निश्चय ही बवासीर नष्ट हो जायगी।

(१०१) करंज की मींगी ३ माशे और शक्कर ६ माशे—दोनों को मिला कर २१ दिन तक खाने से बवासीर अवश्य नष्ट हो जाती है।

(१०२) निरमली के फल को जला कर उसकी राख कर लो। इस राख में से ३ माशे राख ले कर और उसमें उतनी ही चीनी मिला कर, १५ दिन तक खाओ। यह बवासीर पर अच्छा नुसख़ा है।

(१०३) बबूल के फल या फूल ६ माशे लेकर, उनमें ६ माशे चीनी मिलाओ और कुछ दिन लगातार खाओ। यह नुसख़ा भी बवासीर पर उत्तम है।

(१०४) आमाहल्दी और सफ़ेद मोम—दोनों बराबर-बराबर ले कर, ज्वार के दाने के समान गोलियाँ बना लो। हर रोज़ सवेरे एक गोली खा कर पानी पी जाओ। १६ या २१ दिन में ख़ूनी और वादी, दोनों बवासीरें आराम हो जायँगी।

(१०५) ज़मीकन्द को आक के पत्तों में लपेट कर, उस पर डोरा कस कर बाँध दो। पीछे उस पर मिट्टी दो-दो अंगुल चढ़ा कर सुखा लो। इसके बाद आरने उपलों की आग में उस गोले को रख दो। जब गोला आग के समान लाल हो जाय, निकाल लो। शीतल होने पर मिट्टी और पत्ते फेंक दो। इस ज़मीकन्द को तेल और नमक के साथ खाओ। इस तरह २१ दिन खाने से बवासीर अवश्य आराम हो जाती और वायु के विकार भी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०६) भैंसा गूगल, लहसन, नीम की निबौली, हींग और सोंठ—इन सबको बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस कर जल के साथ घोटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को शीतल जल के साथ खाने से बवासीर जड़ से नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(१०७) नीम की निबौलियों की मींगी, बकायन की गिरी, कच्ची इमली की गिरी और भैंसा गूगल—सबको पाँच-पाँच तोले चार-चार माशे लो और मिश्री २१ तोले ४ माशे लो। सबको कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक तोले खा कर ज़रा-सा जल पी लो। इससे बवासीर नष्ट हो जाती है। परहेज़ कुछ नहीं।

(१०८) कुछ दिन लगातार मौंठ की दाल खाने से बवासीर और वायु-गोले में लाभ होता और ख़ून भी साफ़ होता है।

(१०९) छाछ में सेंधानोन मिला कर पीने से ख़ूनी बवासीर नष्ट होती है।

(११०) छाछ या माठे में अजवायन और सेंधा नमक मिला कर पीने से बवासीर और वायुगोला दोनों आराम हो जाते हैं।

(१११) गिलोय का सत्त* मक्खन में मिला कर खाने से बवासीर आराम हो जाती है। मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक है। परीक्षित है।

---

* गिलोय के सत्त के आश्चर्यजनक चमत्कार को देख कर हम मुग्ध हो गये। अलग-अलग अनुपानों के साथ सेवन करने से बड़ा गुण करता है। चन्द प्रयोग हम यहाँ लिखते हैं—

(१) **बवासीर में**—मक्खन के साथ गिलोय का सत्त खाओ। (२) **ताक़त के लिए**—गाय के धारोष्ण दूध में मिश्री मिला कर। (३) **अरुचि में**—अनार के रस में। (४) **वमन में**—चावलों की खीलों के साथ। (५) **पीलिया में**—घी और शहद में या दूध में। (६) **जीर्ण ज्वर में**—घी और मिश्री के साथ। (७) **दाह में**—ज़ीरे और मिश्री के साथ। (८) **पित्त-ज्वर या पित्त में**—बूरे के साथ। (९) **ज्वर में**—शहद के साथ। (१०) **कोढ़ में**—रेंड़ी के तेल में। (११) **क्षय रोग में**—घी, मिश्री और शहद में। (१२) **मन्दाग्नि में**—गोरखमुण्डी के साथ। (१३) **गुल्म में**—सोंठ के साथ। (१४) **प्रदर में**—लोध के चूर्ण में। (१५) **हिचकी पर**—शहद में। (१६) **कमल रोग में**—दाख के रस में। (१७) **प्रमेह में**—गाय के १ पाव दूध में या त्रिफले के चूर्ण और मिश्री में। (१८) **वायु-रोग में**—घी के साथ।

(११२) कंजा, (करंज) सोंठ, इन्द्रजौ, सोनापाठा, सेंधानोन और चीता—इन सबको बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस और छान कर चूर्ण कर लो। इसमें से २ या ३ माशे चूर्ण, रोज़-रोज़ माठे में मिला कर पीने से रक्त-सहित मस्से गिर पड़ते हैं। परीक्षित है।

(११३) गुड़ के हरड़ खाने से बवासीर फौरन नष्ट हो जाती है। 'वैद्य-विनोद' में लिखा है

अर्शांसि नशयत्याशु गुड़युक्ता हरीतकी।

वृन्द नामक वैद्य ने भी कहा है—

पित्तश्लेष्मप्रशमनी कच्छूकण्डू रुजापहा।
गुदजान्नाशयत्याशु योजिता सगुडाऽभया॥

गुड़ के साथ सेवन करने से हरड़ पित्त-कफ को शान्त करती, कोढ़ और सूखी तथा मीठी खुजली को नष्ट करती एवं गुदा के सब रोगों को आराम करती है। परीक्षित है।

(११४) चीते की जड़ की छाल ले कर, उसे पानी के साथ पीस कर, लुगदी-सी बना लो। पीछे, एक कोरी मिट्टी की हाँड़ी में, भीतर की ओर, उसे चारों ओर ल्हेस दो और हाँड़ी को छाया में सुखा लो। इसके बाद उसी हाँड़ी में दही जमाओ। सवेरे दही बिलो कर माठा तैयार करो। इस हाँड़ी का माठा बवासीर नाश करने के लिए कम-से-कम २१ दिन सेवन करना चाहिए। रामबाण है। कितनी ही बार परीक्षा की है।

(११५) चीता, हाऊबेर और हींग—इन तीनों को बराबर-बराबर ला कर कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इसमें से दो-तीन माशे चूर्ण, माठे में मिला कर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(११६) अगर बवासीर वाले का मल बड़ी तकलीफ़ से निकलता हो, तो उसे सेंधा नमक में घी मिला कर खाना चाहिए। इससे सहज में पाख़ाना होने लगेगा।

(११७) दालचीनी, तेजपात, इलायची, साँभर नोन, त्रिकुटा, सफ़ेद ज़ीरा और काला ज़ीरा—इन सब को बराबर-बराबर ला कर, पीस-कूट कर चूर्ण कर लो। इसमें से ३ से ६ माशे तक चूर्ण, सत्तू और दही के साथ खाने से क़ब्ज़ मिटता, आमशूल नष्ट हो जाता, रुचि होती और बवासीर शान्त हो जाती है।

(१६८) अजवायन और बिरियासंचर नोन का चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से बवासीर वाले को आराम मालूम होता है। इससे दस्त ढीला और साफ़ होता तथा भूख बढ़ती है।

(११६) केवल सेंधानोन मिली हुई छाछ हर तरह की बवासीर वाले को हितकारी है।

(१२०) सेंधानोन, पाढ़, अनार का रस और गुड़—इनको समान-समान ले कर, माठे में मिला कर पीने से वायु और मल यथा-मार्ग स्थित रहते हैं। यह बवासीर में पथ्य है।

(१२१) तिल, शुद्ध भिलावे, हरड़ और गुड़—बराबर-बराबर ले कर, गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से बवासीर, श्वास, खाँसी, तिल्ली, पीलिया और ज्वर—ये सब नष्ट हो जाते हैं।

□ मस्से-नाशक लेप □

(१२२) हल्दी और कड़वी तोरई का लेप सब तरह के मस्सों को नष्ट करता है। परीक्षित है।

नोट—इन दोनों को कड़वे तेल में मिला कर लेप करने से और भी जल्दी आराम होता है।

(१२६) आक के पत्ते और सहँजने के पत्तों का लेप भी मस्सों के लिए अच्छा है। परीक्षित है।

(१२४) नीम और कनेर के पत्तों का लेप मस्सों को नष्ट करता है। परीक्षित है।

(१२५) कड़वी घीया और गुड़ को, कांजी में पीस कर लेप करने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१२६) सेंहुड़ के दूध में हल्दी का चूर्ण मिला कर एक बूंद मस्से पर लगा देने से मस्सा नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१२७) आक का दूध, सेंहुड़ का दूध, तितली का पत्ता और डहर-करंज की छाल—सबको बराबर-बराबर ले कर बकरी के मूत्र में पीस कर मस्सों पर लेप करने से मस्से गिर पड़ते हैं। इन सब की बत्ती-सी बना कर, फिर उसे तिली के तेल में भिगो कर, गुदा में रखने से भी मस्से गिर पड़ते हैं और मालूम भी नहीं होता। परीक्षित है।

(१६८) बंसलोचन, इलायची, कत्था और नीलाथोथा—सबको बराबर-बराबर एक-एक तोले ले कर, नीबू के रस में घोट कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को जल में घिस कर लगाने से मस्से गिर पड़ते हैं।

(१२६) पीपल, हल्दी, शंख, सज्जी, करंजवे के बीज, करंजवे के पत्ते, सेंधानमक, घुंघुची (चिरमिटी), नागकेसर; नागकेशर के बीच के बीज, नागकेसर की जड़, तूतिया, धतूरा, मुर्गे की विष्ठा, अजवायन और तोरई के बीजों का रस—इन सब को बराबर-बराबर ले कर, थूहर और आक के दूध में भावना दो। शेष में गाय के दूध में भावना दो; यानी इस तरह बारम्बार उपरोक्त दूधों के साथ खरल करो या भावना दो। यह 'सिद्ध योग' है। इसका लेप करने से बवासीर, ग्रन्थि, अर्बुद, नाड़ी-व्रण, गण्डमाला, अपची इत्यादि अधिकांश दोष से उत्पन्न हुए विकार भी नष्ट हो जाते हैं।

(१३०) देवदाली के बीजों की मींगियों को गोमूत्र में पीस कर मस्सों पर लेप करने से मस्से जड़ से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३१) थूहर का दूध मस्सों पर लगाने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३२) भाँग १ तोला और अफ़ीम १ माशा, दोनों को जल में पीस, कपड़े पर लेप कर, जरा गरम करके गुदा-द्वार पर बाँध दो। इससे बवासीर की पीड़ा तत्काल शान्त होती है। परीक्षित है।

(१३३) गन्दने का रस एक भाग निकाल कर, आधे भाग मीठे तेल में औटाओ। जब पानी जल कर तेल रह जाय, तब उसमें से थोड़ा-सा तेल ले कर उसमें गूगल मिला कर मस्से पर लेप कर दो। मस्सा गिर जायगा।

(१३४) हरी कनेर की जड़ पानी में पीस कर पाख़ाने में ले जाओ। पाख़ाना फिरते समय जब मस्से बाहर निकल जायें, इसमें से थोड़ी-सी उन पर लगा दो। यद्यपि यह दवा बहुत ही पीड़ा करती है, पर है गुणकारी।

(१३५) खटमल को बवासीर के मस्सों पर मलने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१३६) अडूसे की पत्तियाँ छाया में सुखा कर, पीस-छान कर रख लो। हर दिन चार-पाँच बार उनको गुदा पर मलने से बवासीर आराम हो जाती है।

(१३७) नील के हरे पत्ते कूट कर रस निकाल लो और मीठे तेल में उसे मिला कर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो। इस तेल को मस्सों पर मलने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१३८) गुदा पर 'सरोवर की काई' मलने से मस्सों की जलन मिट जाती है।

(१३९) बीज समेत तितली को काँजी में पीस कर और गुड़ में मिला कर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(१४०) तूतिया १ माशे, मुलतानी मिट्टी ५ माशे और सिन्दूर २ माशे— इन तीनों को पीस-छान कर २ तोले मीठे तेल में मिला लो और रख लो। पाख़ाना जाते समय, इसमें से थोड़ा-सा तेल ले जाओ। जब मस्से बाहर निकलें, उन पर इसी तेल को रोज़ ख़ूब मलो। इससे बवासीर आराम हो जायगी।

(१४१) आध पाव फिटकरी भून कर पीस लो और घी में इस तरह मिलाओ, कि गाढ़ा-गाढ़ा मरहम-सा हो जाय। दूसरी ओर, सोये के बीज २ तोले पानी में पका कर पीस लो। पहले इस लुगदी को गुदा पर बाँधो। इसके बाद वह फिटकरी का मरहम, रूई के फाहे में लगा, उसके ऊपर रख दो। फाहे पर पान रख कर लँगोट कस दो। सात दिन तक, इसी तरह करके, रोज़ लँगोट लगाते रहो। सवेरे का लँगोट शाम को खोलो और शाम का सवेरे। दवा दोनों समय ताज़ा लगाया करो। सात दिन में, पुरानी-से-पुरानी बवासीर, निश्चय ही आराम हो जायगी। परीक्षित है।

(१४२) कलोंजी जला कर पीस लो और गुदा पर रोज़ मला करो। अथवा कलोंजी की राख शहद में मिला कर गुदा पर रखा करो। इस उपाय से बवासीर आराम हो जायगी।

(१४३) हल्दी और तोरई को सुखा कर पीस लो। फिर इसमें सेंधानोन पीस कर मिला दो। शेष में, सबको गोमूत्र में मिला कर मस्सों पर लेप करो। इस लेप से बवासीर के मस्से नष्ट हो जायेंगे।

(१४४) संखिया ६ माशे, आमलासार गन्धक १ तोले, हरताल १ तोले और हरड़ १ तोले ला कर रखो। पीछे इन चारों चीज़ों को पीस-कूट कर एक मिट्टी की सराई में रखो। फिर ऊपर से दूसरी सराई रख कर सन्धि बन्द कर दो और कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। पीछे सराई को चूल्हे पर रख कर, १५ मिनट तक आग लगाओ। इसके बाद उतार लो और सराई खोल कर दवा निकाल लो।

फिर तवे पर २ तोले घी डालो और उसी में सराई की दवा डाल कर, ६ घण्टे तक घोटो और बाजरे के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नीबू के रस में घोट कर मस्सों पर लगाओ। इस लेप के लगाने से मस्से जड़ से उड़ जाते हैं। छहों प्रकार की बवासीर और भगन्दर भी इस दवा से जड़ से नष्ट हो जाते हैं। यह दवा इस काम के लिए अव्वल दरजे की है।

(१४५) कड़वी तूम्बी को सिरके में महीन पीस कर गुदा-द्वार पर लेप करने से शीघ्र ही बवासीर नष्ट हो जाती है। कई बार परीक्षा की है।

(१४६) आक के पत्ते महीन पीस कर गुदा पर लेप करने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

☛ **नोट**—रोज़ आक के पत्तों से गुदा पोंछने से भी बवासीर जाती रहती है।

(१४७) कुकरौंधे के पत्ते महीन पीस कर पाख़ाने की जगह लेप करने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(१४८) तमाकू के पत्ते महीन पीस कर, गुदा पर लेप करने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(१४९) सहँजने के पत्तों को महीन पीस कर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) नीम और पीपल के पत्तों का लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५१) कड़वी तूम्बी और गुड़ को सिरके में महीन पीस कर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५२) कड़वे नीम के बीजों को तेल में तल कर, उसी तेल में पीस लो और उसमें ज़रा-सा नीलाथोथा पानी में घोल कर मिला दो। इस मरहम के लगाने से बवासीर के मस्से गल कर गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(१५३) सफ़ेद चिरमिटी ६ माशे, पेठे के बीज ६ माशे और ज़मीकन्द ६ माशे—इन तीनों को जल के साथ महीन पीस कर, कपड़े पर लेप करो और उसकी बत्ती-सी बना लो। इस बत्ती को गुदा के भीतर, ३ अंगुल तक घुसाने से भीतर के मस्से और बादी बवासीर नष्ट हो जाती है; परन्तु लगातार तीन दिनों तक यह काम करना ज़रूरी है।

(१५४) विच्छू को तेल में तल कर, उस तेल को छान लो। उस तेल में रूई का फाया भिगो कर गुदा-द्वार पर रखो। इस तेल से पीड़ा-समेत बवासीर आराम हो जाती है।

☛ नोट—कोई-कोई लिखते हैं कि २५ बिच्छुओं को सरसों के तेल में डाल कर ४० दिन तक शीशी या बर्तन को धूप में रखो; तब बिच्छू का तेल तैयार होगा।

(१५५) मालकाँगनी की जड़ को पानी में पीस कर, मस्सों पर लेप करने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१५६) बड़ के पीले पत्ते ला कर जला लो। उनकी ६ माशे राख, सरसों के तेल में मिला कर, लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५७) काले साँप की काँचली की राख, सरसों के तेल में मिला कर, मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५८) सेंधानोन ३ माशे और देवदाली के बीज ३ माशे—दोनों को सिरके में महीन पीस कर मस्सों पर लेप करने से बवासीर के सब तरह के मस्से अवश्य नष्ट हो जाते हैं। अनेक बार का परीक्षित योग है। यह नुसख़ा कभी फ़ेल नहीं होता।

☛ नोट—देवदाली को घूघरबेल और बन्दाल भी कहते हैं। यह बेल गिलोय की तरह वृक्षों पर चढ़ती है।

(१५९) बाँसा, साधारण लोध, रसौत और कलिहारी की जड़—इन सबको बराबर-बराबर ले कर, जल के साथ पीस-कर, नाभि के चारों ओर, चार-चार अंगुल तक, लेप करने से फिर कभी बवासीर नहीं होती। यह लेप बवासीर वालों के लिए मशहूर है।

(१६०) माजूफल को खूब महीन पीस लो उसमें ज़रा-सी अफ़ीम मिला कर, पानी में पीस कर गाढ़ा-गाढ़ा लेप-सा बना लो। मस्सों पर इसका लेप करने से बवासीर में बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(१६१) रसौत को जल में पीस कर लेप करने से भी बवासीर नष्ट हो जाती है।

☛ नोट—अगर इसके साथ-साथ रसौत और कलमी शोरा बराबर-बराबर ले कर, मूली के रस में घोट कर, गोलियाँ बना लो और सवेरे-शाम एक-एक गोली खाओ तो बवासीर आराम होने में सन्देह ही क्या ? परीक्षित है।

(१६२) चीते की जड़, सुहागा, हल्दी और गुड़—चारों को समान-समान ले कर, पानी के साथ पीस कर लेप करने से बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—इस लेप को लगाओ और साथ ही चीते की जड़ को छाल को पानी में पीस कर एक घड़े में लेप करो और उसी घड़े में रात को दही जमा कर, सवेरे माठा बना कर पियो। इस तरह बराबर कुछ दिन पीने से बवासीर निश्चय ही चली जायगी। इन उपायों से बहुत रोगी चंगे हुए हैं।

□ बवासीर-नाशक बफारे □

(१६३) भाँग की पत्तियाँ, नीम की पत्तियाँ, बकायन की पत्तियाँ, इमली की पत्तियाँ, सम्हालू की पत्तियाँ और नील की पत्तियाँ—इनको बराबर-बराबर ले कर और कूट-पीस-छान कर औटाओ। जब औट जाय, उतार कर गुदा को बफ़ारा दो। इससे बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१६४) बन्दाल को औटा कर, उसका बफ़ारा गुदा को दो। बवासीर नष्ट हो जायगी।

नोट—बन्दाल को देवदाली या घूंघरवेल भी कहते हैं।

(१६५) हाथ-पाँवों के नाखून छील कर जलाओ और बफ़ारा दो। इससे बवासीर या मस्से नष्ट हो जायँगे।

(१६६) अरण्ड की जड़, देवदारु, रास्ना और मुलहठी—इन सबको पीस कर, इनके वज़न में चौगुना जौ का आटा मिला कर सबको दूध में डाल कर पकाओ। जब पक जाय, तब गुदा को इसका खूब बफ़ारा दो या स्वेदन करो अथवा सेक करो। इससे मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६७) भाँग की पत्तियाँ, नीम की पत्तियाँ, नीम के पत्ते बकायन की पत्तियाँ, सम्हालू की पत्तियाँ और नील की पत्तियाँ—इन छहों तरह की पत्तियों को पाँच-पाँच तोले ला कर, सवा सेर जल में डाल, मिट्टी की हाँड़ी में काढ़ा-सा करो। जब तीन पाव पानी रह जाय, चूल्हे से उतार लो। पहले से चौड़े मुँह वाली बाँस की नली तैयार रखो। उस नली का एक मुँह हाँड़ी पर लगाओ और इस तरह लगाओ कि उसकी भाफ उस नली में ही चढ़े, इधर-उधर न निकले। नली का दूसरा मुँह रोगी की गुदा के सामने कर दो। हाँड़ी में से जो भाफ निकले, गुदा को लगे। इस उपाय से मस्से जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं।

☐ बवासीर के मस्सों पर बाँधने की औषधियाँ ☐

(१६८) भाँग की पत्तियाँ, गाय के दूध में पका कर, गुदा द्वार पर बाँधो। इससे बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१६९) मीठे तेल में धतूरे के फल जलाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उस को निकाल कर शीशी में रख लो। इस तेल में रूई का फाहा भिगो कर, मस्सों पर रख कर बाँध दो। इससे मस्से नष्ट हो जायँगे।

(१७०) कुकरौंधे के पत्तों का रस बवासीर पर मलो और उसके ऊपर उसी के पत्ते बाँध भी दो। इस तरह करने से बवासीर आराम हो जायगी।

(१७१) दो अरण्ड के पत्ते पीस कर गुदा पर बाँधो; बवासीर आराम हो जायगी।

(१७२) सोये के बीज तीन तोले ला कर, पानी में पीस कर, टिकिया-सी बना लो और उसे गुदा पर बाँध कर, ऊपर से आक का पत्ता रख कर, लंगोट कस लो। इस तरह तीन दिन में मस्से कट कर गिर पड़ते हैं।

☛ नोट—आक, अरण्ड या तम्बाकू—इन तीनों में से किसी के पत्ते बाँधने से एक समान लाभ होता है।

(१७३) भाँग को जल में पीस कर लुगदी-सी बना लो और पीछे उसे घी में सान कर गरम करो तथा टिकिया-सी बना कर गुदा पर बाँध कर लँगोट कस दो। इस उपाय से बवासीर का दर्द, खुजली और सूजन अवश्य नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७४) कलमी शोरा ३ माशे और भुनी हुई फिटकरी ३ माशे—दोनों को पीस कर, और साबुन के पानी में मिला कर बड़े बेर या पेमन्दी बेर के समान गोलियाँ बना लो। पाख़ाने से आकर एक गोली गुदा में रख लो। सवेरे-शाम, दोनों समय तीन दिन तक गोलियाँ चढ़ाते रहो। इससे कुछ कष्ट अवश्य होता है; पर यह नुसख़ा अकसीर का काम करता है। एक वैद्य महोदय इसे अपना आज़माया हुआ कहते हैं। हमने यह नुसख़ा 'इलाजुलगुर्बा' से लिया है।

☐ बवासीर-नाशक काढ़े और धूनी ☐

(१७५) जवासे के काढ़े में बैठने से बवासीर नष्ट हो जाती है और बन्द पेशाब भी खुल जाता है।

(१७६) हुलहुल की पत्तियों का काढ़ा बना कर, उससे पाखाने के बाद शौच करें यानी आबदस्त लें। इस तरह करने से बवासीर नष्ट हो जायगी।

(१७७) कचनार, जामुन और मौलसरी की छाल दो-दो तोला ले कर, आधा सेर पानी में औटाओ और आधा पानी रहने पर उतार लो। शीतल होने पर उसी पानी से गुदा को धोने से बवासीर आराम हो जाती है। अच्छा नुसख़ा है।

(१७८) मिट्टी के बदले आक के पत्तों से गुदा को साफ़ करने से बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१७९) हुक्के के पीले और सड़े हुए पानी से आवदस्त लेने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१८०) ऊँट की खाल पर बैठने से बवासीर में बहुत लाभ होता है।

(१८१) कुचला जला कर उसकी धूनी मस्सों को दो। इससे ख़ून बन्द होगा और पीड़ा भी शान्त होगी।

(१८२) गिलहरी का मांस सुखा लो। सूखने पर कूट लो और सवेरे-शाम उसको आग पर डाल कर मस्सों को उसकी धूनी दो। इस धूनी से बवासीर आराम हो जायगी।

(१८३) देवदाली या बन्दाल का काढ़ा करके उससे आवदस्त लेने से बवासीर में वेतहाशा लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—साथ ही, १ तोला देवदाली महीन पीस कर, ५ तोले जल में छान कर पीना चाहिये। दोनों काम करने से मस्से अवश्य गिर पड़ेंगे।

(१८४) ६ माशे कपूर और आध पाव आमले—इन दोनों को तैयार रखो। एक मिट्टी के कुल्हड़े में कोयलों की आग भर कर, ऊपर से वही कपूर और आमले डालो। रोगी को इस तरह बैठाओ कि वह कुल्हड़ा ठीक रोगी की गुदा के नीचे रहे और उससे निकला धुआँ मस्सों को लगे। ऊपर से एक चादर भी तान दो, ताकि धुआँ बाहर न जाने पाये। इस तरह कई दिन धूनी देने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जायँगे। यह धूनी रोज रात को सोते समय देनी चाहिये।

(१८५) मनुष्य के बाल, आक की जड़, साँप की कांचली और साँप के दाँत, बैल का चमड़ा और छोंकरे के पत्ते—इन सब की धूप या धूनी देने से दुष्ट मस्से भी गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(१८६) काले साँप, सूअर, ऊँट, गीदड़ और बिल्ली की चर्वी गुदा पर मलने से या उनकी धूनी देने से बवासीर आराम हो जाती है।

(१८७) घूंघरबेल की धूनी देने से मस्से गिर जाते हैं।

(१८८) अच्छी सुरती, अच्छा चूना और अच्छा गुड़—इन तीनों को मिला कर आग पर डालो और वादी बवासीर के मस्सों को धूनी दो। अवश्य आराम होगा।

(१८६) बाजार से राल ला कर, सरसों के तेल में उसे सान लो। पीछे धुँए की आग पर उसे रख कर, गुदा को धूनी दो। इस उपाय से खून गिरना बन्द हो जायगा।

(१६०) गुदा को कपूर की धूनी देने से भी खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१६१) स्यार की खाल के मोज़े पहनने से बवासीर नष्ट होती है।

(१६२) कौए के पंख, मोर के पंख या चमगादड़ की लेंडी—इन तीन में से जो मिले, उसी की धूनी गुदा में देने से ७ या १४ दिन में खूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१६३) मैनसिल, सोंठ, गूगल, सरसों, देवदारु, पोहकर, कलिहारी और सज्जीखार—इन सबको बराबर-बराबर ले, घी में मिला कर, गुदा के मस्से को धूप देने से बवासीर, गुदा के रोग, भगन्दर और सड़े हुए घाव आराम होते हैं।

(१६४) सम्हालू के पत्ते, तेजपात, हरताल, सरसों का चूर्ण और देवदारु—इनको समान-समान ले कर घी, खाँड़ और शहद में मिला कर धूनी देने से बवासीर खुजली और विसर्प आदि आराम होते हैं।

(१६५) छुहारे के बीज बारीक पीस कर उनकी धूनी देने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

सूत बाँध कर मस्से काटने की तरकीबें

(१६६) हल्दी के चूर्ण में थूहर के दूध की भावना दे कर, उसमें सूत को डुबा लो और उसी सूत से मस्से को कस कर बाँध दो। इस तरह करने से मस्से और भगन्दर नष्ट हो जाते हैं।

☞ नोट—(क) हमने इस तरह कई बार परीक्षा की और ठीक फल पाया। दो तोले हल्दी को खूब महीन पीस-छान कर थूहर के दूध में भिगो दो। पीछे सूत का बटा हुआ मज़बूत धागा उसी में डाल दो। तीन दिन भीगने के बाद चौथे दिन उसे छाया में सुखा लो। फिर उसी डोरे से बवासीर के मस्से कस कर बाँध दो। ईश्वर-कृपा से मस्से कट कर गिर पड़ेंगे। भगन्दर की गाँठ भी इसके बाँधने से नष्ट हो जाती है।

(ख) अगर रोगी को कष्ट हो, तो गरम घी चुपड़ दो, या सौ बार का धोया घी घावों पर लगा दो। फौरन पीड़ा शान्त हो जायगी।

(१६७) थूहर का दूध, भिलावे, मालकाँगनी, त्रिफला, दन्ती, तोरई, चीता और सेंधानमक—इन सब को एकत्र पीस कर और घी में मिला कर सूत पर लपेटो। पीछे उस सूत को खींच कर मस्से पर बाँध दो। इस तरह करने से मस्से गल कर गिर जाते हैं।

• दाग कर बवासीर नष्ट करने की विधि •

(१६८) कनिष्ठिका और अनामिका उँगलियों के बीच में दाग देने से बवासीर में लाभ होता है। हंसली पर दागने से भी बवासीर आराम हो जाती है। दागने के बाद, रूई पानी में भिगो कर उस जगह पर रखनी चाहिये।

नोट—लोहे की डण्डी या ऐसी ही और किसी चीज़ को आग में लाल करके उसी से दाग देनी चाहिये। दाग देने से बहुत से रोग आराम हो जाते हैं। धनुर्वात, मृगी, उन्माद, चित्त-विकार, बेहोशी और सन्निपात में भौंह, कनपटी और मस्तक में दागने से लाभ होता है। नेत्र-रोग और मृगी में भौंह और कनपटी पर दागते हैं। कामला और पीलिया में पेट और ठोडी में दागते हैं। उदर के सब रोगों में पेट को दागते हैं। हृदय में दर्द होने से हृदय को दागते हैं।

• बवासीर-नाशक तेल •

(१६६) नीम के बीजों का तेल निकाल कर, मस्सों पर मलने से बवासीर आराम हो जाती है।

(२००) २५ बिच्छू सरसों के तेल में डाल कर ४० दिन तक धूप में रखो। बाद में इस तेल को मस्सों पर लगाओ। इससे पीड़ा-समेत बवासीर नष्ट हो जायगी। परीक्षित है।

• वृहत् काशीसादि तेल •

(२०१) हीराकसीस, कलिहारी, कूट, सोंठ, पीपल, सेंधानोन, मैनसिल, सफेद कनेर की जड़, वायबिड़ंग, चीते की छाल, अडूसा, दन्ती—जमालगोटे की जड़. कड़वी तोरई के बीज, चोक और हरताल—इन पन्द्रह औषधियों को एक-एक तोला ले कर, कूट-पीस कर सिल पर रखो और पानी डाल कर भाँग की तरह पीसो और लुगदी बनाकर रख लो।

थूहर का दूध ८ तोले, आक का दूध ८ तोले, काले तिल का तेल १ सेर और गोमूत्र ४ सेर लो। कलईदार कढ़ाही के बीच में लुगदी रखो। ऊपर से

दोनों दूध, तेल और गोमूत्र डाल दो और कढ़ाही को चूल्हे पर चढ़ा कर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो।

• तेल पकाने की और विधि •

पहले तेल को कड़ाही में चढ़ा कर खूब पका कर शीतल कर लो। फिर इस पके हुए तेल में ऊपर लिखी सब दवाओं का महीन चूर्ण और आक तथा थूहर का दूध एवं गोमूत्र मिला दो और आग पर चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब गोमूत्र और दूध जल जाय, तेल-मात्र रह जाय, उतार कर शीतल कर लो और छान कर बोतल में भर दो।

☛ नोट—पर ध्यान रहे, तेल जलने न पाये। जब लुगदी या कल्क का मसाला आग पर डालने से चट-चट शब्द न करे और झाग आने ही लगें, तब समझ लो कि तेल ठीक पक गया। अगर लुगदी जल जाय और साथ ही तेल भी कुछ जल जाय, तो वह तेल किसी काम का नहीं होता। इसलिये ज्यों ही पानी जला दीखे, तेल को उतार लो।

सेवन विधि—अगर बवासीर के मस्से बाहर ही हों, तो रोज़ कई बार इस तेल को मस्सों पर चुपड़ा करो। यदि मस्से भीतर हों, तो उँगली में तेल लगा कर, तेल को भीतर मस्सों तक पहुँचा दो। अगर इस तरह सुभीता न हो तो पिचकारी में भर कर पिचकारी लगवाओ। इस तेल से मस्से गिर जाते हैं और गुदा की वलियों में कोई हानि नहीं होती। क्षार वगैरा लगाने की अपेक्षा इस तेल को लगाना उत्तम है। यह तेल बवासीर पर रामबाण है। कोई अभागा ही आराम न हो तो न हो। परीक्षित है।

• क्षार से मस्से नष्ट करने की विधि •

क्षार से मस्से गिर तो झट जाते हैं, पर रोगी को तकलीफ़ होती है। इसी से हमारा विचार 'क्षार-प्रयोग' लिखने का नहीं था, पर स्वर्गीय रसायन-शास्त्री पण्डित श्यामसुन्दर आचार्य वैद्य महोदय ने क्षार द्वारा मस्से गिराने की एक बहुत उत्तम विधि लिखी है। उसे हम अपनी पुस्तक में लिखने का लोभ संवरण न कर सके, इसी से नीचे लिखते हैं :—

प्रतिसारणीय * क्षार १ तोला और गाय का घी ४ तोला।

---

* प्रतिसारणीय क्षार बनाने की विधि

पाव भर लोटिया-सज्जी और आध सेर बिना बुझा चूना, दोनों को एक मिट्टी की नाँद में डाल, ऊपर से दस सेर पानी भर दो। पीछे डण्डे से खूब चला दो। हाथ,

दोनों को खरल में घोट कर एक दिल कर लो। इस क्षार मिले घी को थोड़ा-सा मस्सों पर लगाओ। ८-१० दिन में मस्से गिर जायेंगे और विशेष कष्ट भी न होगा। अगर क्षार में घी न मिलायें, तो क्षार से मस्से तो ५ मिनट में ही गिर जायँगे, पर कष्ट बहुत होगा। इसी से घी मिलाने की बात लिखी है।

इस क्षार के लगाने के सिवा, रात को सोते समय, ६ माशे कपूर और आध पाव आमले ले कर, एक कुल्हड़े में आग रख कर, उसी पर ये कपूर और आमले डालते

पैर मत लगाना, नहीं तो हाथ का चमड़ा उतर जायगा। उसे पाँच दिन तक खुले मैदान में रखा रहने दो, ताकि धूप और चाँदनी उस पर पड़ती रहें। मगर दिन में तीन-चार बार रोज डंडे से चलाना मत भूलो; नहीं तो मसाला जम जायगा।

छठे दिन नितरे हुए ऊपर के जल को लोहे की कड़ाही में निकाल लो और भट्टी पर चढ़ा कर पकाओ। जब जलते-जलते आधा सेर पानी रह जाय, उसमें लहसन का चार तोला स्वरस डाल दो और मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब अन्दाज से १६ तोले पानी रह जाय, उतार लो और ठंडा होने दो। बस यही 'प्रतिसारणीय क्षार' है। इसका रंग लाल होता है और यह बहुत चिकना होता है। जहाँ लगाया जायगा, जख़्म कर देगा। अगर थोड़ा लगाया जायगा, तो आवले या फफोले कर देगा। इस क्षार को शीशी में भर दो, पर हाथ पैर बचाना।

प्लेग की गाँठ या फोड़े की गाँठ पर, जहाँ नश्तर बिना काम न चले, इसे लगा दो। यह उन्हें फोड़ कर बहा देगा और उस जगह को स्याह कर देगा। महीना-बीस दिन में चमड़े का रंग आप ही मिल लायगा। इसके लगाने से रोगी को कष्ट होता है, पर बहुत ज्यादा कष्ट नही होता। अगर रोगी उतनी तकलीफ न सह सके, तो सौ बार का धोया घी लगा देना चाहिये। उससे शान्ति आ जायगी।

बवासीर के मस्से बाहर हों, अथवा शरीर में कहीं मस्से हों, या सफ़ेद कोढ़ का दाग हो, या गजचर्म दाद हो और उस जगह को साफ करना हो तो उसी जगह इसका लेप कर दो। यह उस जगह को साफ कर देगा और अपना घाव कर देगा। उस घाव पर गरम घी चुपड़ने से शान्ति आ जायगी।

सूचना—क्षार का स्वभाव गरम है, इसलिये गरम देश, गरम मौसम और गरम मिजाज़ का ख़याल करके और इन्हें बचा कर इसे काम में लाना। जब 'बृहत् काशीसादि तेल, वगैर: किसी से मस्से न गिरें, नश्तर लगवाना हो, तब क्षार को लगाना चाहिये। पहले ही इसे कभी न लगाना चाहिये।

जाओ और उसका धुआँ बवासीर वाले की गुदा को लगने दो। अच्छा हो, यदि रोगी के चारों ओर एक चादर तान दो। इससे धुआँ निकल कर बाहर न जायगा।

• बवासीर-नाशक मन्त्र •

'ॐभिभितिद्वि: ॐठ: निवासिनि गरलं विषं स्वजीर्णं संभवं ननार्श नाशय नाशय ठं ठं ठं फट् स्वाहा।'

इन मन्त्र से सात बार कुशों के द्वारा जल पढ़ कर पीने से सात दिन में बवासीर नष्ट होती है।

ॐ काली काली महाकाली मतरो बहुभिर्गच्छ यत्तिचिहितं कुरुकुरु स्वाहा।

इस मन्त्र से सवेरे ही जल को सात बार पढ़ कर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

ॐ काका करता करोरि करता आकर करता जो जो करता सो सो होय। हे रसना रस ही से परवस विप दूर होय दुहाई लोनाचमारी की।

एक लोटा जल ले कर, उस पर २१ बार यही मन्त्र पढ़ कर फूंक दो। लोटे को हाथ में रखो; जमीन पर न रखो। उस लोटे को पाखाने में ले जाओ। पाखाना फिरते समय भी लोटे को धरती पर न रखो; हाथ में ही लिये रहो। पाखाने से निपट कर उसी से आबदस्त लो। इस तरह ११ दिन करने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

☛ नोट— एक सज्जन जो परम विश्वसनीय हैं, कहते हैं कि हमने ये तीनों मन्त्र अनेक बार आजमाये हैं; बिल्कुल सच्चे हैं। पाठक परीक्षा करें और ठीक पाने पर कृपा कर हमें भी खबर दें।

□ प्रश्नोत्तरी □

■ प्र० १—अर्श-रोग का प्रचलित भाषा में क्या नाम है? अर्श किसे कहते हैं और वह कहाँ होता है?

□ उ०—संस्कृत में जिसे अर्श कहते हैं, प्रचलित भाषा में उसे ही बवासीर कहते हैं। गुदा में जो मस्से हो जाते हैं, उन्हें ही अर्श या बवासीर कहते हैं। यह रोग गुदा की वलियों या आँतों में होता है।

■ प्र० २—अर्श रोग कितने प्रकार का होता है?

□ उ०—छह प्रकार का—(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सन्निपातज, (५) सहज, और (६) रक्तज।

■ प्र० ३—अर्श के सामान्य लक्षण क्या हैं ?

□ उ०—इस रोग में दस्त की कब्जियत रहती है, भोजन नहीं पचता, मल कड़ा हो जाता है, गुदा के आँटों में मस्से हो जाते हैं, उनसे कम और ज्यादा ख़ून गिरता है।

■ प्र० ४—क्या सन्निपातज और सहज बवासीर के लक्षण एक-से ही हैं ?

□ उ०—हाँ, जो लक्षण सन्निपातज अर्श के हैं, वही सहज या जन्म की बवासीर के हैं।

■ प्र० ५—क्या पित्त की और रक्त की बवासीरों के कारण एक ही हैं ?

□ उ०—हाँ, जिन कारणों से खून की बवासीर होती है, उन्हीं कारणों से पित्त की बवासीर होती है।

■ प्र० ६—वातज, पित्तज, कफज, सहज और रक्तार्श के मस्सों में क्या भेद होता है ?

□ उ०—(क) वातज अर्श वाले के मस्से सूखे-से होते हैं। उनसे खून नहीं गिरता, पर एक तरह का दर्द होता है। मस्से काले, लाल, टेढ़े, कड़े, खुरदरे, तीखे, फटे मुँह के और बेर, खजूर या कपास के फलों जैसे होते हैं।

(ख) पित्तज अर्श वाले के मस्सों के मुख नीले, लाल, पीले और सफेदी लिये होते हैं। इनमें से महीन धार से खून चूता है और खून में बदबू आती है। मस्से महीन, कोमल और शिथिल होते हैं।

(ग) कफज अर्श वाले के मस्सों की जड़ गहरी होती है। उनमें मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है। मस्से कड़े, गोल, चिकने, भारी, कफ से लिहसे और मणि के समान चमकदार तथा करील या कटहल के काँटों-जैसे अथवा गाय के थन-जैसे होते हैं।

(घ) सहज अर्श वाले के मस्से कठोर, लाल रंग के या पीले-से होते हैं और उनका मुख भीतर की ओर होता है।

(च) रक्तार्श या खूनी बवासीर वाले के मस्से चिरमिटी-जैसे लाल और बड़ के अंकुरों के समान होते हैं। इनसे गरम-गरम खून निकलता है।

■ प्र० ७—बवासीर जब होने वाली होती है, तब उसके होने से पहले क्या लक्षण होते हैं ?

□ उ०—भोजन नहीं पचता, अग्नि मन्द रहती है, डकारें बहुत आती हैं, दस्त थोड़ा-थोड़ा होता है, उदर-रोग की शंका होती है, संग्रहणी या पीलिया के लक्षण भी नजर आते हैं, इत्यादि।

■ प्र० ८—केवल गुदा में दोषों के कोप करने से बवासीर रोग होता है, फिर रोगी का सारा शरीर क्यों कमज़ोर और काला-सा हो जाता है ?

□ उ०—गुदा के आँटों में मस्से होने से पांचों प्रकार की वायु, पाँचों प्रकार के पित्त और पाँचों प्रकार के कफ कुपित होते हैं, इसीसे सारे शरीर में नाना प्रकार के दुःख और कष्ट होते हैं।

■ प्र० ९—कौन-सी बवासीर सहज में आराम हो जाती है ?

□ उ०—जो गुदा के बाहरी आँटे में होती है, जिसमें एक दोष का कोप पाया जाता है और जो एक साल से कम दिनों की होती है।

■ प्र० १०—क्या गुदा के दूसरे आँटे में और दो दोषों से होने वाला अर्श कठिनाई से आराम होता है ?

□ उ०—हाँ, एक साल का पुराना, दो दोषों से होने वाला और दूसरे आँटे में होने वाला अर्श बड़ी कठिनाई से नष्ट होता है।

■ प्र० ११—कैसी बवासीर असाध्य होती है ?

□ उ०—दोनों दोषों से होने वाली, जन्म की और गुदा के अन्तिम या तीसरे आँटे में होने वाली बवासीर असाध्य होती है। जिस बवासीर में सूजन, मूर्च्छा और श्वास आदि उपद्रव होते हैं वह भी असाध्य होती है।

■ प्र० १२—कैसी बवासीर वाला निश्चय ही मर जाता है ?

□ उ०—सूजन, अतिसार, वमन, शिथिलता, प्यास, ज्वर, अरुचि, गुदा का पकाव और हृदय में दर्द—ये लक्षण जिस बवासीर वाले में हों, वह नहीं जीता।

■ प्र० १३—डाक्टर लोग बवासीर के सम्बन्ध में क्या कहते हैं ?

□ उ०—डाक्टर कहते हैं, निकम्मे बैठे रहने, बार-बार दस्तावर दवा खाने, दस्त क़ब्ज़ रहने या मूत्रेन्द्रिय की तकलीफ अथवा घोड़े की बहुत सवारी करने से गुदा के नीचे की ख़ून बहाने वाली नस में गड़बड़ होने से बवासीर होती है।

■ प्र० १४—साधारण वैद्यों को इलाज के सुभीते के लिए बवासीर के कितने विभाग करने चाहिए ?

□ उ०—दो। (क) बादी, और (ख) खूनी।

■ प्र० १५—ख़ूनी और बादी बवासीरों की क्या पहचान है ?

□ उ०—अगर मस्से सुर्ख हों और उनसे ख़ून गिरे, तो वह ख़ूनी बवासीर है। अगर मस्सों में पीड़ा, खाज और सूजन बहुत हों, तो बादी की बवासीर है। दस्त

की क़ब्जियत ववासीर का मुख्य लक्षण है। असल मतलब यह है, कि ख़ूनी बवासीर में ख़ून गिरता है और बादी में रोगी को पीड़ा होती है; पर ख़ून नहीं गिरता।

■ प्र० १६—वह कौन से तीन रोग हैं, जो परस्पर एक दूसरे के कारण हैं?

□ उ०—अतिसार, संग्रहणी और बवासीर—ये तीनों एक दूसरे को पैदा करने वाले हैं और तीनों ही गुदा में होते हैं।

■ प्र० १७—अतिसार संग्रहणी और बवासीर—इन तीनों के होने के मुख्य कारण क्या हैं?

□ उ०—अग्नि का मन्दा होना। अग्नि के बलवान होने से बवासीर आदि रोग नष्ट हो जाते या घट जाते हैं और अग्नि के मन्दी होने से बढ़ जाते हैं; अतः इन तीनों में अग्नि को बलवान करने वाले उपाय करने चाहिए।

■ प्र० १८—ख़ूनी बवासीर में भी गुदा से ख़ून गिरता है और रक्तातिसार में भी गुदा से ख़ून गिरता है; फिर कैसे जाना जाय कि यह रक्तातिसार है या ख़ूनी बवासीर?

□ उ०—ख़ूनी बवासीर गुदा की वलि या आँटे में होती है और रक्तातिसार क्षुद्र आँत में होता है। ख़ूनी बवासीर में लाल-लाल मस्से होते हैं, वह रक्तातिसार वाले के नहीं होते। रक्तातिसार में प्रायः मल के साथ ख़ून गिरता है; किन्तु ख़ूनी बवासीर में मल के पहले या पीछे ख़ून गिरता है। बवासीर में मल के साथ ख़ून बहुत कम गिरता है। दोनों रोगों के ख़ून में ज़्यादा फर्क नहीं होता, फिर भी बवासीर का ख़ून चमकदार और खूब सुर्ख़ होता है।

■ प्र० १९—बवासीर के इलाज में वैद्य को विशेष कर किस बात का खयाल रखना उचित है?

□ उ०—कह चुके हैं, अतिसार, संग्रहणी, और बवासीर, इन तीनों का मुख्य कारण मन्दाग्नि है। जब अन्न अच्छी तरह नहीं पचता, उसका पृथक्करण नहीं होता, तभी बवासीर होती है। इसलिए वैद्य को वही काम करने चाहिये, जिनसे मेदा बलवान हो, भूख बढ़े और दस्त साफ होता रहे।

■ प्र० २०—बवासीर के इलाज में कौन-कौन से उपाय करने होते हैं?

□ उ०—औषधि खिला कर अग्नि तेज़ करनी होती है। नश्तर से, क्षार से, लेप से, धूनी से, बफारे से अथवा ऐसे ही और उपायों से मस्सों को गलाते या गिराते हैं।

■ प्र० २१—मस्से गिराने के उत्तमोत्तम उपाय क्या हैं ?

□ उ० (१) 'बृहत् काशीसादि तैल' मस्सों पर लगाओ या उँगली में लगा कर मस्सों तक पहुँचाओ अथवा इसी तेल की पिचकारी दो। इस तेल से गुदा के आँटे खराब नहीं होते और मस्से मुरझा जाते हैं।

(२) उधर लिखे हुए परीक्षित लेपों में से कोई-सा लेप करो अथवा वफारा दो या धूनी दो।

(३) अगर किसी तरह मस्सा न गिरे, तो 'प्रतिसारणीय क्षार' से मस्सा गिराओ। पर यह उपाय आखिरी है; क्योंकि इससे मस्से निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं, पर कष्ट होता है।

■ प्र० २२—साधारण तौर से ख़ूनी बवासीर में क्या करना चाहिये ?

□ उ०—(क) नागकेशर ६ मशे, मिश्री ६ माशे और नौनी घी ६ माशे मिला कर सात दिन खाओ। अगर पुराना रोग हो, तो ज़्यादा दिन खाओ।

(ख) ज़मीकन्द का भुरता दही में मिला कर खाओ।

(ग) सवेरे ही बकरी का दूध-पियो।

(घ) माठे में पीपल का चूर्ण मिला कर खाओ।

(ङ) १५४, १५५ और १५६ संख्या के नुसख़े ख़ूनी बवासीर वाले के लिए अच्छे हैं। यद्यपि एक दवा से सभी रोगी आराम नहीं हो जाते, पर इन नुसख़ों से लाभ हुए बिना नहीं रहता। हमने इससे अनेक रोगी आराम किये हैं।

(च) नीम की निबौली, कलमी शोरा, रसौत, एलुआ और हरड़—इनको एक-एक तोले ले कर, मूली के रस में घोट कर जंगली बेर समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से एक दिन में ही ख़ून बन्द हो जाता है और बादी बवासीर एक मास में आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(छ) नीम की निबौली, बकायन के फल, रसौत, शोधी हुई गूगल, बड़ी हरड़ का छिलका—इन पाँचों को २-२ तोले लो, बड़ी पीपर १ तोले लो, गुलाब के फूल ६ माशे लो और सनाय ६ माशे लो। सबको पीस-कूट और छान कर शेष में शोधी गूगल को मिला दो और खरल में डाल कर त्रिफले के काढ़े से घोटो। घुट जाने पर, १-१ माशे की गोलियाँ बना लो। हर दिन रात को सोते समय दो गोलियाँ खाकर गरम दूध पी लो। इससे बवासीर की सारी शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं। परीक्षित है।

बवासीर पर सुपरीक्षित योग

सूचना—नीचे लिखे हुए बहुत से नुसख़े हम उधर लिख आये हैं। यहाँ फिर लिखने का कारण यही है, कि ये गत कई वर्षों में विशेष उपयोगी प्रमाणिक हुए हैं। इनमें से कितने ही नये भी हैं।

बवासीर के दोषों की सरल पहचान

नोट—बवासीर वातज है, पित्तज है या कफज. इसका पहचानना आसान नहीं है। इसलिए, बवासीर में किस दोष का अधिक प्रकोप है, बवासीर वादी है, पित्त की है, या कफ की, हम इसकी सीधी-सादी परीक्षा लिखते हैं :—

(१) वातज अर्श—अगर रोगी की गुदा में शूल या दर्द हो, तो समझो कि वायु का ज़ोर है, बवासीर वादी है।

(२) पित्तज अर्श—अगर रोगी की गुदा में दाह या जलन हो, तो समझो कि पित्त का ज़ोर है, बवासीर पित्त की है।

(३) कफज अर्श—अगर रोगी को दस्त साफ न होता हो, क़ब्ज़ हो, तो समझो कि कफ की बवासीर है।

खुलासा

(१) गुदा में शूल हो, तो वातज अर्श है।
(२) गुदा में जलन हो, तो पित्तज अर्श है।
(३) दस्त-क़ब्ज़ हो, तो कफज अर्श है।

□ सूखी बवासीर-नाशक नुसख़े □

नोट—कफज और वातज बवासीर में ख़ून नहीं आता; इसलिए इन्हें सूखी बवासीर कहते हैं। मल के गट्टे बँध जाने से उनके निकलते समय, उनसे ख़ून लगा आता है; पर ख़ूनी की तरह धार बँध कर नहीं। आगे हम दोनों ही तरह की सूखी बवासीरों पर नुसख़े देते हैं।

(१) मिश्री देशी १ तोला, ज़मीकन्द का चूर्ण १ तोला, चिरमिटी आधा तोला, और नागकेसर १ तोला—इन सबको पीस-छान कर मिला लो। इसमें से २ माशे चूर्ण शहद या मक्खन में मिला कर खाने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

नोट—ज़मीकन्द बवासीर का दुश्मन है। यह गरम, अग्निदीपक, छेदी, कफनाशक और सारे कन्दों में उत्तम है। कफज अर्श में यह अच्छा है; पर दाह, कोढ़ और रक्त-पित्त रोगी को हानिकारक है।

(२) ज़मीकन्द का चूर्ण १६ तोले; विधारे का चूर्ण १६ तोले, मूसली ८ तोले, चीते की छाल ८ तोले, हरड़ के छिलके ४ तोले, बहेड़े के छिलके ४ तोले, आमले के छिलके ४ तोले, वायबिड़ंग ४ तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, शुद्ध भिलावे ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, दालचीनी २ तोले, इलायची २ तोले और कालीमिर्च २ तोले—अलग-अलग पिसी-छनी इन १५ दवाओं को तौल कर मिला लो।

फिर इस ८६ तोले चूर्ण से दूना १७२ तोले एक साल का पुराना गुड़ लेकर चाशनी करो। जब बबूले उठने लगें, उतार कर यह चूर्ण मिला दो और झट-पट छह-छह माशे की गोलियाँ बना कर घी के चिकने बर्तन या काँच के बर्त्तन में रख दो। यही 'बृहत्सूरण मोदक' है।

इसकी मात्रा १ गोली से २ गोली तक है। जाड़े में दो गोली, पर गरमी में एक गोली देनी चाहिये। कमज़ोर को आधी गोली देनी चाहिये। गोली खा कर ऊपर से जल या दूध पीना चाहिये।

ये मोदक बादी और कफ की बवासीर पर प्रधान हैं, ख़ूनी बवासीर को भी आराम करते हैं। किसी-किसी ख़ूनी वाले को हानि भी करते देखे जाते हैं। अतः वातज, कफज या सूखी बवासीर में तो आँख बन्द करके, उचित मात्रा में, दे सकते हैं; पर ख़ूनी बवासीर में देख-भाल कर। इनके लगातार खाने से बिना चीर-फाड़ या क्षार लगाये मस्से नष्ट हो जाते हैं। ये जठराग्नि को बहुत बढ़ाते हैं, अतः इन्हें खाने वाले घी-दूध ज्यादा खायँ। इनसे सूखी या बादी बवासीर के सिवा हाथी-पाँव, कफज संग्रहणी, हिचकी, श्वास, खाँसी और प्रमेह आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—रक्तपित्त-रोगी को ये मोदक नुकसान भी करते हैं। यह योग 'शार्ङ्गधर' का है। पहले यही नुसख़ा हम लिख आये हैं। उसमें और इसमें थोड़ा भेद है। उसमें मूसली की जगह मुलेठी और विधारा की जगह उसके बीज हैं।

(३) हाऊबेर, सफ़ेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, धनिया पुराना, मँगरैला, कचूर, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीते की छाल, गजपीपर, चव्य, अजवायन और अजमोद—इन १३ दवाओं को ४-४ तोले कुटी-छनी ले कर, ३२ सेर माठे में मिला, चीनी मिट्टी के बर्तन में भर, मुँह बन्द करके रख दो। इसे ८, १० या ११ दिन मत

खोलो। जब यह खट्टा और तेज़ हो जाय, तब समझो कि दवा तैयार हो गई। यह बहुत ही ज़ायकेदार दवा है। नाम है '**तक्रारिष्ट**'।

सवेरे, दोपहर और शाम को तीनों भोजन के समय, प्यास में इसके पीने से अग्नि तेज होती, कफ और वायु का अनुलोमन होता, दस्त साफ होता, हवा खुलती, गुदा का दर्द, सूजन और खुजली नष्ट होती है। कफज, वातज या सूखी बवासीर पर यह '**तक्रारिष्ट**' परमोत्तम है।

□ बवासीर में माठा अमृत है □

बवासीर और संग्रहणी-रोग जब किसी तरह आराम नहीं होते, तब अक्सर अच्छे वैद्य माठा पिला कर उन्हें आराम करते हैं। पर इसका सेवन कराने में बहुत-सी बातों पर ध्यान रखना ज़रूरी है।

(क) बिना सेंधानोन मिलाये माठा पीने से संग्रहणी और बवासीर-रोग बढ़ते हैं। लेकिन सेंधानोन मिला कर पीने से दोनों रोग नष्ट होते हैं। कहा है :—

लवणेन विना यत्तद ग्रहण्यर्शो विवर्द्धनम्।

(ख) जिस बवासीर वाले की अग्नि मन्द हो, उसे नियमपूर्वक माठा पीना चाहिये।

(ग) कमजोर, मूर्च्छा, श्रम, दाह, रक्तपित्त और ज्वर-रोगी को माठा पिलाना हानिकारक है। वैसाख, जेठ और क्वार-कार्तिक में तो माठा किसी को भी न पीना चाहिये। गरम मिजाज वालों को तथा ग्रीष्म और शरद-ऋतु में माठा पीने से हानि होते देखी गई है। पर महर्षि वाग्भट कहते हैं कि सब तरह की बवासीरों में, सभी मौसमों में माठा लाभदायक है।

(घ) कफ-प्रधान बवासीर में मक्खन निकाली हुई छाछ पिलानी चाहिये।

☛ **नोट**—मलाई और मक्खन निकाल कर, खूब पानी मिला देते हैं। उसे '**छच्छिका**' या छाछ कहते हैं। यह रूखी होती है। इसमें चिकनाई नहीं होती। यह श्रम और पित्त नाश करती है। कफ का विशेष ज़ोर हो, दस्त की खूब क़ब्ज़ियत हो, उस बवासीर में यह छाछ अच्छी होती है।

(च) जिस बवासीर में वात-कफ समान हों, उसमें आधा मक्खन निकाल कर माठा देना चाहिये।

(छ) जिस बवासीर में वात प्रधान हो—वायु का सबसे ज्यादा ज़ोर हो, गुदा में शूल चलते हों, उसमें वह माठा देना चाहिये, जिससे मक्खन बिल्कुल ही न निकाला गया हो। ऐसे माठे को '**घोल**' कहते हैं।

☞ नोट—जो दही बिना मलाई और मक्खन निकले बिलोया जाय और पानी कतई न मिलाया जाय, उसे 'घोल' कहते हैं। घोल वही है, जो बिना पानी मिलाये घोल लिया जाय और मलाई-मक्खन कतई न निकाले जायँ। घोल वात-पित्त का नाश करता है।

(ज) अगर बवासीर वाले को क़ब्ज़ बहुत हो और कफज अर्श हो, तो अजवायन और संचरनोन मिला कर माठा पिलाना चाहिये।

अथवा

सेंधानोन, सोंठ, पाढ, अनार का रस और गुड़ को माठा में मिला कर पिलाने से वायु और मल ठीक अपनी राह पर रहते हैं, हवा साफ खुलती है और दस्त ठीक होता है।

(झ) रोगी का बल और काल (मौसम) विचार कर सात, दस, पन्द्रह, या तीस दिन तक सेंधानोन मिला कर माठा पिलाना चाहिये। माठा शुरू करके बीच में एकाएकी न छोड़ देना चाहिये।

(ट) माठा अगर एक महीने पिलाया हो, तो क्रम से एक मास में ही छुड़ाना चाहिये। पहले महीने में वैद्य रोगी का अन्न घटाता जाय और माठा बढ़ाता जाय। दूसरे महीने में माठा घटाता जाय और अन्न बढ़ाता जाय। चरक मुनि कहते हैं, कि रोगी के शरीर की रक्षा और उसका बल, वर्ण और जठराग्नि की वृद्धि के लिये यह तरकीब बताई गई है।

(ठ) याद रखो, 'घोल' नामक माठा वातपित्त-नाशक है। यह बिना मलाई निकाले और बिना पानी डाले बिलोया जाता है। वात-प्रधान बवासीर में यह घोल ही पिलाना चाहिये।

जो दही मलाई निकाल कर, बिना पानी डाले, बिलोया जाता है, उसे '**मथित**' कहते हैं। यह मथित माठा कफ-पित्त को नष्ट करता है। जिस बवासीर में कफ और पित्त का ज़ोर हो, उसमें मथित माठा ही देना उचित है।

जब एक सेर दही, एक पाव या चौथाई जल डाल कर मथा जाता है, तब इसे '**मस्तु**' या '**तक्र**' कहते हैं। यही असल माठा है। यह तीनों दोषों (वात, पित्त और कफ) को नष्ट करता है। जिस बवासीर में तीनों दोषों का कोप हो, उसमें यही 'मस्तु' देना चाहिये; पर दोषों की प्रधानता पर भी ध्यान देना चाहिये।

जब एक सेर दही, आधा सेर जल डाल कर मथा जाता है, तब वह '**उदश्वित**' कहलाता है। वह कफ को बढ़ाता है।

जब दही में से मलाई और मक्खन एकदम निकाल लेते हैं और पानी खूब भर देते हैं, तब उसे 'छच्छिका' या छाछ कहते हैं। यह रूखी होती है। कफ-प्रधान बवासीर वाले को यह छाछ अच्छी होती है। यह कफ-प्रधान अर्श में लाभदायक है, पर वात-प्रधान में हानिकारक है; क्योंकि रूखी होने से वायु को बढ़ाती और कफ को नष्ट करती है।

(ड) सवेरे-शाम, एक-एक माशे लाल चीते की छाल का चूर्ण, एक प्याले माठे में मिला कर, लगातार ४-६ मास पीने से बवासीर भाग जाती है।

(ढ) छोटी इलायची के बीज ७ तोले, लौंग ६ तोले तेजपात ५ तोले, नागकेशर ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, पीपर २ तोले, बैतरा सोंठ १ तोले और मिश्री सारे चूर्ण की आधी १४ तोले—सबको मिला लो। हारीत मुनि कहते हैं, इसमें से दो-दो माशे चूर्ण, सवेरे-शाम खाने से गुदा और पेट के सारे रोग नष्ट हो जाते हैं।

(त) दो माशे कमीला पीस-छान कर, आध पाव दही में मिला कर एक दिन छोड़ कर एक दिन खाने से पेट के कीड़े मर कर निकल जाते और बवासीर चली जाती है। एक वैद्य महाशय ने कहीं लिखा था कि एक मरीज की बीस साल की पुरानी बवासीर, तीन मात्रा खाने से ही काफूर हो गई। कृमिरोग और पुरानी बवासीर की यह अच्छी दवा है।

नोट—अगर यह दवा खा कर, थोड़ी देर बाद, दो-चार तोले साफ अरण्डी का तेल पी लिया जाय, तो मरे हुए कीड़े फौरन निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(थ) छोटी हरड़ ४ तोले, नीम की निबौली की मींगीं २ तोले, बकायन के बीजों की मींगी २ तोले, रसौत २ तोले, धुली भाँग १ तोला और कालीमिर्च १ तोला—इन सबको अलग-अलग पीस-छान कर खरल में डालो। फिर क्रमश: नीचे के चार रसों में तीन-तीन बार खरल करो, यानी तीन बार कुकरौंधे के रस में, तीन बार मूली के रस में, तीन बार हुलहुल के रस में और तीन बार भाँगरे के रस में घोटो। चारों रसों में घुट जाने पर, जंगली बेर-समान गोलियाँ बना, छाया में सुखा लो।

सवेरे-शाम ताजा जल के साथ, एक-एक गोली खाने से सब तरह की बवासीर नष्ट हो जाती है।

(द) शुद्ध पारा ४ तोले और शुद्ध गन्धक ८ तोले—दोनों को पत्थर के खरल में तब तक खरल करो, जब तक चमक न चली जाय। यही कज्जली है। इस कज्जली

में २ तोले ताँबा भस्म और २ तोले लोहा-भस्म मिला दो। इसके बाद क़ज्जली वग़ैरा में नीचे लिखे पिसे-छने चूर्ण तोल-तोल कर मिला दो।

(१) दन्ती की जड़ का चूर्ण २ तोले, त्रिकुटे का चूर्ण २ तोले, (३) ज़मीकन्द का चूर्ण २ तोले, (४) वंसलोचन का चूर्ण १० तोले, (५) शुद्ध सुहागे का चूर्ण १० तोले, (६) जवाख़ार चूर्ण १० तोले, (७) सेंधानोन का चूर्ण १० तोले, (८) थूहर के ख़ार का चूर्ण १६ तोले।

शेष में, कढ़ाही में, ऊपर की सारी मिली हुई दावाएँ डाल कर, ऊपर से ६४ तोले गोमूत्र डाल दो और नीचे मन्दी आग लगा कर पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो और चार-चार रत्ती की गोलियाँ वना लो।

इसकी मात्रा, एक बार में, एक से चार गोली तक है। बलावल-अनुसार दिन में चार वार ये गोली खानी चाहिए।

इसका नाम भी 'अर्शकुठार रस' है। यह कफ-वातज या सूखी बवासीर की उतम दवा है।

☛ **नोट**—एक अर्शकुठार रस हमने पहले और लिखा है; उसमें और इसमें फ़र्क़ है।

□ रक्तार्श या ख़ूनी बवासीर का इलाज □

(१) इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, नागकेसर, नील कमल, लोध और धाय के फूल—इन छह दवाओं को वारावर-वरावर ले कर, कूट-पीस लो। फिर सिल पर जल के साथ पीस, लुगदी वना लो। जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना उत्तम गाय का घी और घी से चौगुना पानी ले कर सव को एक कड़ाही में चढ़ा कर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब पानी जल कर घी-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही 'कुटजाद्य घृत' है। इसकी मात्रा ६ माशे की है। इस घी के रोज सवेरे-शाम पीने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(२) निशोथ १॥ तोले, कलमी शोरा १॥ तोले, तज १॥ तोले और मिश्री ४॥ तोले—इनको मिला दो। मात्रा ६ माशे की है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाने और जल पीने से ८ दिन में बवासीर का ख़ून वन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(३) अमलताश का गूदा ४ तोले ले कर, डेढ़ पाव जल में, मिट्टी के वर्तन में पकाओ। जब पानी विलकुल लाल सुर्ख़ हो जाय, तव उतार कर छान लो। फिर उसमें पिसा हुआ सेंधानोन ६ माशे तथा गाय का घी २ तोले मिला दो और

शीतल होने पर पी लो। इस नुसख़े से तीन दिन में ही ख़ून गिरना बन्द हो जायगा। परीक्षित है।

(४) सूखे आमलों के छिलकों का महीन चूर्ण ४ माशे और मिश्री ४ माशे मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

☛ नोट—आमलों के चूर्ण में थोड़ा कपूर मिला कर गुदा को धूनी देने से मस्से मुर्झा जाते हैं। और खुलासा धूनी प्रकरण में देखो।

(५) माजूफल ७ नग ला कर पीस-छान लो और उसकी सात पुड़ियाँ बना लो। मूँग की दाल और चावल की खिचड़ी पका कर थाली में परसो। थाली की थोड़ी-सी खिचडी में गड्ढा करके, उसमें ऊपर की एक पुड़िया और डेढ़ तोले गो-घृत मिला कर खिचड़ी को खाओ। सात दिन तक ऐसी खिचड़ी खाने से ख़ूनी बवासीर जड़ से जाती रहती है।

(६) नागकेसर पिसी-छनी ६ माशे, पिसी मिश्री १ तोला और मक्खन १ तोले मिला कर, नित्य सवेरे खाने से ख़ूनी बवासीर निश्चय ही चली जाती है।

(७) सूखे आमलों का चूर्ण २ तोले, मिट्टी के बर्तन में १ पाव जल डाल कर भिगो दो। सवेरे मल-छान कर, उसमें पाँच तोले मिश्री और आधा तोले चिरचिरे की जड़ का छना हुआ चूर्ण मिला कर पी लो; तत्काल चमत्कार दीखेगा। मस्से सूख कर झड़ जायँगे।

(८) शनिवार को जंगल में जा कर, लाल फूल के चिरचिरे को न्योता दे आओ। रविवार को सवेरे जा कर, उस वृक्ष को जड़-समेत उखाड़ लाओ। उसको धूप-दीप दे कर, उसकी जड़ को रेशमी कपड़े में लपेटो और मौली या कलाये से बाँध कर, कमर में बाँध लो। इस टोटके से ख़ूनी और बादी दोनों तरह की बवासीरें नष्ट हो जायँगी। रोगी ६ मास उसे बँधा रखे; मैथुन न करे।

(९) अंजुबार की जड़ ४ तोले, मीठे अनारों के छिलके २ तोले, बुरादा सफ़ेद चन्दन १॥ तोले—इनको कूट कर, रात के समय मिट्टी के बर्तन में एक सेर जल डाल कर भिगो दो। सवेरे कलईदार कढ़ाही में पकाओ। जब आधा जल रहे, मल कर छान लो।

फिर इस काढ़े में बबूल की पत्तियों का रस आध पाव और मिश्री आध सेर मिला दो और मन्दी आग से पकाओ। जब शर्बत की चाशनी हो जाय, उतार कर कपड़े में छान लो और बोतल में रख दो।

इसकी मात्रा एक से दो तोले तक है। दो-दो घण्टे पर, दिन में छह बार इस 'शर्बत अंजुवार' के पीने से ववासीर का ख़ून, नकसीर का ख़ून, योनि से जाने वाला ख़ून—सब बन्द हो जाते हैं। मशहूर चीज़ है। 'शर्बत अंजुवार' सभी अत्तारों के पास मिलता है।

(१०) सफ़ेद प्याज़ दो तोले ला कर, महीन-महीन टुकड़े कर लो। फिर उन टुकड़ों को साफ कपड़े में बाँध, दो पत्थरों के बीच में रख दो। सवेरे पाखाने जा कर, दबे हुए प्याज़ के टुकड़े को मीठे दही में मिला कर खाओ। इस तरह लगातार कुछ दिन करने से ख़ून गिरना बन्द हो जाता है।

(११) गेंदे की पंखुड़ियों को ज़रा से जल के साथ पीस कर, एक तोले रस निकाल लो फिर उसमें ३ तोले गो-घृत मिला दो और पी जाओ। इस तरह दिन में दो बार पीने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(१२) काले तिल दो या तीन तोले खूब गरम पानी के साथ पीस लो और उस मिट्टी में बराबर का ताज़ा मक्खन मिला कर, नित्य सवेरे पियो। ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जायगी।

(१२) काले तिल ३ माशे, नागकेसर ३ माशे और पिसी मिश्री ६ माशे, सबको मिला लो। यह एक ख़ूराक है। सवेरे-शाम खाने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जायगी।

(१४) केवल नागकेसर ३ से ६ माशे तक, १ तोला मक्खन में मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(१५) वंगसेन कहते हैं, बलाबल-अनुसार, दो या चार तोले काले तिल, नित्य सवेरे खा कर जल पीने से बवासीर नष्ट होती, दाँत मजबूत होते और शरीर पुष्ट होता है।

(१६) पका पपीता या अरण्ड-ककड़ी रोज़ खाने से ख़ूनी बवासीर में विशेष लाभ होता, जठराग्नि बढ़ती, दस्त साफ़ होता, भोजन पचता एवं यकृत—लिवर के विकार नष्ट होते हैं।

नोट—कच्चे पपीते का दूध जैसा रस निकाल कर, ४-५ दिन मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। हमने परीक्षा नहीं की, पर यह योग स्वर्गवासी शङ्करदास जी शास्त्री पदे का है। इसके ठीक होने में ज़रा भी शक नहीं।

(१७) मुलहठी का पिसा-छना चूर्ण ६ माशे, नित्य रात को सोते समय खा कर, गरम जल पीने से, दस्त साफ़ होता और ख़ूनी बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है। रोगी की वृद्धि नहीं होने पाती।

(१८) रसौत १ तोले और गेरू १ तोले—दोनों को ग्वारपाठे के रस के साथ खरल करके, एक एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। मात्रा, एक बार में, तीन-चार गोलियाँ। दिन में तीन बार खाने से ये हर तरह की बवासीर, ख़ास कर ख़ूनी बवासीर और दस्तों को नष्ट करती हैं। जिसे ख़ून गिरता हो और दस्त भी होते हों, उसे ये गोलियाँ देनी चाहिए।

(१९) गाय के दूध से निकाले ताजा मक्खन का घी १ तोला और गूलर का पिसा गोंद ३ तोले—खरल में डाल कर घोटो और दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। नित्य सवेरे १ गोली निगल जाने से एक हफ्ते में ही जादू का-सा तमाशा दीखता है। लेकिन रोगी ज्वार की रोटी और अरहर की दाल के सिवा कुछ न खाय।

(२०) मूली के टुकड़ों को पीस कर निकाले दो तोले स्वरस में ५ तोले गाय का घी मिला कर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(२१) मूली को चाकू से काट कर गोल-गोल चकत्तियाँ बना लो। फिर उन्हें घी में तल कर, मिश्री के साथ खाया करो। बवासीर दब जायगी।

(२२) मूली की जड़ की तरफ जो हरा-हरा भाग रहता है, उस हरे भाग की चकत्तियाँ काट कर कूट-पीस लो और कपड़े में रस निचोड़ लो। यह रस २० मूलियों के हरे भाग का हो। इस रस मे तीन तोले गो-घृत मिला कर खाने से बवासीर वाले का कष्ट दूर हो जाता है।

(२३) दो तोले मिश्री और दो तोले मक्खन में, आध पाव जल मिला कर, मिट्टी या कलई के बर्तन में पकाओ। जब पानी जल जाय, उसे खा लो। इसे खाने से बवासीर में विशेष लाभ होता है; पर रोगी अरहर की दाल और ज्वार की रोटी खाय।

☛ नोट—मूली बड़ी और पकी अच्छी होती है।

(२४) सूरन या ज़मीकन्द का भुरता बना कर, दही के साथ रोज़ खाने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(२५) ज़मीकन्द के टुकड़े करके छाया में सुखा लो। फिर छील-छील कर और कूट-छान कर, एकदम नित्य सवेरे ही खाने से बवासीर का ख़ून बन्द हो जाता है।

(२६) लाल फिटकरी एक तोला और कलमी-शोरा तीन तोले ला कर पीस लो। इस पिसे चूर्ण को लोहे की कलछी में रख, आग पर गलाओ। जब गल जाय, उसमें एक तोला ज़मीकन्द का खार मिला दो और एक केले के पत्ते पर डाल दो। शीतल होने पर रख लो। इसमें से तीन रत्ती दवा एक तोला जल में घोल कर पियो। ऊपर से १ तोला मिश्री ५ तोले जल में घोल कर पी लो। सात दिन तक, सवेरे-शाम, इस दवा के सेवन सेवन से ख़ूनी बवासीर क़तई नष्ट हो जायगी। परीक्षित है।

(२७) नीम के फलों का गूदा चार माशे, सिल पर पीस, पानी में छान लो और उसमें जरा-सी चूल्हे की जली मिट्टी, पीस कर, मिला दो। कहते हैं, इस नुसखे से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। बृहत् निघण्टु रत्नाकर के लेखक का आजमूंदा है।

(२८) चिरचिरे के बीज, चावलों के धोवन में पीस-छान कर पीने से खूनी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(२९) माठा में पीपर का चूर्ण मिला कर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

(३०) शोधे हुए कुचले का चूर्ण मिश्री मिला कर खाने से ख़ूनी बवासीर आराम हो जाती है। इस योग से महामेह, चमड़े के दोष और कृमि-रोग भी आराम हो जाते हैं।

☛ नोट—कुचला विष है, बिना शोधे काम में न लाना चाहिये। मात्रा, बलाबल-अनुसार, आधी रत्ती से एक या दो रत्ती तक। कुचला शोधने की विधियाँ **पाँचवे भाग** में लिखी हैं। वहाँ कुचले के और अनेक उत्तमोत्तम प्रयोग लिखे हैं।

(३१) कालीमिर्च और शोधा हुआ कुचला—समान-समान लेकर महीन पीस छान लो। पहले दिन पानी के साथ १ रत्ती चूर्ण खाओ। दूसरे दिन सवा रत्ती, तीसरे दिन डेढ़ रत्ती। इस तरह हर दिन पाव-पाव रत्ती की मात्रा बढ़ा कर खाओ। कुचले के दो बीजों तक की हद है। जब कुचले के दो बीजों तक पहुँच लो, तब हर दिन पाव-पाव रत्ती घटा कर खाओ। इस तरह कुचला खाने से बवासीर नष्ट हो जायगी। मस्से नष्ट हो जायँगे। ये दोनों योग बृहत् निघण्टु रत्नाकर के हैं।

✩✩

चौथा अध्याय

मन्दाग्नि-वर्णन

★

मन्दाग्नि के कारण

अगर मन्दाग्नि के कारण तफ़सीलवार लिखें, तब तो एक बड़ा जबर्दस्त लेख हो जायगा। लेकिन उतना लिखने को हमारे पास गुंजाइश नहीं, अत. हम उसके पैदा होने के कारणों को दो भागों में बाँटते हैं; अर्थात् मन्दाग्नि-रोग मुख्य करके दो कारणों से होता है—

(१) आहार-विहार। (२) अन्य रोग।

इतने से इशारे से हमारे बहुत से पाठक नहीं समझेंगे, इसलिये हम ज़रा खुलासा कर देते हैं। हमारे आयुर्वेद-शास्त्र में रोगों की उत्पत्ति का कारण प्राय: मिथ्या आहार-विहार ही अधिक लिखा है। और तो क्या, स्वयं रोगराज ज्वर भी मिथ्या आहार-विहारों से ही होते हैं। कहा है—

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यूरसानुगाः॥

मिथ्या आहार-विहार में वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष, आमाशय के जठर रस को बिगाड़ कर और कोठे के भीतर रहने वाली अग्नि को बाहर निकाल कर ज्वर उत्पन्न करते हैं।

'वाग्भट' महोदय ने भी कहा है—

कालार्थकर्मणां योगा हीनमिथ्यातिमात्रका:।
सम्यक् योगश्च विज्ञेयो रोगारोग्यैककारणम्॥

काल, अर्थ और कर्म का हीन, मिथ्या और अतियोग ही रोगों का कारण है और इन तीनों का ठीक-ठीक या समान योग ही आरोग्य का कारण है*।

---

* अगर आपकी समझ में यह काल, अर्थ और कर्म का हीन, मिथ्या और अतियोग नहीं आया है, तो **चिकित्सा-चन्द्रोदय प्रथम भाग** में लिखी इसकी परिभाषा देखिये। उसे देखने से आप फ़ौरन समझ जायँगे।

यह बात चरक ऋषि ने भी कही है। इस एक वाक्य में आरोग्यता की सच्ची कुंजी है। अगर लोग इस वाक्य को याद रख कर सदा इसके अनुसार चलें, तो उन्हें रोग-रूपी शत्रुओं के पंजों में हरगिज न फँसना पड़े। मतलब यह है, कि हम लोगों के नियमानुसार आहार-विहार करने से वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित हो जाते हैं और वे ही फिर रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र नामक धातुओं और मल-मूत्रादि मलों को विगाड़ कर रोग पैदा कर देते हैं। इन तीनों के समभाव से रहने पर रोग नहीं होते; पर इनमें कमी-वेशी होने से ही रोग होते हैं। कहा है—

रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता।

दोषों की विषमता का नाम रोग और समानता का नाम आरोग्य है। दूसरे शब्दों में यों समझिये, कि वात, पित्त और कफ—इन तीनों दोषों के कम और ज्यादा हो जाने से रोग होते हैं और इनके समान भाव से रहने पर रोग नहीं होते। शरीर के भीतर से और बाहर से होने वाले दोनों तरह के रोग वात, पित्त और कफ की न्यूनाधिकता से होते हैं और इन तीनों दोषों की कमी-वेशी हम लोगों के मिथ्या आहार-विहार; अथवा काल, अर्थ और कर्म के हीन, मिथ्या और अतियोग से होती है। मतलब यह निकला, कि हमारे अनियमित खान-पान और विहार से ही वात, पित्त और कफ 'मन्दाग्नि रोग' पैदा करते हैं। जब ये तीनों दोष समान रहते हैं, तब 'समाग्नि' रहती हैं। उस समय हमारा खाया-पिया ठीक रूप से पचता और उसकी रस-रक्त आदि धातुएँ तथा मल मूत्र आदि बनते हैं। लेकिन जब वायु अधिक हो जाती है, तब हमारी जठराग्नि 'विषम' हो जाती है। विषम अग्नि कभी तो अन्न को पचा देती है और कभी नहीं पचाती। धन्वन्तरि के अनुसार, कभी वह पेट में शूल, अतिसार, उदावर्त्त प्रवाहिका, पेट का भारीपन और गुड़गुड़ाहट प्रभृति विकार करती है और कभी अन्न का पाचन कर देती है। इसी तरह जब पित्त अधिक हो जाता है, तब हमारी जठराग्नि 'तीक्ष्ण' हो जाती है। वह हमारे खाये-पिये अन्नपानादि को शीघ्र ही पचा देती है और हमें फिर भूख लगती है। प्रकृति से अधिक खा लेने पर भी तृप्ति नहीं होती, खाने की अभिलाषा बनी रहती है। यहाँ तक कि जब पित्त बहुत ही तीक्ष्ण हो जाता है, वायु और कफ क्षीण हो जाते हैं, उस समय हमें 'भस्मक' रोग हो जाता है। जो भी खाया जाता है, पेट में जाते ही भस्म हो जाता है। भोजन पच जाते ही तालू और कण्ठ सूखने लगते हैं और दाह तथा सन्ताप होता है। इसी भाँति, जब कफ अधिक

हो जाता है, तब 'मन्दाग्नि' होती है। अग्नि के मन्द होने से, थोड़ा-सा खाया खाना भी बड़ी देर में पचता है। खाना पेट में पत्थर की तरह रखा रहता है। पचने से पहले—पेट में भारीपन, सिर में वेदना, श्वास, खाँसी, राल बहना, ओकी आना और थकान प्रभृति उपद्रव होते हैं। सारांश यह, कि वात, पित्त और कफ की समानता और कमी-वेशी से चार तरह की अग्नि होती हैं। इसमें 'समाग्नि' श्रेष्ठ है और मन्दाग्नि सबसे खराब है। अग्नि के मन्द होने से हमारे शरीर-रूपी मशीन में गड़बड़ी हो जाती है। जब तक यह आग ठीक रूप से जलती रहती है, इसके ज़ोर से सब शारीरिक यन्त्र अपना-अपना काम यथार्थ रूप से करते रहते हैं। किन्तु ज्यों ही यह आग मन्दी हो जाती है, उन सबका काम ठीक नहीं होता। खाया-पिया भोजन, कोठे या ग्रहणी में यों ही जमा रह कर सड़ता है, क्योंकि बिना अग्नि की सहायता के, ग्रहणी भोजन को पचा नहीं सकती। जब अग्नि मन्द या एकदम मन्द हो जाती है, तब ग्रहणी भी कमज़ोर या एकदम, कमज़ोर हो जाती है। दूसरे शब्दों में यों समझिये, कि ग्रहणी भोजन पचाने वाला यन्त्र है और वह अग्नि के ज़ोर से भोजन को पचाता रहता है; जब तक आग ठीक रहती है वह यन्त्र भोजन को यथार्थ रूप से पचाता रहता है; लेकिन ज्यों ही आग मन्द होती है, कि उसे भोजन पचाने में कठिनाई होती है। जब भोजन ही नहीं पचता, तब रस-रक्त आदि धातुएँ कैसे बन सकती हैं? और जब शरीर को धारण करने वाली धातुएँ ही नहीं तैयार होतीं, तब शरीर कैसे क़ायम रह सकता है? क़ायम रहने और न रहने की बात तो पीछे की है; अग्नि के मन्द होने से बवासीर, अतिसार और संग्रहणी प्रभृति अनेक महा दुःखदायी भयंकर व्याधियाँ खड़ी हो जाती हैं, जिनके कारण, नाना प्रकार के घोर कष्ट उठा कर, अन्त में इस दुर्लभ देह से हाथ धोना पड़ता है।

क्या जठराग्नि ही इस शरीर-यंत्र की मुख्य संचालिका है?

बेशक, जठराग्नि ही सारे शरीर-व्यापार को चलाने वाली है। एक कपड़ा तैयार करने की मिल में अनेकों छोटी-छोटी मशीनें और यन्त्र होते हैं और वे सब एक दूसरे के बल से चलते हैं। एक चक्का दूसरे चक्के की ताकत से घूमता है। दूसरा तीसरे की ताकत से और तीसरा चौथे की ताकत से। इस तरह सैकड़ों हजारों चक्के घूमते हैं। उन सबको घुमाने वाला एक बड़ा चक्का होता है और उस बड़े चक्के को घुमाने वाला बॉयलर होता है। बॉयलर को घुमाती है अग्नि और पानी से पैदा हुई भाप। मतलब यह, उस मिल

में काम सब यन्त्र करते हैं; पर किसके बल से? अग्नि या भाफ के बल से। बस, ठीक यही हाल हमारे इस शरीर-रूपी मशीन का है। इस मशीन में हृदय, लिवर—यकृत, स्प्लीन—तिल्ली, आमाशय, पक्वाशय, प्रभृति अनेक यन्त्र या पुरज़े हैं। कोई कुछ काम करता है और कोई कुछ। कोई भोजन को पका कर रस बनाता है, तो कोई रस को रक्त बनाता है। कोई रक्त का मांस प्रभृति बनाता है, और कोई अच्छे-अच्छे पदार्थों को अलग करके, मल-मूत्रादि को निकाल कर अलग फेंक देता है इत्यादि। पर इन सब का काम ग्रहणी से ही होता है। ग्रहणी ही भोजन को ग्रहण करती और उसे पचाती है; तब और यन्त्र रस-रक्त आदि बनाते, उन्हें छान कर साफ करते, अच्छे को दूसरे यन्त्र के हवाले करते और खराब को नीचे धकेल देते हैं। मतलब यह निकला कि असल काम ग्रहणी करती है। पर ग्रहणी किसके बल से काम करती है? जठराग्नि के बल से। जिस तरह मिल में सब यन्त्रों को चलाने वाला बॉयलर है, उसी तरह इस शरीर में ग्रहणी या कोठा बॉयलर है। बॉयलर जिस तरह अग्नि और जल से पैदा हुई भाफ के बल से काम करता है, ग्रहणी उसी तरह जठराग्नि के बल से काम करती है। अतः यह सिद्ध हो गया कि जठराग्नि ही इस शरीर की मुख्य संचालिका है। यही वजह है कि किसी-किसी महात्मा ने जठराग्नि को भगवान तक कह दिया है।

मन्दाग्नि से कौन-कौन से रोग होते हैं?

यह सवाल ठीक नहीं। जिसे ग्रहणी कहते हैं, उसे ही कोठा कहते हैं। इस कोठे में ही रोग और आरोग्य दोनों हैं। इस कोठे में गड़बड़ी होने से सांसर्गिक रोगों के सिवाय और सभी रोग पैदा होते हैं। जब तक कोठा शुद्ध रहता है, रोग पास नहीं आते। जहाँ कोठा खराब हुआ, कि रोगों ने हमले किये। कोठे या ग्रहणी का अच्छा या बुरा रहना अग्नि पर निर्भर है। अगर अग्नि ठीक है, तो कोठा भी ठीक है। अगर अग्नि दूषित है, तो कोठा भी दूषित है। जब अग्नि मन्द हो जाती है, तब ग्रहणी, अग्नि का यथेष्ट बल न पाने से, भोजन को पचा नहीं सकती। भोजन के न पचने से मलावरोध होता है, यानी जितना चाहिये उससे अधिक समय तक मल आँतों में रुका रहता है। आँत में रुके रहने से वहाँ वह पड़ा-पड़ा सड़ता है। मल के सड़ने से दूषित अबखरे उठते और वह सारे शरीर के उत्तम रस-रक्तादि में मिलते हैं। उनमें मिल कर वह उन्हें भी दूषित करते हैं। ख़ून में मिलते हैं, तब खून को खराब कर देते हैं। ख़ून के खराब होने से खाज, खुजली, फोड़े, फुन्सी और कोढ़ प्रभृति अनेक रोग पैदा होते हैं। इसी तरह, जब वह वीर्य में मिलते हैं,

तव धातु को खराव करके अनेक धातु-रोग पैदा करते हैं। कारण सबका—एक मलावरोध या क़ब्ज है, पर उससे नाना प्रकार के रोग खड़े हो जाते हैं। जव कब्ज होता है, तव मनुष्य पाखाना फिरते समय मल निकालने को जोर करता है। ज़ोर करके मल निकालने से गुदा की वलियाँ खराव हो जाती हैं। उन पर दबाव पड़ने से और मल के सख्ती से निकलने के कारण, वहाँ का नाजुक चमड़ा छिल जाता है और गुदा में पीड़ा और जलन-सी होने लगती है। इस कब्ज़ के कारण गुदा में एक महा भयंकर व्याधि हो जाती है। उस व्याधि का नाम अर्श या बवासीर है। बवासीर में मलावरोध या क़ब्ज रहता ही है; और पीछा छुड़ाने या दस्त साफ करने के लिये रोगी जुलाव लेता है। जुलाब से ऊपरी मल निकल जाता है और इसके बाद फिर वही क़ब्ज हो जाता है। बिना जुलाव पाख़ाना होता ही नहीं। इस तरह जुलाव-पर जुलाव लेने से आँतें कमजोर होती चली जाती हैं। जुलाब लिया जाता है सुख के लिये; पर होता उलटा दुःख है। वजह यह है, कि रोगी आयुर्वेद विद्या न जानने के कारण असली मर्ज़ को मिटाने का उपाय नहीं करता। जड़ में जल न दे कर पत्तों में जल देता है, जिसमें लाभ के वजाय हानि ही होती है। असल में रोग अग्नि की मन्दता है। अगर वह मिटे, यानी अग्नि दीप्त हो, तो आप ही कब्ज और बवासीर दोनों जाते रहते हैं। जब अग्नि नष्ट हो जाती है, तभी बवासीर होती है और जब अग्नि दीप्त हो जाती है, बवासीर भी जाती रहती है। कहा है—

> त्रयो विकाराः प्रायेण ये परस्पर हेतवः ।
> आर्शांसि चातिसारश्च ग्रहणीरोग एव च ॥
> तेषामग्निबले हीने वृद्धिवृद्ध परिक्षयः ।
> तस्मादग्निं समारक्षेदेषु त्रिषु विशेषतः ॥

बवासीर, अतिसार और संग्रहणी—ये तीनों एक दूसरे को पैदा करने वाले हैं। यानी जिसे इनमें से एक रोग होगा, उसे शेष दो हो सकते हैं। अग्नि-बल के नष्ट होने से इन तीनों की वृद्धि होती है और अग्नि-बल के बढ़ जाने से इन तीनों का नाश हो जाता है। इसलिये, इन तीनों रोगों के होने की हालत में, अग्नि-बल की रक्षा करनी चाहिये।

अब साफ़ हो गया, कि इन तीनों रोगों का कारण अग्नि का नष्ट हो जाना या मन्दाग्नि है। अगर पहले ही से अग्नि ठीक रखी जाय, मन्दाग्नि न होने दी

जाय, तो ये रोग हों ही क्यों ? अगर हो ही जायँ, तो क़ब्ज़ वग़ैरा मिटाने का जुलाब न ले कर, अग्नि-बल बढ़ाने वाले उपाय करने चाहिये। जब अग्नि बलवान होगी, भोजन का परिपाक ठीक रूप से होगा, ठीक परिपाक होने से रस प्रभृति ठीक बनेंगे और दस्त भी साफ होता रहेगा, तो जुलाब की दरकार ही न होगी।

यहाँ यह बात साफ़ हो गई कि सारे ही रोगों का कारण मलावरोध या आँतों में मल का उचित समय से ज्यादा पड़ा रहना और सड़ना है। मल सड़ने या गाढ़ा पड़ जाने से आसानी से नहीं निकलता और अनेक रोग पैदा करता है। मलावरोध या दस्त की कब्जियत से बवासीर प्रभृति अनेक रोग हो जाते हैं। बवासीर वाले को अतिसार या संग्रहणी रोग हो जाता है। अथवा अतिसार वाले को बवासीर या संग्रहणी और संग्रहणी वाले को अतिसार या बवासीर रोग हो जाते हैं। और इन सब का एक कारण अग्नि है। इन रोगों की तरह ही मन्दाग्नि और अजीर्ण भी एक दूसरे के कारण हैं, यानी मन्दाग्नि से अजीर्ण और अजीर्ण से मन्दाग्नि हो जाती है। मन्दाग्नि तो बहुत दिनों तक रहती है, अपना ख़राब नतीजा धीरे-धीरे दिखाती है; पर अजीर्ण अपना कुपरिणाम शीघ्र ही दिखा देता है। मन्दाग्नि से बवासीर और संग्रहणी प्रभृति रोग हो कर देर में प्राणनाश करते हैं; पर अजीर्ण से विशूचिका या विलम्बिका प्रभृति हो कर, आनन-फानन में मनुष्य के प्राण-नाश कर देते हैं। यों समझिये कि जब जठराग्नि दीप्त रहती है, खाया-पिया झट से पच जाता और शरीर आरोग्य रहता है। लेकिन जब अग्नि मन्द हो जाती है, हमारे शरीर-रूपी मशीन को चलाने वाली आग की ताक़त कम हो जाती है, तब हम जो कुछ खाते-पीते हैं, वह नहीं पचता; अजीर्ण या बदहजमी हो जाती है और इस अजीर्ण या बदहजमी से दस्त साफ नहीं होता, भूख नहीं लगती, खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, पेट भारी रहता और फूल जाता है, खाने से अरुचि हो जाती है, पेट में तरह-तरह के शूल चलते हैं, जी मिचलाता है, क़य होने की इच्छा होती है, बुखार चढ़ जाता है, पतले दस्त होने लगते हैं या एकदम होता ही नहीं इत्यादि भयंकर विकार उत्पन्न हो जाते हैं। सारांश यह, हजारों रोगों की जड़, खाने का हजम न होना है। अजीर्ण की वजह से अनेक रोग पैदा होते और इस प्राणी को घोर कष्ट भुगा कर बहुधा मार डालते हैं। जिसे हैजा या कॉलेरा कहते हैं, यह अजीर्ण के सिवा और कुछ नहीं। जब अजीर्ण भयंकर रूप धारण कर लेता है, तब उसे 'हैजा' कहते हैं और हैजा क्षण-भर में प्राण-संहार कर देता है। किसी ने कहा है—

प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णं जायते नृणाम् ।
तन्मूलो रोगसंघातस्तद्विनाशाद्विनश्यति ॥

मिथ्याहार-विहार या खाने-पीने की खराबी से अजीर्ण होता है। उस अजीर्ण से अनेक रोग होते और उसी अजीर्ण के नष्ट होने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

अजीर्ण का कारण मन्दाग्नि है। अगर अग्नि प्रदीप्त हो, तो अजीर्ण न हो; और अजीर्ण न हो, तो बवासीर, अतिसार और संग्रहणी तथा ज्वरादि प्राणनाशक रोग न हों। अतः वही उपाय करना परमावश्यक है, जिससे अग्नि मन्द न हो। जो अपने अग्नि और बल की रक्षा करते हैं, वह सदा सुखी और आरोग्य रहते हैं। रोग-शत्रु उनसे हज़ार कोस दूर रहते हैं। कहा है—

अग्निमूलं बलं पुंसां रेतो मूलं च जीवितम् ।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन वह्निशुक्रञ्च रक्षयेत् ॥

अग्नि ही मनुष्य के बल की जड़ है और वीर्य ज़िन्दगी की जड़ है; इसलिए मनुष्य को अग्नि और वीर्य की रक्षा हर तरह से करनी चाहिये। वृन्द महोदय ने और भी कहा है—

समस्य रक्षणं कार्यं विषमे वातनिग्रहः ।
तीक्ष्णे पित्तप्रतीकारो मन्दे श्लेष्मविशोधनम् ॥

जब जठराग्नि सम हो, तब नियम-पूर्वक नित्य आहार-विहारों से उसकी रक्षा करो; क्योंकि अग्नि के सम होने की हालत में कोई भी रोग आप पर हमला कर नहीं सकता। जब अग्नि विषम हो तब वायु का; तीक्ष्ण हो, तब पित्त का और मन्द हो तब कफ का निग्रह करो; यानी इनको शांत करो। अगर आप ऐसा करेंगे, तो बवासीर, अतिसार, संग्रहणी और राज्यक्ष्मा प्रभृति कोई रोग आपको सता न सकेगा।

अजीर्ण के सम्बन्ध में हम आगे फिर लिखेंगे। यहाँ हम विषमाग्नि और तीक्ष्णाग्नि-नाशक नुसख़े लिख कर, मन्दाग्नि नाशक नुसख़े लिखते हैं।

विषमाग्नि की चिकित्सा

(१) रास्ना, कचूर, काला अतीस, सौंफ, सोंठ सेंधानोन, कालानोन, हींग और पीपर—इनको समान-समान लेकर, कूट, पीस और छान कर चूर्ण बना लो और पीछे इस चूर्ण में पुराना गुड़ मिला कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से वायु से पैदा हुआ विषमाग्नि रोग दूर हो जाता है। इन गोलियों से

शूल, अजीर्ण, विशूचिका तथा वायु से पैदा हुए और रोगों का एवं गुल्म आदि का भी नाश हो जाता है। इन गोलियों को गरम जल से सेवन करना चाहिए। इनके ऊपर सब तरह के रस खाये जा सकते हैं।

(२) भात के माँड़ में हींग और कालानोन पीस कर मिला दो और गरम-गरम पियो। इस माँड़ के पीने से विषमाग्नि दीप्त होती है।

तीक्ष्णाग्नि की चिकित्सा

(३) दाख, हरड़, कुटकी, विदारीकन्द, चन्दन, बाँसा, नागरमोथा, परवल, चिरायता, पीपल, खिरेंटी, गोरखमुण्डी, अतीस, बालछड़, लौंग, पद्माख, भाँगरा, धनिया और खजूरिया—इनको बराबर-बराबर ले कर चूर्ण बना लो और मिश्री मिला कर रख दो। इस चूर्ण को आधी मात्रा से सवेरे ही खाओ और इसके ऊपर औटा हुआ गरम दूध, घी मिला कर पियो। इसके सेवन से तीक्ष्णाग्नि समान होती और दुबला शरीर पुष्ट होता है तथा ग्लानि, श्रम, शोष, दाह, रक्तपित्त, क्षय, पाण्डु, हलीमक और कामला-रोग भी शान्त होते हैं।

(४) विदारीकन्द का रस, घी और दूध मिला कर पीने से भस्मक रोग* नष्ट होता है।

(५) औंगे (चिरचिरे) के बीज और दूध की खीर घोर भस्मक को नष्ट करती है। परीक्षित है।

मन्दाग्नि की चिकित्सा

• हरीतक्यादि बटी •

(६) हरड़ ६ तोले, पीपल ४ तोले, गजपीपल १ तोला, चीते की छाल १ तोले, हींग १ तोले और सेंधानोन १ तोले—इन सबको पीस-कूट कर, जल के साथ खरल करके, गोलियाँ बना लो। ये गोलियाँ अग्नि-दीपक और रसायन हैं।

• अग्निमुख लवण •

(७) चीते की जड़ की छाल, दन्ती की जड़, तेवड़ी की जड़ और मीठा कूट—इन सबको बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस और छान लो। इस चूर्ण के वज़न के बराबर सेंधानोन पीस कर मिला दो फिर इसमें थूहर के दूध की भावना दो। इसके बाद, थूहर की मोटी लकड़ी ला कर, उसे पोली करो और उस पोल में इस

---

* क्षणादभुक्तं भवेद्भस्म स रोगी भस्मकः स्मृतः।
भोजन किया पदार्थ क्षण-भर में ही पच जाय, उसे 'भस्मक' कहते हैं।

भावना दिये हुए चूर्ण को भर दो और ऊपर से कपड़-मिट्टी कर दो। इसके बाद, आरने कण्डों की आग में उस लकड़ी को रख कर पकाओ। जब लाल हो जाय, निकाल लो। बस यही **'अग्निमुख लवण'** हैं।

मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक।

सेवन विधि—गरम जल के साथ सेवन करने से यह लवण जठराग्नि को खूब जगाता और तिल्ली तथा गोले को नष्ट करता है।

• ज्वालामुखी चूर्ण •

(८) हींग, अम्लवेत, त्रिकुटा, चीते की जड़ की छाल, जवाख़ार, पोहकर-मूल, त्रिफला और अनार—इन आठों को समान-समान ले कर जौकुट कर लो और सब चूर्ण के वज़न के बराबर पुराना गुड़ मिला दो। बस, यही **'ज्वालामुखी चूर्ण'** है। इसके सेवन से अग्नि खूब ही तेज होती है।

• मन्दाग्नि-नाशक रस •

(९) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष (मीठा तेलिया) और लौंग—प्रत्येक एक-एक तोले और कालीमिर्च दो तोले एवं जायफल ६ माशे लो।

पहले पारे और गन्धक को खरल में डाल कर खूब घोटो और कजली बना लो। उधर विष, लौंग, मिर्च और जायफल को महीन पीस और कपड़-छन कर के, इसी कजली में मिला दो और खरल में डाल कर, ऊपर से कच्ची इमली का रस दे-दे कर खूब घोटो। घुट जाने पर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

मात्रा—१ से ४ गोली तक।

सेवन-विधि—(१) अजीर्ण में—अदरख के रस के साथ।
(२) मन्दाग्नि में—कालीमिर्च के साथ।
(३) अतिसार में—नागरमोथे के रस के साथ।
(४) उदर शूल में—पान के रस के साथ।
(५) कृमि-रोग में—वायबिडंग के चूर्ण के साथ।
(६) संग्रहणी में—नागरमोथा, धनिया और सोंठ के काढ़े के साथ।
(७) प्रमेह में—हल्दी और शहद के साथ।
(८) आमवात में—'रास्नादि क्वाथ' के साथ।

नोट—यह नुसख़ा परीक्षित है। ज्ञान चन्द जी वैद्यभूषण गुरुकुल वाले ने इसे 'वैद्य' मुरादाबाद में छपवाया था। वहीं से हमने लिया है।

'रास्नादि क्वाथ' की ये चीजें हैं—रास्ना, गोखरू, अरण्डी की जड़, देवदारु, पुनर्नवा, गिलोय, अमलताश का गूदा—ये सब दो-दो तोले ले कर, ३२ तोले जल में औटाओ। जब ४ तोले जल रहे, उतार लो। यही 'रास्नादिक क्वाथ' है।

• हिङ्गाष्टक चूर्ण •

(१०) सोंठ, मिर्च, पीपर, सेंधानोन, सफ़ेद ज़ीरा, काला ज़ीरा और अजमोद—ये सातों बराबर लो। इनको कूट-पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण में आठवाँ भाग हींग भून कर मिला दो। इन आठों दवाओं से बने इस चूर्ण को 'हिङ्गाष्टक चूर्ण' कहते हैं। भूख बढ़ाने में यह चूर्ण रामवाण है। अनेक बार परीक्षा की है। यह जठराग्नि को दीप्त करता, भूख बढ़ाता और बादी के रोगों को नष्ट करता है।

सेबन-विधि—भोजन के पहले ग्रास में इस चूर्ण की एक मात्रा मिला कर ऊपर से ज़रा-सा गरम घी मिलाओ और खा जाओ। मात्रा—३ से ४ माशे तक। इस तरह लगातार कुछ दिन खाओ। तीसरे दिन ही वह अपना फल दिखाता है।

• बड़वानल चूर्ण •

(११) सेंधानोन १ तोले, पीपरामूल २ तोले, पीपर ३ तोले, चव्य ४ तोले, चीते की छाल ५ तोले, सोंठ ६ तोले, और जंगी हरड़ ७ तोले—इस क्रम से यह सब दवाइयाँ ला कर कूट-पीस और छान लो। इस वड़वानल चूर्ण के सेवन करने से निश्चय ही अग्नि दीप्त होती है। भूख वढ़ाने के लिये परमोत्तम चूर्ण है।

• महाखाण्डव चूर्ण •

(१२) काली मिर्च १ तोले, नागकेसर १ तोले, तालीस-पत्र १ तोले, सेंधानोन १ तोले, संचरनोन १ तोले, विड़नोन १ तोले, समन्दरनोन १ तोले, रेह का नमक १ तोले, पीपरामूल २ तोले, चित्रक २ तोले, दालचीनी २ तोले, पीपर २ तोले, इमली की छाल २ तोले, ज़ीरा २ तोले, धनिया ३ तोले, अम्लवेत ३ तोले, सोंठ ३ तोले, वड़ी इलायची के बीज ३ तोले, छोटे बेर ३ तोले, अजमोद ३ तोले, नागरमोथा ३ तोले तथा सूखा अनारदाना ११ तोले—इन सब को ले कर कूट-पीस छान कर चूर्ण बना लो और जितना चूर्ण का वज़न हो, उससे आधी, सफ़ेद मिश्री पीस कर इसमें मिला दो। इसको 'महाखाण्डव चूर्ण' कहते हैं। यद्यपि यह चूर्ण 'अरुचि' पर प्रधान है, पर हमने इससे मन्दाग्नि में भी बहुत लाभ होते देखा है, इसी से यहाँ लिख दिया है। इसके सेवन से खाँसी,

बवासीर, अतिसार, हृद्रोग, कण्ठरोग, उदररोग, मुखरोग, विशूचिका, अफारा, गोला, कृमि रोग, पाँच प्रकार के छर्दि रोग तथा श्वास—ये सब दूर होते हैं।

• अग्निमुख चूर्ण •

(१३) हींग १ तोले, वच २ तोले, पीपर ३ तोले, अदरख ४ तोले, अजवायन ५ तोले, हरड़ ६ तोले, चीते की छाल ७ तोले और मीठा कूट ८ तोले—इन सब को कूट-पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इसको दही के तोड़ या निवाये जल के साथ लेने से उदावर्त, अजीर्ण, तिल्ली और उदर रोग नष्ट होते हैं। जिसने विष खाया हो, जिसका शरीर गलता हो, जो बवासीर से दुखी हो, उसके लिए यह चूर्ण अमृत है। यह कफ नष्ट करने वाला, अग्निदीपक और गोले को नष्ट करने वाला है। यह कभी निष्फल नहीं जाता।

• दूसरा अग्निमुख चूर्ण •

(१४) चीते की छाल, हाऊबेर, पीपरामूल, पीपल, काला नमक, अजमोद, धनिया, कचूर, इन्द्रजी, पोहकरमूल, जवाखार, ज़ीरा, इमली, चव्य, अजवायन, अनारदाना, दाख, इलायची और अम्लवेत—इन १६ दवाओं को बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इसके लगातार सेवन से अग्निमांद्य, गुल्म, अरुचि, शूल, बवासीर, तिल्ली, उदर-रोग और कफ-वात के रोग नष्ट होते हैं।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। एक मात्रा खा कर ऊपर से काँजी या दही का तोड़ पीना चाहिए।

• भास्कर लवण •

(१५) पीपर ८ तोले, पीपरामूल ८ तोले, धनिया ८ तोले, काला ज़ीरा ८ तोले, सेंधानोन ८ तोले, बिरिया-संचर नमक ८ तोले, तेजपात २० तोले, तालीसपत्र ८ तोले, नागकेसर ८ तोले, कालानोन ८ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, सफ़ेद ज़ीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, दालचीनी २ तोले, छोटी इलायची के बीज २ तोले, समन्दरनोन ३२ तोले, अनारदाना सूखा १६ तोले, और अम्लवेत ८ तोले—इन सबको कूट-पीस-छान कर चूर्ण बना लो। यह उत्तम सुगन्धित चूर्ण संसार के उपकार के लिए भास्कराचार्य महोदय ने निर्माण किया है।

यह चूर्ण वात और कफ के रोगों को नष्ट करता है। इसके सेवन से मन्दाग्नि नष्ट हो कर अग्नि खूब बलवान होती है। इसके सिवा बवासीर, संग्रहणी, सूजन, कोढ़, भगन्दर, हृद्रोग, आमदोष, अनेक प्रकार के उदर-रोग, तिल्ली, वातरक्त, श्वास, खाँसी, कृमि-रोग और शूल को यह चूर्ण नष्ट करता है।

अनुपान—माठा, दही का पानी, मदिरा, काँजी, सौंफ का अर्क़, गरम जल और नीबू का रस है।

समय—सवेरे, दोपहर और शाम।

☛ नोट—हमने अनेक बार आजमाया है। पेट के रोगों पर यह रामवाण है। बहुत से रोगी इससे बात-की-बात में आराम हो गये। जो इसके सेवन से आराम न हुए, वे किसी भी दवा से आराम न हुए। दस्त-क़ब्ज़ में इसे रात को फाँक कर गरम जल पी लेने से दस्त खुलासा होता है। अजीर्ण में सौंफ के अर्क़ के साथ देने से खूब लाभ होता है। मन्दाग्नि और संग्रहणी में माठे के साथ देना अच्छा है। संग्रहणी में यदि रोगी को पानी के बजाय अर्क-सौंफ पिलाते रहें और इसे छाछ के साथ सेवन कराते रहें, तो अपूर्व चमत्कार दीखेगा। यह चूर्ण और चूर्णों की तरह नहीं, बल्कि मातदिल है; इसलिये स्त्री, बालक सबको अच्छा है। हमने सूजन में इसे खिला कर और 'नारायण तैल' बदन पर मालिश करा कर खूब फ़ायदा उठाया है। मलावरोध, सूजन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, अजीर्ण और बवासीर में हमने इसे सैकड़ों बार आजमाया और ठीक फल पाया। लगातार सेवन करने से यह चूर्ण पेट के भयानक रोगों को निश्चय ही नाश करता है। जल्दबाजी से कोई लाभ नहीं होता।

• बृहद् अग्निमुख चूर्ण •

(१६) जवाखार, सज्जीखार, चीते की जड़ की छाल, पाढ़, करंज की जड़ की छाल, पाँचों नमक, छोटी इलायची, तेजपात, भारंगी, बायबिडंग; हींग, पोहकरमूल, कपूर, दारुहल्दी, निशोथ, नागरमोथा, बच, इन्द्रजी, आमले, सफ़ेद जीरा, विषांबिल, गजपीपल, कलौंजी, अम्लवेत, सूखी इमली, सूखा अनारदाना त्रिकुटा, शुद्ध भिलावे, अजमोद, हाऊबेर, सूखा अमलताश का गूदा, तिल की लकड़ी का खार, बनपलाश का खार, सँहजने की जड़ की छाल का खार, तालमखाने का खार, गोमूत्र में भिगोई हुई लोहे की कीट यानी मंडूर—इन ३६ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, ३ दिन तक नीबू के रस की, ३ दिन तक काँजी की और ३ दिन तक अदरख के रस की भावना दे कर रख लो। भावना देने से पहले, सब दवाओं को कूट-पीस कर छान लेना। पीछे तीन-तीन दिन तक नीबू, काँजी, और अदरख के रस में भिगो देना। बस यही 'बृहद् अग्निमुख चूर्ण तैयार होगा। यह चूर्ण जठराग्नि को अग्नि के समान तेज कर देता है। इसको यथाविधि सेवन करने से अनेक पुराने रोग भी नष्ट हो जाते हैं। यह अजीर्ण, गुल्म, तिल्ली, गुदा के रोग, बवासीर, उदररोग, अन्त्रवृद्धि, अष्ठीला, वातरक्त और

अत्यन्त उल्बण दोषों का नाश करता है। नष्ट अग्नि को जगाने में तो यह एक ही है।

• सैंधवाद्य चूर्ण •

(१७) सेंधानोन, चीते की जड़ की छाल, हरड़, लौंग, कालीमिर्च, पीपल भुना सुहागा, सोंठ, चव्य, अजवायन, सौंफ और बच—इन १२ दवाओं को कूट, पीस और छान कर, २१ दिन तक नीबू के रस की भावना दो।

मात्रा—२ से ३ माशे तक।

सेवन विधि—गरम जल, नमक मिली छाछ, दही के तोड़ या काँजी के साथ सेवन करने से शीघ्र ही जठराग्नि को तेज कर देता है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(१८) शुद्ध मीठा विष १ तोला, त्रिकुटा ३ तोले और बड़ी हरड़ के छिलके १ तोला—सबको महीन पीस कर खरल में डालो और नीबू का रस डाल-डाल कर घोटो और चने-बराबर गोलियाँ बना लो। एक गोली, सवेरे और एक गोली शाम को खाने से अग्नि दीप्त हो कर खूब भूख लगती है।

(१९) शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा तेलिया विष और शुद्ध गन्धक—इनको बराबर-बराबर ले कर, पहले पारे और गन्धक को खरल में खूब घोट कर कजली बना लो। फिर इसी में शुद्ध मीठे विष को पीस लो। फिर इन तीनों के वज़न के बराबर कालीमिर्च का चूर्ण मिला कर, खरल में ही कटेरी के रस की २१ भावना दो। शेष में, घोट कर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। ये गोलियाँ सब तरह के जीर्ण-अजीर्ण और मन्दाग्नि को नष्ट करती हैं।

(२०) हरड़ के चूर्ण को सोंठ और गुड़ के साथ अथवा सेंधानोन के साथ सेवन करने से अग्नि दीप्त होती है।

(२१) सेंधानोन, हींग, त्रिफला, अजवायन और त्रिकुटा—ये सब बराबर-बराबर ले कर, कूटपीस कर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण के वजन के बराबर पुराना गुड़ ले कर, सबको मिला कर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियों का सेवन करने से मन्दाग्नि वाला बहुत खाता और तृप्त होता है।

(२२) पुराने गुड़ के साथ सोंठ का चूर्ण, या पीपल का चूर्ण, अथवा हरड़ का चूर्ण सेवन करने से आम, अजीर्ण, गुदा के रोग और मल-विबन्ध—ये सब आराम होते हैं।

(२३) बायबिड़ंग, शुद्ध भिलावे, चीते की छाल, गिलोय और सोंठ—इन सबको पीस कर चूर्ण, कर लो। इस चूर्ण को पुराने गुड़ और घी में मिला कर सेवन करने से, मन्दाग्नि नष्ट हो कर, अग्नि इतनी तीव्र हो जाती है कि तारीफ़ नहीं कर सकते।

(२४) हरड़ को नीम के साथ सेवन करने से अग्नि की वृद्धि होती है और दाद, खाज, फोड़े-फुन्सी एवं ख़ून के विकार निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(२५) चीता, अजवायन, सेंधानोन, सोंठ और कालीमिर्च—इनको कूट, पीस और छान कर रख लो। इस चूर्ण को खट्टी छाछ के साथ सेवन करने से, सात दिन में, मन्दाग्नि नष्ट हो कर, जठराग्नि अत्यन्त दीप्त होती है एवं पीलिया और बवासीर रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

(२६) हरड़, पीपल और सोंठ को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण कर लो। इसे 'त्रिसम' कहते हैं। यह मनुष्यों की अग्नि को दीप्त करने वाला तथा प्यास और भय को नष्ट करने वाला है।

(२७) जिनको जीर्णाजीर्ण की शंका रहती हो, उनको सोंठ का बना जल सदा हितकारी है।

(२८) हरड़, गुड़ और सोंठ को एकत्र पीस कूट कर, छाछ में मिला कर सेवन करने से आमयुक्त मन्दाग्नि नष्ट हो जाती है। इस पर अगर 'षडूषण' से सिद्ध किया हुआ अन्न खाया जाय, तो और भी जल्दी लाभ हो।

नोट—एक छाछ में ही मन्दाग्नि को नष्ट करने की पूरी सामर्थ्य है; कई बार परीक्षा की है। जाड़े के मौसम में मन्दाग्नि, कफविकार, मलावरोध, दस्त-क़ब्ज़, बवासीर और गुल्म (गोला) रोग नष्ट करने के लिये माठा पीने से बड़ा लाभ होता है। सेंधानोन मिला कर पीने से बेतहाशा फ़ायदा होता है। माठे की तरह हरड़ भी दूसरा अमृत है। इसको ऋतु-ऋतु में अनुपान बदल-बदल कर, खाने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं—

(१) ग्रीष्म ऋतु में—**गुड़** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।
(२) वर्षा में—**सेंधानोन** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।
(३) शरद् में—**आमलों** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।
(४) हेमन्त में—**सोंठ** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।
(५) शिशिर में—**पीपलों** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।
(६) वसन्त में—**शहद** के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिए।

(२९) सोंठ, हरड़, गिलोय और षडूषण के काढ़े में जरा-सी दालचीनी और तेजपात का चूर्ण मिला कर सेवन करने से कफ-रोग और मन्दाग्नि नष्ट होती है।

नोट—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ को 'पंचकोल' कहते हैं। अगर इसमें छठी कालीमिर्च और मिला दी जाती है, तो इसे ही 'षडूषण' कहते हैं।

(३०) नित्य सवेरे ही जवाखार और सोंठ का चूर्ण बराबर-बराबर खा कर, ऊपर से निवाया जल पीने से ख़ूब भूख बढ़ती है।

(३१) सोंठ का चूर्ण घी में मिला कर चाटने और ऊपर से गर्म जल पीने से भूख खूब बढ़ती है।

(३२) नित्य, भोजन के पहले, छिली हुई अदरख में सेंधानोन लगा कर खाने से भूख बढ़ती है तथा जीभ और गला—ये साफ रहते हैं। कहा है—

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्।
अग्निसन्दीपनं हृद्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥

(३३) लौंग, सोंठ, कालीमिर्च और भुना सुहागा—सबको समान ले कर, पीस-कूट कर चूर्ण बना लो। पीछे खरल में डाल कर, चिरचिरे या चीते की छाल का रस डाल-डाल कर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इस नुसख़े से मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग नष्ट होते हैं।

(३४) पीपल के चूर्ण में, चूर्ण से दूना पुराना गुड़ मिला कर सेवन करने से अरुचि, हृद्रोग, दमा, खाँसी, अग्निमांद्य, पाण्डु, जीर्णज्वर और मृगी रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३५) गिलोय का सत्त गोरखमुण्डी के साथ खाने से अग्निमांद्य रोग आराम होता है।

(३६) हरड़, पीपल, गोलमिर्च, सोंठ, शुद्ध कुचला, शुद्ध हींग, शुद्ध गन्धक और सेंधानमक—इन आठों चीजों को बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस कर छान लो और खरल में डाल कर, ऊपर से नीबू का रस दे-दे कर घोटो और दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल।

रोग-नाश—अग्निमांद्य के लिए यह परमोत्तम दवा है। इससे जठर-रस बहुतायत से पैदा होता और उसके कारण अन्न अच्छी तरह पचता है। शूल नष्ट करने में भी यह नुसखा परले सिरे का अच्छा है। परीक्षित है।

(३७) लाल मिर्चों को नीबू को रस में ४० दिन तक खरल करो और दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। एक गोली पान में रख कर खाने से भूख लगती है। भूख बढ़ाने में यह नुसख़ा परमोत्तम है।

(३८) कालानोन ३ तोले ४ माशे, कालीमिर्च ३ तोले ४ माशे, पीपर ३ तोले ४ माशे और भुना सुहागा १ तोले ८ माशे—इन चारों को नीबू का रस डाल-डाल कर, खरल में पूरे ३६ घन्टे तक घोटो। घुट जाने पर चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। भोजन के बाद एक या दो गोली खाने से बेतहाशा भूख बढ़ती है।

(३९) गेहूँ की चोकर, अन्दाज का सेंधानोन और अजवायन—इन तीनों को मिला कर बनाई हुई रोटी मन्दाग्नि में निश्चय ही हितकारक है। परीक्षित है।

(४०) चने का खार कुछ दिन सेवन करने से विगड़ी हुई पाचन-शक्ति सुधर जाती है।

(४१) मोंठ की दाल मन्दाग्नि और ज्वर की नाशक है।

(४२) समन्दर नमक डेढ़ माशे, सवेरे ही रोज फाँक कर, ऊपर से बासी पानी पीने से मन्दाग्नि नष्ट हो जाती, भूख लगती और पाचन-शक्ति बढ़ जाती है।

(४३) अजवायन ४ तोले और सेंधानोन १ तोले—दोनों को पीस-कूट कर रख लो। इसमें से २ माशे चूर्ण सवेरे ही फाँक कर, ऊपर से सिरका पीने से मन्दाग्नि और बादी के विकार मिट जाते हैं।

(४४) सौंफ को पानी में भिगो दो। पीछे पानी से चौगुनी मिश्री उस में मिला कर चूल्हे पर पका लो। इस शर्बत के चाटने से बालकों की मन्दाग्नि, दस्त, पेट का दर्द और पेशाब की लाली—ये सब मिट जाते हैं।

(४५) पकी मीठी इमली के पने में सेंधानमक, कालीमिर्च और हींग डाल कर पीने से मन्दाग्नि और अरुचि नष्ट हो जाती है।

पाँचवाँ अध्याय

अजीर्ण-वर्णन

साधारण लक्षण

सभी तरह के अजीर्णों में ग्लानि होती है, शरीर और पेट भारी रहते हैं, पेट में शूल-से चलते हैं, अपान वायु सड़ती यानी हवा रुक जाती है, कभी दस्त-क़ब्ज़ हो जाता है तो कभी अजीर्ण या बदहज़मी के दस्त होते हैं, खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, खाने के बाद क़य होती हैं या जी मिचलाता है। बस यही अजीर्ण की सीधी पहचान है।

'वैद्यविनोद' में लिखा है—

ग्लानिबन्धप्रवृत्तिर्वा सामान्याजीर्ण लक्षणम्।

शरीर में ग्लानि या मल का अवरोध अथवा दस्तों का ज़्यादा होना—अजीर्ण के सामान्य लक्षण हैं।

भोजन पचने का लक्षण

प्यास और भूख लगना अथवा शरीर हलका मालूम होना—ये जीर्णाहार या भोजन पचने के लक्षण हैं।

अजीर्ण की किस्में

अजीर्ण ६ तरह के होते हैं—

(१) आम अजीर्ण, (२) विदग्ध अजीर्ण, (३) विष्टब्ध अजीर्ण, (४) रस शेष अजीर्ण (५) दिनपाकी अजीर्ण, (६) प्राकृत अजीर्ण।

कौन अजीर्ण किस तरह होता है ?

(१) कफ के प्रकोप से आमाजीर्ण होता है। (२) पित्त के प्रकोप से विदग्धाजीर्ण होता है। (३) वायु के प्रकोप से विष्टब्धाजीर्ण होता है। (४) रस के शेष रहने, यानी रक्तादि रूप में परिणत न होने से रसशेषाजीर्ण होता है। (५) दिन भर में भोजन न पचने से दिनपाकी अजीर्ण होता है। (६) स्वाभाविक या प्राकृत अजीर्ण स्वभाव से नित्य होता है।

□ अजीर्ण के कारण □

(१) दैहिक कारण

(१) बहुत जल पीना, (२) भोजन के समय के बाद भोजन करना, (३) मलमूत्रादि वेगों को रोकना, (४) रात को जागना। (५) दिन में सोना, ये पाँच तो देह से सम्बन्ध रखने वाले कारण हैं।

(२) मानसिक कारण

(१) ईर्ष्या, (२) भय, (३) क्रोध, (४) लोभ, (५) शोक, (६) दीनता, और (७) मत्सरता—ये अजीर्ण के मानसिक कारण हैं। उपरोक्त दैहिक और मानसिक कारणों से, भोजन के समय किया हुआ स्वभाव के अनुकूल भोजन भी नहीं पचता; अजीर्ण हो जाता है।

□ अजीर्णों के लक्षण □

(१) आम अजीर्ण के लक्षण

इस अजीर्ण के होने से पेट और शरीर में भारीपन होता है, जी मिचलाता है, गालों और आँखों पर सूजन आ जाती है। खट्टा, मीठा प्रभृति जैसा भोजन किया जाता है, उसी तरह की डकारें आती हैं।

(२) विदग्ध अजीर्ण के लक्षण

इस अजीर्ण में भ्रम, प्यास, मूर्च्छा, पित्त के अनेक रोग, धुएँ के साथ खट्टी डकारें, पसीना और दाह—ये लक्षण होते हैं।

(३) विष्टब्ध अजीर्ण के लक्षण

इस अजीर्ण में शूल, अफारा, अनेक प्रकार की वादी की पीड़ायें, मल और अधोवायु का रुकना, शरीर का जकड़ जाना, मोह और देह में दर्द—ये लक्षण होते हैं।

☛ नोट—याद रखो, पहला कफ से, दूसरा पित्त से और तीसरा विष्टब्धाजीर्ण वायु में कोप से होता है।

(४) रस-शेष अजीर्ण के लक्षण

इस अजीर्ण में अन्न में अरुचि, हृदय में जड़ता और देह में भारीपन होता है।

(५) दिगपाकी अजीर्ण के लक्षण

इस अजीर्ण वाले को रात-दिन में भोजन पचता है और इसमें अफारा और हड़-फूड़न आदि कुछ नहीं होता।

(६) प्राकृत अजीर्ण

यह अजीर्ण नित्य ही रहता है, क्योंकि स्वाभाविक है; विकृतिजन्य नहीं है। इसके पचाने के लिए 'सुश्रुत' ने ये उपाय लिखे हैं—

(१) भोजन करके नौ कदम टहलना, (२) बाईं करवट सोना, (३) अपने दिल को भाने वाले पदार्थों को छूना, देखना, सुनना, सूँघना और चखना; जैसे मनोहर कामिनियों पर हाथ फेरना, रूपवती स्त्रियों को या अन्य बड़ी सुन्दर चीज़ों को देखना, गाना सुनना, फूल और इत्र आदि सूँघना तथा स्वादिष्ट पदार्थ चखना। यह अजीर्ण इन उपायों से पच जाता है। इसके लिए दवा की ज़रूरत नहीं।

अजीर्ण के उपद्रव

मूर्च्छा—बेहोशी, आनतान बकना, वमन, मुँह से लार गिरना, ग्लानि, भ्रम और मरण—ये अजीर्ण के उपद्रव हैं।

नोट—मरण का यह मतलब है, कि अजीर्ण बहुत बढ़ जाने से मनुष्य को मार भी डालता है।

अजीर्ण का असल कारण क्या है ?

जो अनाप-शनाप नाक तक ठूस-ठूस कर खाते हैं, जिनकी इन्द्रियाँ उनके अपने वश में नहीं हैं, जो पशुओं की तरह खाते हैं, उनको अनेक रोग पैदा करने वाला 'अजीर्ण' होता है।

□ अजीर्ण की साधारण चिकित्सा □

(१) आमाजीर्ण में वमन करा देने से लाभ होता है।

(२) विदग्धाजीर्ण में लंघन या उपवास से लाभ होता है।

(३) विष्टब्धाजीर्ण में पसीना कराने से लाभ होता है।

(४) रस-शेषाजीर्ण में भोजन से पहले दिन में सोने से लाभ होता है।

□ विशेष चिकित्सा □

आमाजीर्ण की चिकित्सा

(१) सेंधानोन १ तोला और बच २ तोला ले कर पीस लो और गरम जल में मिला कर रोगी को पिला दो और क़य कराओ। क़य में दूषित पदार्थ निकल जायँगे और रोग आराम हो जायगा। यह वमनकारक दवा रोगी को उस हालत में दो, जबकि आमाशय बहुत भारी मालूम होता हो।

नोट—अजीर्ण में सबसे पहले अजीर्ण पैदा करने वाले कारणों को त्याग दो। बिना कारण त्यागे, अजीर्ण कभी आराम न होगा। सभी अजीर्णों में उपवास

करना सर्वोत्तम उपाय है। विशेष कर आमाजीर्ण की पहली हालत में तो लंघन हितकारी है। परन्तु वालक, बूढ़े और दुर्बलों को उपवास कराना अच्छा नहीं। उनको, उनकी प्रकृति के अनुसार, हल्का और थोड़ा भोजन देना उचित है। अजीर्ण में क्या-क्या पथ्य और अपथ्य हैं, यह हमने आगे लिखा है। जो पथ्य हो उसके देने में हानि नहीं; पर विचार की सर्वत्र दरकार है।

(२) धनिया और सोंठ का काढ़ा पीने से आमाजीर्ण शान्त होता है, शूल नष्ट होता है और मूत्राशय साफ़ होता है।

(३) दिन में चार बार गर्म जल पीने से आमाजीर्ण में लाभ होता है।

(४) सोंठ और सौंफ—दोनों को बराबर-बराबर ले कर, पीस-कूट-छान कर और मिश्री मिला कर, सेवन करने से आमाजीर्ण शान्त होता है।

(५) सोंफ, पोदीना, गुलाब के फूल, तेजपात और बड़ी इलायची—सबको तीन-तीन माशे ले कर, एक सेर जल में पका कर रख लो। उसी में से ज़रा-ज़रा-सा जल पीने से आमाजीर्ण नष्ट होता है।

(६) हींग, सेंधानोन, सोंठ कालीमिर्च और पीपल—इनको बराबर-बराबर ले कर, जल के साथ सिल पर पीस कर, लेप-सा बना लो और पेट पर बारम्बार इसी का लेप करो। इससे आमाजीर्ण की पीड़ा शान्त हो जायगी।

(७) छोटी हरड़, सोंठ, नागकेसर और कालानोन—इनमें से प्रत्येक को चार-चार माशे ले कर, पाव-भर जल में पीस कर, ज़रा सी हींग डाल कर दिन में कई बार, ज़रा-ज़रा-सा पीने से आमाजीर्ण शान्त होता है।

(८) बड़ी इलायची ३ माशे, दालचीनी ६ माशे, नागकेसर ६ माशे, काली-मिर्च १२ माशे, पीपल १५ माशे और सोंठ १८ माशे—इन सबको एकत्र कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। इसको दिन में २-३ बार सेवन करने से आमाजीर्ण नष्ट हो जाता है।

(९) सज्जीखार, जवाखार, कालानोन, साँभरनोन, सेंधानोन, कचियानोन, विड़नोन, भुना सुहागा, आमलासार गन्धक, सोंठ, मिर्च पीपलामूल, चीता, अजवायन और वायविड़ंग—इन सब दवाओं को समान भाग ले कर, कूट-पीस लो और पीछे आक के पत्तों के रस में खरल करो। इसके बाद सेंहुड़ या थूहर का एक डण्डा पोला करके, उसमें खरल किये चूर्ण को भर दो और ऊपर से कपड़-मिट्टी चढ़ा दो। इसके बाद २५ उपलों की आग में उस कपड़-मिट्टी चढ़े डण्डे को रख कर पकाओ। जब

आग ठण्डी हो जाय, निकाल लो। डण्डे के ऊपर की मिट्टी उतार कर, डण्डे में से दवा को निकाल लो। इस नमक के सेवन करने से आमाजीर्ण और हर प्रकार के अजीर्ण नष्ट होते हैं। मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—माठा या दही का तोड़।

(१०) शुद्ध मीठा विष १ भाग, सोंठ २ भाग, कालीमिर्च ३ भाग और पीली कौड़ी की भस्म ४ भाग—इन सबको कूट-पीस, खरल में डाल, जम्भीरी नीबू के रस में, उड़द के दाने-बराबर गोलियाँ बना लो। इनको सेवन करने से अजीर्ण नष्ट होता और तत्काल भूख लगती है।

मात्रा—२ या ३ गोली। अनुपान—ताजा जल।

☛ नोट—ये सब नुसख़े परीक्षित हैं।

विदग्धाजीर्ण की चिकित्सा

(११) लिख चुके हैं कि विदग्धाजीर्ण में लंघन उपकारी है, और बहुधा शीतल जल पीने से भी लाभ होता है। अतः दिन में कुछ न खा कर, केवल थोड़ा-थोड़ा शीतल जल पीना चाहिए। इस अजीर्ण में गुलकन्द-गुलाब प्रभृति से हल्का दस्त करा देना भी अच्छा है। लिखा है—

> श्लैष्मिके वमनं पूर्वं पैत्तिके मृदु रेचनम्।
> वातिके स्वेदनं चाथ यथावस्थं हितं सत॥

कफ से उत्पन्न मंदाग्नि या अजीर्ण में पहले वमन करानी चाहिए। पित्त से उत्पन्न अजीर्ण में हल्का जुलाब देना चाहिए और बादी से हुए अजीर्ण में स्वेदन-कर्म, बफ़ारा या सेक वग़ैरा करना चाहिए। अथवा जिस समय जैसी अवस्था हो और जो काम उस अवस्था में हितकारी हो, वही करना चाहिए। कहीं लंघन से काम हो जाता है, कहीं शीतल जल के पीने से और कहीं हल्के जुलाब से। चिकित्सा करने में विचार-बुद्धि और तर्क से क्षण-क्षण पर काम लेना चाहिए। किसी एक ही क़ायदे को पकड़ कर अन्धाधुन्ध काम करने से हानि की सम्भावना रहती है।

(१२) सफ़ेद जीरा ४ माशे, सफ़ेद इलायची ४ माशे, सूखा अनारदाना ४ माशे, आलू-बुखारा ४ माशे और मुनक्का (बीज निकाला) ४ माशे—इन सबको एक जगह पीस कर और थोड़ा सेंधानोन मिला कर सेवन करने से पित्त का विदग्धाजीर्ण नष्ट होता है।

(१३) धनिया ४ माशे, इलायची ४ माशे, गुलाब की केसर ४ माशे और सौंफ ४ माशे—सबको पीस कर, इनके वज़न के बराबर मिश्री मिला लो। इस

चूर्ण को शीतल जल के साथ सेवन करने में पित्त का विदग्धाजीर्ण आराम
।

(१५) सोंठ ५ माशे, जीरा ४ माशे, छोटी इलायची ३ माशे, कालीमिर्च २ माशे, पीपल १ माशे और शुद्ध आमलासार-गन्धक ६ माशे—सबको एक जगह मिला कर पीस लो और फिर खरल में डाल कर नीबू का रस दे-दे कर चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सुबह-शाम या दिन में ३-४ बार खाने से विदग्धाजीर्ण और सब तरह के अजीर्ण नष्ट हो जाते हैं।

(१६) बड़ी इलायची का चूर्ण और मिश्री मिला कर तीन-तीन माशे की मात्रा से सेवन करने से पित्त का अजीर्ण नष्ट होता है।

(१७) पोदीना ४ माशे, अम्लवेत ४ माशे, छोटी इलायची ४ माशे, दालचीनी ३ माशे और तालीसपत्र ३ माशे—इन सबको एकत्र कूट-पीस लो और चूर्ण के बराबर मिश्री मिला दो। इस चूर्ण का सेवन करने से पित्त का विदग्धाजीर्ण नष्ट होता है।

(१८) नीबू, नारंगी और अनार प्रभृति फलों का सेवन करने से भी विदग्धाजीर्ण नष्ट हो जाता है।

• राजवटी •

(१६) सोंठ ४ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और सेंधानोन १ तोले—इन सबको कूट-पीस, नीबू के रस में घोट कर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से अजीर्ण, विदग्धाजीर्ण और विशूचिका—हैजा ये सब आराम होते हैं।

• शंखवटी •

(२०) इमली का खार ४ तोले, पाँचों नमक ४ तोले और नीबू का रस—अन्दाज से इनमें ४ तोले शंख को गरम कर-करके उस समय तक बुझाओ, जब तक कि वह टुकड़े-टुकड़े न हो जाय। इसके बाद हींग, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल—ये चारों १-१ तोले, शुद्ध पारा ६ माशे और शुद्ध गन्धक ६ माशे—ले लो। पहले पारे और गन्धक की कजली कर लो। इसके बाद शंख आदि सब दवायें खरल में डाल कर घोटो और १-१ माशे की गोलियाँ बनाओ। ये 'शंखवटी' अजीर्ण संग्रहणी और पसली के दर्द को आराम करती हैं।

• दूसरी शंखवटी •

(२१) शुद्ध पारा २ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध विष ६ तोले, कालीमिर्च ६ तोले, शंख-भस्म ६ तोले, सोंठ १० तोले, सज्जीखार १० तोले, शुद्ध

हींग १० तोले, पीपल १० तोले, सहँजना १० तोले, सौवच्चल नमक १० तोले, काला नमक १० तोले, सेंधा नमक १० तोले और पांगा नमक १० तोले ले लो। पहले पारे और गन्धक को घोट कर कजली बना लो। दूसरी ओर शेष दवाओं को, जो कूटने लायक हैं, कूट-पीस और छान कर कजली में मिला दो। ऊपर से नीबू का रस दे-दे कर घोटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से ग्रहणी, अम्लपित्त, शूल और अग्निमांद्य आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

विष्टब्धाजीर्ण की चिकित्सा

(२२) इस अजीर्ण में शरीर के रोम-रन्ध्र खोल देना हितकारी है। इसके लिए चारों तरफ चादर तान कर बफारा लेना अच्छा है। पसीना निकलने से शीघ्र ही लाभ होगा। तेलादि चिकने पदार्थों से पसीना निकालना और अच्छा है।

(२३) अलसी को महीन पीस कर, पुल्टिश बना कर, गरमागर्म, कपड़े में रख कर दर्द की जगह बाँधो। अथवा अलसी को पीस कर कपड़े की पोटली में बाँधो। पीछे उस पोटली को, आग पर रखे गरम तवे पर गरम कर-करके पेट पर सेंक करो इस उपाय से अजीर्ण की वेदना शान्त हो जायगी।

(२४) रेहगवाँ नमक और सोया—इन दोनों की पोटली बना कर, ऊपर की विधि से, दर्द-स्थान को सेंकने से भी विष्टाब्धार्जीर्ण की पीड़ा दूर होती है।

(२५) थोड़ा नमक मिला कर, नमकीन जल पीने से विष्टब्धाजीर्ण की पीड़ा दूर होती है।

(२६) 'हिङ्गाष्टक चूर्ण' को गरम जल के साथ सेवन करने से विष्टब्धाजीर्ण नष्ट होता है। इसका नुसख़ा पहले मन्दाग्नि के बयान में लिख आये हैं।

(२७) चव्य, चीता, कचूर, अजवायन, सोंठ, दालचीनी, जवाख़ार, समुद्रफेन और कालानोन—इन सब दवाओं को समान भाग ले कर चूर्ण बना लो। मात्रा—२ माशे की। अनुपान—निकाया जल। इससे भी विष्टब्धाजीर्ण नष्ट होता है।

(२८) हरड़, अजवायन और सोंठ—इनको बराबर-बराबर ले कर पीस लो और अन्दाज़ का कालानोन भी मिला दो। इस चूर्ण के सेवन करने से विष्टब्ध अजीर्ण नष्ट होता है।

(२९) सोंठ, बड़ी इलायची, पीपल, दालचीनी, बंसलोचन, तेजपात और सौंफ—सब को एक-एक तोला ले कर, कूट-पीस कर बारीक-चूर्ण बना लो और कपड़े में छान कर रख लो। उधर एक पाव मिश्री की चाशनी में इसी चूर्ण को

मिला कर चाटने लायक अवलेह बना लो। जब पक जाय, अमृतवान में रख लो। मात्रा ६ माशे से एक तोला तक। इसमें वायु और पित्त के विष्टब्ध और विदग्ध अजीर्ण नष्ट हो जाते हैं।

□ अजीर्ण-नाशक नुसखे □

(३०) पीपल और सोंठ का चूर्ण, गुड़ मिला कर खाने से अजीर्ण, आमशूल और सूजन—ये विकार आराम होते हैं। परीक्षित है।

• पाचक पिप्पली •

(३१) नीबू के रस में सेंधा नमक मिला कर, उसमें पीपलों को चार दिन तक भिगो रखो। उसके बाद निकाल कर छाया में सुखा लो और शीशी में रख दो। उनमें से दो-चार पीपल रोज़ खाने से भोजन पचता, अजीर्ण नष्ट होता और मुँह का स्वाद अच्छा होता है। परीक्षित है।

(३२) नीबू के रस में जायफल घिस कर पिलाने से दस्त हो कर पेट का अफारा, शूल और अजीर्ण—ये नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

• विषमुष्टि-गुटिका •

(३३) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बच्छनाग, अजवायन, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानोन, चीते की जड़,जीरा, कालानोन, बायविड़ंग और त्रिकुटा—इन सबको ले कर रख लो। पहले पारे और गन्धक को खरल में घोट कर कजली बना लो। दूसरी ओर बाकी दवाओं को कूट-पीस कर छान लो। फिर कजली और पिसी-छनी दवाओं के चूर्ण को एक में मिला दो। इसके बाद इन सबको तोलो। जितना वज़न हो, उतना ही शोधे हुए कुचले का चूर्ण, पहले चूर्ण में मिला दो। इसके बाद सबको खरल में डाल कर, नीबू का रस दे-दे कर, खूब घोटो। घुटाई हो जाने पर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से मन्दाग्नि, अजीर्ण, आमविकार, जीर्णज्वर तथा अनेक प्रकार के वातरोग, यथोचित अनुपान के साथ देने से, निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३४) शुद्ध कुचले की एक मात्रा गरम जल के साथ काफी की तरह सेवन करने से अन्न अच्छी तरह पचता है। अगर अजीर्ण की वजह से क़य होती हो, तो वह भी इससे दब जाती है। इसके सेवन से मन्दाग्नि, अरुचि पेट की मरोड़ी—पेचिश में बड़ा लाभ होता है। वात-प्रकृति वालों के लिये तो कुचला अमृत है। वादी के विकारों को यह शीघ्र ही नष्ट कर देता है। अफ़ीम खाने वालों को थकान

के समय इसे लेने से बड़ा सुख मालूम होता है । मात्रा—१ से ६ रत्ती तक। अनुपान—गरम जल ।

(३५) अगर हवा न खुलने से पेट फूल कर पत्थर हो रहा हो, तो आरम्भ में ही इनमें से कोई उपाय करो—

(क) हींग के पानी में कपड़ा भिगो कर नाभि पर रखो । हींग का पानी के साथ पीस कर, ज़रा गरम कर लो और उसी में कपड़ा तर कर के काम में लाओ ।

(ख) हिंगाष्टक चूर्ण या और कोई चूर्ण खाने को दो ।

(ग) नारायण तैल की पिचकारी गुदा में लगाओ ।

(घ) पेट पर नारायण तैल या तारपीन का तेल मलो ।

(ङ) तारपीन के तेल में कपूर मिला कर पेट पर मलने से उसी समय पेट की वायु-जनित पीड़ा आराम होती है । शरीर के अन्य स्थानों के दर्द में भी यह बड़ा उपकारी है ।

(च) अरण्डी के पत्तों का स्वरस १ पाव, काले तिलों का तेल १ पाव—दोनों को मिला कर मन्दी आग से पकाओ । जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो । इसके पेट पर मलने से वात-जनित कोठे की पीड़ा अवश्य आराम होती है ।

(३६) अरण्डी खरबूजा और पका हुआ पपीता—ये फल अतीव पाचक होते हैं । भोजन के बाद एकाध फल खा लेने से भोजन खूब जल्दी पचता, भूख लगती और दस्त साफ होता है ।

☛ **नोट**—इनमें मांस को गलाने की शक्ति है । इसलिये तिल्ली और यकृत के शोध—सूजन को ये शीघ्र ही दूर करते हैं । परन्तु पित्त की अधिकता और यकृत में अधिक गरमी होने पर इनका सेवन लाभदायक नहीं, बल्कि हानिकारक है ।

(३७) पीपल का चूर्ण पुराने गुड़ में मिला कर खाने से अजीर्ण नष्ट होता है । परीक्षित है ।

• अमृतप्रभा गुटिका •

(३८) कालीमिर्च, पीपलामूल, लौंग, हरड़ अजमोद, डाँसरियाँ, सूखा अनारदाना, पीपल, जवाखार, चीते की छाल, जीरा, सोंठ, धनिया, इलायची और आमला—सबको चार-चार तोले ले कर, कूट-पीस कर छान लो । फिर खरल में डाल, बिजौरे नीबू के रस में घोटो । उत्तम घुटाई हो जाने पर २-२ माशे की गोलियाँ बना लो । इस नुसख़े से अग्नि जागती और अजीर्ण नष्ट होता है ।

(३९) हरड़, वहेड़ा, आमला, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इन सबको तोले-तोले भर ले कर, कूट-पीस कर छान लो। इसमें से ३ माशे चूर्ण फाँक कर, ऊपर से ताज़ा पानी पीने से, छह दिन में अजीर्ण नष्ट हो जाता है। वादी करने वाली चीज़ें न खानी चाहिये।

(४०) अजवायन का अर्क़ पीने से अजीर्ण आराम हो जाता है। इस अर्क़ से वदहज़मी के कारण होने वाली सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं।

(४१) किन पदार्थों से पैदा हुए अजीर्ण किस उपाय से नष्ट हो जाते हैं, यह नीचे देते हैं—

(क) भात खाने से हुआ अजीर्ण नारियल की गिरी खाने अथवा दूध में थोड़ा पानी मिला कर पीने से आराम होता है।

(ख) खिचड़ी खाने से हुआ अजीर्ण बड़ी इलायची पीस कर फाँकने या सेंधानोन पीस कर खाने से आराम होता है।

(ग) गेहूँ की रोटी का अजीर्ण सोंठ और कालानोन को पीस कर फाँकने से जाता है।

(घ) मिठाई —लड्डू. पेठा—आदि का अजीर्ण नमक मिला कर पीपर का चूर्ण खाने से जाता है।

(ङ) दूध से हुआ अजीर्ण माठा पीने से जाता है।

(च) घी से हुआ अजीर्ण नीबू के रस में नमक और काली मिर्चों का चूर्ण मिला कर खाने से जाता है; अथवा सेंधानोन गरम जल में मिला कर पीने से आराम होता है।

(छ) तेल या तेल से बने पदार्थों से हुआ अजीर्ण खट्टी छाछ, माठा, काँजी या नमक पड़े हुए माँड़ से मिटता है।

(ज) खाँड का अजीर्ण अदरख और नमक मिला कर खाने से जाता है।

(झ) केले का अजीर्ण बड़ी इलायची पीस कर फाँकने या थोड़ा-सा घी खाने से जाता है।

☛ नोट—इलायची केले को फौरन पका देती है। अगर केले पर इलायची का चूर्ण डाल दो, तो केला फौरन गल कर सड़ने लगेगा। अगर कच्चा केला जल्दी पकाना हो तो केले की डण्डी में, जहाँ गुच्छा लगा रहता है, चाकू से छेद कर, उसमें इलायची का चूर्ण भर दो।

(ञ) अफ़ीम के अजीर्ण में हींग खानी चाहिये।

(ट) हींग के अजीर्ण में ज़ीरा खाना चाहिये।

(ठ) आम के अजीर्ण में जामुन खाना अथवा ज़ीरे के पानी में कालानोन मिला कर पीना चाहिये।

(ड) मूंगफली के अजीर्ण में माठा पीना चाहिये।

• अजीर्ण-गज-केशरी •

(४२) शंख का चूर्ण ४ तोला, सीप का चूर्ण ४ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धक का चूर्ण ४ तोला, शुद्ध लोह-मंडूर ४ तोला, भुना सुहागा ४ तोला, नौसादर ४ तोला, साँभर नमक ४ तोला, सोंठ का चूर्ण ४ तोला, पीपर का चूर्ण ४ तोला, चीते की छाल का चूर्ण ४ तोला और अजवायन का चूर्ण ४ तोला—इन ग्यारह चीजों को एकत्र पीस कर, एक सेर जंभीरी नीबू के रस में मिला कर, खूब मज़बूत बोतलों में भर कर और काग से मुख मजबूती से बन्द करके, ज़मीन पर गाड़ दो और १४ दिन बाद निकाल लो। इससे तिल्ली, गुल्म, शूल, अजीर्ण प्रभृति अनेक रोग नष्ट होते हैं।

मात्रा—४ माशे की।

समय—भोजन के पीछे, दिन में दो-तीन बार।

☛ नोट—(१) यह परीक्षित है। अजीर्ण को नष्ट करता है और तिल्ली पर भी अक्सीर है।

(२) अगर वायु के कारण पेट फूल रहा हो, पेट में शूल-से चलते हों और वह शूल जगह बदल-बदल कर चलते हों, तो आप गेहूँ की भूसी या चोकर में थोड़ा-सा नमक मिला कर कपड़े की पोटली बनायें और तवे पर गरम करके शूल-स्थान को सेकें।

• अजीर्णान्तक चूर्ण •

(४३) लाहौरी नमक ११ माशे, कालानोन ११ माशे, पोदीना १६ माशे, पीली हरड़ का बक्कल ३४ माशे, बहेड़े का बक्कल ३४ माशे, आमले ३४ माशे, पीपल ३४ माशे, कालीमिर्च ३४ माशे, सोंठ ३४ माशे, वच ३४ माशे, काला जीरा ३४ माशे, सफ़ेद ज़ीरा ३४ माशे, लाल नमक ३४ माशे, धनिया ३४ माशे, सौंफ ८० माशे, अजवायन ८० माशे—इन सब को कूट पीस कर कपड़-छन कर लो। इसके बाद इस चूर्ण को नीबू के रस में भिगो और घोट कर सुखा लो। सूख जाने पर इस मसाले को सूखे या हरे आमलों के रस में भिगो कर और मिला कर सुखा लो।

जब खूब सूख जाय, खरल में डाल, नीबू के रस के साथ घोट कर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को सवेरे-शाम या तीन-तीन घन्टे पर जल के साथ या अर्क सौंफ के साथ खाने से अजीर्ण नष्ट होता, भोजन पचता, कोठा या पक्वाशय बलवान होता, मेदा ताकतवर होता. अग्नि तेज़ होती और कोठे की कुपित वायु शान्त होती है।

• अजीर्णकण्टक रस •

(४४) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सींगिया विष—इन सबको १-१ तोला ले लो और कालीमिर्च का चूर्ण ३ तोले ले लो। पहले गन्धक और पारे की कजली कर लो। पीछे उसमें विष और कालीमिर्च का चूर्ण मिला कर खरल करो। शेष में कटेरी के फलों का स्वरस निकाल कर, इस चूर्ण में उसकी भावना दो। बस यही 'अजीर्णकण्टक रस' है। इसकी मात्रा १ से ३ रत्ती तक है। बलाबल देख कर मात्रा कम-ज़्यादा देनी चाहिये। यह रस तत्काल जठराग्नि को बढ़ाता, विशूचिका—हैजा, अजीर्ण आदि वात रोगों का नाश करता है। परीक्षित है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(४५) पीली हरड़ का बक्कल, सोंठ, पीपर, अनारदाना, सनाय, तुरबुद और मुनक्के बीज निकले हुए—ये सब १-१ तोला और कन्द ६ तोले ले कर, कूट-पीस कर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से पेट हल्का होता, दस्त साफ आता, बदहजमी या अजीर्ण नष्ट होता और भूख बढ़ती है। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल।

☛ **नोट**—ये गोलियाँ उस अजीर्ण में देनी चाहिये, जिसमें दस्त साफ न होता हो और पेट फूल रहा हो।

(४६) सनाय, पीली हरड़ का बक्कल और कालीमिर्च—ये तीनों ४-४ माशे और बड़े मुनक्के ४ तोले—इनको कूट-पीस कर जल में घोटो और ३-३ माशे की गोलियाँ बना लो। सवेरे ही, तीन गोलियाँ खा कर ऊपर से थोड़ा-सा जल पी लेने से अजीर्ण नष्ट होता, अफारा मिटता और क़ब्ज़ नष्ट होकर दस्त खुलासा होता है। तीन गोली या ६ माशे की मात्रा जवान को है। कम उम्र या कमज़ोर को एक या दो गोली देनी चाहिये।

(४७) भुना सुहागा ४ माशे, अजवायन ३॥ तोले, कालीमिर्च ४ तोले और एलुआ ५ तोले ४ माशे—इन सबको कूट-पीस और छान कर घीग्वार का रस डाल, खरल में घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। ये गोलियाँ परीक्षित हैं।

एक बार में ३ गोली देने से बादी का अजीर्ण नष्ट होता, दस्त साफ होता, पेट की पीड़ा शान्त होती, भूख लगती और बढ़ा हुआ पेट हल्का होता है। परीक्षित है।

(४८) काली ज़ीरी, राई और गुड़—तीनों बराबर-बराबर ले कर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली पानी के साथ निगल जाने से अजीर्ण नष्ट होता और खाया-पिया पचता है।

(४९) सोंठ २ तोले, भुना सुहागा १ तोला, पीली हरड़ की छाल १ तोला, सेंधानमक १ तोला, भुनी हींग १ तोला—इनको कूट-पीस-छान कर खरल में डालो और ऊपर से सहँजने की जड़ का रस या सहँजने के पत्तों का स्वरस निकाल कर डालते जाओ और घुटाई करो। घुट जाने पर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। जल के साथ एक गोली खाने से अजीर्ण नष्ट होता, भोजन पचता; भूख लगती, वायु शान्त होती, तिल्ली गलती और कोठे या पक्वाशय का अफारा मिटता है।

(५०) काला नमक २ तोले, खट्टा चूका २ तोले, अजवायन २ माशे, लौंग १ माशा और कालीमिर्च १ माशा—इन सबको कूट-छान कर और चूके में मिला कर गोलियाँ बना लो। भोजन के बाद १-२ गोली खाने से भोजन पचता, भूख लगती, कूल्हों और आँतों की पीड़ा तथा जलन्धर नष्ट होता है। वायु को पचाने में यह नुसख़ा अच्छा है।

(५१) लाहौरी नमक ४ माशे, इन्दरानी नोन ४ माशे, साँभर नमक ४ माशे, नमक नफती ४ माशे, पीली हरड़ की छाल ४ माशे, बहेड़े की छाल ४ माशे, आमले ४ माशे, सौंफ ४ माशे, अजवायन ४ माशे, काला ज़ीरा ६ माशे, सफेद ज़ीरा ६ माशे, शैतरज ६ माशे, सोंठ ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे, पीपल ६ माशे, भुना सुहागा ६ माशे, सिकी नौसादर ६ माशे, सनाय ६ माशे और भुनी हींग १ माशे—सारी दवाओं को कूट-पीस कर छान लो और खरल में डालो। पीछे २४ काग़ज़ी नीबुओं का रस निकाल-निकाल कर खरल में डालते जाओ और ऊपर के पिसे-छने चूर्ण को घोटते जाओ। जब चूर्ण घुट जाय और नीबुओं का सारा रस खप जाय, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नित्य खाने से अजीर्ण मिटता, भोजन पचता, वायु नष्ट होती और हैज़े में भी लाभ नजर नजर आता है।

(५२) अज़वायन को पहले दिन 'घीग्वार' के रस में एक पहर या ३ घण्टे तक भीगने दो। फिर उसमें से निकाल कर सुखा दो। सूख जाने पर उसे सात दिन

तक रोज़ नीबुओं के रस में भिगोओ और रोज़ सुखा दो। दूसरे दिन फिर भिगोओ और सुखा दो। इस तरह बराबर सात दिन तक करो। यह अजवायन वादी को नष्ट करके भोजन को पचाती है। बड़ी ही अच्छी चीज है। मात्रा १ माशे से २ माशे तक। अनुपान—जल।

(५३) सोंठ, कालीमिर्च और पीपल इनको बराबर-बराबर ले कर पीस-कूट-छान कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण के खाने से अजीर्ण नष्ट होता है, भोजन पचता और वायु शान्त होती है।

(५४) अगर वायु के कारण शूल चलते हों, या पेट में दर्द हो, (अजीर्ण में बहुधा ऐसा होता है) तो इनमें से कोई लेप करो—

(क) निर्मली को पानी में घिस कर कटोरी में रख लो और आग पर ज़रा गरम करके नाभि के चारों ओर लगा दो।

(ख) बालू को सिरके में मिला कर पोटली में बाँध लो और उस पोटली को तवे या आग पर तपा-तपा कर पेट पर सेंक करो।

(ग) चूहे की मेंगनी और सौंफ—बराबर-बराबर ले कर, पानी में पीस कर कटोरी में रख लो और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप पेट पर करो।

नोट—वायु-जनित अजीर्ण और पेट के दर्दों में इन लेपों से अवश्य शान्ति मिलेगी।

(५५) गुलक़न्द-गुलाब खिलाने से पक्वाशय बलवान होता, भोजन पचता, अजीर्ण नष्ट होता और दस्त खुलासा आता है।

नोट—अगर ख़ाली गुलक़न्द से पेट का सड़ा हुआ—बिना पचा मवाद न निकले, तो दो तोले गुलकन्द-गुलाब में १० या १५ दाने मुनक्के (बीज निकाल कर) मिला दो और १ पाव पानी में मिट्टी की हाँड़ी में पकाओ। जब २ छटाँक जल रह जाय, उतार कर मल-छान लो और रोगी को पिला दो। इससे अवश्य पेट का मवाद निकल कर पेट हल्का हो जायगा। पित्त के अजीर्ण में गुलक़न्द देने से अनेक बार अच्छा चमत्कार देखा है। अजीर्ण के जुलाब अपथ्य है। यह उपाय हमने क़िसी ख़ास हालत के लिये लिखा है।

(५६) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सेंधानोन को जल में पीस कर, पेट पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर के दिन में सो जाने से सब तरह के अजीर्ण नष्ट हो जाते हैं—**वृन्द**।

☛ नोट—'वैद्यविनोद' कर्त्ता कहते हैं, दिन में भोजन करने से पहले इस लेप को पेट पर लगाने से सब अजीर्ण नष्ट हो जाते हैं। विलम्बिका और अलसक में भी यह लेप काम देता है। इस लेप की हमने परीक्षा की है, पर हमें गरम करके निवाया-निवाया लेप करने से अधिक चमत्कार होता दीखा है।

(५७) एक भाग भुनी हींग और दो भाग पुराना गुड़ मिला कर बाजरे-जितनी गोलियाँ बना लो। एक या दो गोली छोटे बच्चे को देने से पेट का अफारा और शूल नष्ट होता है। परीक्षित है।

(५८) अजवायन और सेंधानोन फाँकने से अजीर्ण और पेट का दर्द फौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(५९) ज़रा-सी अजवायन माँ के दूध में पीस कर देने से बालक को कय, पेट दुखना और हरे-पीले दस्त आराम हो जाते हैं।

(६०) लौंगों (लौंग) को पानी में पीस, ज़रा-सा नमक मिला, गरम करके पीने से प्यास, अजीर्ण और जी मिचलाना आराम होता है।

(६१) धनिया और सोंठ का बनाया हुआ जल आम, अजीर्ण और शूल को नष्ट करता और वस्ति को शोधता है।

(६२) जिस बलवान पुरुष को घी या तेल प्रभृति चिकने पदार्थ पीने से अजीर्ण की शंका हो, वह भोजन के समय पहले सोंठ खाय और भोजन के बाद 'हरड़' खाय। इन दोनों का सेवन ऐसे अजीर्ण वाले को हितकारी है।

(६३) भोजन करने के बाद जिसका खाया हुआ पदार्थ, हृदय, कोठा और कंठ जलते रहें, उसे दाख, मिश्री और शहद के साथ 'हरड़' सेवन करनी चाहिये।

(६४) गाय के दही में, दही के बराबर पानी मिला कर, उसमें भुना हुआ जीरा, सेंधानोन और कालीमिर्च डाल कर पीने से अत्यन्त बढ़ा हुआ अजीर्ण भी नष्ठ होता है। परीक्षित है।

(६५) गाय की छाछ अजीर्ण का नाश करने में उत्तम चीज है।

(६६) गुड़ २ भाग और सोंठ १ भाग मिला कर, रोज़-रोज़ खाने से पेचिश, अजीर्ण और पीनस-रोग आराम होते हैं।

(६७) पेट में शुल-से चलते हों, तो १ तोला साँभरनोन १ पाव जल में औटा कर पिला दो।

(६८) भुनी हींग, भुना जीरा, सोंठ और सेंधा-नमक—सबको समान-समान ले कर पीस लो। इस चूर्ण को फाँकने और ऊपर से पानी पीने से अजीर्ण और पेट का दर्द मिटता है।

(६९) गुड़ में पिसी हुई लाल-मिर्च मिला कर खाने से पेट का दर्द आराम हो जाता है।

(७०) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, ककरकरा, सेंधानोन और नौसादर—सब को एक-एक तोला ला कर पीस-कूट कर छान लो। इसमें से ३ या ४ रत्ती चूर्ण, जल के साथ या बिना जल के फाँकने से भोजन निश्चय ही पच जाता है।

(७१) पाँचों नमक, त्रिफला, त्रिकुटा, पीपर, अजवायन, चीता, लौंग, दालचीनी, मस्तगी और बायविड़ंग—ये सब एक-एक तोले लो और इलायची ३ माशे, केसर ३ माशे और जावित्री ३ माशे लो। पीछे सबको कूट-पीस कर छान लो और खरल में डाल कर, ऊपर से सहँजने का रस दे-दे कर घोटो और बेर के समान गोलियाँ बना लो। जवान को दो-दो गोली दे कर, ऊपर से ज़रा-सा गरम जल पिला दो। इस नुसख़े से अजीर्ण तो बात-की-बात में भाग जाता है; साथ ही पेट का भारी-से-भारी दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७२) पाँचों नमक, आक की कली, त्रिफला, त्रिकुटा, और जवाख़ार—इन सबको कूट-पीस कर, खरल में डाल कर, ऊपर से आक के पत्तों का रस दे-दे कर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सन्ध्या समय एक गोली, गरम जल के साथ खाने से अग्नि दीप्त होती तथा अजीर्ण, पेट का दर्द, अफ़ारा और गुड़-गुड़ आवाज़ होना नष्ट होता है। परीक्षित है।

□ पथ्यापथ्य □

मन्दाग्नि और अजीर्ण में पथ्य

कफ से उत्पन्न मन्दाग्नि और अजीर्ण—आमाजीर्ण में, नमक मिले गरम जल से वमन करनी चाहिए। पित्त से उत्पन्न विदग्धाजीर्ण में हल्का जुलाब देना चाहिए और वातज अजीर्ण—विष्टब्ध-अजीर्ण—में स्वेदकर्म—बफ़ारे प्रभृति से काम लेना चाहिए। अथवा समय पर जैसी ज़रूरत हो, विचार कर काम करना चाहिए। अजीर्ण की पहली अवस्था में उपवास करना सबसे अच्छा उपाय है।

☞ **नोट**—जहाँ तक हो, जुलाब न देना ही अच्छा है। हाँ, एक दस्त साफ़ करा देना बुरा नहीं।

अजीर्ण में नीचे लिखे आहार और विहार पथ्य या हितकारी हैं—कसरत, कुश्ती, मिहनत, हल्के और अग्नि प्रदीप्त करने वाले भोजन, बहुत पुराने महीन लाल चावल, यवागू, लाजामंड—खीलों का माँड़, मूंग का रस, मदिरा, शाली चावल, बथुआ, छोटी मूली, लहसन, पुराना पेठा, नवीन केले की फली, सहँजना, करेला, परवल, बैंगन, ककोड़ा, ख़स का सुगन्धित जल, आमला, नारंगी, अनार, पापड़, अम्लवेत, जंभीरी नीबू, बिजौरा नीबू, शहद, माठा, काँजी, हींग, नमक, सोंठ, अजवायन, मिर्च, मेथी, धनिया, ज़ीरा, पान, गर्म जल (विदग्धाजीर्ण में शीतल जल), कड़वे और चरपरे रस, बारली, अरारूट और साबूदाना प्रभृति हल्के पदार्थ।

मोंठ की दाल में पिसी हुई सोंठ और भूनी हुई हींग डाल कर खाने से पेट का दर्द और अफ़ारा मिटता है।

भुनी हुई मोंठ नमक-मिर्च लगा कर खाने से शीघ्र ही पच जाती और रुचि बढ़ाती है।

पहली अवस्था में उपवास करने से, जब अजीर्ण के दोष शान्त हों, रोगी को साबूदाना, बारली या अरारूट पका कर दो। जब अग्नि बढ़े, सवेरे के भोजन में पुराने चावल का भात, परवल का साग, कच्चे केले की तरकारी, मसूर की दाल, माठा, काग़ज़ी नीबू और अदरख के टुकड़े नमक लगा कर दो। शाम के भोजन या ब्यालू में, यदि भूख लगी हो, तो साबूदाना या बारली अथवा और कोई हल्का खाना दो। अगर भूख लगने लगी हो और अजीर्ण न हो, तो आटे में 'अजवायन और नमक' डाल कर पतली-पतली पूरियाँ बना दो और साग तोरई या परवल का दो। रोगी से कह दो; कि भोजन में लोटे-के-लोटे जल न चढ़ा जाये बल्कि उतना ही जल पिये, जितने से गले का ग्रास उतर जाय। वह भी उस दशा में, जब पानी बिना सरे ही नहीं। इस रोग में जितना ही थोड़ा जल पिया जाय, उतना ही अच्छा। हो सके तो खाना खाने के घन्टे-दो-घन्टे या तीन घन्टे बाद थोड़ा-थोड़ा जल पिया जाय। सवेरे, तारों की छाया में, पेट-भर शीतल जल पीना अच्छा है।

• राजमण्ड •

चावलों के गरम मांड़ में हींग और संचरनोन मिला कर पिलाने से विषम और मन्द अग्नि पूर्ण रूप से बढ़ती है।

८-८ तोले मूंग या चावलों को ३२ तोले जल में पकाओ। जब यह पक जाय, माँड़ को पसा लो और उसे गाय के घी में भून लो। इसके बाद उसमें भुनी हींग, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपर और धनिया—इन सब का एक माशा चूर्ण मिला दो और खूब स्वच्छ चमकदार चाँदी या काँच के बर्तन में रख कर, एक चतुरा विलासिनी कामिनी के हाथ में दे कर रोगी के पास भेज दो। वह स्थान निर्जल, निर्वात और निर्जन हो; यानी वहाँ न तो कोई आदमी हो, न बाहरी हवा आती हो और न जल हो। वह स्त्री रोगी के पास जा कर, मधुर-मधुर कटाक्ष करती हुई, रोगी को उस अमृत-तुल्य माँड़ के बर्तन को प्रेम से दिखाये। अगर इस तरह राजमण्ड पिया जाय, तो वह अग्नि दीप्त करके तीनों दोषों को हरेगा। कहा है :—

किंचित्कटाक्षं सा दत्वा सुधातुल्यं प्रकाशयेत् ।
ततः पिवेद्राजमण्डं दोषत्रयविनाशनम् ॥

□ मन्दाग्नि और अजीर्ण में अपथ्य □

मन्दाग्नि और अजीर्ण में नीचे लिखे हुए पदार्थ या आहार-विहार अपथ्य या हानिकारक हैं :—

जुलाब लेना (पित्त के विदग्धाजीर्ण में हल्का जुलाब बुरा नहीं), मल, मूत्र और अधोवायु के वेगों को रोकना, भोजन-पर-भोजन करना, यानी बिना एक भोजन पचे दूसरा भोजन करना, रात में जागना, मैथुन करना, तेल लगाना, स्नान करना, कभी कम और कभी अधिक खाना, कभी किसी समय और कभी किसी समय भोजन करना और ख़ून निकालना।

दाल के अन्न—मूंग, मोंठ, उड़द, चना वगैरः, मछली, मांस, बहुत जल पीना, पोई का साग, लालमिर्च पिट्ठी के पदार्थ, घी में पके पदार्थ, तत्काल ब्याई गाय का दूध, विकृत दूध, या घी में पके हुए चावल, दूध, खोया, इमली आदि का पना या और पतले पदार्थ, ईख-रस, ताड़-फल की मींगी, नारियल, धनिया, नेत्रवाला, ख़राब या गन्दा पानी, अपनी प्रकृति के विरुद्ध अन्न और जल, भारी और देर में हज़म होने वाले पदार्थ, भूने-सेके पदार्थ, दाख—मुनक्का या अन्य दस्तावर पदार्थ।

उड़द मन्दाग्नि रोग में महा अपथ्य है; क्योंकि यह पहले दर्जे के गरिष्ठ हैं। उड़द की पिट्ठी के लड्डू ताक़तवर होते हैं, पर मन्दाग्नि वाले के लिए हानिकारक हैं। ज्वर, वात-प्रकृति वाले और मन्दाग्नि वाले को उड़द नुकसानमन्द और अफ़ारा करने वाली है।

□ प्रश्नोत्तरी □

■ प्र० १—जठराग्नि कितने प्रकार की होती हैं ?

□ उ०—चार प्रकार की।

■ प्र० २—चारों प्रकारों की जठराग्नियों के नाम बताओ।

□ उ०—(क) समाग्नि, (ख) विषमाग्नि, (ग) तीक्ष्णाग्नि, (घ) मन्दाग्नि।

■ प्र० ३—जठराग्नि सम, विषम, तीक्ष्ण और मन्द किन कारणों से होती है ?

□ उ०—(क) कफ ज़्यादा हो जाने से जठराग्नि मन्दी होती है।
(ख) वात के ज़्यादा होने से जठराग्नि विषम होती है।
(ग) पित्त के अधिक होने से जठराग्नि तीक्ष्ण होती है।
(घ) तीनों दोषों के समान रहने से जठराग्नि सम होती है।

■ प्र० ४—चारों प्रकार की अग्नियों में उत्तम अग्नि कौन-सी होती है ?

□ उ०—समाग्नि; क्योंकि समाग्नि वाले का खाया-पिया भोजन सुख से पच जाता है।

■ प्र० ५—विषमाग्नि होने से क्या होता है ?

□ उ०—विषमाग्नि वाले का भोजन कभी अच्छी तरह पच जाता है और कभी नहीं पचता तथा इस अग्नि वाले को अफ़ारा, शूल, पेट का भारी रहना, अतिसार और आँतों में गुड़-गुड़ आवाज़ होना प्रभृति विकार होते हैं।

■ प्र० ६—तीक्ष्णाग्नि होने से क्या होता है ?

□ उ०—तीक्ष्ण अग्नि वाला जो खाता है, वही सहज में पच जाता है। इसलिए अनेक वैद्य तीक्ष्णाग्नि को अच्छी कहते हैं।

■ प्र० ७—मन्दाग्नि होने से क्या होता है ?

□ उ०—मन्दाग्नि वाले को थोड़ा-सा खाना भी हज़म नहीं होता है। उसे क़य होती है, लार गिरती है, ग्लानि रहती है, सिर और पेट भारी रहते हैं।

■ प्र० ८—जिस अग्नि से भोजन पच जाय, उसे अच्छी कहते हैं। तीक्ष्ण अग्नि वाला जो खाता है वही आसानी से पच जाता है। फिर उसे बुरी क्यों कहते हैं ?

□ उ०—समान अग्नि वाला अगर भूख लगने पर भी थोड़ी देर नहीं खाता, तो वह अग्नि कुछ हानि नहीं करती। परन्तु तीक्ष्णाग्नि तो, समय पर खाना न मिलने से, पित्त के विकार पैदा कर देती है। इसी वजह से तीक्ष्ण अग्नि बुरी कही जाती है। कहा भी है—

तीक्ष्णः पित्तसमुत्थानात् विषमो वातहेतुकात् ।
तथा करोति मन्दाग्नि विकारान् कफसम्भवान् ॥

तीक्ष्णाग्नि पित्त के, विषमाग्नि वायु के और मन्दाग्नि कफ के विकार करती है।

■ प्र० ९—भस्मक रोग किसे कहते हैं?

□ उ०—जब भस्मक रोग हो जाता है, तब खाया-पिया क्षण-भर में भस्म हो जाता है और फिर भूख लगती है। अगर भूख के समय खाने को नहीं मिलता, तो तीक्ष्ण अग्नि शरीर के रस, रक्त आदि धातुओं को जलाती है। जिस रोग में रोगी वारम्बार खाय और भूखा ही भूखा चिल्लाये, वही भस्मक रोग है। कहा है—

क्षणद्भुक्तं भवेद्भस्म स रोगो भस्मकः स्मृतः ।

■ प्र० १०—भस्मक किन्हें होता है?

□ उ०—अत्यन्त तीक्ष्ण और रूखा अन्न खाने वालों को भस्मक रोग होता है।

■ प्र० ११—भस्मक रोग कैसे पैदा हो जाता है?

□ उ०—अत्यन्त तीक्ष्ण और रूखा अन्न खाने से कफ क्षीण हो जाता है, तब वात और पित्त बढ़ जाते हैं। उस समय जठराग्नि भी अत्यन्त बढ़ जाती है। बढ़ी हुई जठराग्नि, वायु के साथ मिल कर, खाने को क्षण-भर में भस्म कर देती है।

■ प्र० १२—भस्मक रोग के उपद्रव क्या हैं?

□ उ०—भस्मक रोग अग्नि के बहुत ही तेज़ होने से—प्यास, पसीना, दाह और बेहोशी वगैर: कर के, अन्न को तत्काल पचा कर, शीघ्र ही रस-रक्त आदि धातुओं को नष्ट करता है।

■ प्र० १३—अजीर्ण के कारण बताओ।

□ उ०—(क) बहुत पानी पीना। (ख) विषम भोजन करना। (ग) मल-मूत्रादि को रोकना। (घ) भूख में न खाना। (ङ) दिन में सोना। (च) रात में जागना। (छ) लोभ करना। (ज) क्रोध करना। (झ) दूसरों को देख कर कुढ़ना। (ञ) रोग होना। (ट) भय होना। (ठ) दीनता से पीड़ित होना।

■ प्र० १४—अजीर्ण का असल कारण क्या है?

□ उ०—बहुत खाना ही अजीर्ण का मुख्य कारण है। कहा है—

अनात्मवन्तः पशुवद् भुञ्जते येऽप्रमाणतः ।
रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि ॥

मूर्ख हैवानों की तरह अन्धाधुन्ध खाते हैं, उनके हैज़ा वगैर: रोगों का मूल कारण अजीर्ण होता है।

■ प्र० १५—क्या अजीर्ण और भी अनेक रोगों का कारण है ?

□ उ०—हाँ, अजीर्ण होने से रोगों का समूह पैदा होता है और अजीर्ण के नष्ट होने से वे सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

■ प्र० १६—अजीर्ण के सामान्य लक्षण क्या हैं ?

□ उ०—ग्लानि, भारीपन, विष्टम्भ, भ्रम, हवा का रुकना, मल का रुकना या दस्त लगना—ये ही अजीर्ण के सामान्य चिह्न हैं, यानी ये लक्षण हों, तो अजीर्ण समझो।

■ प्र० १७—अजीर्ण कितने प्रकार के होते हैं ?

□ उ०—(क) आमाजीर्ण, (ख) विदग्धाजीर्ण, (ग) विष्टब्धाजीर्ण, (घ) रसाजीर्ण, (ङ) दिनपाकी अजीर्ण, (च) नित्य अजीर्ण।

■ प्र० १८—छहों प्रकार के अजीर्णों के लक्षण कहो।

□ उ०—(क) आमाजीर्ण कफ की अधिकता से होता है। इस अजीर्ण में पेट और अंगों में भारीपन रहता है। क़य करने की इच्छा होती है। गालों और पलकों पर सूजन होती है। जो खाया जाता है, उसी की डकारें आती हैं।

(ख) विदग्धाजीर्ण पित्त से होता है। इसमें प्यास, मूर्च्छा, दाह, सन्ताप आदि व्यथायें होती हैं, पसीना आता है, धुएँ से मिली खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं।

(ग) विष्टब्धाजीर्ण वायु से होता है। इसमें दर्द, अफ़ारा, तोड़ने-छेदने की-सी पीड़ा. मल और गुदा को हवा का रुकना, शरीर का जकड़ना, शरीर में दर्द होना और बेहोशी—ये लक्षण होते हैं।

(घ) रस-शेष अजीर्ण भोजन के सार भाग के पकते-पकते कच्चा रह जाने से होता है; यानी भोजन के बने हुए रसों में पकते-पकते कुछ कच्चा रह जाता है, तब रस-शेष अजीर्ण होता है। इसमें हृदय के अशुद्ध रहने और भारीपन से अन्न पर अरुचि रहती है।

(ङ) दिनपाकी अजीर्ण में अच्छा तथा मात्रा और काल के विचार से किया हुआ भोजन भी उस दिन नहीं पचता है, बल्कि दूसरे दिन पचता है।

(च) नित्य अजीर्ण प्रतिदिन रहता है। किया हुआ भोजन जब तक नहीं पचता, उसे अजीर्ण कहते हैं। इसमें कोई विकार नहीं होता।

■ प्र० १९—अजीर्ण के उपद्रव क्या हैं ?

□ उ०—मूर्च्छा, बकवाद, क़य, लार गिरना, ग्लानि, भ्रम और मरण।

■ प्र० २०—नित्य या छठे अजीर्ण को पचाने के क्या उपाय हैं ?

☐ उ०—बाईं करवट लेटना, फिर दाहिनी ओर लेटना और फिर सीधे सोना, सुन्दर-सुन्दर चित्र आदि देखना, अच्छा गाना-बजाना या कथा-कहानी सुनना।

■ प्र० २१—क्या सवेरे के अजीर्ण में रात को भोजन कर सकते हैं ?

☐ उ०—हाँ, रात को अवश्य खाना चाहिए।

■ प्र० २२—अजीर्णों की चिकित्सा-सम्बन्धी कुछ मुख्य बातें बताओ।

☐ उ०—(क) आमाजीर्ण में वमन कराओ। (ख) विदग्धाजीर्ण में लंघन कराओ। (ग) विष्टब्धाजीर्ण में सेक वगैरः करके पसीने निकालो अथवा नमक मिला गरम जल पिलाओ। (घ) रस-शेष अजीर्ण में रोगी को सुला दो। इसमें दिन में सोना, लंघन करना और बिना हवा की जगह में रहना अच्छा है।

■ प्र० २३—आमाजीर्ण में वमन किस तरह करानी चाहिए ?

☐ उ०—आधा तोला बच और अन्दाज का सेंधानोन—दोनों को ३२ तोले गरम जल में मिला कर रोगी को पिलाओ और वमन कराओ। क़य होने से दूषित पदार्थ आमाशय से निकल जायगा और आमाजीर्ण मिट जायगा। अथवा

पीपल, सेंधानोन और बच को बराबर-बराबर ले कर, सिल पर पानी के साथ पीस कर, शीतल जल में घोल कर पी जाओ। इससे भी क़य हो कर आमाजीर्ण नष्ट हो जायगा। अथवा

धनिया और सोंठ का काढ़ा पीने से भी आमाजीर्ण शान्त हो जाता है।

■ प्र० २४—अगर सवेरे उठते ही अजीर्ण की शंका हो, तो क्या भोजन के समय भोजन न करना चाहिए ?

☐ उ०—अगर अजीर्ण की शंका हो, तो हरड़, सोंठ और सेंधानोन—इन तीनों को पीस कर पी लो और भोजन के समय वहम छोड़ कर खाना खाओ।

■ प्र० २५—अगर भोजन करते ही हृदय और कण्ठ में दाह हो, तो क्या करना चाहिए ?

☐ उ०—शहद और मिश्री में दाख और हरड़ मिला कर चाटो।

■ प्र० २६—क्या विदग्धाजीर्ण में शीतल जल पीना हितकारी है ?

☐ उ०—हाँ, शीतल जल पीने से विदग्ध भोजन पच जाता है, क्योंकि ठण्डेपन से पित्त नष्ट हो जाता और गीलेपन के कारण पचा हुआ भोजन नीचे गिर जाता है।

■ प्र० २७—सब तरह के अजीर्णों में आम तौर से क्या करना चाहिए ?

☐ उ०—हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर और सेंधानोन—इनको जल में पीस कर पेट पर लेप करो और दिन में सोओ।

■ प्र० २८—दिन में सोना किन-किन रोग-वालों को अच्छा है ?

□ उ०—दिन में ये सो सकते हैं—

(क) कसरत-कुश्ती करने वाले। (ख) स्त्री-प्रसंग करने वाले। (ग) राह चलने वाले। (घ) हाथी-घोड़े की सवारी करने वाले। (ङ) अतिसार वाले। (च) शूल-रोगी। (छ) श्वास-रोगी। (ज) प्यास-रोगी। (झ) हिचकी रोगी। (ञ) वात-पीड़ित। (ट) क्षीण, कफक्षीण-रोगी। (ठ) बूढ़े। (ड) अजीर्ण रोगी। (ढ) रात में जागने वाले। (ण) लंघन करने वाले। (त) शराबी।

नोट—उपरोक्त १६ प्रकार के मनुष्य दिन में इच्छानुसार सो सकते हैं।

■ प्र० २६—भस्मक-रोग किन-किन उपायों से नष्ट किया जाता है ?

□ उ०—भारी, चिकने, गाढ़े, शीतल और कड़े अन्न-पानों और पित्तनाशक जुलाब से 'भस्मक-रोग' शान्त होता है। अत्यन्त बढ़ी हुई अग्नि भैंस के दही, दूध, माठा और घी वगैरः से शान्त होती है। भस्मक-रोग में खीर खाना अच्छा है। इस रोग में पित्तनाशक दवाएँ देनी चाहिए और 'काली निशोथ' दूध में पका कर देनी चाहिए। इससे पित्त निकल जाता है। जितने भी मीठे, कफकारक और भारी पदार्थ हैं, उनका खाना और दिन में सोना 'भस्मक-रोग' में हितकारी है।

■ प्र० ३०—भस्मक-रोग-नाशक ग़रीबी उपाय बताओ।

□ उ०—(१) बेर की गुठली की भीतरी मींगी जल में घोल कर पीने से भस्मक-रोग जाता रहता है।

(२) गूलर की छाल, स्त्री के दूध में पीस कर पीने से भस्मक नष्ट होता है।

(३) सफ़ेद चावल और सफ़ेद कमल को पीस कर, बकरी के दूध मे खीर बना कर और उसमें घी मिला कर १२ दिन तक खाने से भस्मक-रोग जाता रहता है।

(४) चिरचिरे या ओंगे के बीजों को दूध में डाल कर खीर बनाने और खाने से घोर भस्मक-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

■ प्र० ३१—बारम्बार अजीर्ण होने पर भी, रोगी को थोड़ा भोजन करने की आज्ञा शास्त्र में क्यों है ?

□ उ०—इस ख़याल से, कि भोजन न मिलने से जठराग्नि कहीं रस को पचा कर शान्त न हो जाय; अर्थात् फिर अन्न पचाने में असमर्थ हो कर शरीर को नष्ट न कर दे।

□ अजीर्ण-नाशक नक्शा □

किस चीज़ के अजीर्ण में		क्या हितकारी है ?
कटहल के अजीर्ण में	....	केले की फली हितकारी है ।
केले ,,	....	घी खाना ,,
घी ,,	....	जँभीरी नीबू का रस या नीम की निबोलियों का रस या कालीमिर्च हितकारी है।
नारियल ,,	....	चावल ,,
आम ,,	....	दूध ,,
चिरौंजी ,,	....	हरड़ ,,
महुए ,,	....	नीम की निबौली घोट कर पीना या मोथे का काढ़ा ।
बेल ,,	....	नीम की निबौली घोट कर पीना ।
खिरनी ,,	....	,, ,,
फालसे ,,	....	,, ,,
खजूर ,,	....	नीम की निबौली घोट कर पीना या सोंठ तथा नागरमोथे का काढ़ा ।
कैथ ,,	....	नीम की निबौली घोट कर पीना ।
माठा ,;	....	नीम की निबौलियों का रस
सिंघाड़े ,,	....	सोंठ और नागरमोथा ।
गूलर ,,	....	सोंठ का बासी काढ़ा
पीपल ,,	....	,, ,,
पाखर ,,	....	,, ,,
चावल ,,	....	दूध पीना, या अजवायन और पीपल घोट कर पीना ।
दूध ,,	....	अजवायन और माठा
साँठी चावलों के अजीर्ण में	....	दही का पानी हितकारी है ।
ककड़ियों ,,	....	गेहूँ ,,
गेहूँ ,,	....	धतूरा ,,
चने ,,	....	,, ,,
उड़द ,,	....	,, ,,

किस चीज़ के अजीर्ण में	क्या हितकारी है ?
मटर के अजीर्ण में	धतूरा हितकारी है।
काँगनी ,, ...	मोथे का काढ़ा ,,
समा ,, ...	मोथे का काढ़ा या दही का तोड़ पीना
कमल-नाल ,, ...	मोथे का काढ़ा हितकारी है।
कसेरू ,, ...	,, ,,
मिश्री ,, ...	,, ,,
काँगनी ,, ...	दही का तोड़ पीना ,,
कुलथी ,, ...	,, ,,
दाल वाली वस्तु ,, ...	काँजी ,,
पिट्ठी के पदार्थ ,, ...	शीतल जल ,,
खिचड़ी ,, ...	सेंधानोन ,,
खीर ,, ...	मूँग का यूष ,,
बड़े के अजीर्ण में ,, ...	बेसवार यानी तैलादि चिकने पदार्थ। हल्दी, हींग, लौंग, मिर्च, इलायची, ज़ीरा, धनिया, अदरख, सोंठ, खटाई और सेंधा-नोन—ये सब बेसवार कहलाते हैं। इनके डालने से पदार्थों में ज़ायका बढ़ जाता है।
फेनी के अजीर्ण में	लौंग हितकारी है।
पापड़ ,, ...	सहँजने के बीज ,,
लड्डू ,, ...	पीपरामूल ,,
मालपूए ,, ...	पीपरामूल ,,
पूरी ,, ...	माँड़ ,,
मछली ,, ...	काँजी और कच्चा आम
केवल आग से पकी मछली	मांस खाना ,,
कछुए के अजीर्ण में	जवाखार ,,
कबूतर के मांस में ,, ...	काँस की जड़ ,,
तीतर के मांस ,, ...	,, ,,
नीलकण्ठ के मांस ,, ...	,, ,,

किस चीज़ के अजीर्ण में			क्या हितकारी है ?	
बथुआ के अजीर्ण में		....	खैरसार का काढ़ा हितकारी	है ।
सरसों	,,	....	,,	,,
पालक	,,	....	सफ़ेद सरसों का साग खाना	,,
करेला	,,	....	,,	,,
बैंगन	,,	....	,,	,,
मूली	,,	....	,,	,,
पोई	,,	....	,,	,,
लौकी	,,	....	,,	,,
चौलाई	,,	....	,,	,,
परवल	,,	....	,,	,,
गुड़	,,	....	ज़मीकन्द	,,
आलू	,,	....	चावलों का धोवन पीना	,,
नमक	,,	....	,,	,,
तेल	,,	....	काँजी	,,
गाय के घी	,,	....	गरम माँड	,,
भैंस के दूध	,,	....	सेंधानोन	,,
भैंस के दही	,,	....	शंख-चूर्ण	,,
गन्ने	,,	....	सोंठ, मिर्च, पीपर	,,
खाँड़	,,	....	सोंठ का चूर्ण	,,
चीनी	,,	....	सोंठ और मोथा	,,
ईख का रस	,,	....	अदरख का रस	,,
शराब	,,	....	गेरू और चन्दन घोट कर पीना	,,
शीतल वस्तु	,,	....	गरम वस्तु	,,
गरम पदार्थ	,,	....	शीतल पदार्थ	,,
नमकीन पदार्थ	,,	....	खटाई	,,
पानी	,,	....	सोने या चाँदी को सात बार आग में तपा कर उन्हीं से बुझाया जल पीना ।	
गरम पानी	,,	....	शहद और नागरमोथा	★

छठा अध्याय

विशूचिका-वर्णन

★

□ हैज़ा □

इस चराचर जगत का स्वामी नित-नयी सृष्टि की रचना करता और नित्य-का-नित्य ही उसका संहार भी करता रहता है। उसके सारे काम बाज़ीगर की तरह हैं, जो क्षण भर में अनेक चीज़ें तैयार कर देता और फिर क्षण-भर में ही उन्हें ग़ायब कर देता है। ईश्वर, सृष्टि के शोभा-रूप मनुष्य को एक ओर बनाता और दूसरी ओर उसे क्षण-भर में ही नष्ट कर देता है। भगवान की बात को भगवान ही जानें। न जाने उसने इसमें क्या भलाई सोच रखी है। सच तो यह है, उसने मनुष्य की बनावट में ही उसकी मृत्यु का सामान छिपा रखा है। मनुष्य-शरीर में ही अनन्त रोग छिपे हुए हैं। जब तक वे प्रकट नहीं होते तभी तक ख़ैर है।

मनुष्य के प्राण नाश करने वाले रोगों में कितने ही तो ऐसे हैं, जो उसे घुला-घुला कर, धीरे-धीरे मारते हैं और कितने ही ऐसे हैं, जो क्षण भर में ही उसको यम-सदन पहुँचा देते हैं। आयुर्वेदाचार्यों ने कहा है—

कामं प्राणहरा रोगा बहवो नतु ते तथा।
यथा श्वासश्च हिक्का च हरतः प्राणमाशवै॥

यों तो मनुष्य के प्राण-हरण करने वाले सन्निपात प्रभृति अनेक रोग हैं, पर श्वास और हिचकी रोग जितनी जल्दी मनुष्य के प्राण हरण करते हैं, उतनी जल्दी ज्वरादिक नहीं करते।

इसमें शक नहीं, दमा और हिचकी मनुष्य को बात करते-करते मार डालते हैं; पर हैज़ा भी उनसे कम नहीं। अनेकों बार आँखों से देखा है कि मनुष्य किसी काम से घर के बाहर गया; राह में ज़रा जी घबराया; एक क़य हुई और वहीं प्राण त्याग दिये।

हम तो हैज़े को श्वास और हिचकी से भी बुरा समझते हैं। वे बेचारे तो किसी-किसी के ही प्राण नष्ट करते हैं; घर-के-घर, गाँव-के-गाँव और नगर-के-नगरों का सफ़ाया नहीं करते। पर हैज़ा यदि कुटुम्ब में किसी एक को होता है, तो

सारे कुटुम्ब की ख़बर लेता है। कुटुम्ब ही नहीं, सारे गाँव और नगर का सत्यानाश कर देता है। जिन घरों में बीस-बीस, तीस-तीस और पचास-पचास आदमी होते हैं, उन घरों में सदा को ताले पड़ जाते हैं। कोई नाम-लेवा और पानी-देवा नहीं मिलता। इस तरह जब यह फैलता है, तब अच्छे-अच्छे रौनक़दार गुलज़ार शहरों क़सबों को जन-शून्य उजाड़ जंगल बना देता है। ऐसे भयंकर रोग को हमारे आयुर्वेद-आचार्यों ने अजीर्ण के अन्तर्गत लिखा है। हमारी समझ में यह ठीक नहीं जँचता, कि ऐसे ज़बर्दस्त रोग का वर्णन अजीर्ण में ही कर दिया जाय; इसी से हम इसके निदान, लक्षण और चिकित्सा प्रभृति अलग लिखते हैं।

आयुर्वेद में हैज़े का नाम 'विशूचिका' लिखा है। हिकमत वाले इसे हैज़ा, बंगाली उलाउठा और अँगरेज कॉलेरा (Cholera) कहते हैं। विशूचिका रोग की उत्पत्ति प्राय: अजीर्ण से होती है, और यह है भी अजीर्ण का भयंकर रूप। अब यहाँ यह सवाल उठता है, कि यदि हैज़ा अजीर्ण की ही एक किस्म या उसका एक प्रकार है, तो उसको 'विशूचिका', क्यों कहते हैं?

विशूचिका की निरुक्ति

जिस रोग में, अजीर्ण की वजह से, रोगी के शरीर में सुई-सी चुभें अथवा सूई चुभने की-सी पीड़ा हो, उसे वैद्य लोग, 'विशूचिका' कहते हैं। संस्कृत भाषा में सूई को 'सूची' कहते हैं। सूची शब्द से ही 'विशूचिका' शब्द बना है। सर्वसाधारण में विशूचिका रोग 'हैज़े' के नाम से मशहूर है।

विशूचिका किनको होता है?

विशूचिका या हैज़ा अक्सर उन लोगों को होता है, जो पेटू और भोजन-भट्ट होते हैं, जो खाने के लिये ही ज़िन्दगी को ज़िन्दगी समझते हैं और जो जानवरों की तरह ठूस-ठूस कर खाते हैं। आयुर्वेद में लिखा है :—

अनात्मवन्तः पशुवद् भुंजते येऽप्रमाणतः।
रोगानीकस्यते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि॥
न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः।
मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपः॥

जिन लोगों की इन्द्रियाँ उनके वश में नहीं हैं, जो जानवरों की तरह बे-प्रमाण—अनाप-शनाप, नाक तक ठूस-ठूस कर खाते हैं, पेट में हवा घूमने को भी जगह नहीं रखते, उनको अनेक रोग पैदा करने वाला 'अजीर्ण-रोग' होता है।

जो परिमित भोजन करते हैं, जो एक परिमाण तक खाते हैं, जो वैद्य-विद्या की आज्ञानुसार चलते हैं, जो मिथ्या आहार-विहार नहीं करते, उनको हरगिज विशूचिका—हैज़ा नहीं होता। लेकिन जो अज्ञानी और मूर्ख हैं, जिनकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, जिनकी जीभ क़ाबू में नहीं है, जो पेटू और भोजन के लालची हैं, उन्हें ही विशूचिका या हैज़ा होता है।

विशूचिका के और भी कारण

अनाप-शनाप वे-तादाद खाना तो विशूचिका का एक प्रधान कारण है ही, इसके सिवा विशूचिका के और भी नीचे लिखे कारण हैं।

बहुत ज़ोर से गरम हवा या लू चलना, क़ायदे या नियम से अधिक वर्षा होना, हवा का रुकना या उसमें नमी होना, गन्दी हवा और मैला पानी, मनुष्यों की घनी वस्ती में रहना, अपनी सामर्थ्य से अधिक मिहनत करना, कभी किसी समय खाना तो कभी किसी समय—वक्त-वे-वक्त भोजन करना, कभी कम खाना और कभी ज्यादा, एक भोजन पचे विना दूसरा भोजन कर लेना, रात के समय नियम से अधिक जागना, वासी-कूसी खा लेना, गरमी के मौसम के सिवा और मौसमों में दिन में सोना, नशा करना, भयभीत रहना और शोक या रंज करना, गर्म जगह से एकाएकी शीतल स्थान में प्रवेश करना, गरम देह या पसीनों में कहीं से चले आ कर फौरन ठण्डा पानी पी लेना, रात के समय और भी ज़्यादा खा लेना, मकान को गन्दा रखना, गन्दे आदमियों के पड़ोस में रहना, दूसरों को हैज़ा होते या हैज़े से मरते देख कर डरना और घवराना एवं हैजे के समय में तेज़ दस्तावर दवा या जुलाव लेना इत्यादि विशूचिका या हैज़े के कारण हैं।

जिसे असमय में अपने प्राण न गँवाने हों, जिसे अकाल मृत्यु से न मरना हो, जिसे दुर्लभ मनुष्य-चोले से कोई अच्छा काम करना हो, उसे इन सब कारणों से अवश्य वचना चाहिये। इन कारणों से वचने वालों को हैज़ा नहीं होता। जब हिन्दुस्तानी हैज़े से २० फी सदी मरते हैं तव अँगरेज कोई १ फी सदी मरते हैं, इसकी क्या वजह? वजह यही है कि अँगरेज क़ायदे से चलते हैं। वे अपने मकानों को साफ़-सुथरा रखते हैं, औटाया हुआ या फिल्टर से साफ किया हुआ जल पीते हैं, सदा समय पर भोजन करते और समय पर सोते-जागते है। एक खाना विना पचे दूसरा खाना नहीं खाते, भारी-से-भारी हानि होने पर भी सोच-फिक्र नहीं करते, मस्त रहते हैं, हमारी तरह वल से अधिक परिश्रम नहीं करते। डट कर ५-७ घण्टे

काम करते हैं, तो कुछ समय मनोरंजन में भी खर्च करते हैं। अँगरेज हो चाहे हिन्दुस्तानी—इस तरह नियम पर चलने वाले को सपने में भी हैज़ा नहीं होता।

विशूचिका के सामान्य लक्षण

विशूचिका या हैज़े के साधारण लक्षण दस्त और क़य होना है। दस्त और क़य होते ही साधारण लोग भी समझ लेते है, कि हैज़ा हुआ। पर अतिसार आदि के दस्तों और हैज़े के दस्तों में जो भेद है, उस पर अवश्य ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा भूल होने की सम्भावना है। हैज़े में पहले-पहल तो एक-दो दस्त और क़य उदरामय रोग के-से होते हैं; लेकिन पीछे दस्त पानी की तरह या चावलों के माँड़ की तरह होते हैं और वमन या क़य में पानी-ही-पानी निकलता और पेशाब बन्द हो जाता है। यह हैज़े की मोटी पहचान है।

विशूचिका के लक्षण

मूर्च्छा, पतले दस्त, क़य, प्यास, शूल, भ्रम, जाँघों में पीड़ा, जँभाई, दाह, देह का रंग और-का-और हो जाना, शरीर में कँपकँपी आना, हृदय या छाती में दर्द और मस्तक में वेदना—ये लक्षण विशूचिका रोग में होते हैं। इसी को साधारण लोग 'हैज़ा' या 'मरी' अथवा 'महामारी' कहते हैं,

हैज़े के आजकल नज़र आने वाले लक्षण

ऊपर विशूचिका के जो लक्षण लिखे हैं, वे सम्पूर्ण नहीं, अपूर्ण हैं। ये मुख्य-मुख्य लक्षण हैं। इनके सिवा और भी लक्षण होते हैं। ऊपर के लक्षणों में पेशाव बन्द होने की बात नहीं कही है; पर पेशाव बन्द हो जाना हैज़े की एक ख़ास पहचान है। इसी तरह और भी बहुत से लक्षण ख़ुलासा नहीं कहे हैं। अतः यहाँ हम आजकल नज़र आने वाले सभी लक्षण विस्तार से लिखते हैं। इनसे हैज़े के पहचानने में बड़ी भारी मदद मिलेगी; धोखा हरगिज़ नहीं होगा। हैज़े का रोग क्रम-क्रम से बढ़ता है, चाहे रोगी घण्टे-दो-घण्टे में मर जाय और चाहे एक दिन या दो-चार दिनों में। इसलिए, डाक्टरों की तरह हम भी इसका तीन दर्जों में विभाजन करते हैं :—

प्रथम अवस्था—हैज़े की पहली अवस्था में या रोग के उठते ही रोगी का जी मिचलाता और घबराता है। फिर बारम्बार पतले दस्त और क़य होने लगती हैं। आरम्भ के दो-एक दस्त मल-सहित होते हैं और वमन में खाया-पिया निकलता है। इसके बाद पानी की तरह क़य और चावल के माँड़ की तरह सफ़ेद-सफ़ेद पतले पानी से दस्त होते हैं। कभी-कभी लाल दस्त भी होते देखा जाता है।

दूसरी अवस्था—चन्द दस्त और क़य होने के बाद, पेट में दर्द होता, जीभ में काँटे पड़ जाते, प्यास का ज़ोर बढ़ता, पेशाब बन्द हो जाता, नाड़ी की गति—चाल मन्दी होने लगती और बेहोशी होने लगती है।

तीसरी अवस्था—यह अवस्था ही अन्तिम अवस्था है। हैज़े में क्रम-क्रम से एक-पर-एक लक्षण नजर आने लगते हैं। इस अवस्था में रोगी बेहोश हो जाता है, संज्ञा नष्ट हो जाती है, धोती खुली पड़ी रहती है, आदमियों को नहीं पहचानता, हाथ-पैर शीतल हो जाते हैं, आँखें बैठ जातीं या खड्डों में घुस जाती हैं, होंठ नीले हो जाते हैं, नाखून स्याह या नीले हो जाते हैं। नाक ऊँची हो जाती है, तशन्नुज या बाइँटे आने लगते हैं, हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं, अँगुलियों के पोरुवे सूख जाते हैं, हिचकियाँ चलने लगती हैं, पेशाब एकदम नही उतरता, प्यास बेतहाशा बढ़ जाती है, रोगी जल के गिलास को मुँह से लगाये रखना चाहता है, बिना जल मछली की तरह तड़पता है, आन-तान बकता या प्रलाप करता है, आवाज़ बैठ जाती है, किसी तरह कल नहीं पड़ती, बेचैनी अत्यन्त बढ़ जाती है, सिर घूमता है, चक्कर आते हैं, भीतर-ही-भीतर शरीर और कलेजा जल जाता है, सिर में भयानक वेदना होती है, तरह-तरह के मिथ्या रूप दीखते हैं, कानों में नाना प्रकार की आवाजें सुनाई देती हैं, दाँत बाहर निकल आते हैं, ज्वर होता है, शीतांग हो जाता है तथा शरीर—ख़ास कर हाथ, पैर, जीभ और साँस—ये ठण्डे हो जाते हैं।

☛ **नोट**—हमने कई बार देखा है कि हैज़े के अन्त में ज्वर चढ़ आता है, उसके बाद शीतांग हो जाता है और थोड़ी देर बाद रोगी चल बसता है। अन्त समय में बेहोश-से-बेहोश रोगी को होश हो जाता है; चाहे वह होश एकाध मिनट ही रहता है।

विशूचिका के उपद्रव

वंगसेन महोदय लिखते हैं—नींद न आना, बेकली, कँपकँपी, पेशाब का रुकना, पेशाब होते समय अत्यन्त वेदना होना और संज्ञा-नाश या बेहोशी—ये विशूचिका के उपद्रव हैं।

भावमिश्र लिखते हैं—ये पाँचों उपद्रव सभी रोगों में भयंकर होते हैं, लेकिन यदि विशूचिका में हों, तो और भी भयंकर हैं। भयंकर क्या—निश्चय ही प्राण-नाशक हैं।

दोषानुसार विशूचिका के लक्षण

अगर वायु की अधिकता होती है, तो दस्त और क़य कम होते हैं, किन्तु वायु-कोप के लक्षण होते हैं। जैसे शरीर में दर्द, पेट में शूल, नसों का सिकुड़ना और बाइँटे आना, मुँह सूखना, भौंर आना और बेहोशी प्रभृति।

अगर पित्त की अधिकता हो, तो दस्त बहुत होते हैं, प्यास बहुत लगती है—क्षण-भर भी जल बिना नहीं सरता, बेहोशी होती है रोगी बकवाद करता है, भीतर घोर जलन होती है और ज्वर चढ़ आता है।

अगर कफ की अधिकता होती है, तो क़य ज़्यादा होती हैं, शरीर भारी रहता है, सुस्ती छा जाती है, भोजन से अरुचि होती है और जाड़ा दे कर ज्वर चढ़ता है।

☛ **नोट**—वायु का कोप होने से दस्त और क़य कम होते हैं, पित्त के प्रकोप से दस्त ज़्यादा होते और कफ से क़य ज़्यादा होती है।

असाध्य विशूचिका के लक्षण

रोगी को बाइँटे ज़ोर से और जल्दी-जल्दी आते हों, शरीर में बल एकदम न रहा हो, भीतर से शरीर जला जाता हो और ऊपर से ठंड लगती हो, बेचैनी के मारे रोगी घबराता और सिर को इधर-उधर फिराता हो, पेशाब न आता हो, साँस रुक-रुक कर आती हो, प्यास के मारे गले में काँटे पड़ गए हों, गले में कफ घर-घर करता हो, हिचकियाँ आती हों, नाड़ी रुक-रुक कर चलती हो; हाथ, पैर, जीभ और साँस शीतल हो गये हों, आन-तान बकता हो—उसे होश न हो—अगर ये लक्षण हों, तो रोगी के बचने की उम्मीद न समझनी चाहिये। ये सब प्राणान्त होने के चिह्न हैं। इस अवस्था से शायद ही कोई भाग्यवान बचता है।

अगर उपरोक्त लक्षणों के सिवा रोगी के नाखून, दाँत और होंठ नीले या काले हो गये हों, आँखें भीतर घुस गई हों, होश ज़रा भी न हो, हाथ-पैरों के जोड़ ढीले पड़ गए हों, रोगी अपने पैरों पर खड़ा भी न हो सकता हो, तो समझना चाहिये कि रोगी हरगिज़ नहीं बचेगा। अगर कोई बच जाय, तो समझो कि उसने फिर से नया जन्म लिया है।

साध्य बिशूचिका के लक्षण

अगर रोगी को वमन कम होने लगें या बन्द हो जायँ, पित्त-मिला मल आये, पेट का दर्द मिट जाय, प्यास कम हो जाय, शरीर गरम बना रहे या पहले

से गरमी बढ़ती आये *, चेहरे की रंगत सुधर जाय, साँस ठीक चलने लगे, थोड़ी नींद आने लगे और तीन या चार दिन निकल जायँ, तो समझो कि रोगी अवश्य बच जायगा।

☛ **नोट**—बहुत से रोगी इस अवस्था में आने पर भी परिचारक की या घर के लोगों की बेवकूफ़ी से, अपथ्य सेवन करने से, आराम हो जाने की पूर्णाशा हो जाने पर भी मर गये। इसलिए, इस रोग में खूब सावधानी और चतुराई से काम लेना चाहिये।

विशूचिका के आक्रमण का समय

हैज़ा बहुधा पिछली रात को—रात के दो-तीन बजे—मनुष्य पर आक्रमण करता है। कोई-कोई वैद्य कहते हैं कि इसका हमला सवेरे और रात को होता है। हमने २, ३ या ४ बजे रात को इसका आरम्भ होते देखा है। सवेरे तो इस बात का अच्छी तरह निर्णय हो जाता है, कि हैज़ा हुआ। रात के २-३ बजे हकीम, वैद्य और डाक्टरों का मिलना और आना कठिन होता है; इसलिये बहुत से रोगी, सुचिकित्सक—अच्छे वैद्य—और अच्छी दवा के अभाव से बेमौत मरते हैं। सवेरा होते-होते, रोग अपना विकराल रूप धारण कर लेता है। उस समय दवा काम नहीं करती।

विशूचिका की अवधि

हैजे की कोई अवधि या मियाद नहीं। कोई घंटे-दो-घंटे में और कोई ३-४ घण्टे में मर जाता है। कोई १५-१६ घण्टे में और कोई दो-तीन दिनों में मर जाता है।

जीर्णाहार के लक्षण

उद्‌गार शुद्धिरुत्साहो वेगोत्सर्गो यथोचितः।
लघुता क्षुत्पिपासा च जीर्णाहारस्य लक्षणम्॥

शुद्ध डकार आना, उत्साह होना, मल-मूत्र आदि वेगों का यथोचित रूप से प्रवर्त्तन, शरीर हल्का होना और भूख-प्यास लगना—ये 'जीर्णाहार' के लक्षण हैं।

---

* हैज़े से शरीर का ताप बहुत कम हो जाता है। थर्मामीटर लगाने से ९६ डिगरी तक ताप पाया जाता है। किसी-किसी की छाती और पेशानी पर मरने से पहले कुछ अधिक ताप देखा जाता है।

एलोपैथिक (डाक्टरी) मत से हैजे के कारण और लक्षण

बहुत मिहनत करने, गन्दी जगह में रहने, मैली, खराब और सड़ी-बुसी चीजें खाने और अच्छी तरह नींद न आने की वजह से अक्सर हैज़ा हो जाता है। और भी लिखा है—

(१) घर मैला रखना, (२) मनुष्यों की भीड़ में बैठना, (३) गरिष्ट या भारी तथा बासी पदार्थ खाना, (४) बासी दूध, बासी रबड़ी, बासी खोआ, खट्टा दही, बासी मांस, बदबूदार घी खाना, (५) कच्चे और सड़े फल खाना (६) ककड़ी, खरबूजा आड़ू, काशीफल या कुम्हड़ा और टिंडे या ढेंढ़स खाना भी हैज़े के कारण हैं।

कॉलेरा विब्रिओ (Cholera Vibrio) नामक कीटाणु, जिनका आकार (,) कॉमा की तरह होता है, उपरोक्त कारणों में से एक या अधिक कारणों से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और नीचे लिखे लक्षण पैदा करते हैं—

• हैज़े की चार अवस्थायें •

डाक्टरों ने हैज़े की चार अवस्थायें मानी हैं—(१) आक्रमण-अवस्था। (२) वर्द्धमान अवस्था। (३) पतन-अवस्था (४) प्रतिक्रिया-अवस्था।

(१) आक्रमण-अवस्था

हैज़े के आक्रमण या हमले करने की हालत में शरीर शिथिल हो जाता है। पेट भारी मालूम होता है, मुख मलीन हो जाता है, जी घबराता है, सिर घूमता है, कानों में झन-झन-झन-झन आवाज़ होती है, दस्त और क़य होते हैं, पानी के समान कुछ मल-मिश्रित बदमैले-से दस्त होते हैं और शरीर कमज़ोर हो जाता है।

(२) वर्द्धमान-अवस्था

हैज़े के दूसरे दर्जे या रोग बढ़ने की अवस्था में, पहले दस्त होते हैं और पीछे क़य होती है। पहले पतले दस्त में कुछ मल मिला रहता है। इसके बाद बिलकुल पानी के समान पतला और मिक़दार में बहुत-सा दस्त होता है। कभी-कभी झागदार दस्त भी होते हैं। पेट में काँटा चुभने की-सी पीड़ा होती है। दस्त में कुछ देर बाद देखने से अन्न के छोटे-छोटे टुकड़े दीखते हैं।

(३) पतन-अवस्था

इस तीसरी अवस्था को 'पतन-अवस्था' इसलिए कहते हैं, कि इस अवस्था में रोगी का पतन हो जाता है, वह मुर्दे की तरह गिर पड़ता और मुर्दे-जैसा ही दीखने लगता है। उसमें उठने की सामार्थ्य नहीं रहती, बीच-बीच में कपड़ों को फेंकता, शीतल जल और शीतल हवा की इच्छा करता है। कभी-कभी तकलीफ़ों को न सह सकने के कारण चीख़ उठता है। उसे साँस लेने-छोड़ने में कष्ट मालूम होता है।

मुख सिकुड़ कर फीका-सा हो जाता है, आँखें आँखों के खड्डों में घुस जाती हैं, नीचे के पलक नहीं चलते, माथे या पेशानी पर कुछ पसीना चमचमाता है, कभी-कभी सारे शरीर में पसीना आ जाता है। रोगी आदमियों से वेपरवाही से बातें करता है। हैज़े वाले रोगी का ज्ञान मरण-समय तक नष्ट नहीं होता। इस अवस्था में क़य और दस्त बन्द हो जाते हैं। अनजान या अनाड़ी समझ लेते हैं कि रोगी बच जायगा; पर इस अवस्था में दस्त और क़य बन्द हो जाने पर भी, रोगी मर जाता है। थर्मामीटर से जाँच करने पर ६० से ६६ डिग्री तक ताप या गरमी पाई जाती है।

नोट—यूरोपियन डॉक्टर कहते हैं—हैज़ा शुरू होते ही, पहले पतला दस्त विना किसी तरह के कष्ट के होता है। आरम्भ में मल विकृत रंग का उतरता है; परन्तु पीछे चावल के धोवन-जैसा उतरता है। इसके बाद शीघ्र ही वमन—क़य और ऐंठनी जारी हो जाती हैं। अन्त में पेशाब बन्द हो कर रोगी मर जाता है।

(४) प्रतिक्रिया-अवस्था

प्रतिक्रिया-अवस्था उस अवस्था को कहते हैं, जिसमें इलाज होता जाता है और रोग कम होता जाता है।

• होमियोपैथी से हैजे के लक्षण •

इस रोग में मुँह की रौनक़ मारी जाती है, चेहरा खराब हो जाता है, प्यास बहुत लगती है जीभ सुर्ख और मैली रहती है, आँखें लाल हो जाती हैं, सिर में दर्द होता है और नींद आने की इच्छा होती है।

नोट—वैद्यक, ऐलोपैथी और होमियोपैथी में हैज़े के जो-जो लक्षण लिखे हैं, प्रायः वे सभी हैज़े के रोगियों में देखे जाते हैं। इसी से हमने तीनों मतों से हैज़े के लक्षण लिखे हैं। 'नेत्रों का लाल होना' न वैद्यक में लिखा है और न ऐलोपैथी-चिकित्सा-शास्त्र में। पर हैज़े के रोगी के नेत्र सुर्ख़ अवश्य हो जाते हैं। नेत्रों के लाल हो जाने की बात केवल होमियोपैथी वालों ने ही लिखी है। चिकित्सक को सभी लक्षणों का ज्ञान होना चाहिये। चिकित्सा में रोग के निदान और लक्षणों द्वारा रोग की परीक्षा करना परमावश्यक है। जो वैद्य रोग की ठीक परीक्षा नहीं कर सकता, मर्ज़ की तशख़ीश नहीं कर सकता, वह कभी-कभी ही रोगी को बचा सकता है। 'ऐसे मूढ' वैद्य रोगियों को बेमौत मारा करता हूँ।

• हिकमत से हैज़े के कारण और लक्षण •

इस रोग को 'हैज़ा' और 'ववा' भी कहते हैं। इस रोग में पतले दस्त होते और क़य बहुत आती हैं, वेहोशी होती और पेट में पीड़ा होती है, हाथ-पैरों में बाइँटे आते हैं, प्यास बहुत लगती है और पेशाब नहीं होता।

इस रोग के कारण फल-मूल खाना, सरदी गरमी में पैर भिगोना, बरसात के मौसम में पसीनों में शीतल हवा लगना, मिहनत करके पसीनों में शीतल जल पीना, ख़राब हवा लगना, बदबूदार जगह में रहना, भारी और ज़्यादा भोजन करना, रुचि के बिना खाना आदि हैं। यह छुतहा-रोग है। एक से दूसरे को, दूसरे से तीसरे और तीसरे से चौथे को लगता और इसी तरह फैलता है। इसमें वातादि दोषों का निश्चय करके इलाज करना चाहिये। अगर रोग वायु से हो तो वायु-नाशक; पित्त से हो तो पित्तनाशक; और कफ से हो, तो कफनाशक औषधि देनी चाहिये।

'इलाजुलगुर्बा' में लिखा है—जब भोजन कोठे में जा कर उपद्रव करने वाला हो जाय, तो उसे वमन और दस्त करा कर निकाल डालो और जब तक दूषित मल नीचे या ऊपर से निकल न जाय, शीघ्र ही दस्त और क़य बन्द न करो। जिस रोगी को प्यास बहुत हो, स्वभाव या मिज़ाज गरम हो, अथवा हरी-हरी क़य होती हों, उसे भूल कर भी गरम दवा न दो। उसे पानी के बदले सौंफ या गुलाब अथवा मकोय का अर्क़ पिलाओ। इस रोग में सबसे अच्छा उपाय सोना या लंघन करना है।

□ हैज़े की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें □

(१) हैज़े की औषधियाँ पहले से ही तैयार रखो। इस रोग में रोगी को देख कर दवा तैयार करने की फ़िक्र करना नादानी है; क्योंकि यह रोग हर क्षण और हर मिनट बढ़ता है। जितनी ही देर होगी, उतनी ही कठिनाई होगी।

(२) रोगी को, रोग के आरम्भ में ही, दस्त रोकने वाली तेज़ दवा देना उचित नहीं। ऐसा करने से अगर दस्त बन्द हो भी जाते हैं, तो थोड़ी ही देर बाद पहले से भी अधिक ज़ोर से होने लगते हैं। दस्त बन्द होते हैं, तो क़य बढ़ जाती हैं और पेट पर अफारा आ जाता है। इसीलिये दस्त रोकने वाली दवा पहले-पहल थोड़ी-थोड़ी या हल्की मात्रा में देनी चाहिये।

(३) मिथ्या आहार-विहार अथवा कर्म, अर्थ और काल के मिथ्या, हीन और अतियोग से अजीर्ण या बदहज़मी होती है। अजीर्ण से बहुधा विशूचिका होती है। अजीर्ण से पैदा हुए हैज़े में पहले पाचक और किसी क़दर धारक या क़ाबिज दवा देनी चाहिये।

(४) रोगी को रोग-नाशक प्रधान औषधि तो देते ही रहो; पर साथ-ही-साथ उसके प्यास, बाइँटे, वमन और पेशाब का नाश करने वाले ऊपरी उपाय भी

करते रहो। इस तरह रोगी की पीड़ा कम हो जाती है और वह बच भी जाता है।

(५) अगर नाड़ी एकदम मन्दी हो जाय, स्थान पर न मिले, हाथ-पैर आदि शीतल हो जायँ, तो 'विषगर्भ तैल' में तारपीन का तेल मिला कर मालिश करने, वमन मिटाने के लिये पेट पर राई प्रभृति लगाने, प्यास के लिये सौंफ और पोदीने प्रभृति का जल पिलाने और पेडू पर कोई लेप लगा कर पेशाब खोलने की चेष्टा अवश्य करो। हमने देखा है कि कितने ही रोगी सब तरह पर आराम होने पर आ गये, सभी सुलक्षण नज़र आने लगे; पर रोगी को पेशाब न हुआ और वैद्यजी ने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया—बस एक पेशाब खोलने में देर करने से, अच्छा होने वाला रोगी मर गया। हम हैज़े के प्रत्येक उपद्रव के उपाय आगे लिखेंगे। अगर चिकित्सक ठीक हमारे लेखानुसार काम करेंगे, तो निश्चय ही वे १०० में ६० रोगियों को बचा सकेंगे। हमने ज्वर, हैज़े, उपदंश और सूज़ाक के ६० फी सदी रोगी, जिनको अच्छे-अच्छे नामी डॉक्टरों ने असाध्य कह कर त्याग दिया था, आराम किये हैं। हमने पूर्व अनुभव की सभी बातें अपने पाठकों को बताने में ज़रा भी संकोच या कपट से काम नहीं लिया है और न आगे लेंगे।

(६) इलाज और दवा की ओर ही ध्यान मत रखो। रोगी का घर, रोगी के बिछौने प्रभृति मैले हों, तो वैद्य को मुनासिब है कि उन्हें बदलवा दे, घर को साफ़ रखाये और घर में गुग्गुल, लोबान या कपूर और गन्धक अथवा अन्य वायु-शोधक चीज़ों की धूनी दिलाये। रोगी और रोगी के घर वालों को कपूर हाथ में रखने और सूँघने की सलाह दे। घर में कपूर के चिराग़ जलवायें, बशर्ते कि रोगी धनी हो। पानी औटा कर देने की राय तो ग़रीब-अमीर सभी को देनी चाहिये; क्योंकि विशेष कर कीड़ों से युक्त जल या गन्दे जल से हैज़ा होता है। अगर गन्दा जल न औटवाया जायगा, यों ही बिना औटाये-छाने पिलाया जायगा, तो हज़ार अच्छी दवा देने पर भी रोगी आराम न होगा। पानी में हैज़े के कीड़े होंगे और रोगी उसी पानी को पियेगा, तो कीड़े पेट में जायँगे और लाखों बच्चे देंगे; फिर रोगी दवा से कैसे बच सकेगा? दवा से पथ्य उत्तम है। अनेक बार बिना दवा के, केवल पथ्य-सेवन से, रोगी आराम हो गये हैं। पर दवा-पर-दवा देने और अपथ्य-सेवन से रोगी मर गये हैं। अतः वैद्य को रोगी के जल और खाने-पीने की अन्य चीज़ों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

(७) रोगी को बिछौने पर ही रखो। उसे सर्दी मत लगने दो। रोगी का शरीर गरम रहे, इसका ख़ूब ध्यान रखो। बोतलों में गरम पानी भर कर उन्हें दोनों पैरों के बीच में रखो; पर पानी इतना गरम न हो कि पैर जलने लगें।

(८) हैज़े के रोगी को, जहाँ तक हो सके, पानी बहुत कम देने की व्यवस्था करनी चाहिये। इस रोग में पानी न देना अच्छा है। पर यदि जल बिना रोगी के प्राण-नाश की सम्भावना हो, रोगी जल बिना घबराया जाता हो, तो घूँट-घूँट जल पिलाना चाहिये। इस रोग में कोई ऐसा जल दवाओं से बनवा देना चाहिये, जिसे रोगी पीता रहे और उससे उसकी प्यास हर क्षण कम होती रहे। डॉक्टरी की एक पुस्तक में सेर का छटाँक रहा जल देने की बात लिखी है। इस रोग की अच्छी दवा आजकल 'अर्क़-कपूर' मानी जाती है। अर्क़-कपूर से बहुत से रोगी बचते भी हैं; पर अर्क़-कपूर १०० में ६० रोगियों को आराम कर दे, यह नहीं देखा। अर्क़-कपूर हैज़े की उत्तम औषधि है, पर इससे भी अच्छी औषधियाँ और हैं। हम अर्क़-कपूर और हैज़ा का नाश करने वाली अन्य दवाओं के बनाने और सेवन करने की विधि आगे लिखेंगे। हाँ, असल बात तो कहना भूल ही गये। वह बात यह है कि अर्क़-कपूर जिसे भी दिया, उसे एक घण्टे तक जल पीने को न देना चाहिये।

(९) रोगी के घर वालों को हैज़े के प्रकोप से बचने के उपाय बता दो; क्योंकि यह बीमारी एक से दूसरे को फौरन होती है। अगर आप उन्हें हैज़े से बचने के उपाय न बतायेंगे, तो वे भी बीमार हो जायेंगे और आपके रोगी की सेवा-सुश्रूषा कौन करेगा? उनसे कह दो कि तुम 'कपूर' को हरदम पास रखो, क्षण भर को भी उसे मत छोड़ो, और सूँघते रहो। घर में लोबान या गन्धक की धूनी दो। ककड़ी, खरबूजे, आड़ू, काशीफल और ढेंढ़स घर में भी न लाओ। भीड़-भाड़ और गरमी में न बैठो, हैज़े से डरो मत, बासी पदार्थ भूल कर भी न खाओ। हींग, पोदीना, कालीमिर्च या पिपरमिन्ट रोज़ खाओ। पीने का पानी उबाल कर छान लो और कोरी हाँड़ी में भर दो। उसमें एक बूँद 'सुधाधारा' टपका दो। अगर भाँग पीने की आदत हो, तो २-४ रत्ती धुली भाँग, सौंफ, कासनी, गुलाब के फूल, कालीमिर्च, इलायची, खीरे-ककड़ी के छिले बीज और पोस्त के बीज—सबको मिला कर सिल पर घोटो और पानी में छान कर पी जाओ। परीक्षा कर के देखा है कि हैज़े के मौसम में बहुत ही कम, रत्ती-दो रत्ती भाँग, ऊपर लिखा मसाला डाल पीने वाले को हैज़ा नहीं होता; पर अधिक भाँग पीने वाले को रोग का भय है।

(१०) अगर रोगी का रोग बढ़ता ही जाय, तो आम रोग से बढ़ी हुई विशूचिका में दोनों पैरों की एड़ियों को दाग देना अच्छा है। 'वैद्यविनोद' में लिखा है :—

अथालसे वान्तिरति प्रशस्ता विशूचिकायां किल पार्ष्णिदाहः
उपोषणं सैंधवकुष्टचक्रै स्तैलान्वितैर्मर्दनमत्र शस्तमः

अलसक रोग में वमन कराना और विशूचिका में लोहे की शलाका से पीठ अथवा पाँव के तलवों में दाह देना या दागना, लंघन कराना एवं कूट, सेंधानोन और तेल की मालिश कराना अच्छा है।

विशूच्यामतिवृद्धायां पाष्ण्योंं पदहिः शस्यते ।
तद्दिने लंघन कार्यं विरक्तवदुपाचरेत् ॥

बहुत बढ़ी विशूचिका में आग से एड़ी में दाग देना तथा लंघन और विरे-चन—जुलाब—करना चाहिये।

(११) अजीर्ण की हालत में, पेट में तेज़ी से दर्द होने पर भी, वैद्य को शूल या दर्द-नाशक औषधियाँ न देनी चाहिये; क्योंकि जब अग्नि दोषों से ढक जाती है, तब वह दोष-नाशक औषधियों के पचाने की सामर्थ्य नहीं रखती।

(१२) जिस समय रोग तेजी पर हो, रोगी को उपवास या लंघन कराओ। उसे कुछ भी खाने को देना और जान-बूझ कर मारना एक ही बात है; क्योंकि कुपथ्य से रोग फिर हमला करता है और तब आराम होना असम्भव हो जाता है। जब रोग कम हो जाय, रोगी को भूख लगे, तब पानी में पकाया साबूदाना, अरारूट अथवा अतिसार में कही यवागू देनी चाहिये। जब बिल्कुल ही आराम हो जाय, रोग के चिन्ह क़तई न रहे, रोगी 'भूखा मरा, भूखा मरा' चिल्लाये, तब रोगी को पुराने चावलों का माँड़ देना चहिये। जब रोगी में पचाने की शक्ति हो जाय, तब पुराने चावलों का भात, परवल का साग और मिश्री देना चाहिये। पूरा बल आ जाने पर पाँच या छह दिन बाद, गरम जल से स्नान कराना चाहिये। जब तक पूरी ताक़त न आ जाय, तब तक घी या घी में पके पदार्थ तथा भुने और सिके पदार्थ न देने चाहिये। पूर्ण आरोग्य लाभ किये बिना, रोगी को स्नान और मैथुन से दूर रखना चाहिये तथा धूप में न फिरने देना चाहिये। मिहनत या दौड़-धूप की मनाही कर देनी चाहिये। क्योंकि हैज़े का मुख्य कारण अजीर्ण है, अतः रोगी को फिर अजीर्ण होने से बचना चाहिये।

(१३) हैज़े की दवाएँ वहुत तेज़ होती हैं, अतः रोगी की उम्र, वलावल, प्रकृति और काल प्रभृति का विचार करके औषधि और मात्रा तजवीज़ करनी चाहिए। ऐसा न हो कि उल्टे लेने के देने पड़ जायँ। अगर रोग के वल से कम मात्रा दी जायगी, तो कोई नया उपद्रव खड़ा हो कर, हैज़े से न मरता रोगी भी आपकी भूल से मर जायगा।

(१४) लिख आये हैं कि वायु की विशूचिका में दस्त और क़य ज़्यादा होते हैं। हकीम लोग कहते हैं, पित्त या गरमी की वजह से हुए हैज़े में हरी-हरी क़य होती है। उस दशा में गरम दवा न देनी चाहिए। हैज़े की चिकित्सा में दोषों के प्रकोप या अधिकता का निश्चय करके चिकित्सा करनी चाहिए।

(१५) अगर डकारें शुद्ध आती हों, शरीर और चित्त में उत्साह हो, भोजन के अनुसार ठीक पाख़ाना-पेशाव होते हों, शरीर हल्का हो, भूख और प्यास लगती हो, समझ लो कि रोगी को आहार पच गया। ये ही जीर्णहार के लक्षण हैं। वैद्य को रोगी की सव हालतों की ठीक परीक्षा करनी चाहिए और इन वातों का विचार करके ही खान-पान और स्नान प्रभृति की व्यवस्था करनी चाहिए।

(१६) वंगसेन कहते हैं, कि सर्व लक्षणों वाली विशूचिका में नमक और गरम जल के द्वारा वमन करानी चाहिए।

☛ नोट—शहद में नमक और गरम जल मिला कर पिलाने से भी वमन हो जाती है। दो तोले शहद और दो तोले साँभरनोन, आधा सेर गरम पानी में मिला कर पिला देने से वमन हो जाती है। इस योग से अपने आप ही वमन हो जाती है। अगर न हो, तो गले में अँगुली डालने से हो जायगी।

'इलाजुलगुर्वा' के लेखक महाशय भी लिखते हैं, कि जो भोजन कोठे में उपद्रव-कारक हो जाय, उसे क़य और दस्तों के द्वारा निकाल देना चाहिए और जव तक दूषित अन्न निकल न जाय, क़य और दस्त वन्द न करने चाहिए।

चरकाचार्य ने भी विशूचिका में दशमूल के काढ़े में अरण्डी का तेल और चूने का पानी मिला कर हैज़े वाले को देने की आज्ञा दी है। यह आज्ञा इसलिए दी है, कि ज़हरीला माद्दा निश्चय ही निकल जाय।

वंगसेन लिखते हैं जव तक मनुष्यों के हृदयों में दुष्ट अन्न—ख़राव या रोग-कारण अन्न का रस रहता है, तव तक मर्म-स्थानों में ज़हर पीने के समान पीड़ा होता रहती है।

आप कहते हैं, बहुत ही बढ़ी हुई विशूचिका में अग्नि के द्वारा एड़ी में दाग देना चाहिये और लंघन तथा विरेचन कराने चाहिए, यानी उपवास कराना और जुलाब देना चाहिए।

(१७) शीतल या कच्चा जल हैज़े वाले को भूल कर भी मत पिलाओ। औटाया हुआ जल, रोगी माँगे तभी दो। लेकिन अगर क़य बहुत होती हों, तो पानी बहुत ही थोड़ा-थोड़ा—कोई एक-एक रुपये भर दो।

☛ नोट—हैज़ा फैलने पर जल की सफ़ाई पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। जल को ख़ूब उबालना चाहिए। खाली गरम करने से कोई लाभ नहीं। रोगी को तो गरम जल देना ही चाहिए; पर रोगी के सिवाय अन्य लोगों को भी ख़ूब गरम किया हुआ जल पीना चाहिए।

□ विशूचिका-नाशक नुसखे □

● अर्क-कपूर ●

१—रेक्टिफाइयड स्पिरिट एलोपैथिक नं० ९० Rectified Spirit Allopathic No. 90	२४ औंस
२—कैम्फ़र (कपूर)	५ औंस
३—आयल मैन्थल पिपरेटा (Oil Menth. Pepp.)	२ औंस

पहले कपूर के छोटे-छोटे टुकड़े करो और उन्हें स्पिरिट की बोतल में डाल दो। कपूर को स्पिरिट की बोतलों में डालने से पहले, स्पिरिट को दो बोतलों में कर लो और दोनों बोतलों में आधा-आधा कपूर डाल दो। पीछे बोतलों को काग से बन्द करके ख़ूब हिलाओ। जब कपूर गल कर एक दिल हो जाय, तब उसमें नं० ३ आयल मेन्थल पिपरेटा, यानी पिपरमिन्ट का तेल मिला दो। पीछे दोनों बोतलों की दवा को एक में मिला लो। यही असली 'अर्क-कपूर' तैयार हो गया। आज कल जितने 'अर्क-कपूर' मिलते हैं, उन सबसे यह अच्छा है। उनमें पिपरमिन्ट का तेल नहीं डाला जाता।

अगर व्यापार करना हो, तो छोटी-छोटी शीशियों में इसे भर कर लेबिल लगा दो। यह ख़ूब सस्ता पड़ता है। इसके इस्तेमाल से हैज़ा गरमी के दस्त, वमन, दाँतों का दर्द, विषैले जानवरों का विष फौरन आराम होता है। हैज़े में तो यह अक्सीर का काम करता है।

हैज़ा शुरू होते ही रोगी को अर्क-कपूर दो। भगवान चाहेगा और उसकी आयु होगी, तो निस्सन्देह आराम होगा।

ज़वान आदमी को दस्त या क़य शुरू होते ही १० बूँद अर्क-कपूर, बताशे में छेद करके, उसी में टपका कर खिला दो। जब तक दस्त और क़य बन्द न हों, तब तक घण्टे-घण्टे, दो-दो घण्टे या तीन-तीन घण्टे पर देते रहो। ज़रूरत होने से पाव-पाव घण्टे या आध-आध घण्टे में भी दे सकते हो। ज्यों-ज्यों रोग घटने लगे, दवा भी देर-देर से दो। १२-१४ साल के बालक को ४-५ बूँद दवा दो। बहुत छोटे बालक को २-३ बूँद दो। इसकी मात्रा २ से १० बूँद तक है। स्त्रियों को भी कम मात्रा देनी चाहिए।

गरमी के पतले दस्तों में भी यह दवा इसी तरह दी जाती है। रोग की कमी-वेशी के अनुसार मात्रा भी कम-ज्यादा देनी चाहिए।

अगर दाँत या दाढ़ में दर्द हो, तो 'अर्क-कपूर' को रूई के फाहे में लगा कर दाँत या दाढ़ के नीचे रख कर मुँह नीचा कर दो; भयानक दन्त-पीड़ा भी ३-४ बार के इस्तेमाल से आराम हो जायगी।

अगर कोई ज़हरीला जानवर काट खाय, तो फौरन काटे हुए स्थान पर अर्क-कपूर' लगाओ। दो-तीन दफ़ा के लगाने से बिल्कुल आराम हो जायगा।

'अर्क-कपूर' खिला कर रोगी को कम-से-कम आधा घण्टा जल मत पिलाओ। पीछे थोड़ा-थोड़ा जल दे सकते हो।

• सुधाधारा •

(२) चार या पाँच तोले कपूर ला कर, केले की जड़ के पानी में खरल कर के सुखा लो। पीछे उसे अजवायन के अर्क़ में खरल करके सुखा लो। शेष में उसमें ६ माशे कपूर मिला कर साफ शीशी में भर दो और ऊपर से ६ माशे अजवायन का सत्त और इतने ही पिपरमिन्ट के फूल भी उसमें डाल दो। शेष में, काग लगा कर शीशी को रख दो। थोड़ी देर में तीनों चीज़ें गल कर पानी-सा हो जायगा। इसमें से चार या पाँच बूँद अर्क पानी में मिला कर देने से पेट का दर्द, अजीर्ण, बदहज़मी और हैज़ा निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। इसमें से चन्द बूँदें बिच्छू के डंक या ततैये के डंक अथवा डाँस अथवा डाँस-मच्छरों के डंक पर मलने से आराम हो जाता है। परीक्षित है।

☞ नोट—जो लोग इसे बेचना चाहें, वह इससे बहुत-सा धन कमा सकते हैं। नाम चाहे सुधाधारा रखो, चाहे अमृतधारा अथवा पीयूष-विन्दु अथवा सुधा-विन्दु। रामबाण है। कोई-कोई कपूर और अजवायन का फूल एक-एक तोला और पिपरमिन्ट

का सत्त २ माशे डालते हैं। कोई इसमें २ माशे लोबान भी डालते हैं। पर इस तरह हमने नहीं आजमाया। पाठक इस तरह भी परीक्षा कर देखें।

• विशूचिकान्तक वटी •

(३) लहसन, सफ़ेद ज़ीरा, सेंधानोन, शुद्ध गन्धक, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और भुनी हींग—इन आठों को कूट-छान, खरल में डाल, नीबू के रस में घोट, चने समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से क्षण-भर में विशूचिका नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

रसिक-शिरोमणि लोलिम्बराज अपनी कान्ता से कहते हैं—

लसुन जीरक संधव गंधक त्रिकुटु रामठ चूर्ण मिदं समम्।
सपदि निम्बुरसेन विशूचिकां हरति भोरतिभोगविचक्षणे॥

हे रति-भोग में चतुर स्त्री! लहसुन, ज़ीरा, सेंधानमक, गन्धक, सोंठ, मिर्च, पीपर और हींग—इन आठों को बराबर-बराबर ले, कूट-छान, नीबू के रस में गोली बना, सेवन करने से तत्काल विशूचिका आराम हो जाती है। परीक्षित है।

मात्रा—जवान को एक बार में ४-५ गोली, कमज़ोर या बालक को अनुमान से कम। भोजन के बाद तीन-चार गोली रोज़ खाने से कभी बदहज़मी नहीं होती। गोली खा कर ऊपर से ताज़ा जल पीना चाहिए।

हैज़े में अगर रोग का ज़ोर बहुत ही हो, तो १५-१५ मिनट में जवान को दो-दो या तीन-तीन गोली देनी चाहिए। अगर रोग का उतना ज़ोर न हो, तो आध-आध घण्टे या घण्टे-घण्टे में देना उचित है। ये बातें वैद्य की बुद्धि पर निर्भर हैं। ध्यान रखो, ये गोलियाँ हैज़े में अक्सीर का काम करती हैं।

☛ **नोट**—(१) इन गोलियों की हमने अनेक बार परीक्षा की है। इस नुसख़े की, हींग को छोड़ कर सातों चीज़ें दो-दो तोले लेना और हींग १ तोले लेना। गन्धक और लहसन को शोध कर और हींग को भून कर डालना। खाने के नुसख़े में कच्ची हींग डालने से क़य आती और जी मिचलाता है। ये गोलियाँ ७ दिन तक नीबू के रस में घोटने से बड़ी मज़ेदार बन जाती हैं। गुण में तो अव्वल दर्जे की हैं।

(२) लहसन में बदबू होती है, इसलिये लहसन को कूट कर, माठा में भिगो दो और दिन-भर भीगने दो। रात को निकाल कर छाया में फैला दो। सवेरे

फिर ताजा छाछ में उसे भिगो दो और रात को बाहर निकाल कर सुखा दो। इस तरह सात दिन करने से लहसन शुद्ध हो जाता है; उसमें बदबू नहीं रहती।

• हरिदास बटी •

(४) भुनी हींग, जवाखार, सज्जीखार, सेंधानोन, कालानोन, बिड़नोन, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीता, कालीमिर्च, कचूर, धनिया, सूखी इमली, दूधिया वच, अजमोद, पोहकरमूल, सोंठ, करंज की गिरी, स्याहज़ीरा, हरड़ और पाढ़— इन सब दवाओं को बराबर-बराबर ले कर, कूट-पीस कर छान लो और शेष में हींग को भून कर मिला दो। इसके बाद, सारे चूर्ण को खरल में डाल, काग़ज़ी नीबुओं के रस में घोटो। घुट जाने पर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लो।

इन गोलियों के सेवन के विशूचिका, पेट फूलना, अण्ड-वृद्धि, आम-रोग, तिल्ली, वायुगोला, पेट का दर्द, हिचकी और मन्दाग्नि—ये सब नष्ट होते हैं। इसके सिवा, इन गोलियों का खाने वाला देश-परदेश में चाहे जहाँ फिरे, उसे रोज़ २-३ गोली खा लेने से हैज़ा न होगा।

सेवन-विधि

(१) हैजे में अर्क गुलाब के साथ लो। (२) कण्ठ और छाती की जलन में गुलाब-जल के साथ। (३) अन्त्रवृद्धि, अफारा, आम-रोग में सौंफ के अर्क के साथ (४) तिल्ली, वायुगोला, हिचकी और उदर-शूल में गरम जल के साथ। (५) मन्दाग्नि में ताजा जल के साथ दिन में ३ या ४ गोलियाँ खानी चाहिये।

नोट—ये गोली शास्त्रोक्त हैं। हमने १५/२० साल तक इनकी परीक्षा करने के बाद से ही इनका नाम 'हरिदास बटी' रख दिया है। ये गोलियाँ अपने काम में कभी फेल नहीं होतीं, गृहस्थों को ये गोलियाँ अपने घर में अवश्य रखनी चाहिये। ये समय पर जान बचाती हैं। हैज़े की पहली अवस्था में आध-आध घण्टे या पाव-पाव घण्टे में एक-एक गोली अर्क़-गुलाब के साथ देने से खूब लाभ होता है। सफर में सेवन करने वाले को कहीं का पानी नुकसान नहीं करता। हैज़े की दूसरी, तीसरी अवस्था में इनसे लाभ नहीं हुआ; पर यदि पहले से ही बराबर दी गईं, तो रोगी इनसे बच गये। अगर घर में और कोई दवा न हो, तो इसको देना ही अच्छा है।

• बृहत् शङ्ख बटी •

(५) थूहर का खार ४ तोले, इमली का खार ४ तोले, आक का खार ४ तोले, चिरचिरे का खार ४ तोले, केले का खार ४ तोले, तिल का खार ४ तोले, ढाक का खार ४ तोले, पाँचों नोन २० तोले, जवाखार १६ माशे, सज्जीखार १६

माशे, शुद्ध सुहागा १६ माशे—इन पन्द्रह दवाओं का वज़न ५२ तोले हुआ। इनको कूट-पीस-छान कर नीबू के ६४ तोले रस में डाल दो। इसके बाद ४ तोले भर शंख के टुकड़े को कोयलों की आग में सात बार तपा-तपा कर, इसी ऊपर लिखे नीबू के रस और चूर्ण के मसाले में बुझाओ, जिससे वह पतला हो जाय।

इसके बाद सोंठ १२ तोले, कालीमिर्च ८ तोले, पीपल ४ तोले, भुनी हींग २ तोले, पीपरामूल २ तोले, चीते की छाल २ तोले, अजवायन २ तोले, सफ़ेद जीरा १ तोले, जायफल २ तोले, लौंग २ तोले, शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध वत्सनाभ १ तोले, भुना सुहागा १ तोले और शुद्ध मैनसिल १ तोले—इन ४३ तोले दवाओं को अलग-अलग पीस-कूट-छान लो। पहले गन्धक और पारे को खरल करके कजली बना लेना। उसके बाद शेष ४१ तोले दवाओं को कजली में मिला लेना।

शेष में, इन ४३ तोले दवाओं के तैयार मसाले को पहले नीबू के रस में भीगने वाली शंख प्रभृति दवाओं के रस में मिला दो और ऊपर से चूके का रस १३ तोले मिला दो और खूब घोटो। जब मसाला गोली बनाने के लायक़ हो जाय, उड़द के दाने-बराबर गोलियाँ बना कर और छाया में सुखा कर शीशी में रख दो। इन्हीं गोलियों को 'वृहत् शंखवटी' कहते हैं। इन गोलियों का सेवन करने से सब तरह के अजीर्ण, सब प्रकार के शूल, विशूचिका और अलसक आदि रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

• अग्निकुमार रस •

(६) भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध वत्सनाभ ३ तोले, शुद्ध कौड़ी १ तोले, सज्जी १ तोले, पीपल १ तोले, सोंठ १ तोले, और काली मिर्च ८ तोले—इन सबको एकत्र करके, ११ घण्टे नीबू के रस में खरल करने से 'अग्निकुमार रस' तैयार होता है। यह रस विशूचिका, शूल और मन्दाग्नि तथा वायु प्रभृति को नष्ट करता है। 'रसरत्न-प्रदीप' और 'रसेन्द्र-चिन्तामणि' में यह विशूचिका और अजीर्ण पर लिखा है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(७) चिरचिरे की जड़ जल में पीस कर पिलाने से शूल समेत हैज़ा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) बेल का गूदा, सोंठ और जायफल—इन तीन चीज़ों का काढ़ा पिलाने से हैज़ा आराम हो जाता है।

(९) दरियाई नारियल पानी में घिस कर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से पित्त या गरमी की विशूचिका आराम होती है। यही दरियाई नारियल, एक जौ-जितना अर्क़ गुलाब में घोट कर, चाटने से दस्त और क़य निश्चय ही बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) गरमी की विशूचिका में इलायची के बीज, कासनी और धनिया चार-चार माशे और गुलक़न्द-गुलाब एक तोला—इनको घोट-छान कर पिलाने से फ़ायदा होता है।

☞ नोट—गरमी के हैजे में शिकंजबीन, शर्बत-सेब और मुरब्बा-बीह भी मुफीद है।

(११) अगर रोग सर्दी से हो,तो उत्तम हींग १ तोला, लाल मिर्च १ तोला, उत्तम अफ़ीम ६ माशे और कपूर ६ माशे, इन चारों को कूट-पीस कर, थोड़े से पुराने गुड़ में मिला, चने-समान गोलियाँ बना लो। जवान आदमी को ६ से ८ गोली तक और बालक को चार गोली तक देनी चाहिये। अगर यह दवा क़य से बाहर निकल जाय, तो फिर यही दवा दो। जब तक रोग आराम न हो जाय, आध-आध घण्टे पर देते रहो।

अनुपान—एक गोली खिला कर, छटाँक-भर मिश्री के शर्बत में १० बूंद नीबू के रस को डाल कर पिलाओ। आध-आध घण्टे पर रोगी को एक-एक मात्रा दो और नीबू न मिले तो १ तोले शिकंजबीन में ५ तोले पानी मिला कर गोली के साथ पिलाओ।

☞ नोट—पेशाब खोजने, बाइँटे बन्द करने, प्यास रोकने और बदन की गरमी बढ़ाने प्रभृति के उपाय आगे एक ही जगह लिखे हैं। दवा खिलाते रहो और ये उपाय भी करते रहो।

(१२) मदार की जड़ की छाल २ तोले और अदरख का स्वरस २ तोले, दोनों को खरल में डाल कर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो। आध-आध घण्टे, घण्टे-घण्टे या दो-दो और तीन-तीन घण्टे पर, एक-एक गोली रोगी को निगलवा दो। ज़रूरत हो, तो एक घूंट जल से उतरवा दो। गोली जल्दी-जल्दी या देर से देना रोग की कमी या अधिकता पर मुनहसिर है। ये गोलियाँ रामबाण हैं। इन गोलियों से अनेक बार लोग मरते-मरते बच गये हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—मदार की जड़ की छाल १ तोले और कालीमिर्च ३ माशे, दोनों को जल के साथ पीस कर मटर-समान गोलियाँ बना लो। इनके घण्टे-घण्टे या आध-आध घण्टे पर देने से ज्वर और हैज़ा नष्ट होते हैं। सुपरीक्षित हैं।

(१३) सौंफ १ तोले, पोदीना ८ माशे, लौंग ४ दाने और गुलक़न्द-गुलाब २ तोले—इनको औटा कर पीने से हैज़ा आराम होता है।

(१४) चोबहयात पानी में घिस कर पीने से हैज़ा नष्ट होता है।

(१५) नरकचूर का काढ़ा पीने से हैज़ा नष्ट होता है।

(१६) छोटी इलायची के छिलके १ तोले ले कर, २ तोले गुलाब-जल में घोट कर पिला दो। अगर गुलाब-जल न हो, तो उन्हें आध सेर जल में औटाओ। जब आधा जल रह जाय, उतार कर छान लो और जब प्यास लगे, रोगी को थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। यह नुसखा हैज़े की प्यास को अवश्य कम करेगा। परीक्षित है।

(१७) ३ माशे पेठे के फूल ५ तोले पानी में पीस कर हैज़े वाले को पिलाने से हैज़ा आराम होता है। परीक्षित है।

(१८) २ माशे सरफोंके की जड़ जल में पीस कर पीने से हैज़ा नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१९) नील में रँगा नीला कपड़ा जला कर, उसकी राख आदमी के पेशाब में मिला कर पीने से हैज़ा आराम होता है।

☛ नोट—जब हैज़े के आसार मालूम हों, मनुष्य को चाहिये, उसी समय अपना पेशाब पी जाय। जिस हालत में कोई दवा न हो सके, उसी हालत में यह उपाय उत्तम है।

(२०) खिरेंटी की जड़ ५ माशे, पानी में घिस कर पीने से हैज़ा आराम होता है।

(२१) लाल मिर्च का एक बीज 'देशी मोम' में मिला कर गोली बना लो। इस गोली के निगल जाने से हैज़े में अत्यन्त लाभ होता है।

(२२) पोदीने की ३० पत्ती, कालीमिर्च ३ दाने, कालानोन १ माशे, छोटी इलायची भुनी हुई दो दाने और इमली कच्ची या पकी, जैसी मिले १ माशे सबको पानी के साथ महीन पीस कर चटनी-सी बना लो और हैज़े वाले को चटाओ। इस चटनी के चाटने से पेट का दर्द, क़य और दस्त तथा प्यास—ये सब तत्काल आराम होंगे। अच्छा नुसख़ा है।

(२३) पपीता, जल में या गुलाव-जल में घिस कर चाटने से हैज़ा नष्ट होता है।

(२४) तितली की पत्तियाँ ६ माशे ले कर दो तोले पानी में घोट कर पीने से हैज़ा नष्ट होता है। परीक्षित है।

☛ नोट—तितली का पौधा गेहूँ के खेत में होता है।

(२५) सफेद ज़ीरा १ तोला और जायफल १ तोला—दोनों को सिल पर महीन पीस कर आधा सेर शीतल जल में घोल कर छान लो और रोगी को थोड़ा-थोड़ा ४-५ वार पिलाओ। ज़रूरत हो तो फिर वना लो। इससे क़य और दस्त बन्द हो जायँगे। हैज़े को आराम करने में यह नुसख़ा रामवाण है। हमने कितनी ही वार परीक्षा की है। शरीर की ऐंठन प्रभृति के लिए अन्य उपाय करते रहो।

(२६) तीन माशे वरियारे की जड़, दो तोले जल में घोट कर पिलाने से हैज़ा आराम होता है।

(२७) हरे चिरचिरे की जड़, ३ माशे और कालीमिर्च ५ दाने—दोनों को पीस कर एक छटाँक जल में घोट लो। इतनी दवा को आध-आध घण्टे में चार वार पिलाओ। अगर आराम दीखे और ज़रूरत हो, तो फिर बना लो। परीक्षित है।

☛ नोट—चिरचिरे को ओंगा और अपामार्ग भी कहते हैं। वंगाली इसे अपाङ्ग कहते हैं।

(२८) कपूर ४ रत्ती और सोंठ का चूर्ण ३ माशे—इन दोनों को एकत्र करके १०-१५ मिनट तक खरल करो और इतनी दवा के आठ भाग कर लो। आध-आध घण्टे या पाव-पाव घण्टे में एक-एक खुराक पिलाने से हैज़े में बड़ा लाभ होता है। क़य और दस्त बन्द होने पर इसे मत दो। परीक्षित है।

(२९) दशमूल का काढ़ा वना कर, उसमें पाँच तोले साफ़ अरण्डी का तेल और अढ़ाई तोले चूने का पानी मिला कर, रोगी को हैज़े की प्रथम अवस्था में, जव क़य का ज़्यादा ज़ोर न हो, एक या दो वार पिला देने से हैज़े के जहरीले जीव वाहर निकल जाते हैं और वायु शांत हो जाती है। वड़ी अच्छी चीज़ है। 'चरक' में यह योग लिखा है।

☛ नोट—मद्रास के सर्जन जनरल महोदय ने एक पत्र में लिखा है, कि हैज़े की उत्पत्ति एक प्रकार के कीड़े से होती है। यह कीड़ा खाने-पीने के पदार्थों के साथ

पेट में चला जाता है, उसके जाते ही हैज़ा हो जाता है। इसलिए हैज़े के मौसम में वासी या देर का पका हुआ पदार्थ हरगिज़ न खाना चाहिये, क्योंकि उस पर मक्खियाँ बैठ जाती हैं। हैज़ा एक प्रकार के कीड़े से होता है, यह बात यूरोपियनों से हज़ारों बरस पहले हमारे यहाँ मालूम हो गई थी। तभी तो चरक ने ज़हरीले कीड़ों को निकाल देने के लिए दशमूल के काढ़े में अरण्डी का तेल और चूने का जल मिला कर देने की राय दी है। यूनानी हकीमों ने भी ऐसी ही राय दी है।

(३०) अफ़ीम १ रत्ती, कपूर २ रत्ती, कालीमिर्च २ रत्ती, हींग २ रत्ती और सोंठ २ रत्ती—इन पाँचों को पीस कर, मूँग-समान गोलियाँ बना लो। दिन भर में १ से ६ गोली तक देने से हैज़ा नष्ट हो जाता है।

(३१) सिरस की हरी पत्ती ३ माशे और कालीमिर्च १२ दाने—इनको १ छटाँक जल में पीस कर पीने से पेट का दर्द दूर होता है।

(३२) ३ माशे जावित्री, दूध में पीस कर पिलाने से हैज़ा आराम होता है। परीक्षित है।

(३३) जायफल, सेंधानोन, शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध कौड़ी-भस्म, कपर्दक भस्म, सोंठ, शुद्ध अफ़ीम, शुद्ध धतूरे के बीज और पीपर—इन आठों को बराबर-बराबर ले कर, पीस-कूट कर खरल में डाल, नीबू के रस में या धतूरे के बीजों के रस में अथवा भाँग के काढ़े में घोट कर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो।

अनुपान—एक तोला छाछ में चने-भर भुनी हींग और १ माशा सेंधानोन मिला कर, उसी छाछ से एक-एक गोली लेने से हैज़े के दस्त और क़य फ़ौरन बन्द होते हैं। परीक्षित है।

(३४) एक तोले अरहर के पत्ते १ छटाँक शीतल जल में पीस कर कपड़े में छान लो। इस नुसख़े को घण्टे-घण्टे में पिलाने से हैज़ा आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(३५) नागरमोथा १ तोला, हींग ६ माशे, कपूर ६ माशे और पीपल ६ माशे—सबको पानी में पीस, चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। हैज़े की पहली अवस्था में एक-एक घण्टे में एक-एक गोली देने से अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३६) सूखी लालमिर्च और सेंधानमक हाँड़ी में उबाल कर आध-आध घण्टे में देने से हैज़ा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, सफ़ेद ज़ीरा, हींग, सेंधानोन, लहसन और शुद्ध गन्धक—सबको बराबर-बराबर ले कर महीन पीस लो। इस चूर्ण को नीबू के रस के साथ देने से विशूचिका नष्ट होती है। परीक्षित है।

(३८) दन्ती, चीते की छाल और पीपल को बराबर-बराबर ला कर, पानी में सिल पर पीस कर, भाँग की-सी लुगदी बना लो। यही 'कल्क' है। इस लुगदी या कल्क को गरम जल के साथ सेवन करने से विशूचिका तत्काल नष्ट हो जाती है।

(३९) 'अजीर्ण-कण्टक-रस' से भी विशूचिका आराम हो जाती है। परीक्षित है। बनाने की विधि अजीर्ण के बयान में देखिये।

(४०) करंज, नीम, चिरायता, गिलोय, अर्जुन की छाल और कुड़े की छाल—इनको बराबर-बराबर चार-चार माशे ले कर काढ़ा बनाओ और रोगी को पिला दो। इस काढ़े से वमन या क़य हो कर घोर विशूचिका (हैज़ा) नष्ट हो जाती है।

☞ नोट—अगर वमन कराने की ज़रूरत पड़े, तो यह नुसख़ा देना अच्छा है। इससे ज़हर निकल जायगा।

(४१) करेले के रस में तेल मिला कर पीने से विशूचिका या हैज़ा नष्ट हो जाता है।

(४२) छोटी मूली के काढ़े में पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से विशूचिका नष्ट होती और जठराग्नि बढ़ती है।

(४३) बेलगिरी और सोंठ का काढ़ा बना कर पीने से विशूचिका नष्ट होती है।

(४४) बेलगिरी, सोंठ और जायफल का काढ़ा पीने से हैज़ा आराम होता है। यह नुसख़ा ऊपर वाले से उत्तम है।

(४५) अगर रोगी की आँखें लाल हों, रोगी बकता हो, होश न हो, सन्निपात के-से लक्षण हों, तो 'शूचिकाभरण रस' सिर के तलवे के बाल उस्तरे से साफ करके, वहाँ की ज़रा-सी खाल छील कर, उसी जगह लगाओ। इसके बनाने और लगाने की विधि **'चिकित्सा-चन्द्रोदय'** दूसरे भाग में (सन्निपात-चिकित्सा में) देख लो। अन्त काल में जब जीवन की आशा नहीं रहती, यह रस बाज़-बाज़ वक्त रोगी को होश करा देता है। खाने की दवा 'चन्द्रोदय' अथवा 'कस्तूरी-भूषण' दो। अगर आयु होगी, तो रोगी बच जायगा।

(४६) आक की जड़, कालीमिर्च और अकरकरा—इन तीनों को समान-समान ले कर, कूट-पीस कर खरल में डालो और ऊपर से धतूरे की जड़ों का रस डाल-डाल कर ख़ूब घोटो। जब घुट जाय, चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टे पर जल के साथ खिलाने से हैज़ा नष्ट होता है। परीक्षित है।

☛ **नोट**—हमने पहले भी आक की गोलियाँ लिखी हैं। उनसे ये गोलियाँ कुछ अच्छी हैं। हैं दोनों ही अकसीर। दोनों से ही क़य और दस्त बन्द हो जाते हैं। पेशाब न होता हो, तो गेहूँ की चोकर मलमल के टुकड़े में बाँध कर आग पर तपायें और उसी से कमर पर गरम रहते सेक करें।

एक सेर गेहूँ की चोकर में १ तोला सेंधानोन मिला कर, मलमल के दो टुकड़ों में बाँध कर, उन्हीं पोटलियों से ज्वर से घबराते हुए बेहोश रोगी के पैरों के तलवे सहलाने से ज्वर हल्का हो कर, रोगी आध घन्टे में सुखी हो जाता है। पर सहलाते समय इस बात का ध्यान रहे कि पोटली एड़ी की तरफ पंजों की ओर से न ले जाई जाय। इससे हानि नहीं, पर लाभ भी न होगा।

□ अंग्रेज़ी नुसखे □

नीचे लिखे हुए अंग्रेजी नुसख़े कई बार आज़माने से ठीक मालूम हुए, इसलिए पाठकों के उपकारार्थ नीचे लिखते हैं—

(४७) क्लोरोडाइन १० से ३० बूंद तक, ऑयल पिपरमिंट २ बूंद, क्लोरोडाइन आफ एमोनियम ५ से १० ग्रेन तक और सौंफ का अर्क २ औंस। यह एक ख़ूराक दवा है। ऐसी-ऐसी चार या छह ख़ूराक बना लो और काग़ज़ काट कर शीशी पर दाग़ लगा दो। हर बार, हरेक क़य के बाद, एक-एक ख़ूराक पिलाओ। जब तक रोगी को नींद न आ जाय, दवा पिलाते रहो। सो जाने पर जगा कर दवा न देना।

(४८) हींग २ ग्रेन, लालमिर्च १ ग्रेन और अफ़ीम १ ग्रेन। यह एक गोली का मसाला है। इस हिसाब से अधिक ले कर गोलियाँ बना लो और दो-दो घन्टे पर एक-एक गोली निगलवा दो। हाथ-पैरों में ऐंठन हो या बाइँटे आयें, तो वहाँ सोंठ को पीस कर ख़ूब मलो। पेशाब न आता हो, तो कमर पर राई का पलस्तर लगा दो।

(४६) स्पिरिट क्लोरोफार्म १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया ऐरोमेटिक १ ड्राम, क्लोरोडाइन और ब्राण्डी १-१ औंस—चारों में अन्दाज़ का जल मिला कर रख लो। मात्रा—एक चम्मच भर। इससे हैज़ा और अतिसार नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(५०) चॉक १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक २ ड्राम, टिंचर ओपियम ४० बूँद, कैम्फर-वाटर ८ औंस—सब को मिला कर रख लो। मात्रा—१ औंस। दिन में तीन बार देने से अजीर्ण, अतिसार और हैज़े की अवस्था में लाभ होता है।

(५१) टिंचर ओपियायी २ ड्राम और एसिड सलफ्यूरिक ऐरोमेटिक ३ ड्राम—दोनों को मिला कर रख लो। मात्रा—२० बूँद। घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टे में देने से हैज़ा आराम होता है।

□ विशूचिका-नाशक लेप □

• अर्करसादि तेल •

(५२) आक के पत्तों का रस ६४ तोले, धतूरे के पत्तों का रस ६४ तोले, सफ़ेद थूहर का रस ६४ तोले, सहँजने का रस ६४ तोले, अदरख का रस ६४ तोले, कूट और सेंधा नमक का कल्क यानी दोनों की जल से पिसी लुगदी १६ तोले, दही १ सेर, काँजी १ सेर और तिलों का तेल १ सेर—तैयार करो।

इन सबको एक जगह करके क़लईदार कड़ाही में डाल, चूल्हे पर रख, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार कर शीतल करो और छान कर बोतलों में भर लो।

इस तेल का नाम 'अर्करसादि तेल' है। इसके लगाने से विशूचिका से पैदा हुआ खल्लीशूल, पक्षाघात, आमवात, गृध्रसीवात, खंजता और पंगुता—ये सब रोग नष्ट होते हैं।

(५३) जौ का आटा और जवाखार—इन दोनों को छाछ में पीस कर और आग पर पका कर, गरमा-गर्म लेप करने से पेट का दर्द या शूल आराम हो जाता है। विशूचिका में यह लेप परमोत्तम है। परीक्षित है।

(५४) दालचीनी, पीले फूल की कटेरी, कड़वा कूट, शतावर, सोंठ और सेंधानोन—इनको महीन पीस कर नीबू के रस में घोटो और पेट पर लेप कर दो। इस लेप से पेट का दर्द और अफ़ारा दोनों नष्ट हो जायँगे।

(५५) दालचीनी, तेजपात, रास्ना, अगर, सहँजना, कड़वा कूट, वच और शतावर—इनको बराबर-बराबर ले, नीबू के रस में महीन पीस, पेट पर लेप करने से खल्लीशूल समेत विशूचिका नष्ट होती है।

☛ नोट—इन सबको तेल में पका कर, तेल लगाने से भी वही लाभ होता है।

(५६) जायफल और चूके को तिलों के तेल में पका कर लेप करने से खल्लीशूल नष्ट होता है।

(५७) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सेंधानोन—सबको दो-दो माशे ले कर, पानी में पीस कर, पेट पर लेप करने से सब तरह के अजीर्ण नष्ट होते हैं। हैज़े के शूल और अफ़ारा में भी खूब लाभ होता है।

(५८) सरसों का तेल आग पर गरम करके गरमागर्म ही पेट या शरीर या हाथ-पैरों में लगाने से शरीर का दर्द, पेट का दर्द, हाथ-पैरों के बाईंटे—ये सब आराम होते हैं।

(५९) चूहे की मैंगनी १ तोले और सौंफ १ तोले—दोनों को पानी में पीस, गरम करके पेट पर लेप करने से पेट का अफ़ारा, पेट का दर्द, गर्भाशय की वेदना और बाईंटों की पीड़ा शांत होती है। पेट दर्द और अफ़ारा मिटाने में तो रामबाण ही है। परीक्षित है।

☛ नोट—चूहे की मैंगनी और ज़रा-सी हींग पानी में पीस कर नाभि पर लेप करने से पेट का अफ़ारा निश्चय ही नष्ट होता है।

(६०) निर्मली को पानी में चन्दन की तरह घिस कर और गरम करके चारों ओर लेप करने से पेट का दर्द मिट जाता है।

☛ नोट—ये सब लेप अजीर्ण और हैज़ा दोनों में काम आ सकते हैं।

(६१) फलालेन या कम्बल के टुकड़े को गरम खौलते हुए पानी में भिगो-भिगो कर निचोड़ लो और उसी से पेट पर सेक करो। इस उपाय से पेट का दर्द शान्त हो जायगा।

(६२) गोमूत्र या काँजी को आग पर पका कर, उसमें फलालेन का टुकड़ा भिगो-भिगो कर पेट पर धीरे-धीरे फेरो। इससे हैज़े में होने वाला पेट का दर्द शान्त हो जायगा।

(६३) अगर और कुछ न मिले, तो तारपीन का तेल पेट पर मालिश कर के वहाँ रूई के पहलों से या खाली हाथों से सेक करो। इस उपाय से भी हैज़े में हुआ पेट का दर्द मिट जायगा।

(६४) कूट और सेंधानोन—दोनों को जल के साथ लुगदी कर लो और चूके का रस निकाल लो तथा तेल ला कर रख लो। कढ़ाही में तेल, चूके का रस और लुगदी (कल्क) को चढ़ा कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। तेल-मात्र रह

जाने पर उतार लो। इस तेल की मालिश से खल्लीशूल और विशूचिका नष्ट हो जाती है।

(६५) देवदारु, सफ़ेद वच, कड़वा कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन—इनको काँजी में पीस कर, जिसके पेट में दर्द हो, या जिसका पेट फूला हो, उसके पेट पर लेप करो।

□ विशूचिका-नाशक अंजन □

(६६) त्रिकुटा, करंज के फल, दारुहल्दी, हल्दी और विजौरे नीबू की जड़—इनको बराबर-बराबर ले कर, पानी के साथ पीस कर, गोलियाँ बना लो और छाया में सुखा लो। इन गोलियों को जल में पीस कर, आँख में आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है। भावमिश्र इसे अपना अनुभव किया बताते हैं।

(६७) महुए का सार, चिरचिरे के चावल और कोंपल, हल्दी, दारुहल्दी और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर ले कर, पानी में पीस कर गोली बना लो और छाया में सुखा लो। इन गोलियों के नेत्रों में आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है।

(६८) चिरचिरे के पत्ते और कालीमिर्च के बराबर-बराबर ले कर घोड़े की लार में पीस कर, नेत्रों में आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है।

□ हैज़े की प्यास नष्ट करने वाले उपाय □

(६९) पानी में लौंग डाल कर औटाओ। जब आधा जल रह जाय, उतार कर जल ठंडा कर लो। हैज़े के रोगी को यह जल पिलाने से प्यास, जी मिचलाने, सूखी ओकी आने और हृदय की पीड़ा में बड़ा लाभ होता है। प्यास निश्चय ही कम हो जाती है। परीक्षित है

नोट—कुछ लौंग पानी में पीस कर थोड़ा नमक मिला दो और गरम करके रोगी को पिलाओ। इससे प्यास, अजीर्ण और जी मिचलाना आराम होगा। परीक्षित है।

(७०) जायफल का काढ़ा बना कर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से हैज़े की प्यास कम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—जायफल का टुकड़ा, सुपारी की तरह, हर समय मुख में रखने से भी प्यास कम हो जाती है। ज्वर और अतिसार आदि की प्यास भी कम हो जाती है। परीक्षित है।

(७१) नागरमोथे के काढ़े से भी हैज़े की प्यास कम हो जाती है।

(७२) मीठा कूट, धान की खील, कमलगट्टे की गिरी, बड़ के अंकुर और मुलेठी—इनको कूट-पीस-छान कर 'शहद' में मिला गोली बना लो। एक गोली मुँह में रखने से भयंकर प्यास भी शान्त हो जाती है।

(७३) एक हकीम साहब कहते हैं, कि पानी की बर्फ़ के टुकड़े रोगी को बारम्बार देने से प्यास कम हो जाती है।

(७४) अर्क़ सौंफ आध पाव, अर्क़ गुलाब १ छठाँक, अर्क़ पोदीना एक छटाँक और पानी की बर्फ आध पाव—चारों को एक मिट्टी की हाँड़ी में रख दो। जब रोगी पानी माँगे, इसी में से ६ माशे या एक-तोला पिलाओ। इस उपाय से वमन और प्यास दोनों उपद्रव शान्त हो जायँगे।

(७५) शीतलचीनी (कबाबचीनी) के काँटे तोड़ कर महीन पीस लो। रोगी जब-जब पानी माँगे, इसमें से एक-एक चुटकी-भर चूर्ण मुँह में डाल, एक घूँट जल पिला दो। इस तरह करने से प्यास अवश्य कम हो जायगी और पेशाब भी होगा। परीक्षित है।

(७६) बर्फ़ मिलाया जल देने से भी प्यास शान्त होती है, पर एक-एक या आधे-आधे रुपये-भर से अधिक जल मत देना।

(७७) पीने के पानी में लकड़ी का कोयला डाले रखने और वह पानी पिलाने से भी प्यास में लाभ होता है।

(७८) ईंट को आग में लाल कर के, छने हुए जल की हाँड़ी में धीरे से छोड़ दो। इस जल के पीने से प्यास और क़य में लाभ होता है।

☛ नोट—इन मामूली उपायों से हैज़े की प्यास और वमन बन्द नहीं हो जाती, पर इनसे मदद अवश्य मिलती है, बड़ी सेहत होती है, प्यास का ज़ोर घट जाता है। जहाँ कुछ भी न हो, वहाँ कम-से-कम इतना तो करना ही चाहिए।

(७९) तीन या चार तोले कलौंजी को आध सेर पानी में मिट्टी की हाँड़ी में डाल कर औटाओ। आधा पानी रह जाने पर उतार कर छान लो। हैज़े वाले को प्यास लगने पर यही जल पिलाते रहने से हैज़े का जोर निश्चय ही घट जाता है। परीक्षित है।

□ हैज़े की वमन नष्ट करने के उपाय □

(८०) बड़ी इलायची, धान की खील, लौंग, पीली नागकेशर, मेंहदी, बेर की गुठली की गिरी, नागरमोथा और सफ़ेद चन्दन—इन ९ दवाओं को

बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस और छान लो। इसके बाद उस चूर्ण में मिश्री मिला दो। इस चूर्ण को शहद के साथ चाटने से तीनों दोषों से उत्पन्न हुई भयंकर वमन भी मिट जाती है। परीक्षित है।

(८१) खूब गरम जल, थोड़ा-थोड़ा देने से, हैज़े की वमन और प्यास दबती है।

(८२) पानी की बर्फ़ के टुकड़े चूसने से वमन और प्यास शान्त होती है।

(८३) अगर उपरोक्त औषधियों से वमन होना बन्द न हो, दवा भी पेट में न ठहरती हो, तो राई पानी में पीस कर, चौकोर पतले काग़ज़ पर लगा कर, नाभि के ऊपर पेट पर चिपका दो। जब जलन होने लगे, उसे उतार डालो। इस तरकीब से वमन बन्द हो जाती है। कम-से-कम २० मिनट यह पलस्तर रखना चाहिये।

नोट—यही राई का पलस्तर गर्दन और पीठ की रीढ़ या मेरुदण्ड पर लगाने से भी क़य बन्द हो जाती हैं। कमर पर रखने से पेशाब होता है।

(८४) तीन तोले धान की खील और एक तोले सफ़ेद चीनी, डेढ़ पाव जल में, कोई घंटे-डेढ़-घंटे तक भिगो कर छान लो। इस छने हुए जल में ख़स १ तोला, छोटी इलायची ६ माशे और सौंफ १ तोला—इन तीनों को पीस कर मिला दो और शेष में सफ़ेद चन्दन को पत्थर पर घिस कर १ तोला घिसा हुआ चन्दन का रस उसी जल में मिला दो। इस जल की मात्रा ६ माशे की है। आध-आध घण्टे या बीस-बीस मिनट में, आधा-आधा तोला यही पानी चम्मच द्वारा पिलाने से वमन बन्द हो जाती है।

(८५) राई और कपूर को पानी के साथ पीस कर और गरम करके छाती पर लगाने से वमन बन्द हो जाती हैं।

(८६) मोर के पंख का चँदोवा जला कर राख कर लो। उस राख में से २ माशे राख 'शहद और पीपल' में मिला कर चाटने से कय बन्द हो जाती हैं।

□ हाथ-पाँव आदि अंगों की शीतलता और बाइँटे नष्ट करने की तरकीबें □

(८७) अगर बाइँटे आयें और हाथ-पैर शीतल हो जायँ, तो रोगी को गरम जगह में रखो और कपड़े पहनाओ। सोंठ को महीन पीस कर गरम कर लो और उसे हाथ-पावों पर मलो।

(८८) हाथ-पैरों में अधिक ऐंठन हो, तो भुनी हुई रेत की पोटली बना कर गरम काँजी में डुबो-डुबो कर वफारा दो।

(८९) सरसों के तेल में कड़वे कूट और सेंधा नमक का चूर्ण मिला कर हाथ-पाँवों पर मालिश करो। इससे हाथ-पैरों की ऐंठन या वाइँटे मिट जायेंगे।

(९०) सोंठ और कायफल बराबर-बराबर ले कर महीन पीस-छान लो और हाथ-पैरों पर मालिश करो। इसके मलने से ऐंठन मिट कर हाथ-पैरों में गरमाई आयेगी।

(९१) रोगी की नाड़ी की चाल अत्यन्त मन्दी या क्षीण हो, तो उसके हाथ-पाँवों पर फलालेन गरम करके सेक करो।

(९२) शीतांग हो जाय, या शरीर शीतल हो जाय, तो 'चन्द्रोदय-रस' या 'वृहत् कस्तूरी-भूषण' पानों के रस या शहद में देने से तत्काल लाभ होता और शीत मिट कर गरमी आती है।

(९३) सरसों के तेल में जायफल और ताँबा घिस कर सारे शरीर में लगाने से हैज़े की ऐंठन मिट जाती है।

(९४) अगर हाथ-पैर शीतल हो गये हों, तो रूई के पहल आग पर खूब गरम करके उस जगह बाँध दो और शीतल होने से पहले फिर खोल लो और दूसरे पहल गरम करके उसी जगह फिर बाँध दो। जब तक पूरी गरमी न आ जाय, इसी तरह सेंक करते रहो। इस उपाय से गरमाई आ जायगी।

☛ **नोट**—रूई के पहल गरम करके बाँधने से पसली का दर्द, पैरों का दर्द अथवा और कहीं का दर्द अवश्य नष्ट हो जाता है।

(९५) अगर बाइँटे आते हों, शरीर शीतल हो गया हो और नाड़ी की चाल मन्दी पड़ गई हो, तो 'विषगर्भ तैल' में 'तारपीन का तेल और कपूर' मिला कर हाथ-पैरों और हाथों की कलाइयों पर मलो। जब तक नाड़ी तेजी से न चलने लगे, हाथ-पैर गरम न हो जायँ, बाइँटे बन्द न हो जायँ, बराबर यही तेल मलते रहो। इस उपाय से शरीर गरम हो जायगा और नाड़ी ठीक चाल पर आ जायगी। शीतांग होने की हालत में यह उपाय खूब काम देता है, मरता हुआ आदमी भी एक बार बच जाता है। सैकड़ों बार का परीक्षित उपाय है।

(९६) हाथ-पैरों और कलाइयों पर राई का पलस्तर रखने से नाड़ी तेजी से चलने लगती है, बाइँटे मिट जाते हैं और गरमाई आ जाती है। एक चौकोर

पतले कागज़ पर राई जल में पीस कर लेप कर दो और दोनों हाथों के पहुँचों पर लगा दो। यही पलस्तर है। अंग्रेजी दवाखानों में तैयार पलस्तर भी मिलते हैं।

(६७) उत्तम ब्रान्डी में तारपीन का तेल मिला कर मालिश करने से हाथ-पैरों के वाइँटे आराम हो जाते हैं।

(६८) कड़वा कूट और सेंधा नोन को काँजी और तिल के तेल में एकत्र पीस कर गरम करो और हाथ-पैरों पर उसकी मालिश करो। इससे भी बाइँटे आना बन्द हो जायगा।

□ पेशाब खोलने की तरकीबें □

(६६) अगर पेशाव न होता हो, तो राई का पलस्तर कमर पर लगाओ, इससे पेशाव हो जायगा। अगर पलस्तर से छाला हो जाय, तो फिर पलस्तर न लगाना।

(१००) अगर दस्त और वमन बन्द हो जायँ, पर पेशाव न हो, तो पेशाव कराने के लिये नीचे लिखे उपाय करो—रोगी के पेडू पर कलमी शोरे के पानी में भीगा हुआ कपड़ा रखो। कलमी शोरा २ तोला ले कर पानी में महीन पीस लो। पीछे एक साफ़ कपड़े की पट्टी उसी शोरे के जल में तर करके, नाभि के नीचे, पेडू पर रख दो, पेशाव हो जायगा। अगर घंटे-आध-घंटे में पेशाव न हो, तो फिर दूसरी ताजा पट्टी उसी तरह शोरे के पानी में भिगो कर रखो। परीक्षित है।

(१०१) टेसू के फूल २ तोले और कलमी शोरा २ तोले, दोनों को सिल पर रख, पानी के साथ पीस, लुगदी-सी वना लो और उसे रोगी के पेडू पर रख दो। अगर आध घंटे में पेशाव न हो जाय, तो, फिर यही लेप लगाओ। परीक्षित है।

(१०२) गरम जल में फलालेन का टुकड़ा डुबो कर, उस पर चन्द बूँदे तारपीन के तेल की टपका दो और उसी फलालेन से कमर के दोनों तरफ सेक करो; फौरन पेशाव होगा।

(१०३) गोखरू के बीज, ककड़ी के वीज और जवासा—इन तीनों को अढ़ाई तोले या दो तोले ला कर काढ़ा कर लो और शेष में डेढ़ माशे शोरा मिला कर रोगी को पिला दो। इससे भी पेशाब होता है।

(१०४) चूहे की मैंगनी में थोड़ा-सा कलमी शोरा मिला कर, पानी के साथ पीस कर, लुगदी-सा वना लो और नाभि के नीचे, पेडू पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दो। इस उपाय से निश्चय ही पेशाब होता है।

☛ **नोट**—चूहे की मैंगनी में ज़रा-सी हींग मिला कर, पानी में पीस कर लेप करने से पेट का अफारा मिटता है।

□ हिचकी-नाशक उपाय □

(१०५) केले की जड़ ला कर पीस लो और कपड़े में छान कर रस निकाल लो। इस रस के सूँघने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(१०६) पानी या घी में सैंधानोन पीस कर सूँघने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१०७) पोदीने को चीनी में मिला कर चबाने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१०८) मोर के पंख का चँदोवा आग में जला कर राख कर लो। इसमें से तीन माशे राख 'शहद' में मिला कर चाटने से हिचकी आराम होती है।

(१०९) साबत काले उड़द के महीन चूर्ण को चिलम में रख, तमाखू की तरह कोयले की आग रख कर पीने से हिचकी आराम होती है। आग में धुआँ न होना चाहिए।

(११०) छप्पर की पुरानी रस्सी चिलम में रख कर, तमाकू की तरह पीने से हिचकी आराम होती है।

(१११) मक्खी का गू दूध में पीस कर सुँघाने से हिचकी आराम हो जाती है।

(११२) सोंठ को गुड़ में मिला कर सुँघाने से हिचकी आराम होती है। चूल्हे की जली हुई गरम मिट्टी के सूँघने से भी हिचकी नष्ट होती है।

☛ **नोट**—हिचकी-नाशक और भी बहुत से परीक्षित उपाय 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे और छठे भाग में लिखे हैं। ऊपर लिखे सभी उपाय भी परीक्षित हैं। इनसे भी हिचकी आराम हो जाती है। अगर किसी भी उपाय से हिचकी बन्द न हो, तो नाभि से दो अंगुल ऊपर, जली हुई हल्दी या लोहे की गरम शलाका से दाग दो।

□ पसीने-नाशक उपाय □

(११३) अगर बहुत ही पसीने आते हों, तो कुल्थी (एक तरह का अन्न) को भुनवा कर पीसो और उसे पसीनों के स्थान पर मलो। इससे पसीने आना बन्द हो जायगा। परीक्षित है।

(११४) एक रत्ती मूँगे की भस्म, २ माशे शहद के साथ चटाने से पसीने कम हो जायँगे।

(११५) समन्दर-फल सौंठ के साथ पीस कर शरीर पर लेप करने से पसीनों का आना वन्द होता है।

नोट - (क) समन्दर-फल को कूट कर अन्दर की गिरी निकाल लो; ऊपर का जंजाल फेंक दो। फिर इसे सात दिनों तक बकरी के दूध में भिगो रखो। इसके बाद सात दिन तक बकरी के मूत्र में भिगो रखो। इसके बाद सुखा लो और रख लो। समय पर इससे बड़े काम निकलते हैं। जाड़े के इकतरा, तिजारी और चौथैया में, ज्वर चढ़ने से तीन घण्टे पहले, हर घण्टे-घण्टे में चार-चार रत्ती समन्दर-फल मिश्री के साथ देने से इकतरा, तिजारी और चौथैया आना बन्द हो जाता है। सोंठ और समन्दर-फल दोनों को पीस कर, लिंगेन्द्रिय पर लेप करने से, स्त्री-प्रसंग में रुकावट होती है। ३-४ रत्ती समन्दर-फल खिला कर, उपर से तुलसी का रस पिलाने से सब तरह के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(ख) पसीने कम करने वाले और भी उपाय 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' दूसरे भाग में लिखे हैं।

(११६) भुनी हुई सोंठ पीस कर और उसमें पिसा हुआ सेंधानोन मिला कर सूखा ही मलने से पसीने कम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११७) अरहर की दाल, सेंधा नमक और सोंठ—तीनों को समान-समान ले कर पीस और भून लो। इसके बाद इसकी मालिश करो। इससे पसीनों का ज्यादा आना और हाथ-पैरों का ठण्डा होना मिट जाता है। सन्निपात ज्वर में जब हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं और पसीने ज्यादा आते हैं, इस भुने हुए चूर्ण की मालिश करने से निश्चय ही लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—ज्वार का आटा मलने से भी पसीने कम हो जाते हैं। परीक्षा नहीं की है। अगर समय पर और कुछ न मिले, तो इसी को मलो और परीक्षा करो।

(११८) बाजरे के आटे में सोंठ और सेंधा-नोन मिला कर मलने से पसीने कम हो जाते हैं।

□ अलसक और विलम्बिका □

अलसक के लक्षण

जिस रोग में पेट बहुत ही अफर जाय; रोगी हाथ-पैर आदि अंगों को पटके और चिल्लाये, अजीर्ण से रुकी पेट की वायु, नीचे गुदा-मार्ग से न निकल

कर, छाती और कण्ठ प्रभृति की तरफ ऊपर को चढ़े; मल और वायु अत्यन्त रुक जायँ यानी पाख़ाना न हो और हवा भी न खुले; प्यास लगे और डकारें आयें—वह रोग 'अलसक' है।

काश्यप ऋषि कहते हैं।

नाधो याति न चाप्युर्द्धमाहारो यन्न पच्यते।
कोष्ठे स्थितोऽलसीभूतस्तोऽसावलसः ॥

किया हुआ भोजन न तो वमन द्वारा ऊपर हो कर ही निकलता है और न दस्तों द्वारा नीचे को ही गिरता है और जठराग्नि से पकता भी नहीं—किन्तु कोठे में आलसी की तरह पड़ा रहता है, इसी से इस रोग को 'अलसक' कहते हैं।

खुलासा यह है कि खाये-पिये पदार्थ, ख़राब या ज़हरीले हो कर कोठे में आलसी या काहिल की तरह पड़े रहते हैं न दस्तों से निकलते हैं और न वमन से निकलते हैं, कोठे में पड़े-पड़े रोगी का पेट फुला देते हैं, गुदा की हवा को निकलने नहीं देते, इससे वह छाती और कण्ठ की ओर जाती और पीड़ा करती है, प्यास लगती और डकारें आती रहती हैं।

विशूचिका और अलसक में भेद

विशूचिका में दस्त और क़य से दूषित पदार्थ निकलते हैं, पर अलसक में कोठे ही में पड़े रहते हैं; दोनों राहों में से किसी से भी नहीं निकलते। ख़ुलासा यह है, कि विशूचिका में दस्त और क़य होते हैं; अलसक में दोनों नहीं होते।

विलम्बिका के लक्षण

जिस रोग में भोजन किया हुआ दुष्ट आहार, कफ और वायु के कारण से, मुँह और गुदा द्वारा नहीं निकले, उसे विद्वान् वैद्य 'विलम्बिका' कहते हैं।

विलम्बिका रोग की चिकित्सा में बड़ी कठिनाइयाँ हैं, इसलिए वैद्य को इसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिए।

विशूचिका और विलम्बिका के अरिष्ट

जिस रोगी के नाखून, होंठ और दाँत काले हो गये हों, सञ्ज्ञा नष्ट हो गई हो, होश न हो, वमन से पीड़ित हो, आँखें खड्डों में घुस गई हों, आवाज़ बैठ गई हो और सारे शरीर के जोड़ ढीले हो गये हों—वह मनुष्य मर जायगा।

अनाड़ियों की समझ की भूल

आमाजीर्ण, विदग्धाजीर्ण, और विष्टब्धाजीर्ण से विशूचिका, अलसक और विलम्बिका—ये तीनों महारोग होते हैं। अनाड़ी-लोग समझते हैं, आमाजीर्ण से विशूचिका, विदग्धाजीर्ण से अलसक और विष्टब्धाजीर्ण से विलम्बिका होती है। परन्तु यह अनुक्रम मानना ठीक नहीं। हाँ; एक-एक अजीर्ण से ये तीनों महारोग होते हैं। अगर इस अनुक्रम को मानें, तो विष्टब्धाजीर्ण से विलम्बिका होनी चाहिए; लेकिन यह ठीक नहीं; क्योंकि विष्टब्धाजीर्ण वायु से सम्बन्ध रखता है, किन्तु विलम्बिका कफ और वायु से होती है।

अजीर्ण, विशूचिका, अलसक और विलम्बिका की तशरीह

अजीर्ण में दस्त होते हैं और नहीं भी होते, और वमन अजीर्ण का एक उपद्रव है। मतलब यह है, कि अजीर्ण में कभी तो दस्त और क़य होते हैं और कभी दस्त रुका रहता है और वमन होती है और कभी दस्त भी नहीं होता और वमन भी नहीं होती। हवा रुकी रहती है और पेट फूला रहता है, इत्यादि।

उधर विशूचिका में भी दस्त और क़य होते हैं। अलसक में मल और वायु का अत्यन्त अवरोध होता है; यानी न दस्त होते हैं और न हवा खुलती है। वमन के सम्बन्ध में कुछ लिखा नहीं कि होती है या नहीं होती। हाँ, काश्यप मुनि कहते हैं, भोजन किया हुआ आहार न गुदा से निकलता है और न मुँह से। विलम्बिका में भी दुष्ट आहार न गुदा से निकलता है और न मुँह से।

• अलसक और विलम्बिका की चिकित्सा •

☛ **नोट**—अलसक और विलम्बिका में दस्त और क़य के सिवा और अनेक लक्षण विशूचिका के दिखाई पड़ते हैं। अलसक और विलम्बिका में साफ़ फ़र्क मालूम नहीं होता। दोनों के लक्षण प्रायः एक-से हैं। अलसक के लक्षण विशेष रूप से दिखाई देने पर विलम्बिका कहने लगते हैं। इन दोनों रोगों का इलाज प्रायः एक ही तरह होता है।

(१) इन रोगों में पहले गरम जल में 'नमक' मिला कर रोगी को खूब पिला दो और वमन कराओ। वमन होने से ये रोग जल्दी आराम होते हैं।

(२) अपामार्ग के बीज, गिलोय, सफ़ेद तुलसी, डहर करंज का फल, नीम की छाल और इन्द्रजौ—इन छहों का काढ़ा बना कर रोगी को गले तक पिलाओ। इससे भी वमन हो कर, दोनों रोग आराम हो जायँगे।

(३) जौ का आटा और जवाखार—इन दोनों को माठा में मिला कर गरम करो और पेट पर लेप करो। इससे पेट का दर्द नष्ट होता है। परीक्षित है।

(४) गरमागर्म काँजी में ऊनी कपड़ा भिगो-भिगो कर और निचोड़-निचोड़ कर पेट को उसी से सेको। इस तरह पेट का अफारा और दर्द मिट जायगा।

(५) प्यास और उत्क्लेश हो, जी मिचलाता हो, तो लौंग का औटाया हुआ पानी रोगी को पिलाओ; अथवा जायफल का काढ़ा बना कर पिलाओ। नागरमोथे का काढ़ा भी अच्छा है। परीक्षित है।

(६) हिचकियाँ चलती हों, तो केले की जड़ का रस रोगी को सुँघाओ।

नोट—प्यास, हिचकी और वाइँटे प्रभृति के उपाय उधर विशूचिका-चिकित्सा में लिखे हैं, वे सव इन दोनों रोगों में भी काम आ सकते हैं।

(७) भोजन करने से पहले हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और सेंधा-नोन—इन सवको वरावर-वरावर ले कर, जल के साथ पीस कर, लेप-सा वना लो और गरम करके पेट पर लगाओ। इस लेप से सव तरह के अजीर्ण और अलसक तथा विलम्विका रोग नष्ट होते हैं।

पथ्यापथ्य

इस रोग में पहले लंघन कराने चाहिये। पीछे आराम होने पर, भूख और अग्नि-वल देख कर, हल्का पथ्य देना चाहिये।

□ प्रश्नोत्तरी □

■ प्र० १—क्या हैज़ा भी प्लेग की तरह संक्रामक और सांघातिक रोग है?

□ उ०—हाँ, संक्रामक और सांघातिक रोगों में हैज़े का नम्वर प्लेग से दूसरा है। परन्तु कितनी वातों में हैज़ा प्लेग से भी वढ़ कर है; क्योंकि प्लेग का हमला रोगी के शरीर पर धीरे-धीरे होता है, और प्लेग-रोगी कितने ही दिनों तक जीवित भी रहता है; परन्तु हैज़े का हमला वहुत जल्दी होता है। हैज़े का रोगी ज़्यादा-से-ज़्यादा चार-पाँच दिनों में मर जाता है। कभी-कभी यह भयंकर रोग पहले दस्त और पहली क़य में ही रोगी का सफ़ाया कर देता है। इसकी मामूली मियाद २४ से ३६ घण्टों की है।

■ प्र० २—हैज़ा किस-किस मौसम में होता है?

□ उ०—गरमी की अधिकता से हैज़ा पैदा होता है, इसलिए गरमी या वर्षा-काल इसके पैदा होने का ठीक समय हैं; पर कभी-कभी यह शीतकाल में भी होता है। इसके सिवा, मौसम के वदलाव के समय भी यह फैलता है।

■ प्र० ३—डाक्टर लोग इसकी उत्पत्ति के विषय में क्या कहते हैं ?

□ उ०—डाक्टर कहते हैं, हैज़े की उत्पत्ति एक प्रकार के विषैले सूक्ष्म जन्तुओं से होती है। वे विषैले जन्तु, प्रायः जल के द्वारा मनुष्य-शरीर में घुस कर इसको पैदा करते हैं। डाक्टर उन जन्तुओं को 'कौमा-वेसिलस' (Coma-bacillus) कहते हैं, क्योंकि वे कौमा (,) की ही सूरत-शकल के होते हैं। हैज़े वाले रोगों के मल और वमन में हैज़े का जहर होता है। उस मल और वमन के सम्पर्क से हैज़े का विष और स्थानों में फैलता है।

■ प्र० ४—क्या मनुष्य के पेट में कौमा नामक जन्तुओं के जाने से ही हैज़े की उत्पत्ति होती है ?

□ उ०—नहीं, इसके सिवा हैज़े के और भी वहुत-से कारण हैं। वे कारण न होने से पेट में जन्तुओं के जाने पर भी रोग उत्पन्न नहीं होता। यह रोग शीतला की तरह केवल रोगी के छूने से भी होता है। इसी से इसको संसर्गज भी कहते हैं। इसका मुख्य कारण अजीर्ण या पाचक-रस की कमी है। हैज़े का ही नहीं, वल्कि सभी रोगों का कारण अजीर्ण है। इसी से आयुर्वेद में लिखा है—'रोग: सर्वेऽपि मन्दाग्नि, अर्थात् पाचन-शक्ति के मन्द होने से सब रोग होते हैं।

■ प्र० ५—हैज़े के और संखिया-खाये रोगी के लक्षण प्रायः मिलते हैं, अत; इन दोनों की स्पष्ट परीक्षा वताइये।

□ उ०—हैज़े के मौसम में जिनकी जिनसे शत्रुता होती है, अकसर वे लोग अपने शत्रुओं को किसी चीज़ में संखिया दे देते हैं। इनकी परीक्षा करते समय इन वातों पर ध्यान रखो—हैज़े में प्रायः पहले दस्त और पीछे क़य होती हैं; संखिया खाने वाले को पहले वमन और पीछे दस्त होते हैं। संखिया खाने वाले के मल के साथ ख़ून गिरता है, पर हैज़े वाले के मल के साथ ख़ून नहीं गिरता। हैज़े वाले का मल चावल के धोवन-जैसा होता है, परन्तु संखिया खाने वाले का मल अन्त की अवस्था में ऐसा हो सकता है। हैज़े में वमन से पहले गले में दर्द नहीं होता, पर संखिया वाले के गले में दर्द जरूर होता है। इन चार वातों के फ़र्क से—हैज़ा हुआ है या संखिया खाया है, यह वात जानी जा सकती है।

■ प्र० ६—हैज़े का नाश करने के चन्द और भी अच्छे-अच्छे उपाय वताइये।

□ उ०—(क) मोथा १ तोले, पीपर ६ माशे, हींग ६ माशे और कपूर ६ माशे—इनको पानी के साथ खरल करके चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। घण्टे-घण्टे में एक-एक गोली देने से हैज़ा नष्ट होता है। परीक्षित है।

(ख) सवा सेर साफ़ जल में सवा तोले सेंधानोन मिला कर रख लो। हैज़े वाला जब-जब पानी माँगे, यही पानी उसकी इच्छानुसार उसे पिलाओ। इस जल से हैज़े के कीड़े नष्ट होकर हैज़ा आराम होगा और प्यास-शान्त होगी। किसी दवा के साथ पानी के बजाय इस जल का देना उपकारी है। परीक्षित है।

(ग) नयी और सूखी हल्दी महीन पीस कर मोटे कपड़े में छान लो। पीछे इसमें से ६ माशे हल्दी, १। सेर शीतल जल में मिला दो। हैज़े वाले को यही जल दो। अगर क़य हो जाय, तो फिर भी आध घण्टे बाद यही जल दो। किसी तरह भी पेट में इस जल के रुकने से हैज़ा अवश्य आराम हो जायगा।

(घ) प्यास के लिए, हैज़े में केले के खम्भे का जल निकाल कर देना अच्छा है। इससे हैज़े के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ४ तोले की है। इस जल के पीने और लगाने से साँप का विष, संखिया का विष, हड़ताल-विष और चूहे का विष नष्ट होता है। केले के पानी से पेशाब साफ़ होता है।

(ङ) सोंठ, अरहर की दाल, कौड़ी की भस्म, अजवायन और कायफल—इन सबको पीस कर कपड़े में बाँध कर पोटली बना लो। इस पोटली से पसीने पोंछने से पसीने रुक जाते हैं। परीक्षित है।

(च) हैज़े में गाय के गोबर का रस निचोड़ कर पिलाने से वमन बन्द होती है।

(छ) लाल अरण्ड की जड़ १ तोले ले कर माठा में पका लो। फिर उसमें एक रत्ती साबर के सींग की भस्म मिला कर हैज़े वाले को सेवन कराओ। इस नुसख़े से असाध्य रोगी के बचने की भी उम्मीद हो जाती है।

(ज) सोंठ का चूर्ण ३ माशे और कपूर ४ रत्ती—इनको खरल में खूब पीस कर आठ भाग कर लो। इसमें से एक-एक भाग पाव-पाव घण्टे पर देने से हैज़ा नष्ट होता है। जब क़य और दस्त बन्द हो जायँ, दवा बन्द कर दो। बीच-बीच में पानी माँगने पर रोगी को नमक-मिला पानी, जितना रोगी पी सके, अवश्य दो। नमक का पानी हैज़े में रामबाण है। इसको गुदा द्वारा पेट में पहुँचाने से अनेक मरते-मरते रोगी बच गये हैं।

(झ) आक की जड़ की छाल, काग़ज़ी नीबू के बीज की गिरी, एलुआ, दरियाई नारियल, पपीता, कालीमिर्च, हींग, मुरमक्की (यूनानी दवा), पिपरमिन्ट और केसर—इन दसों को बराबर-बराबर लेकर, अदरख के रस में घोट कर, कालीमिर्च के समान गोलियाँ बना लो। हैज़े पर ये गोलियाँ रामबाण या तीरे-

हदफ़ का काम करती हैं। अगर हैजा होते ही ये दी जायँ, तो क्या कहना ! हर एक दस्त पर एक-एक गोली रोगी को देनी चाहिए। परीक्षित है।

(ञ) सूखी लाल मिर्च और नमक उबाल कर रख लो। इसमें से थोड़ा-थोड़ा जल, आध-आध घण्टे पर हैज़े वाले को दो। इससे हैज़ा आराम होता है।

(ट) बढ़िया हीरा हींग आधी रत्ती, लाल मिर्च पिसी १ रत्ती, कपूर चौथाई रत्ती, अफ़ीम चौथाई रत्ती और सोंठ आधी रत्ती—इनको जल के साथ घोट कर, तीन गोलियाँ बना लो। हैज़ा होते ही एक गोली शीतल जल के साथ दो। अगर वमन हो जाय, तो आध घण्टे में फिर १ गोली दो। एक गोली से दस गोली तक देने से हैज़ा नष्ट हो जाता है। रोग आराम होने और पेशाव हो जाने पर भूख लगे, तो साबूदाना दो।

(ठ) जहरमुहरा ७ माशे, जदवार २ माशे, वंसलोचन ३ माशे, छोटी इलायची के वीज ३ माशे, पिस्ते के ऊपर के कड़े सफ़ेद छिलके ३ माशे, अर्क़ कासनी १० तोले, अर्क़ गुलाव १० तोले और शर्वत अनार ३ तोले—पिसने वाली दवाओं को पीस कर, सब चीजों को एक में मिला दो और एक कोरी साफ़ हाँड़ी में रख दो। जब-जब रोगी पानी माँगे, इसी में से रोगी को दो-दो या तीन-तीन तोले पिलाओ। इसके सेवन से प्यास नष्ट हो जायगी।

(ड) चिरचिरे या ओंगे की जड़ ५ तोले ले कर, अढ़ाई सेर साफ़ जल में औटाओ। डेढ़ सेर जल रहने पर उतार कर कपड़े में छान लो और हाँड़ी में रख दो। इसमें से थोड़ा-थोड़ा जल हैज़े वाले को देने से हैज़े में लाभ होता है।

(ढ) निर्विषी (जदवार) २ माशे, जहरमुहरा २ माशे, हल्दी २ माशे केसर २ माशे, सिरस की छाल २ माशे, मोती १ माशे, सफ़ेद चन्दन १ माशे और कपूर १ माशे—इन सबको पीस कर अर्क़ गुलाव या केवड़े में घोट कर तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ बना लो। एक दिन में तीन या चार गोलियाँ देने से प्लेग और हैज़े की वेहोशी, प्यास और दाह आराम होते हैं।

(ण) रात के भोजन से पहले, प्याज के रस में चने-भर हींग, सौंफ १ माशे और धनिया १ माशे—इन तीनों को मिला कर खाने से हैज़ा होने का भय नहीं रहता। हैज़े के दिनों में इसे रात को अवश्य सेवन करना चाहिए और कपूर सूँघना और हरदम पास रखना चाहिए।

■ प्र० ७—अर्क़ कपूर से हैज़ा आराम होने के सिवा और क्या रोग नष्ट होते हैं ?

☐ उ०—(क) कीड़ा खाये दाँत या दाढ़ के छेद में रूई का फाहा 'अर्क़-कपूर' में भिगो कर रखने से कीड़ा मर जाता और फ़ौरन दर्द मिट जाता है।

(ख) 'अर्क़ कपूर' सिर पर लगाने से सिर-दर्द मिट जाता है।

(ग) 'अर्क़ कपूर' को तिल या अलसी के चौगुने तेल में मिला कर लगाने से हाथ-पाँव की ऐंठन और फूटन मिट जाती है।

(घ) विच्छू, ततैया, बर्र, डाँस, मच्छर और कनखजूरा प्रभृति के काटे पर 'अर्क़ कपूर' लगाने से फौरन शान्ति आती है।

(ङ) छोटी-छोटी फुन्सियों के उठते ही, उन पर 'अर्क़-कपूर' लगाने से फुन्सियाँ बैठ जाती हैं।

—: ★ :—

सातवाँ अध्याय

कृमि-रोग-वर्णन

卐

आयुर्वेद के मत से

☐ कृमि-रोग के निदान और लक्षण ☐

अनेक प्रकार के कुपथ्यों से मनुष्य के शरीर में—बाहर और भीतर—कीड़े पड़ जाते हैं। फिर उनके कारण से नाना प्रकार की पीड़ायें खड़ी हो जाती हैं। इसी, कीड़ों के रोग को संस्कृत भाषा में 'कृमि-रोग' कहते हैं।

कृमि-रोग के भेद

यों तो कीड़ों के बहुत भेद हैं, पर मुख्य दो ही हैं—

(१) बाहर के कीड़े।

(२) भीतर के कीड़े।

मुख्यतया दो ही भेद हैं, पर शास्त्रकारों ने इनके और भी चार भेद लिखे हैं—(१) मैले या पसीने प्रभृति से होने वाले। (२) पुरीषज या पाखाने से होने वाले। (३) कफ से होने वाले। (४) रक्त या ख़ून से होने वाले।

और भी भेद

विष्ठा से पैदा होने वाले कीड़े सात तरह के होते हैं। इसी तरह, कफ से होने वाले छह तरह के और रक्त से होने वाले सात तरह के होते हैं। इस तरह, तीनों कारणों से होने वाले कीड़े २० तरह के होते हैं।

कीड़ों के पैदा होने के स्थान

(१) मैले या पसीनों से होने वाले कीड़े, जिन्हें जूं या लीख कहते हैं, कपड़ों और बालों में रहते हैं।

(२) पुरीषज या विष्ठा के कीड़े पक्वाशय में पैदा होते हैं। यह बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते हैं।

☛ नोट—शार्ङ्गधर आचार्य बाहर और भीतर के भेद से दो प्रकार के कृमियों को २२ प्रकार के कहते हैं—१८ प्रकार के भीतर के कृमि। जूं, जमजूं, और

लीख तीन तरह के बाहर के और कफ-रक्त से पैदा होने वाले नहरुए, नारू या वाले को २२ वाँ लिखते हैं। बालों और कपड़ों में जो कृमि रहते हैं, वे तिल की तरह काले और सफ़ेद होते हैं, उन्हें जूँ कहते हैं। जूँओं के बहुत-से पाँव होते हैं। जमजूँ भी ऐसी ही होती हैं। ये चमड़े में चिपकी रहती हैं। जो बहुत ही बारीक होती हैं, उन्हें लीख कहते हैं।

कीड़ों के स्थान

(१) मैले या पसीनों से होने वाले कीड़े, जिन्हें जूँ या लीख कहते हैं, कपड़ों और बालों में रहते हैं।

(२) पुरीषज या विष्ठा के कीड़े पक्वाशय में पैदा होते हैं। ये बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते हैं।

(३) कफ से होने वाले कीड़े आमाशय में पैदा होते और पेट में चारों ओर घूमते हैं।

(४) रक्तज या ख़ून से पैदा होने वाले कीड़े, रक्त बहाने वाली शिराओं या नसों में रहते हैं।

कृमि-रोग के कारण

भीतर के कृमि नीचे लिखे हुए कारणों से पैदा होते हैं—

(१) अजीर्ण में भोजन करने से, (२) हर रोज मीठा और खट्टा भोजन करने से, (३) कढ़ी, रायता, शिखरन प्रभृति पतले पदार्थों के अत्यधिक पीने से, (४) पिसे हुए अन्न, मैदा प्रभृति और गुड़ पदार्थ खाने से, (५) मिहनत न करने से, (६) दिन में सोने से, (७) दूध और मछली, दूध और दही, दूध और नमक, दूध और केला प्रभृति विरुद्ध भोजन करने से, तथा (८) उड़द और दही वगैरा के ज्यादा खाने आदि कारणों से मनुष्य के शरीर में कीड़े पैदा हो जाते हैं।

पुरीषज कृमियों के कारण

उड़द, पिसा अन्न, लड्डू, घेवर प्रभृति पक्वान्न, नमक या गुड़ के बने पदार्थ एवं शाक आदि ज़्यादा खाने से मल के कीड़े पैदा होते हैं।

कफज कृमियों के कारण

माँस, उड़द, गुड़, दही, सिरका और काँजी प्रभृति खाने से कफ के कृमि पैदा होते हैं।

रक्तज कृमियों के कारण

विरुद्ध भोजन—जैसे दूध और दही या दूध और मछली प्रभृति एक साथ खाने अजीर्ण तथा आधा कच्चा और आधा पका साग-भाजी खाने प्रभृति से ख़ून के कीड़े होते हैं।

कीड़े पैदा होने के कारण

जब शरीर के भीतर कीड़े पैदा हो जाते हैं, तब मनुष्य को ज्वर होता है, शरीर का रंग और-का-और हो जाता है, पेट में शूल चलते हैं, हृदय दुखता है, जी मिचलाता है—वमन करने की इच्छा होती है, चक्कर आते हैं, भोजन बुरा मालूम होता है और दस्त लग जाते हैं। इन लक्षणों के होने से जानना चाहिये, कि भीतर कीड़े पैदा हो गये हैं। बिना कीड़े पैदा हुए ये लक्षण नहीं होते हैं।

बाहर के कीड़ों के विकार

बाहर के कीड़ों से गाँठ, फुन्सी, दाद, खाज, कोढ़ और गलगण्ड रोग होते हैं।

• पुरीषज कृमियों के लक्षण •

(पाखाने के कीड़े)

विष्ठा से पैदा हुए कृमि पक्वाशय में जनमते हैं। ये बहुधा नीचे ही रहते हैं और गुदा की राह से बाहर निकलते हैं। लेकिन जब ये बहुत बढ़ जाते हैं, तब आमाशय की ओर जाते हैं। उस समय डकारों और श्वासों में विष्ठा या पाखाने की-सी बदबू आने लगती है। ये कृमि बड़े, छोटे, गोल, मोटे, पीले, सफ़ेद और नीले होते हैं। इनके पाँच नाम हैं—(१) ककेरुक, (२) मकेरुक, (३) सौसुराद, (४) आमूलन और (५) लेलिह।

जब ये कीड़े अपनी राह छोड़ दूसरी राह में जाते हैं, तब नीचे लिखे रोग पैदा होते हैं—(१) पतले दस्त, (२) शूल, (३) अफारा, (४) देह में दुबलापन, (५) देह में कठोरता, (६) पाण्डुरोग, (७) रोमांच, (८) मन्दाग्नि, और (९) गुदा में खुजली।

'सुश्रुत' में लिखा है—"अयव, वियव, फिय्य, चिय्य, गंडूपद, चुरव और द्विमुख—ये सात प्रकार के कीड़े विष्ठा में या विष्ठा से पैदा होते हैं। ये कीड़े सफ़ेद और पतले होते हैं और गुदा में इस तरह काटते हैं, कि आदमी का शरीर अधर

हो जाता है और रोएँ खड़े हो जाते हैं। ये गुदा की तरफ भी जाते हैं। इनमें कुछ कीड़े पूँछवाले और कुछ मोटे होते हैं।"

'ये कीड़े शूल, मन्दाग्नि, क़ब्ज़ और पीलिया पैदा करते तथा शरीर का बल नष्ट करते हैं। मुँह से पानी आना, अरुचि, हृद्रोग और विड़्भेद—ये उपद्रव भी इनसे होते हैं। इन्हीं में एक प्रकार के लाल-लाल और लम्बे कीड़े होते हैं, जिन्हें गिडोये कहते हैं। इनके होने से गुदा में खुजली, शूल, पेट में अफारा, मल फटना और पाचन-शक्ति का मारा जाना—ये उपद्रव होते हैं।"

एक वैद्यराज लिखते हैं—इनमें एक प्रकार के कीड़े बारह हाथ तक लम्बे होते हैं। बहुत ज़्यादा मांस खाने, कच्चा मांस खाने और सूअर का माँस खाने से प्रायः ऐसे कीड़े पैदा होते हैं। ये खींच-खींच कर बाहर निकाले जाते हैं।

☛ नोट—पुरीषज या विष्ठा के कीड़ों से आहार-नली के सभी कीड़ों से मतलब है।

• कफज कृमियों के कारण •

कफज कृमि आमाशय में पैदा हो कर, पेट में हर ओर घूमते हैं। असल में ये बहुत बढ़ जाने पर ही चारों ओर फिरते हैं। इनमें से कोई मोटी चमड़ी के, कोई गिडोये-जैसे, कोई धान्य के अंकुर के जैसे और कितने ही छोटे, बड़े और चौड़े होते हैं। किसी का रंग सफ़ेद और किसी का ताम्बे-जैसा होता है। अन्नाद, उदरावेष्ट, हृदयाद, महागुह, चुख, दर्भ, कुसुम और सुगन्ध—इन नामों से ये सात प्रकार के होते हैं।

इन कृमियों से वमन की-सी इच्छा, मुख में पानी आना, अन्न न पचना, अरुचि, मूर्च्छा, वमन, प्यास, अफारा, ज्वर, शरीर की कृशता—दुबलापन, सूजन, पीनस, जुकाम, खाँसी और छींक आना प्रभृति उपद्रव होते हैं।

'सुश्रुत' में लिखा है—दर्भपुष्प, महापुष्प, प्रलून, चिपिट, पिपीलिका और दारुण—ये छह प्रकार के कीड़े कफ-कोप से होते हैं। इनके रोम होते हैं। सिर पर भी रोम होते हैं और दुम भी होती है। ये काले मण्डल वाले और बोये हुए धान अंकुर की तरह सफ़ेद और पतले होते हैं। ये कीड़े मज्जा; कान और तालू को खाते तथा आँखों को भी चाट जाते हैं। ये सिर के रोग, हृदय के रोग, वमन और जुकाम पैदा करते हैं।

• रक्तज कृमियों के लक्षण •

रक्तज कृमि या कीड़े रक्त बहाने वाली शिराओं में रहते हैं। ये बारीक, बिना पैर वाले, गोल और ताम्बे के रंग के होते हैं। कोई-कोई इतने बारीक होते हैं, कि देखने से भी नहीं दीखते। ये छह प्रकार के होते हैं। केशाद, रोमविध्वंस, रोमद्वीप, उदुम्बर, औरस और मातर—इनके ६ नाम हैं। ये कोढ़ पैदा करते हैं।

'सुश्रुत' में लिखा है—केशों में होने वाले, रोमों में होने वाले, नाखूनों में होने वाले और इन्हें ही खाने वाले तथा दाँतों के कीड़े, किक्कश, कुष्टज और परिसर्पि ये सात प्रकार के कीड़े (ख़ून के मैल-पसीने वगैर: से) ख़ून से पैदा होते हैं। इनमें कुछ सुर्ख़ीमाइल, काले, चिकने और मोटे भी होते हैं। ये रक्त-स्थान में होने वाले विकार—खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी और कोढ़ प्रभृति पैदा करते हैं।

• बाहर के कीड़ों के लक्षण •

शरीर के ऊपर होने वाले कृमि मैल और पसीने प्रभृति से होते हैं। इनको जूं और लीख कहते हैं। ये घने बालों और कपड़ों में रहती हैं। ये अनेक पैर वाली और छोटी-छोटी होती हैं। जहाँ ये होती हैं, वहाँ खुजली चलती है। ये कोढ़, पिड़िका, फुन्सी, गाँठ और खाज पैदा कर देती हैं।

नोट—इनमें से बहुत से कीड़े ऐसे होते हैं, कि बिना ख़ुर्दबीन शीशे के दीखते भी नहीं। इनके पैदा होने से बुख़ार वगैर: के अलावा अनेक ख़ून-ख़राबी के रोगों, वात-रक्त, दाद, खाज, खुजली प्रभृति हो जाते हैं; यहाँ तक कि कोढ़ हो जाता है।

रक्तज-कृमि होने से ज्वर, अतिसार, वमन, प्यास और बेहोशी प्रभृति के विकार होते हैं। इधर डाक्टर लोग विषम ज्वरों में जो कीड़ों का होना बताते हैं, यही बात जान पड़ती है। धन्य हमारे ऋषि-मुनियों को, जिन्होंने आज से लाखों-करोड़ों वर्ष पहले इन बातों का पता लगा लिया था।

• यूनानी मत से कृमि-रोग के कारण और लक्षण •

'इलाजुलगुर्बा' में लिखा है—कीड़े आँतों में पैदा होते हैं। ये कितने ही प्रकार के होते हैं। एक लम्बे साँप-जैसे होते हैं। दूसरे चौड़े होते हैं। इनको हुब्बुलकरा और कद्दूदाना* कहते हैं। तीसरे प्रकार के कीड़े छोटे और सिर के कीड़ों-जैसे

* इन कीड़ों को कद्दूदाना इसलिये कहते हैं, कि ये कीड़े कद्दू या लौकी के बीजों-जैसे गुरियादार होते हैं। ये कीड़े बहुत लम्बे होते हैं और एक-एक कीड़े में अनेक गुरिया होती है। ये आँतों में ऐसे चिपटे रहते हैं, कि अनेक दस्तावर

होते हैं। वे बहुधा मिथ्या आहार और गुदा को अच्छी तरह न धोने से बालकों की आँतों में होते हैं।

'मीज़ानुत्तिब्ब' नामक हिकमत के ग्रन्थ में लिखा है—कीड़े चार तरह के होते हैं—(१) बारह अंगुल या गज़ भर लम्बे होते हैं, उन्हें, 'केंचुए' कहते हैं। (२) कद्दू के बीज-जैसे चौड़े होते हैं, उन्हें 'कद्दूदाना' कहते हैं। (३) गोल होते हैं। और (४) पतले और छोटे होते हैं, उन्हें 'चिचिने' कहते हैं।

• कीड़े होने के लक्षण •

जब ये होते हैं, तब होठ सूखे रहते हैं और रात के समय लार बहा करती है। मेदे के मुंह पर कुरेदनी-सी मालूम होती है और भूख लगने के समय केंचुए ऊपर को चढ़ते हैं। ये ऊपर ही की आँतों में होते हैं। कद्दूदानों और तीसरे प्रकार के केंचुओं से भूख उल्टी बढ़ जाती है। ये कभी-कभी दस्तों में निकला भी करते हैं, तथा, कूलन और अऊर नाम की आँतों में पैदा होते हैं। चिचिने या चुन्ने बच्चों के बहुत पड़ते हैं और नीचे की आँतों में पैदा होते हैं। इनसे गुदा में खुजली चलती है।

एक हकीम साहब लिखते हैं, और सच लिखते हैं कि बाज़-बाज़ औकात, लक्षणों का ठीक ज्ञान न होने से, अच्छे-अच्छे वैद्य और डाक्टर भी, इस रोग का निश्चय नहीं कर सकते। लोग इस रोग को मामूली समझते हैं, पर वास्तव में यह रोग मामूली नहीं। इससे मृगी हैज़ा और पागलपन प्रभृति भयंकर रोग पैदा होते हैं। अजीर्ण से हैज़ा प्रभृति पैदा होते हैं और अजीर्ण से कृमि-रोग भी पैदा होता है अतः अजीर्ण से बचना चाहिये।

☛ नोट—हमारे आयुर्वेद में भी कृमि-रोग की पैदाइश अजीर्ण से लिखी है और यही वजह है कि 'माधव-निदान' कर्त्ता ने कृमि-रोग को अजीर्ण रोग के बाद लिखा है और पाण्डु या पीलिये को इसके बाद; क्योंकि कृमि-रोग भी पीलिये के कारणों में से एक है।

दवाओं से भी अपनी जगह नहीं छोड़ते। अगर किसी दवा से कद्दूदाने गिरते भी हैं, तो जड़ से नष्ट नहीं होते। इनकी बेल घटती नहीं, बढ़ती ही रहती है। अगर शीघ्र ही उपाय नहीं किया जाता, तो अनेक भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं।

• डाक्टरी मत से कृमि-रोग •

डाक्टरों के मत से मनुष्य-देह के भीतर सात तरह के कीड़े होते हैं, जिनमें से चार तरह के पेट वाले और तीन तरह के ठोस होते हैं। पर असल में तीन तरह के कीड़े बहुत देखे जाते हैं।

(१) केंचुए या 'राउन्ड वर्म्स' (Round worms) ये केंचुए की तरह के कीड़े पाँच से चौदह इंच तक लम्बे होते हैं। रंग कुछ-कुछ पीला या मटमैला होता है। ये छोटी आँत में ज्यादातर पाये जाते हैं और कभी-कभी आमाशय, लिवर, फेफड़ों आदि में भी चले जाते हैं। इनके होने से चेहरा पीला पड़ जाता है, नींद कम आती है, भूख कम लगती है, पेट बढ़ जाता है, पेट में दर्द-सा होता है, दस्त में आँव आती और प्यास ज़ोर से लगती है। मुंह से ख़ून आना, खाँसी, यकृत-शोथ, पीलिया, बेहोशी आदि भी अन्य लक्षण हैं। इन्हें "लार्ज राउन्ड वर्म्स" भी कहते हैं।

(२) चुरने, चुन्ने या थ्रेड वर्म्स (Thread worms), या पिन वर्म्स (Pin-worms)—ये सूत-जैसे पतले और आध अंगुल लम्बे होते हैं। ये बड़ी आँत में रहते हैं। ज्यादातर रात में गुदा पर रेंग कर आ जाते हैं और खुजली पैदा करते हैं। थोड़े से होते हैं, तब तो कुछ विशेष कष्ट नहीं होता; पर बढ़ जाने से बवासीर, मृगी, कम्प और काँच निकलने का रोग हो जाता है। अनिद्रा, खुजली, बार-बार पेशाब होना, पुरुषों को प्रमेह, स्वप्नमेह आदि, एवं स्त्रियों की योनि से पतला, श्वेत पदार्थ—स्राव बहना आरम्भ हो जाता है।

बच्चे नींद से चौंक-चौंक पड़ते हैं, बिस्तर भिगोते, रोते-चिल्लाते, हाथ-पैर पटकते, वमन करते हैं; पतले दस्त, ज्वर, काँच निकलना प्रभृति होकर बच्चा कृश हो जाता है।

(३) कद्दूदाने या टेप वर्म्स (Tape worms)—ये छोटे-बड़े सभी प्रकार के कीड़े होते हैं। छोटे एक से दो इंच तक तथा बड़े पाँच से आठ गज़ लम्बे होते हैं। इनके होने से जठराग्नि मन्दी हो जाती है, इसी से भूख कम लगती और शरीर रूखा हो जाता है। पेट में दर्द ऐंठन, पतले दस्त पाये जाते हैं। कद्दूदाने या टेप वर्म्स अधिकतर मांस खाने वालों को होते हैं। केंचुए या राउन्ड वर्म्स, चुन्ने, थ्रेड वर्म्स आदि साग-सब्जी, मांस आदि खाने वालों को होते हैं।

☛ नोट—आजकल हर बड़े शहर में अस्पतालों तथा डाक्टरी प्रैक्टिस करने वालों के यहाँ पाखाना—विष्ठा की अणुवीक्षण यन्त्रों द्वारा जाँच करने की सुविधा होती है जिससे कृमि की जाति आदि का पता लगाया जा सकता है। इस जाँच को स्टूल रूटीन टेस्ट (Stool routine test) कहते हैं।

• कीड़े पैदा होने के कारण •

इनके पैदा होने का कारण वहुत ही ज़्यादा मीठा खाना और सड़े-गले वासी भोजन करना है।

☛ **नोट**—इन कीड़ों को मारने के लिए रोगी को पहले मिठाई खिलानी चाहिए, जिससे कीड़े एक जगह इकट्टे हो जायँ। इसके वाद दही में कमीला या कवीला खिलाना चाहिए। इससे वे मर जाते हैं। मर जाने पर, इनको अरण्डी के तेल या तारपीन के तेल का जुलाव देकर निकाल देना चाहिए।

वैद्यक-मत से, बायबिड़ङ्ग का चूर्ण शहद के साथ चाटना और ऊपर से बायबिड़ङ्ग का काढ़ा पिलाना अच्छा है। गुड़ में कमीला मिला कर भी देते हैं। कमीला और बायबिड़ङ्ग इस रोग की अच्छी दवा हैं।

□ कृमि-रोग की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें □

(१) अगर वैद्य को रोगी के अन्दर कीड़े मालूम हों, तो पहले वह रोगी को स्नेहन कराये और फिर 'सुरसादि गण' से पकाये हुए घी से वमन कराये। फिर तेज़ नुसखे सेवन करा कर जुलाव कराये। इसके वाद जौ, बेर, कुल्थी और बायबिड़ङ्ग से सिद्ध किये स्नेह और लवण से अस्थापन वस्ति करे। जव रोगी शुद्ध हो जाय, उसे निवाये पानी से स्नान करा कर, कृमि-नाशक भोजन खिलाये और फिर बायबिड़ङ्ग आदि से सिद्ध किये हुए स्नेह से अनुवासन-वस्ति करे। यह विधि 'सुश्रुत' में लिखी है।

(२) 'सुश्रुत' में ही लिखा है, सिर, हृदय, नाक, मुँह और आँखों मे हो जाने वाले कृमियों को, वैद्य विशेष कर अंजन, नस्य और अवपीड़ आदि से आराम करे। जैसे घोड़े की लीद को सुखा कर, उसमें बायबिड़ङ्ग के काढ़े की भावना दे और उसे सुखाये। इसके वाद उस लीद को पीस कर, उसका प्रधमन नस्य दे; यानी उसे कागज़ की भोंगली द्वारा नाक में फूंके।

(३) बालकों का इलाज करते समय वैद्य को इस बात की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिए, कि पेट में कीड़े तो नहीं पड़ गये। कीड़े पड़ने से बालक जभी दूध पीता है, डाल देता है। उस दशा में, बिना कृमि-रोग आराम हुए, क्रय वन्द नहीं होती और ज्वर भी नहीं उतरता। अगर कीड़ों का वहम हो और लक्षण मिलें, तो बालक को दवा खिलानी और उसकी गुदा में भी लगानी चाहिए।

(४) नित्य कटु और तिक्त यानी चरपरे और कड़वे पदार्थों का भोजन कृमि-रोग में हितकारी है। इससे कृमि नष्ट होते, रुचि बढ़ती और अग्नि दीप्त होती है। अतः वैद्य को अपने रोगी को ऐसे ही पदार्थ वताने चाहिए।

(५) रोम पंक्तियों में होने वाले कीड़ों का इलाज वैद्य इंद्रलुप्त या गंज-रोज की तरह और दाँतों को खाने वाले कीड़ों का इलाज दाँतों के रोगों का नाश करने वाली विधियों से करे। रक्तज कृमियों का इलाज कोढ़ में लिखी विधि से करे। 'सुरसादि गण' का प्रयोग तो सभी तरह के कृमियों के नाशार्थ विचारपूर्वक करे। जैसे दाद, खाज, पामा, कच्छू, विचर्चिका, चर्मदल और कोढ़—ये सब रोग ख़ून में कीड़े होने से चमड़े पर होते हैं। इनका नाश करने के लिये, वैद्य लेप लगाते और औषधियाँ पिलाते हैं। जैसे कूट, वायविड़ङ्ग, पमार, हल्दी, सेंधानोन और सरसों—इन सबको नीबू के रस में पीस कर दाद पर लगाने से दाद के कीड़े मर जाते और दाद तथा कोढ़ आराम हो जाते हैं।

रोमों की जड़ों में रहने वाला ख़ून, पित्त के साथ कुपित हो कर, रोमों को गिरा देता है। फिर रुधिर के साथ मिल कर कफ, रोम-कूपों को रोक देता है,इससे फिर रोम पैदा नहीं होते। इसी को इन्द्रलुप्त, खालित्य और रुज्या कहते हैं। साधारण लोग गंज कहते हैं। इन वालों या रोमों की जड़ों में कीड़े पैदा हो कर गंज कर देते हैं। इसी से सुश्रुत ने कहा है कि रोम-पंक्तियों में होने वाले कीड़ों का इलाज इन्द्रलुप्त या गंज रोग की तरह करना चाहिये। जैसे हाथी दाँत की भस्म, बकरी का दूध और रसौत—इन तीनों का लेप करने से हाथ की हथेली में भी बाल पैदा हो जाते हैं। यानी इस लेप से रोग-नाशक कीड़े मर जाते हैं और बाल जमने लगते हैं।

नोट—नस्य, प्रधमन और अवपीड़—इन तीनों का मतलब अगर जानना है तो 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' प्रथम भाग में देखें।

□ कृमि-रोग की चिकित्सा □

विष्ठा और कफ के कीड़ों का इलाज

• मुस्तादि क्वाथ •

(१) नागरमोथा, मूसाकानी, त्रिफला, देवदारु और सहँजने के काढ़े में 'पीपल और वायविड़ङ्ग का कल्क मिला कर पीने से कृमि-रोग तथा इससे पैदा हुए और रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

• कृमि-कुठार-रस •

(२) शुद्ध कुचला, पके नीम के पत्ते, कालीज़ीरी, बखनी, एलुआ, किवेंची अजवायन, बोडी अजवायन, किरमानी अजवायन, सोंठ, पीपर, गोलमिर्च और वायबिड़ङ्ग—इन सबको पीस-कूट-छान कर, घीग्वार के रस में मिला कर, चने-

बराबर गोलियाँ बनाओ। मात्रा—१ से २ गोली तक। इससे कृमि-रोग नष्ट होता है और अफारा मिटता है।

• त्रिफलाद्य घृत •

(३) त्रिफला, बच, दन्तीमूल, निशोथ और कमीला—इन पाँचों को सोलह-सोलह तोले ले लो, तो यह दवायें एक सेर हो जायँगी। इससे चौगुना—चार सेर 'घी' ले लो और घी से चौगुना—१६ सेर 'गोमूत्र' ले लो। इन सबको कलईदार कड़ाही में मन्दाग्नि से पकाओ। जब मात्र घी रह जाय, उतार कर निकाल लो। इसमें से चार या छह माशे घी, गरम दूध में मिला कर पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है। यह नुसखा 'वंगसेन' का है। कई बार आज़माने से अच्छा साबित हुआ; इसी से लिख दिया है।

• बिडङ्गादि चूर्ण •

(४) बायविड़ङ्ग, सेंधा नमक, हींग, हरड़, सफेद निशोथ, संचर नमक और पीपर—इन सातों का चूर्ण गुनगुने जल के साथ लेने से कृमि, अरुचि और वमन—इनका नाश होता है।

• बिडङ्गावलेह •

(५) एक या आधे तोले बायबिडङ्ग को महीन कूट-पीस कर छान लो; पीछे शहद में मिला दो। यह 'बिडङ्गावलेह' है। इसके चाटने से करोड़ों कृमि नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है। कहा है—

> विडंगानां च चूर्णं तु कर्षाद्धं कर्षमेव च।
> मधुना सहितं लिह्यात् कृमि कोटि निवृत्तये ॥

(६) बायविड़ङ्ग के चावल, त्रिकुटा, सहँजना, कालीमिर्च और तक्र या माठा—इनके द्वारा सिद्ध की हुई—बनाई हुई—यवागू में 'सज्जी' डाल कर पीने से कृमि-रोग नष्ट होता है।

☛ **नोट**—सज्जी के स्थान में 'जवाखार' भी लेते हैं। यह नुसख़ा परीक्षित है।

(७) भात के माँड़ में 'बायविड़ङ्ग और त्रिकुटे का चूर्ण' डाल कर पीने से कृमि-रोग नष्ट होता, अग्नि दीपन होती और जठराग्नि बढ़ती है। परीक्षित है।

(८) बायविड़ङ्ग और सहँजने के काढ़े में 'शहद' डाल कर पीने से कृमि-रोग नष्ट होता है।

(९) पीपरामूल का चूर्ण बकरी के दूध के साथ पीने से कृमि-रोग नष्ट होता है।

(१०) बासी पानी में ६ माशे ख़ुरासानी अजवायन पीस कर और १ तोला पुराना 'गुड़' मिला कर पीने से कोठे के सारे कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अजवायन और गुड़ को मिला कर खाने और ऊपर से बासी जल पीने से भी लाभ होता है।

(११) नीम के पत्तों के रस में 'शहद' मिला कर पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(१२) ढाक के पत्तों के रस में 'शहद' डाल कर पीने से कृमि रोग नष्ट हो जाता है।

(१३) धतूरे का रस पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—धतूरे के रस में शहद मिला कर पीने से अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(१४) मूसाकानी के पत्तों को पीस कर, गेहूं के आटे में मिला कर पूरियाँ बना लो और उन्हें खाओ। ऊपर से 'सौवीर' नामक काँजी पियो। इस तरह करने से सब तरह के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१५) ढाक के बीजों के स्वरस में 'शहद' मिला कर पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—ढाक के बीजों के कल्क में शहद मिला कर पीने से भी कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१६) ढाक के बीज ५ माशे, 'छाछ' में पीस कर पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बीजों को सिल पर महीन पीस कर छाछ में मिला लेना चाहिए।

(१७) वायबिड़ङ्ग का चूर्ण ५ माशे, एक तोले 'शहद' में मिला कर चाटने से कृमि नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) सुरसादिगण की औषधियों को कूट-पीस-छान कर चूर्ण बना लो और शहद में मिला कर चाटो। इससे कृमि-रोग निश्चय ही नष्ट हो जाता है। सुश्रुत ने कृमि-रोग पर सुरसादिगण की औषधियों की बड़ी तारीफ़ लिखी है।

(१९) सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजो, नीम की छाल, निशोथ, बच और खैरसार—इन ग्यारह दवाओं का काढ़ा, 'गोमूत्र' में मिला कर

पीने से कृमियों की कोटि भी फ़ौरन नष्ट हो जाती है। पर कम-से-कम ११ दिन पिलाना चाहिए। परीक्षित है।

'वैद्यजीवन' में लिखा है—

त्रिकटुत्रिफलार्कलिंगनिम्ब, त्रिविद्रुत्ताखदिरोद्भवः कषायः।
पशुमूत्रसमन्वितो निपीतः कृमिकोटीरपि हन्ति वेगतोऽयम्॥

(२०) ३ माशे कमीला, ६ तोले पुराने गुड़ में मिला कर, ३ दिन तक सेवन करने से पेट के सब कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—कमीला ६ माशे भी दिया जाता है।

(२१) खजूर के पत्ते दो तोले ले कर, डेढ़ पाव जल में काढ़ा बनाओ। जब आध पाव जल रह जाय, उतार कर छान लो और २४ घन्टों तक रखा रहने दो। दूसरे दिन उस बासी काढ़े में ६ माशे 'शहद' डाल कर पियो। इस तरह ७ दिन तक यही काढ़ा पीने से भयंकर कृमि भी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खजूर की जड़ का नरम गूदा खाने से भी कीड़े मर जाते हैं।

(२२) कच्ची सुपारी मीठे नीबू के रस में ६ घण्टे तक घोट कर पीने से दारुण-कृमि भी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) पकी खजूर १ छटांक खा कर, ऊपर से दो जंभीरी नीबू चूसने से मल के सारे कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(२४) बायविडङ्ग के काढ़े में बायविड़ङ्ग का चूर्ण मिला कर पीने से कृमि-रोग और इनसे हुए अन्य रोगों का नाश होता है।

(२५) बायविड़ङ्ग, ढाक के बीज और इन्द्रजौ—इनको महीन पीस कर चूर्ण कर लो। इसमें से ३ से ६ माशे तक चूर्ण 'खाँड़' मिला कर खाने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(२६) नीबू के पत्तों का रस शहद मिला कर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(२७) ख़ुरासानी अजवायन पान में खाने, या नीम के पत्तों का रस पीने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं। कहा है—

पारसीकां यवानीं तु पर्णेन सह भक्षयेत्।
कृमिजालं निर्हन्त्याशु पीतो निम्बरसोऽथवा॥

(२८) खुरासानी अजवायन में सेंधानोन मिला कर रोज़ सवेरे खाने से कृमि-रोग, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२९) तितली के बीजों का चूर्ण, माठे या कच्चे नारियल के पानी के साथ पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाते हैं।

(३०) दही में कमीला मिला कर खिलाने से सब तरह के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३१) पहले रोगी को मिठाई खिला दो। इससे कीड़े इकट्ठे हो जायँगे। इसके बाद गुड़ में या दही में कमीला खिला दो। इससे कीड़े मर जायेंगे। शेष में अरण्डी का तेल ४ तोले और तारपीन का तेल १० बूँद, गरम दूध में मिला कर या ऐसे ही पिला दो। सब कीड़े निकल जायँगे। परीक्षित है।

(३२) बच, अजमोद, बायविड़ङ्ग, ढाक के बीज, कचूर और हींग—ये सब एक-एक तोला लो और सोंठ ३ तोले लो। इन्हें पीस-कूट कर चूर्ण बना लो। इसमें से ३ से ६ माशे तक चूर्ण गरम जल के साथ लेने से कीड़े सौ तरह से निकलते हैं।

(३३) बिजौरे की जड़, लहसन, निशोथ, अजमोद और नीम के पत्ते—इन सबको बराबर-बराबर ले कर गोमूत्र में पीस कर पीने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(३४) ढाक के बीज और अजवायन—दोनों को पीस कर खाने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(३५) कचूर का रस पीने से कृमि-रोग बहुत जल्दी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

☛ नोट—कचूर के कन्द की चकत्तियों की माला गले में पहनने से भी कृमि-रोग आराम हो जाता है। अगर दोनों काम किये जायँ, तब तो कहना ही क्या!

(३६) काले ज़ीरे का चूर्ण शहद में मिला कर लेने से कृमि मर जाते हैं। परीक्षित है।

(३७) कमीला, बायबिड़ङ्ग, करंज की गिरी, पित्तपापड़े के बीज और किरमानी अजवायन—सबको बराबर बराबर ले कर, पीस-कूट कर छान लो और अन्दाज का पुराना गुड़ मिला कर, तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली ताज़ा पानी के साथ खाओ। दूसरे दिन उबाले हुए 'अरण्डी के तेल' का जुलाब लो। इस तरह करने से हर तरह के कीड़े दस्तों द्वारा निकल जायँगे। इसके बाद, डेढ़ माशे 'बायबिड़ङ्ग का चूर्ण' शहद में मिला कर, ११ दिन खाने से फिर कीड़े पैदा न होंगे। परीक्षित है।

(३८) पलाश का पित्तपापड़ा ३ रत्ती से ६ रत्ती तक, रोज़ तीन दिन तक रात को सेवन करने और चौथे दिन 'अरण्डी के तेल' का जुलाब लेने से कीड़े निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(३९) अरण्डी के तेल में गो-मूत्र मिला कर पीने से पेट के रोग और कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४०) नारियल की दाढ़ी पानी में औटा कर, सवेरे ही, खाली पेट में पीने से कृमि मर जाते हैं।

(४१) नीम के पत्तों को मीठे तेल में पका लो और छान कर रख लो। इस तेल को मलने से बाहरी कीड़े, जूँ, लीख आदि नष्ट हो जाते हैं। इसको सूँघने और कानों में डालने से माथे के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४२) अजवायन, कचरी और सैंधानोन पीस कर फाँकने और ऊपर से सिरका या काँजी पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(४३) कद्दूदाने होने की दशा में लूनिया का साग रोज़ वना कर खाओ और चौथे दिन 'अरण्डी के तेल' में गो-मूत्र मिला कर पियो। इस तरह करने से कद्दूखाने नष्ट हो जायँगे।

☛ **नोट**—कद्दूदाने वड़ी कठिनाई से नष्ट होते हैं। इस रोगी को गुड़, उड़द, मैदा, मांस, कच्चा अन्न, मटर की फली, हरे चने, दूध, बहुत खटाई, गरिष्ठ भोजन और तीक्ष्ण पदार्थों से बचना चाहिये। 'हिङ्गाष्टक चूर्ण' तीन-तीन माशे दोनों भोजन के समय खाना चाहिये।

(४४) इन्द्रायण की जड़, पानी के साथ चन्दन की तरह घिस कर, गुदा के वाहर-भीतर लगाने से गुदा की सूजन, खुजली और ललाई आदि सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४५) चिरायता, दन्ती, हरड़, बहेड़ा, आमला, विशाला, निशोथ, हल्दी, दारुहल्दी, बायविड़ंग, चीते की जड़ की छाल और पलाश या ढाक के वीज—इन सब को बराबर-वरावर ले कर काढ़ा बनाओ और पियो। इस काढ़े से ज्वर और वमन आदि सहित कृमि-रोग नष्ट हो जायेगा।

(४६) छिला कमीला, पलाश के वीज, पुरानी वायविड़ंग और सैंधानोन—सबको वरावर-बराबर ले कर, कूट-पीस-छान कर चूर्ण कर लो। मात्रा—६ से ८ माशे तक। अनुपान—गरम जल। इस चूर्ण से गुदा के कीड़े मर जाते हैं।

(४७) छिला हुआ कमीला दही में मिला कर खाने से कृमि गिर जाते हैं। कमीला ३ माशे लेना चाहिए।

☛ नोट—दही न हो, या लेना न हो, तो इसे गरम जल से भी ले सकते हो। दो-तीन दिन में आराम हो जाता है।

(४८) सिरसा की छाल एक तोले ले कर, आठ छटाँक जल में औटाओ। आठवाँ भाग जल रहने पर उतार कर मल-छान लो और पी जाओ। इस काढ़े से सूजन सहित कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(४९) समन्दर-फल का ऊपर का जंजाल हटा कर, सात-सात दिन 'बकरी के दूध और मूत्र' में उसे भिगो लो और सुखा लो। फिर उसको 'हींग' के साथ कृमि-रोगी को दो। अवश्य लाभ होगा।

(५०) दो माशे नौसादर 'घी' में मिला कर पिलाने से नारू या बाला नष्ट हो जाता है।

☛ नोट—नारू की सूजन पर नौसादर का लेप करना चाहिए।

(५१) अनार की छाल का काढ़ा चार आने भर, तिल के तेल में मिला कर, तीन दिन बराबर पीने से सब कीड़े निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(५२) सवेरे ही उठ कर पहले 'गुड़' खा लो। फिर कुछ देर बाद बासी जल में 'खुरासानी अजवायन' पीस कर पी लो। इस विधि से कोठे के सब कीड़े मर जाते हैं। परीक्षित है।

(५३) खट्टे अनार के वृक्ष की छाल और उसकी जड़—इन दोनों का काढ़ा पीने से कीड़े मर जाते और दस्तों के साथ निकल जाते हैं।

☛ नोट—गरम मिज़ाज वाले को गरम दवा कभी न देनी चाहिए। उसके लिए ऊपर की दवा उत्तम है। अगर रोगी दवा पीना चाहे तो हुकना या शाफा करना चाहिए। अगर यह भी न हो सके, तो नीचे के लेप करने चाहिये।

(५४) सिमाक, अकाकिया और गिले मख़तूम को 'शराब' में पीस कर पेट पर लेप करना चाहिए। अथवा कड़वे बादाम, कमीला, तुरफस, किन्न और करम्ब को सिरके में पीस कर पेट पर लेप करना चाहिए। ये नुसख़े हिकमत के हैं।

(५५) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहसार, कालीमिर्च, शुद्ध मीठा तेलिया, धाय के फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, नागरमोथा, रसौत, मिर्च, पीपर, पाढ़, नेत्रवाला और बेलगिरी—सबको बराबर-बराबर ले कर, भाँगरे के रस में भावना दे कर गोली बना लो। ये गोलियाँ सब तरह के कृमि-रोगों को नष्ट करती हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—ये गोलियाँ एक दूसरे वैद्य महोदय की परीक्षित हैं।

(५६) सवेरे ही उठ कर पहले गुड़ खाओ। इसके बाद :तेजपात और अजवायन का चूर्ण' फाँक कर बासी पानी पियो। इससे पेट के कीड़े गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(५७) इन्द्रायण की जड़ और कालीमिर्च पीस कर सेवन करने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(५८) नागरमोथा, मूसाकानी के फल, देवदारू और सहँजने के काढ़े में 'पीपल और बायविड़ङ्ग के कल्क' को मिला कर सेवन करने से गुदा और लिंग दोनों भागों से प्रवृत्त हुए बहुत दिनों के कीड़े और उनसे हुए रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५९) कड़वे नीम के पत्ते और हींग मिला कर खाने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(६०) कड़वे नीम के पत्ते पीस कर लेप करने से नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६१) कड़वे परवल के पत्ते १ तोले और धनिया १ तोले—दोनों को रात के समय १ पाव जल में भिगो दो। सवेरे छान कर और 'शहद' मिला कर दिन में ३ बार नित्य पीने से कृमि-रोग आराम हो जाता है।

(६२) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध अभ्रक-भस्म, शुद्ध लोहसार और शुद्ध मैनसिल—इन सबको बराबर-बराबर लो और धाय के फूल, हरड़ बहेड़ा, आमला, पठानी लोध, वायबिड़ंग, हल्दी और दारूहल्दी—इनको भी बराबर-बराबर ले कर कूट-पीस कर छान लो। सबको मिला कर सात बार 'अदरख के रस' में भावना दो। इसके बाद मसाले को खरल में डाल कर, 'त्रिफले का रस' दे-दे कर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही एक गोली रोज खाने से सब तरह के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

□ बालकों के कृमि-रोग की चिकित्सा □

कृमि-रोग बड़े-छोटे सबको होता है, पर बच्चों को ज्यादा होता है। अक्सर बालकों के दस्तों में कीड़े नज़र आते हैं। इसका कारण बालकों को अधिक दूध पिलाना या दूध का दूषित होना है। जो माताएँ भारी या गरिष्ठ भोजन करती हैं, उन्हें बदहजमी बनी रहती है, इससे उनके बच्चों को कृमि-रोग ज्यादा होता है। छोटे-छोटे बालकों को, लाड़-प्यार में, नासमझ माता-पिता लड्डू, बरफी या ऐसी ही चीजें बहुत खिलाते हैं, इसलिए बरस-डेढ़ बरस से ऊपर के बालकों को भी कृमि-रोग होता है।

कीड़ों के काटने से बालकों को बड़ी तकलीफ होती है। दिन भर उनका हाथ गन्दी जगह में रहता है। साँझ होते ही वे माँ को हैरान करने लगते हैं। हज़ार तरह से राज़ी करने पर भी राज़ी नहीं होते। हों कैसे ? कीड़े खाते हैं। कीड़ों के मारे सोये हुए बालक चौंक पड़ते और रोने लगते हैं। उनकी गुदा का रंग लाल हो जाता है, गूदा सूज जाती है, दस्त होने लगते हैं, पेट में दर्द होता है, शरीर पीला या सफ़ेद पड़ जाता तथा दुबला हो जाता है, बच्चे दूध पीते ही वमन कर देते हैं, प्यास बढ़ जाती है और ज्वर चढ़ा रहता है। ऐसे कृमि-रोग-वाले बालकों की वमन या क़य, बिना कृमिरोग-नाशक उपाय किये, हज़ारों दवाओं से भी नहीं मिटती।

(६३) प्याज़ का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े और बदहजमी— ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—प्याज़ का रस लगाने से डाँस का काटा आराम हो जाता है।

(६४) अरण्ड के पत्तों का स्वरस, तीन दिन तक, बालक की गुदा में लगाने से चुन्ने कीड़े मर जाते हैं। परीक्षित है।

(६५) धतूरे के पत्तों का स्वरस ३ दिन तक बालक की गुदा में लगाने से चुन्ने कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६६) घमीरा के पत्तों का स्वरस ३ दिन तक बालक की गुदा में लगाने से चुन्ने कीड़े मर जाते हैं।

(६७) घमीरा के पत्तों का रस, धतूरे के पत्तों का रस और बंगला पानों का रस, तीन-तीन माशे ले कर, सबको मिला कर, दिन में ३ दफा, नित्य तीन रोज़ तक बालक की गुदा में अँगुली से लगाने से सारे कीड़े बाहर निकल आते हैं।

(६८) मेहँदी और मोम मिला कर बत्ती बनाओ और उसका शाफा करो। फिर थोड़ी देर बाद चिराग या टॉर्च से बालक की गुदा देखो। जो कीड़ा गुदा के किनारे पर आ गया हो, उसे मोचने से पकड़ कर खींच लो।

(६९) जैतून का कच्चा तेल गुदा में लगाने से बालकों के कीड़े मर जाते हैं।

नोट- जैतून का तेल खाने से भी कीड़ों का नाश होता है।

(७०) मण्डूर भस्म और बायबिडंग का चूर्ण, बराबर-बराबर ले कर, शहद के साथ चाटने से बालकों के कीड़े निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(७१) पलाश के पित्तपापड़े को उबाल कर गुदा में पिचकारी मारने से सूत-से-कीड़े निकल पड़ते हैं। परीक्षित है।

(७२) कौंच की जड़ पानी में घिस कर पिलाने या कौंच के अंकुर छाछ में पिलाने से बालक के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अरण्ड के पत्तों का रस भी यदि पिलाया जाय, तो पेट के कीड़े निश्चय ही मर जायँ। अगर इस रस में ज़रा-सी हींग मिला दें, तो और भी अच्छा हो।

(७३) आधे-आधे या एक माशे कमीले को आधी छटाँक जल में औटा लो। आठवाँ भाग जल रहने पर उतार कर छान लो, और बालक को पिला दो। इससे चुन्ने गिर जायँगे।

नोट—(क) कुकरौंधे का रस ३ माशे पिलाने से भी बालक के कीड़े गिर जाते हैं। (ख) आधी रत्ती से २ रत्ती तक एलुआ, माँ के दूध में घिस कर रोज़ चटाने से बालक को कृमि-रोग या पेट का रोग नहीं होता।

(७४) गिलोय और भैंसिया गूगल 'अरण्ड के पत्तों के रस' में घिस कर, पेट पर लेप करने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

□ बाहर के कीड़ों की चिकित्सा □

• जूँ. लीख, नारू दाँतों के कीड़े और रोमों के कीड़ों का इलाज •

(७५) इन्द्रायण के पके फल का थोड़ा-सा गूदा ले कर, लोहे के बर्तन में रख कर, आग पर गरम करो। जब धुआँ निकलने लगे, उसे कीड़े वाले दाँत या दाढ़ में लगने दो। इस धूनी से कीड़ा तुरन्त ही मर जायगा। परीक्षित है।

(७६) वायविड़ङ्ग को छोटी चिलम में रख कर, ऊपर से साफ जलते हुए कोयले या अंगार रख कर, तम्बाकू की तरह पियो। इस उपाय से दाँतों के कीड़े मर जायँगे और मुँह से ख़राब जल निकल कर दाँत-दाढ़ों का दर्द मिट जायगा। परीक्षित है।

(७७) दाँत या दाढ़ के कीड़ों के खाये हुए छेद में 'कपूर' का टुकड़ा रखने से दाँत या दाढ़ के कीड़े तत्काल मर जाते हैं।

(७८) कड़वी तोरई का पिसा हुआ चूर्ण, काग़ज़ में रख, चुरुट-सी बना लो और दियासलाई दिखा कर सिगरेट की तरह पिओ। इससे दाँतों के कीड़े मर जायँगे। परीक्षित है।

(७९) कड़वे परवल के पत्तों का रस लगाने से बाल जल्दी आ जाते हैं, यानी 'इन्द्रलुप्त या गंज' नष्ट होता है। परीक्षित है।

(८०) रीठे के पत्तों से सिर को धो कर करंज का तेल, नीबू का रस और कड़वे कैथ के बीजों का तेल मिला कर सिर पर लगाने से गंज रोग आराम हो जाता है।

(८१) धतूरे के पत्तों के रस में 'पारा' खरल करके सिर में लगाने से जूँ नष्ट हो जाती हैं।

रसेन्द्रेण समायुक्तो रसो धत्तूरपत्रजः ।
ताम्बूलपत्रजोवाऽप विलिप्तो यूकनाशनः ॥

(८२) पान के रस में पारा खरल करके सिर पर लगाने से भी जूँ नष्ट हो जाती हैं।

(८३) कोह के फूल, बायविड़ंग, कलिहारी, भिलावे, ख़स, लोबान, राल और मैनफल—इन सब को मिला कर, आग पर डाल कर धूप देने से मच्छर भाग जाते हैं। खाट में धूनी देने से खटमल दूर हो जाते हैं। शरीर में खेहने से शरीर और कपड़ों की जूँ नष्ट हो जाती हैं।

(८४) मँजीठ को काँजी में पीस कर लेप करने से जूँएँ नष्ट हो जाती हैं।

(८५) शिलारस को 'गो-मूत्र' में पीस कर लेप करने से जूँ नष्ट हो जाती हैं।

(८६) मैनसिल को 'कड़वे तेल' में पीस कर लेप करने से भी जूँ नष्ट हो जाती हैं।

(८७) लाख, भिलावे, श्रीवास, सफेद अपराजिता, अर्जुन के फल और अर्जुन के फूल, राल, बायबिड़ंग और गूगल—इन सबकी धूप बना कर घर में धूनी देने से सर्प, चूहे, डाँस, धुन, मच्छर और खटमल भाग जाते हैं।

(८८) बायबिड़ंग, मैनसिल और गन्धक—इन तीनों को जल के साथ पीस कर लुगदी बना लो। फिर गो-मूत्र और कड़वे तेल के साथ, तेल बनाने के क़ायदे से तेल पका लो। इस तेल से सब तरह की जूँ और लीख नष्ट हो जाती हैं। इस तेल को 'विड़ंग तेल' कहते हैं। परीक्षित है।

(८९) धतूरे के पत्तों के कल्क (लुगदी) या धतूरे के पत्तों के रस के साथ पकाये हुए तेल की मालिश करने से क्षण-भर में जूँएँ नष्ट हो जाती हैं। परीक्षित है।

(९०) अर्जुन के फूल, बायबिड़ंग, जलपीपल, मोम, चन्दन, राल, खस, कूट और भिलावा—इनकी धूनी देने से मच्छर और कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(८१) धतूरे के पत्तों के रस में 'कपूर' मिला कर सिर में लेप करने से सिर की जूं नष्ट हो जाती हैं।

नोट—धतूरे के पत्ते न होने पर, पानों के रस में कपूर मिला कर लेप करने से भी उतना ही लाभ होता है।

(८२) काली बेल के पत्तों का रस, कपूर और थोड़ा जल मिला कर रात को बालों में लगा दो और ऊपर से इसके पत्ते बाँध दो। सवेरे ही सब जूं मर जायेंगी।

नोट—यह बेल प्रायः झाड़ियों और बाड़ों पर होती है। इसके पत्ते कुछ-कुछ अरण्ड के पत्तों से मिलते हैं। आकार में प्रायः दोनों के पत्ते एक-से होते हैं, केवल लम्बाई में काली बेल के पत्ते कुछ बड़े होते हैं।

(८३) कसौंदी के पत्ते काँजी में पीस कर लेप करने से दाह और कोढ़ आराम होते हैं।

(८४) कड़वे नीम के पत्ते जला कर राख कर लो। उस राख को मीठे तेल में मिला कर खुजली के स्थान पर लगाओ। खुजली नष्ट हो जायगी।

(८५) कड़वे नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी में रोज़ स्नान करने, उसके पत्तों का रस निकाल कर यों ही पीने, या गाय के दूध में पत्ते पीस कर पीने से २ मास में भयंकर रक्त-पित्त और कोढ़ आराम हो जाते हैं। मगर रात को कड़वे नीम के वृक्ष के नीचे ही सोना और पथ्य सेवन करना भी आवश्यक है। परीक्षित है।

(८६) कड़वे नीम की ताज़ा निबौली खाने से भी कृमि-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८७) कड़वे नीम के बीज पीस-कर लगाने से सिर की जूं और खुजली नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८८) कुचले का बीज पानी में घिसकर लगाने से नारू आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—'इलाजुलगुर्बा' में लिखा है—नारू एक दाना होता है। जब वह फूट जाता है, तब उसमें से एक तागा निकलता है। इस रोग में शरीर के मल को साफ करना चाहिये। नारू के इर्द-गिर्द जोंकें लगवानी चाहिये। गरम पानी में तेल मिला कर और उसे गरम करके उसका नारू पर तरड़ा देना चाहिये। इस तरह तागा सुख से निकलता है। तागा टूटने न पाये, इसका बहुत ख़याल रखो।

(९९) सफ़ेद विषखपरे की जड़, विषखपरे के पत्तों के रस में पीस कर और उसमें ज़रा-सी 'सोंठ' मिला कर नारू पर बांधो; आराम होगा।

(१००) कलौंजी दही में पका कर नारू पर लेप करो।

(१०१) जमालगोटा जल में पीस कर नारू पर लेप करो।

(१०२) चौलाई की जड़ पीस कर नारू पर बांधो।

(१०३) जंगली कबूतर की बीट ४० तोले और गुड़ ४० माशे पीस कर, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। नित्य १ गोली खाने से नारू आराम होता है।

(१०४) दो चावल के बराबर कबूतर का पंख गुड़ में मिला कर खाने से नारू आराम होता है।

(१०५) बकायन के सात दाने हर रोज़ निगल जाने से नारू आराम होता है।

(१०६) मूली या पान के रस में पारा पीस कर और उसमें एक तागा भिगो कर सिर में रखने से जूँ नष्ट हो जाती हैं।

☛ नोट—'इलाजुलगुर्बा' में लिखा है, चाँदनी में बैठ कर कंघी करने से जूँ ज़्यादा पैदा होती हैं।

(१०७) नीबू का रस शक्कर में मिला कर सिर में मलने और दोपहर बाद सिर धो डालने से जूँ नष्ट हो जाती हैं।

(१०८) साँप की काँचली और अफ़ीम की टिकिया बना कर नारू पर रख देने से नारू आराम हो जाता हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—किसी भी लगाने की दवा के साथ-साथ निबौली खाने से नारू निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

(१०९) अगर ज़ख्म में कीड़े पड़ गये हों, तो घीग्वार का कन्द गो-मूत्र में पीस कर दिन में २-३ बार लगाओ।

□ कृमि रोग पर पथ्यापथ्य □

पथ्य

धूमपान, कफनाशक पदार्थ, शरीर को शुद्ध करने वाले द्रव्य, पुराने लाल चावल, परवल, लहसन, बथुआ, चीता, आक के पत्ते, सरसों, नया केला, कटेली के फल, कड़वी चीजें, तालीसपत्र, नाड़ी के पत्ते, चूहे का मांस, वायविड़ंग, नीम के पत्ते,

हरड़, तिल या सरसों का तेल, सौवीर काँजी, दही का तोड़, शहद, ताड़फल, भिलावा, गोमूत्र, पान, मदिरा—शराब, कस्तूरी, ऊँट का मूत्र, घी और दूध, हींग, जवाखार, अजमोद, खैरसार, कुड़े की छाल, जम्भीरी नीबू का रस, कलौंजी, अजवायन, कड़वे, कसैले और चरपरे—ये तीन रस, सब क्रमि-रोग में पथ्य हैं।

पुराने चावलों का भात, परवल, करेला, गूलर, बकरी का दूध, काँजी, क़ाग़जी नीबू का रस, साबूदाना, अरारूट, बारली प्रभृति लघु पथ्य सेवन करना अच्छा है। दोनों समय भात खाना चाहिये। क्रमि-रोग में अजीर्ण से अवश्य बचना चाहिये। कम और हल्का भोजन करने वाले को अजीर्ण नहीं होता।

अपथ्य

पिट्ठी से बने भारी पदार्थ, मीठे पदार्थ, गुड़ वगैरः, उड़द, दही, ज़्यादा घी, अधिक पतले पदार्थ और मांस, एवं दिन में सोना, मल-मूत्र का वेग रोकना, वमन करना, विरुद्ध अन्नपान, जल पीना, अजीर्ण में भोजन करना, पत्तों के साग, दूध, खटाई और मीठे रस—ये सब अपथ्य हैं।

कहा है—

क्षीराणि मांसानि गुडं घृतं च दधीनि शाकाश्च समच्चयन्ति।
समासतोऽम्लान्मधुरान्विकारान्क्रमीञ्जिघांसुः परिवर्जयेत्॥

☐ प्रश्नोत्तरी ☐

■ प्र० १—क्रमि-रोग कितने प्रकार का होता है?

☐ उ०—दो प्रकार का—(१) बाहर का, और (२) भीतर का।

■ प्र० २—कहते हैं, क्रमि २० तरह के होते हैं, क्या यह ठीक है?

☐ उ०—हाँ, मल से पैदा होने वाले सात तरह के; कफ से होने वाले छह तरह के, ख़ून से होने वाले सात तरह के होते हैं। इस तरह २० तरह के कीड़े मनुष्य के शरीर में भीतर-बाहर होते हैं।

■ प्र० ३—बाहर के कीड़े कहाँ और कैसे पैदा होते हैं?

☐ उ०—मैल या पसीनों से होने वाले कीड़े, जिन्हें जूँ या लीख कहते हैं, कपड़ों और बालों में होते हैं।

■ प्र० ४—भीतर के कीड़े कैसे पैदा होते और कहाँ रहते हैं ?

□ उ०—(क) उड़द, लड्डू, घेवर एवं नमक और गुड़ इत्यादि खाने से मल के कीड़े पैदा होते हैं। ये बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते हैं।

(ख) कफ से होने वाले कीड़े मांस, उड़द, गुड़, दूध, दही, सिरका प्रभृति खाने से होते हैं। ये कीड़े आमाशय में होते और पेट में चारों ओर घूमते हैं।

(ग) रक्तज कृमि, रक्त या ख़ून बहाने वाली शिराओं में रहते हैं। ये विरुद्ध भोजन, जैसे दूध-दही अथवा दूध-मूली या दूध और मछली प्रभृति एक साथ खाने वगैरः से पैदा होते हैं। ये फोड़े-फुन्सी और खुजली तथा कोढ़ आदि पैदा करते हैं।

■ प्र० ५—कृमि-रोग से कौन-कौन से रोग पैदा होते हैं ?

□ उ०—कृमि-रोग से मृगी, हैजा, उन्माद, और पाण्डु-रोग प्रभृति भयंकर रोग पैदा होते हैं।

■ प्र० ६—बालकों के इलाज में वैद्य को किस बात का ख़याल रखना चाहिये ?

□ उ०—बालकों का इलाज करते समय वैद्य को इस बात की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिये, कि पेट में कीड़े तो नहीं पड़ गये। अगर पेट के कीड़ों का इलाज न किया जाय और ज्वर तथा वमन-नाशक अनेक दवाएँ भी दी जायँ तो भी कोई लाभ न होगा। बहुत से हकीम-वैद्य कृमि-रोग पर ध्यान न दे कर, अक्सर धोखा खाया करते हैं। जब तक कृमि-रोग-नाशक दवा नहीं दी जाती, बालक का दूध डालना, क़य करना और ज्वर प्रभृति आराम नहीं होते।

■ प्र० ७—कृमि-रोग-नाशक चन्द अच्छे-अच्छे नुसख़े बच्चों के लिए बताओ।

□ उ०—(क) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। साथ ही पेट के और रोग भी चले जाते हैं।

(ख) अरण्ड के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में ३-४ दिन लगाने से गुदा के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(ग) धतूरे के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में लगाने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(घ) आधी रत्ती से २ रत्ती तक एलुआ, माँ के दूध में घिस कर रोज़ चटाने से बालकों को कृमि-रोग या पेट का रोग नहीं होता है।

(ङ) गिलोय और भैंसा-गूगल—इन दोनों को अरण्ड के पत्तों के रस में घिस कर पेट पर लगाने से बालकों के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। ये पाँचों नुसख़े रामबाण है। हमारे आज़माये हुए हैं।

■ प्र० ८—बड़ों के कृमि-रोग नष्ट करने के लिये भी कोई आज़मूदा नुसख़ा बताओ।

□ उ०—(क) खुरासानीं अजवायन में सेंधानोन मिला कर, रोज सवेरे खाने से कृमि-रोग, अजीर्ण और आमवात-रोग नष्ट हो जाते हैं।

(ख) कचूर का रस पीने से कृमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(ग) ३ माशे कमीला ६ तोले पुराने गुड़ में मिला कर सेवन करने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

☛ **नोट**—ये सब परीक्षित योग हैं।

■ प्र० ९—आपने इनके सिवा जो और नुसख़े लिखे हैं, वे कैसे हैं ?

□ उ०—हमने इस पुस्तक में जितने नुसख़े लिखे हैं, वे प्राय: सभी आज़मूदा हैं, पर जो दस-बीस या ज़्यादा दफे आज़माये हैं, उन्हीं के सामने 'परीक्षित' शब्द लिखा है। जिनके सामने 'परीक्षित' शब्द नहीं हैं, वे भी अच्छे हैं, फालतू नहीं।

—: ✱ :—

आठवाँ अध्याय

पाण्डु-रोग-वर्णन

□ पाण्डु-रोग की किस्में □

'माधव-निदान' में लिखा है:—

पाण्डुरोगाः स्मृताः पंच वातपित्तकफस्त्रयः ।
चतुर्थः सन्निपातेन पंचमो भक्षणात्मृदः ॥

(१) वात का, (२) पित्त का, (३) कफ का, (४) सन्निपात का, और (५) मिट्टी का—इस तरह पाण्डु-रोग पाँच तरह का होता है।

☛ **नोट**—यह मत चरक ऋषि का है। चरक के चिकित्सा-स्थान के वीसवें अध्याय का ही यह श्लोक है। माधव-निदान-कर्त्ता ने अपने ग्रन्थ में यों-का-यों उठा लिया है। माधव-निदान-कर्त्ता ने ही नहीं—भावप्रकाश, वंगसेन, प्रभृति प्रायः सभी ग्रन्थों के लेखकों ने इसे ज्यों-का-त्यों ले लिया है। महर्षि वाग्भट् ने लिखा है—

स पंचधा पृथग्दोषैः समस्तैर्मृत्तिकादनात् ।

वह पाण्डु-रोग वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और मृत्तिका-जन्य—इस तरह पाँच प्रकार का होता है।

हारीत ने लिखा है—

वातिकः पैत्तिकश्चैव श्लेष्मिकः सन्निपातिकः ।
पंचमो रुक्षणः प्रोक्तो वक्ष्ये चैषां तु सम्भवम् ॥

वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और रुक्षण—ये पाँच प्रकार के पाण्डु-रोग होते हैं। लेकिन धन्वन्तरि भगवान सुश्रुत से कहते है।

पाण्ड्वामयोऽष्टार्द्ध विधिः प्रदिष्टः पृथक्समस्तैर्युगपंचदोषैः ।
सर्वेषु चैवस्विह पाण्डुभावो यतोधिकोऽतःखलु पांडुरोगः ॥

वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज—इस तरह पाण्डु-रोग चार प्रकार का होता है। सब तरह के पाण्डु-रोगों में, प्रायः सब अवयवों में, पीलापन ज्यादा

होता है, इसी से इस रोग को पाण्डु-रोग या पीलिया कहते हैं।

अब रही यह बात, कि सुश्रुत के सिवा चरक, हारीत और वाग्भट आदि नए-पुराने आचार्य पाण्डु-रोग को पाँच तरह का मानते हैं और सुश्रुत चार प्रकार का। इसमें कौन-सी बात ठीक है ? असल बात यह है, कि वास्तव में पाण्डु चार प्रकार का ही होता है। मिट्टी खाने से जो पाँचवाँ माना जाता है, वह कारण-भेद है, जाति का भेद नहीं। सुश्रुत आचार्य ने यह समझ कर, कि मिट्टी खाने से हुए पान्डुरोग की चिकित्सा और कारणों से कुपित हुए दोषों से पैदा हुए पाण्डु-रोग की चिकित्सा करने से हो जाती है, उसे अलग नहीं लिखा। परन्तु चरक ऋषि ने इस मिट्टी खाने से पैदा होने वाले को अलग इसलिए कहा, कि और कारणों से कुपित हुए वात आदि दोष और रोगों को भी पैदा करते हैं, परन्तु यदि मिट्टी खाने से ये कुपित होते हैं, तो विशेष कर पाण्डु-रोग ही पैदा करते हैं और मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोग की चिकित्सा भिन्न प्रकार से होती है। इन्हीं बातों का विचार करके, चरक ने मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोग को पाँचवा माना है।

पाण्डु-रोग के कारण

अत्यन्त मैथुन करने, खट्टे पदार्थ खाने, बहुत शराब पीने, मिट्टी खाने, दिन में सोने और अत्यन्त तीक्ष्ण पदार्थ—राई प्रभृति खाने से वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित हो कर पाण्डुरोग करते हैं।

पाण्डु-रोग की सम्प्राप्ति

अति मैथून करने और खट्टे पदार्थ खाने प्रभृति कारणों से वात, पित्त और कफ कुपित हो कर, ख़ून को बिगाड़ कर चमड़े के रंग को पीला कर देते हैं।

☛ नोट—रुधिर या ख़ून तो उपलक्षण-मात्र है। असल में दोष चमड़े और मांस को दूषित करते हैं। इस रोग में वात, पित्त और कफ—तीन दोष और रस-रक्त आदि दूष्य हैं। हारीत मुनि 'रस' को दूष्य कहते हैं।

'हारीत-संहिता' में लिखा है—बहुत राह चलने से, ज्वर पीड़ित होने से, रक्तस्राव होने या ख़ून गिरने से, व्रण होने से, अत्यन्त चिन्ता होने से, घोर परिश्रम करने से, मलमूत्रादि वेगों के रोकने से, क्षार और खट्टे पदार्थ खाने से, प्रभात समय मैरेय नामक मदिरा पीने से, कसरत न करने से, मैथून करने से, निद्रा-नाश होने से, दिन में अत्यन्त सोने से, मिट्टी खाने से, रोग-पीड़ित और शिथिल शरीर होने पर

भी रास्ता चलने से, नमकीन, खट्टा, चरपरा, कसैला रस खाने से और निरन्तर मैथुन का अतिक्रम होने से ख़ून सूख जाता है और उससे पाण्डु-रोग होता है।

'चरक' में लिखा है—क्षार, खटाई, नमक, अत्यन्त गरम-विरुद्ध भोजन, असात्म्य भोजन, सेम, उड़द, तिल की खल, तिल और तेल का नित्य सेवन, ग्रहणी-दोष आदि कारणों से अन्न का विदग्ध पाक होना, दिन में सोना, मिहनत न करना अत्यन्त स्त्री-प्रसंग, वमन-विरेचन आदि पंच कर्म की विषमता, मल-मूत्रादि का वेग रोकना, चिन्ता, भय-क्रोध और शोक—इन कारणों से हृदय में ठहरा हुआ पित्त, बलवान वायु से फेंका जा कर, हृदय-आश्रित दस धमनी नाड़ियों द्वारा सारे शरीर में व्याप्त हो जाता है तथा चमड़े और मांस के भीतर कफ, वात और रुधिर को दूषित करता एवं चमड़े और मांस को भी दूषित करता है; इसी से चमड़े का रंग पीला, हल्दी के रंग का, हरा और अनेक प्रकार के मिले रंग-वाला हो जाता है—इसी को पाण्डु-रोग कहते हैं।

☛ नोट—डाक्टरों का मत है, कि पित्त के कोप से ही पित्त, सारे शरीर में संचारित होकर, पाण्डु-रोग करता है। असल में यकृत के दोष से पाण्डु-रोग पैदा होता है। इसके सिवा वृक्कयन्त्र या गुर्दों के काम में गड़बड़ी होने से, अथवा अन्य विकारों से भी पाण्डु-रोग होता है। यकृत के कोठे में जो पित की थैली है, उसमें से हर रोज प्रायः दस छटाँक पित्त निकाल कर, किये हुए भोजन के पचाने में मदद देता है। इसके सिवा, वह पित्त शरीर के और भी अनेक काम करता है। अगर किसी वजह से उस पित्त के निकलने में कुछ रुकावट होती है, या वह कम निकलता है, तो न निकला हुआ पित्त सूख जाता और ख़ून में मिल कर हृदय में चला जाता है। हृदय से वह धमनियों की राह से ख़ून के साथ-साथ सारे शरीर में जा कर, कफ, रस, ख़ून और मांस धातुओं को बिगाड़ कर चमड़े और मांस के भीतरी भाग में रह कर शरीर का रंग बिगाड़ कर, पाण्डु-रोग पैदा करता है।

पाण्डु-रोग पैदा होने से पहले शरीर और मन में अत्यन्त खिन्नता होती है। छाती में बाँई ओर जो हृदय का स्पन्दन निरन्तर होता रहता है, उसकी संख्या बढ़ जाती है, यानी ज़्यादा फ़ड़कने लगता है; शरीर की कान्ति रूखी हो जाती है, भोजन को जी नहीं चाहता: खाया हुआ नहीं पचता और पसीना रुक जाता है। हमने ये चन्द पंक्तियां 'वैद्य' मुरादाबाद से ली हैं: अतः इन नोटों के लिए हम उसके लेखक के कृतज्ञ हैं।

पाण्डु-रोग के पूर्वरूप

'सुश्रुत' में लिखा है—जब पाण्डु या पीलिया होने वाला होता है, तब चमड़े का फटना, मुँह से बारम्बार थूकना. अंगों का जकड़ना, मिट्टी खाने पर मन चलना, आँखों पर सूजन आना, मल और मूत्र का पीला होना तथा अन्न का न पचना—ये लक्षण पहले ही नज़र आते हैं।

'चरक' में लिखा है—हृदय का फड़कना, देह का रूखा-सा होना, पसीनों का न आना एवं बिना मिहनत किये थकान-सी मालूम होना—ये पाण्डु-रोग के पूर्वरूप हैं।

हारीत लिखते हैं—जिसे पाण्डु-रोग होने वाला होता है, उसकी आँखों के कोनों में सूजन आ जाती है, शरीर पीला हो जाता है, मुँह में थूक आता है और चमड़ा फट जाता है।

वाग्भट लिखते हैं—पाण्डु-रोग होने से पहले हृदय का स्पन्दन होता है, चमड़ा रूखा हो जाता है, अरुचि हो जाती है, पेशाब पीला होता है, पसीने नहीं आते और अग्नि मन्द हो जाती है।

नोट—इन सब अचार्यों के कथन में क्या भेद है, उसे पाठक सहज में देख सकते हैं। हाँ, एक बात और याद रखनी चाहिये, कि पाण्डु-रोग होने से पहले हृदय की धड़कन बहुत बढ़ जाती है और पसीनों का आना बन्द हो जाता है, यह चरक ने लिखा है। वाग्भट्ट ने भी हृदय का स्पन्दन लिखा है।

पाण्डु के साधारण लक्षण

पीलिया होने से कान में आवाज होना, मन्दाग्नि, कमज़ोरी, अंगों का दुखना, नींद न आना, भ्रम, थकान, देह में पीड़ा, ज्वर, श्वास, भारीपन और अरुचि—ये लक्षण होते हैं। ऐसा जान पड़ता है, मानो कोई सारे अंगों को मथे डालता है। नेत्र-गोलकों पर सूजन आ जाती है, रंग हरा-सा हो जाता है, बाल गिर जाते हैं या रोमाञ्च होता है, देह की कान्ति नष्ट हो जाती है, रोगी का स्वभाव क्रोधी हो जाता है, वह शीत से द्वेष करता है, नींद आती है, हर समय थू-थू करता रहता है, थोड़ा बोलता है, चलने और मिहनत करने से कमर, जाँघों और पाँवों में दर्द होता है, और वे रह जाते हैं।

वातज पाण्डु के लक्षण

वादी के पाण्डु-रोग में चमड़ा, नेत्र और मूत्र में रुखापन, कलाई और ललाई होती है, कम्प होता है, सूई चुभाने की-सी वेदना होती है, पेट पर अफारा होता है तथा भ्रम और शूल आदि होते हैं।

नोट—'चरक' में लिखा है—वादी करने वाले अन्नपानादि सेवन करने और वादी ही उपचार या उपवास आदि करने से वायु कुपित होकर कष्टसाध्य पाण्डु-रोग पैदा करती है। इसमें शरीर का रंग रूखा और काला रंग मिला-सा हो जाता है। शरीर में दर्द होता है। सूई चुभाने की-सी पीड़ा होती है। कँपकँपी आती है, पसलियों और सिर में दर्द होता है। मल सूख जाता है। मुख में विरसता होती है। सूजन, कमजोरी और अफ़ारा होता है।

वाग्भट्ट वातज पाण्डु में शूल चलना, चभके मारना, कम्प होना, नाड़ी, नाखून, विष्टा, मूत्र और नेत्रों का काला रूखा और लाल हो जाना प्रभृति कहते हैं।

सुश्रुत कहते हैं—वायु के पाण्डु में नेत्रों में पीलापन लिये कलाई होती है, नीली-नीली नसें चमकती हैं और मल-मूत्र, नाखून और मुख भी पीलापन लिये काले-से होते हैं। इसमें और भी वायु के उपद्रव होते हैं।

हारीत लिखते हैं—चभके चलते हैं, सिर भारी रहता है, कठोरता होती है, चमड़ा, मूत्र, नेत्र और नाखूनों में पीलापन रहता है।

खुलासा—छाती में अतीव अशान्ति या बेचैनी-सी रहती है, पसलियों में दर्द होता है, कभी-कभी श्वास लेने में भी कष्ट होता है, मुँह का स्वाद खराब रहता है, शरीर में दर्द होता है, शरीर काँपता और सूजन आ जाती है, मल-मूत्र काले होते हैं तथा नेत्र और मुख किसी क़दर काले हो जाते हैं।

• पित्तज पाण्डु के लक्षण •

जिसे पित्त का पाण्डु-रोग होता है, उसके मल-मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं। रोगी दाह, प्यास और ज्वर से पीड़ित रहता है। मल पतला उतरता है और रोगी के शरीर की क्रान्ति अत्यन्त पीली होती है।

नोट—वाग्भट्ट लिखते हैं—पित्त से पैदा हुए पाण्डु-रोग में नाड़ी, नाखून, विष्ठा, मूत्र और नेत्रों में पीलापन होता है तथा ज्वर, प्यास, पसीना, बेहोशी, शीतल पदार्थों की इच्छा, बदबू, मुँह का कड़वापन, पतला मल और दाह—ये सब लक्षण होते हैं।

सुश्रुत कहते हैं—पित्त के पीलिये में नेत्र, मल-मूत्र, नाखून और मुख पीले होते हैं, नसें पीली-पीली चमकती हैं और पित्त के अन्य उपद्रव भी होते हैं।

हारीत लिखते हैं—आमपना, शरीर का पीलापन, शोष, मुँह का कड़वापन, मन्द ज्वर, प्यास, मोह—बेहोशी, सूजन और पीली कान्ति—अगर ये लक्षण हों, तो पित्त का पाण्डु-रोग समझो।

'चरक' में लिखा है—पित्तकारक आहार-विहार से पित्त कुपित हो कर, रक्तादि धातुओ को दूषित करके, पाण्डु-रोग पैदा करता है। पित्त-प्रधान पाण्डु-रोग में रोगी का रंग हरा या पीला होता है; ज्वर, दाह, वमन, मूर्च्छा और प्यास होती है, तथा मल-मूत्र पीले होते हैं। रोगी का मुँह कड़वा रहता है, वह खाना नहीं चाहता, गरम और खट्टे पदार्थ सहन नहीं कर सकता, खट्टी डकारें आती हैं, अन्न-विदग्ध होने से शरीर में विदाह होता है, बदन से बदबू निकलती है, मल पतला उतरता है, शरीर कमज़ोर हो जाता है और सामने अँधेरा मालूम होता है। रोगी शीतल पदार्थों या ठण्ड को पसन्द करता है।

कितने ही आचार्य 'रोगी शीत की इच्छा करता है' ऐसा लिखते हैं, और कितने ही नहीं। वाग्भट्ट ने पसीने आना लिखा है, पर डाक्टर कहते हैं कि पसीनों का न आना ही पाण्डु का प्रधान कारण है। चरक ने स्वयं पूर्व रूप में पसीनों का न आना लिखा है। माधव प्रभृति और आचार्यों ने पसीनों का नाम भी नहीं लिया है।

खुलासा—पित्त का पाण्डु होने से नेत्र और शरीर का रंग हल्दी-जैसा हो जाता है। पेशाब का रंग केसर के समान होता है, तरह-तरह की खुजली-सी चलती हैं, रोगी को अपना शरीर बोझ-सा मालूम होता है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, मन अत्यन्त नाखुश रहता है, मुँह का स्वाद कड़वा या ख़राब हो जाता है, रोगी हर समय थूकना चाहता है और नाड़ी अत्यन्त क्षीण चलती है।

नोट—पित्तज पाण्डु-रोग में धात्री-लोह, नवायस-लोह, पाण्डु-पंचानन-रस प्रभृति अच्छे हैं। आगे नुसख़ों में बनाने की विधि लिखी है।

• कफज पाण्डु के लक्षण •

जिसे कफ का पाण्डु-रोग होता है, उसके मुँह से कफ गिरता है, सूजन होती है, तन्द्रा या ऊँघ आती है, आलस्य होता है, शरीर भारी रहता है तथा चमड़ा, नेत्र, मूत्र और मुख सफ़ेद हो जाते हैं।

नोट—'चरक' में लिखा है—कफकारी पदार्थों से कफ कुपित हो कर, रक्तादि धातुओं को विगाड़ कर, कफ का पाण्डु रोग पैदा करता है, इसमें भारीपन, तन्द्रा, वमन, सफ़ेद रंग होना, लार गिरना, रोएँ खड़े होना, थकान मालूम होना, बेहोशी, भ्रम, क्लम, श्वास, खाँसी, आलस्य, अरुचि, आवाज़ रुकना, गला बैठना, मूत्र, नेत्र, और विष्ठा का सफ़ेद होना, रूखे, कड़वे और खट्टे पदार्थों का अच्छा लगना—सूजन और मुँह का जायका नमकीन-सा रहना—ये लक्षण होते हैं।

'सुश्रुत, में लिखा है—कफ के पाण्डु में आँखें सफ़ेदी लिए पीली हों तथा मल, मूत्र, नख और मुँह भी ऐसे ही सफ़ेदी-मायल पीले हों, सफ़ेद-सफ़ेद नसें चमकें तथा और भी कफ के उपद्रव हों, तो समझो, कफ का पाण्डु है।

'वाग्भट्ट' में लिखा है—कफज पाण्डु-रोग में नाड़ी, नाखून, मल और मूत्र सफ़ेद होते हैं, तन्द्रा आती है, मुँह का ज़ायका नमकीन रहता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, स्वर-भंग, खाँसी और क्षय प्रभृति लक्षण होते हैं।

हारीत ने प्रस्वेद या पसीनों का होना ही अधिक लिखा है।

खुलासा—कफज पाण्डु होने से सारा शरीर, विशेष कर चेहरा, पाण्डु-वर्ण हो जाता है, आँखों में ज़रा भी सुर्ख़ी नहीं रहती, मुँह का ज़ायका बहुत ही बुरा हो जाता है, आँखों के खड्डों से सूजन उठ कर क्रम से मुख पर फैलती है; फिर हाथ और पाँवों पर फैलती है, मुँह से लार गिरती और क्षय होती है, आवाज़ बैठ जाती है, खाँसी आती है एवं रोम खड़े हो जाते हैं, इत्यादि।

● सन्निपातज पाण्डु-रोग ●

सब तरह के अन्नों के सेवन करने वाले मनुष्य के दूषित हुए तीनों दोषों से, ऊपर कहे तीनों दोषों के लक्षणों वाला, अत्यन्त असह्य घोर पाण्डु-रोग होता है। सन्निपात के पाण्डु वाले को तन्द्रा, आलस्य, सूजन, वमन, खाँसी, थुक-थुकी, शोष, पतले दस्त, ज्वर, मोह, प्यास, ग्लानि और इन्द्रियों की शक्ति का नाश—ये लक्षण होते हैं। उत्तम वैद्य को ऐसे रोगी का इलाज न करना चाहिये।

मिट्टी खाने से हुए पाण्डु के लक्षण

जिस मनुष्य का मिट्टी खाने का स्वभाव पड़ जाता है, उसके वात, पित्त और कफ कुपित हो जाते हैं। कसैली मिट्टी से वायु कुपित होती है। खारी मिट्टी से पित्त कुपित होता है। मीठी मिट्टी से कफ कुपित होता है। खाई हुई मिट्टी पेट में जा कर रसादिक धातुओं को रूखा कर देती है। जब रूखापन पैदा हो जाता है, तब जो अन्न खाया जाता है, वह भी रूखा हो जाता है। फिर वही मिट्टी पेट में पहुँच कर, बिना पके रस को रस बहाने वाली नसों में ले जा कर, नसों की राह बन्द कर देती है। जब रस बहाने वाली नसों की राहें रुक जाती हैं, तब इन्द्रियों का बल नष्ट हो जाता है, इन्द्रियों की अपने-अपने विषयों को ग्रहण करने की शक्ति नष्ट हो जाती है, शरीर की कान्ति, तेज और ओज क्षीण हो जाते हैं, तब पाण्डु-रोग पैदा होता है। पाण्डु-रोग होने से बल, वर्ण और अग्नि का नाश हो जाता है।

• विशेष लक्षण •

नेत्र, कपोल, भृकुटी, पैर, नाभि और लिंग में सूजन आ जाती है, कोठे में कीड़े पड़ जाते हैं, कफ मिला दस्त होता है। जैज्जट आचार्य कहते हैं, जब सभी पाण्डु-रोगों में कीड़े पड़ जाते हैं, तब ये लक्षण होते हैं। कोई-कोई कहते हैं, यह मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोग के लक्षण हैं। विदेह ने तो साफ़ कहा है, कि ये मृत्तिकाजन्य यानी मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोग के लक्षण हैं।

नोट—वाग्भट्ट कहते हैं, मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोगी के नाभि, पैर और मुँह सूज जाते हैं। रोगी कीड़ों से मिला, रक्त और कफ-संयुक्त पाख़ाना फिरता है।

'हारीत' कहते हैं कि मिट्टी खाने से घोर पाण्डु-रोग होता है। यह पाण्डु बड़ा कठिन और धातुओं का क्षय करने वाला होता है। मिट्टी खाने से स्रोत भर जाते हैं और उनके रुकने से रक्त का संचार नहीं होता; अतः रस से शरीर की पुष्टि नहीं होती। मिट्टी खाने से कुपित हुए वातादिक दोष बड़े बलवान होते हैं। वे कान्ति, बल और जीवन की आशा को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। इस पाण्डु-रोग से जठराग्नि नष्ट हो जाती है।

'चरक' में लिखा है—मिट्टी, रूखेपन के कारण, रसादि धातुओं और भोजन किये हुए अन्न को रूखा कर देती तथा शरीर के सारे छेदों को रोक देती है। इससे इन्द्रिय-बल, तेज, वीर्य और ओज धातु नष्ट हो जाती और बल, वर्ण तथा अग्नि को नष्ट करने वाला पाण्डु-रोग पैदा हो जाता है। नेत्र-गोलक, भौंह, पैर, नाभि प्रभृति में सूजन चढ़ आती है। रोगी के कोठे में कीड़े पड़ जाते हैं, दस्त पतले लगते हैं एवं दस्तों में ख़ून और कफ का लगाव रहता है।

'भावप्रकाश' में लिखा है—मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोग वाले को तन्द्रा, आलस्य, श्वास, खाँसी, शूल और अरुचि ये रहते हैं तथा पेट में कीड़े रहते हैं। आँखों के गोलक, गाल, भौंह, पाँव, नाभि और लिंग पर सूजन होती है और कफ-मिले दस्त आते हैं।

• पाण्डु-शोथ के लक्षण •

जब पाण्डु रोग अत्यन्त बढ़ जाता है, जब शरीर का निकम्मा जलीय भाग, मूत्र और पसीने प्रभृति के द्वारा, अच्छी तरह बाहर नहीं निकलता, शरीर के चमड़े और मांस के भीतरी भाग में रुकने लगता है; तब शरीर के किसी अंग में या सारे शरीर में शोथ या सूजन पैदा हो जाती है।

नोट—सब तरह के शोथों पर 'पुनर्नवाष्टक क्वाथ' खूब ही अच्छा है। आगे

इसके बनाने की विधि लिखी है। 'पुनर्नवादि तैल' की मालिश कराने और 'पुनर्नवाष्टक क्वाथ' पिलाने से पाण्डु-रोग मय सूजन के नष्ट हो जाता है।

□ पाण्डु-रोग की साध्यासाध्यता □

(१) बहुत दिन का पुराना पाण्डु-रोग, बहुत समय बीत जाने पर अच्छा नहीं होता।

नोट—पीलिया होते ही इलाज कराना चाहिए। इसकी उपेक्षा करना अच्छा नहीं। अगर बहुत दिनों तक इस रोग का इलाज नहीं किया जाता, तो यह असाध्य हो जाता है।

(२) जिस पाण्डु-रोगी की सब देह में सूजन आ जाय और जिसे पदार्थ पीले दीखें, वह असाध्य है।

(३) जिस पाण्डु-रोगी का बँधा हुआ मल थोड़ा, हरे रंग का और कफ-मिला हो, वह असाध्य है।

(४) जो पाण्डु-रोगी ग्लानियुक्त हो, जिसके शरीर का रंग सफ़ेद हो या जिसका शरीर किसी सफ़ेद पदार्थ से लिपटा-सा मालूम हो और जो वमन, मूर्च्छा और प्यास से पीड़ित हो, वह पाण्डु-रोगी नष्ट हो जाता है। ये सांघातिक लक्षण हैं।

(५) रुधिर-क्षय से हुआ पाण्डु-रोग असाध्य होता है; यानी ख़ून के नष्ट होने से जिसका शरीर पीला या सफ़ेद हो गया हो, वह शायद ही बचे। ये सांघातिक लक्षण हैं।

(६) जिस पाण्डु-रोगी के दाँत, नाख़ून और नेत्र पीले हों, वह असाध्य है।

(७) जिस पाण्डु-रोगी को सारी चीज़ें पीली-ही-पीली दीखें, वह असाध्य है।

(८) जिस पाण्डु-रोगी के हाथ, पैर और सिर में सूजन हो और मध्य भाग पतला हो, वह पाण्डु-रोग असाध्य है; पर इससे विपरीत लक्षणों वाला साध्य है।

(९) जिस पाण्डु-रोगी की देह के बीच में सूजन हो, पर हाथ, पैर और सिर सूख गये हों, एवं गुदा, लिङ्ग और फोतों पर सूजन हो, ज्वर और अतिसार हो तथा जो मुर्दे के समान हो गया हो, वह इलाज करने लायक नहीं; वह मर जायगा।

नोट—जिस मनुष्य के हाथ, पाँव और मुख पर सूजन हो और मध्य भाग यानी धड़ पतला हो गया हो, अथवा हाथ; पाँव और मुँह पतले पड़ गये हों और धड़ सूज गया हो एवं गुदा, लिङ्ग और फोते सूज रहे हों, जिसके सामने अँधेरी आती हो, जिसकी संज्ञा जाती रही हो, ज्ञान न हो तथा जो अतिसार और ज्वर से दुखी हो, ऐसा पाण्डु-रोग असाध्य है। जो वैद्य यश चाहे, ऐसे रोगी को त्याग दे।

(१०) जिस पाण्डु-रोगी को ज्वर, अरुचि, हुल्लास, वमन, प्यास और ग्लानि—ये हों, इन्द्रियों में सामर्थ्य न हो तथा तीनों दोषों का कोप हो, उसका इलाज वैद्यों को न करना चाहिये।

(११) जो पाण्डु-रोग बहुत पुराना हो, रोगी की सम्पूर्ण धातुओं में रूखापन आ गया हो, थोड़े ही दिनों में सूजन चढ़ आई हो और रोगी को सब वस्तुएँ पीली-ही-पीली दीखती हों, उस रोगी का आराम कठिन है।

(१२) जिस पाण्डु-रोगी का बँधा हुआ मल हरियाली लिये हो और थोड़ा-थोड़ा उतरे, दीनता आ गई हो, पसीना बहुत आता हो, वमन, मूर्च्छा और प्यास से जी व्याकुल हो, वह रोगी असाध्य है। वह आराम नहीं हो सकता।

(१३) 'हारीत-संहिता' में लिखा है—जिस रोगी के दाँत, नाखून और नेत्र पीले होते हैं और जिसे सर्वत्र पीला-ही-पीला दीखता है, वह मर जाता है।

(१४) जिस रोगी का चमड़ा, नेत्र और पेशाब पीले होते हैं और जिसे सब जगह पीला-ही-पीला दीखता है, वह नष्ट हो जाता है।

• पाण्डु-रोग के उपद्रव •

उपद्रवास्तेष्वरुचिः पिपासा छर्दि ज्वरो मूर्धरुजाग्निसादः।
शोथस्तथा कंठगतो बलत्वं मूर्च्छा क्लमो हृद्यवपीडनं च ॥

अरुचि, प्यास, वमन, ज्वर, सिरदर्द, अग्निमांद्य, कंठ में सूजन, कमज़ोरी, बेहोशी, क्लम और हृदय में पीड़ा—ये पाण्डु और कामला प्रभृति के उपद्रव हैं।

□ कामला के निदान और सम्प्राप्ति □

जो पाण्डु-रोगी अधिक पित्तकारी पदार्थों का ज्यादा सेवन करते हैं, उनका पित्त कुपित हो कर, रुधिर और मांस को दूषित करता है। बस, इसी से कामला रोग होता है।

नोट—ऐसा नहीं समझना चाहिये, कि पाण्डु रोगी को ही पित्तकारक पदार्थ सेवन करने से कामला होता है। कामला रोग अपने-आप भी हो जाता है।

जिस तरह खाँसी का इलाज न करने से राजयक्ष्मा होता है, उस तरह ही कामला नहीं होता। जिस तरह राजयक्ष्मा अपने-आप भी हो जाता है, उसी तरह कामला भी अपने-आप ही जाता है। मतलब यह, पाण्डु-रोगी के पित्त-कारक पदार्थ खाने से भी कामला होता है और अपने-आप भी हो जाता है। यकृत-रोग होने पर भी क्रमश: यह होते देखा जाता है। यकृत से पित्त निकल कर सारा का सारा ही पाक-स्थली में न जा कर, उसमें से थोड़ा-सा ख़ून में मिल जाता है। इस तरह भी कामला होता है। पाण्डु-रोग के जो कारण हैं, उन्हीं सब कारणों से तथा दिन में बहुत ही सोने प्रभृति कारणों से भी कामला होता है।

• कामला के लक्षण •

इस रोग में नेत्र अत्यन्त पीले हो जाते हैं। चमड़ा, नाखून और मुंह भी पीले या हल्दी के रंग के हो जाते हैं, मल-मूत्र पीले या लाल हो जाते हैं, शरीर का रंग बरसाती मेंढ़क-जैसा हो जाता है, इन्द्रियों को सामर्थ्य जाती रहती है, हृदय में जलन होती है, भोजन नहीं पचता, शरीर कमज़ोर और शिथिल हो जाता है तथा अन्न में अरुचि हो जाती है।

नोट—कामला-रोग में पहले दोनों नेत्र पीले होते हैं। इस रोग में पित्त की प्रबलता होती है।

• कामला के दो भेद •

(१) कोष्ठाश्रय, (२) शाखाश्रय।

नोट—जो कोठे के आश्रय से होता है, उसे कोष्ठाश्रय कहते हैं और जो रक्तादि धातुओं के आश्रय से होता है उसे शाखाश्रय कहते हैं। कोठे के आश्रय से होने से, जिस तरह घड़े का पेट बड़ा और मुख छोटा होता है, उसी तरह का रोगी का पेट हो जाता है, तब उसे ही 'कुम्भ-कामला' कहते हैं।

• कुम्भ-कामला के लक्षण •

कामला-रोग जब बहुत पुराना हो जाता है, तब रूखा हो कर जठराग्नि को रोक लेता है। जिस तरह घड़े का मुख छोटा और पेट बड़ा होता है, उसी तरह कुम्भ-कामला-रोगी के पेट को समझना चाहिए।

नोट—कुम्भ=घड़ा। जो कोठे या कोष्ठ के आश्रय होता है, उसे कोष्ठा-श्रय कामला कहते हैं। कामला-रोग जब बहुत पुराना होता है, तब कृच्छ्रसाध्य हो जाता है। उस समय उसे 'कुम्भ-कामला' कहते हैं।

'सुश्रुत' में लिखा है—अगर रोगी पाण्डु-रोग (या और किसी रोग) के अन्त में खटाई या और ऐसे ही कुपथ्य पदार्थ खाता-पीता है, तो पित्त बहुत ही दूषित हो कर, मुख को पाण्डु-वर्ण और शरीर को और भी पाण्डु-वर्ण कर देता है एवं तन्द्रा और निर्बलता तथा पाण्डु-रोग के अन्य लक्षण प्रकट करता है, तब उसे कामला कहते हैं।

"इस कामला का ही एक भेद कुम्भिका या कुम्भ कामला है। इस रोग में सूजन अधिक होती है और जोड़ों में दर्द होता है।"

जिसमें ज्वर, अंग टूटना, थकान, तन्द्रा और क्षीणता—ये लक्षण होते हैं। उसे 'लाघरक अलस' कहते हैं। अगर इसमें वात-पित्त के चिह्न मिलते हैं, तो 'हलीमक' कहते हैं।

• कामला के असाध्य लक्षण •

जिस कामला-रोगी का मल-मूत्र काला या पीला या काला-पीला अथवा लाल हो, शरीर पर सूजन विशेष हो; नेत्र, मुँह, वमन, मल और मूत्र ये—अत्यन्त लाल हों तथा मोह हो, वह रोगी नहीं बचता।

जिस कामला-रोगी में दाह, अरुचि, प्यास, अफ़ारा, तन्द्रा, मोह, मन्दाग्नि और विस्मृति—ये लक्षण हों, वह नहीं जी सकता।

• कुम्भ-कामला का अरिष्ट •

वमन, अरुचि, ओकारी, ज्वर, अनायास थकान, श्वास, खाँसी और फटा हुआ पतला मल—ये लक्षण अगर कुम्भ-कामला वाले में पाये जायँ, तो समझ लेना चाहिए कि रोगी नहीं बचेगा।

• हलीमक के लक्षण •

पाण्डु या कामला होने के बाद क्रमश; शरीर का रंग हरा, काला या पीला हो जाय, बल और उत्साह का नाश हो जाय एवं तन्द्रा, मन्दाग्नि, हल्का ज्वर स्त्री-संभोग में अनिच्छा, शरीर टूटना, दाह, प्यास, अन्न से बैर और भ्रम—ये लक्षण हों तो वात-पित्त से हुआ 'हलीमक-रोग' समझना चाहिए।

☛ नोट—जब पाण्डु-रोगी के शरीर में वात-पित्त बढ़ जाते हैं, तब रोगी के शरीर का रंग हरा, काला और पीला हो जाता है, तथा बल और उत्साह का नाश हो कर तन्द्रा और मन्दाग्नि आदि हलीमक के लक्षण प्रकट होते हैं। खूब याद रखो, यह हलीमक-रोग वात और पित्त से पैदा होता है।

• पानकी के लक्षण •

इन्द्रियों और मन में सन्ताप हो, मल पतला हो, भीतर-बाहर पीलापन हो जाय* और नेत्र पीले हों तो पानकी-रोग समझो।

• हकीमी मत •

यूनानी हकीम पाण्डु-रोग को 'यरकान' कहते हैं। उनका कहना है कि पाण्डु या पीलिया, जिगर की ख़राबी और पित्त के दोष से होता है और हलीमक तिल्ली के दोष से होता है।

'इलाजुलगुर्बा' में लिखा है—हिन्दी में यरकान को 'कमलवायु' या 'कामला' कहते हैं। यह रोग सौदा या पित्त के दोषों के बिना, दुर्गन्ध जारी होने से चमड़े की ओर होता है। अगर यह रोग पित्त से होता है, तो 'यरकान असफर' बोलते हैं और अगर सौदा या किसी दोष के जलने से होता है, तो इसको 'यरकान असूद' कहते हैं।

□ पाण्डु, कामला और हलीमक रोग में चिकित्सक के याद रखने-योग्य बातें □

(१) जिस क्रिया या चिकित्सा से 'यकृत' का काम अच्छी तरह चलता रहे, वही क्रिया पाण्डु-रोग की चिकित्सा है।

(२) वैद्य को मुनासिब है कि पाण्डु या कामला प्रभृति का इलाज शुरू करने से पहले यह देख लें कि रोग साध्य है या असाध्य। अगर रोग साध्य मालूम हो, तो रोगी को घी पिला कर वमन और विरेचन—जुलाब से उसे साफ़ करे। इसके बाद 'हल्दी के कल्क' द्वारा या 'त्रिफले के कल्क' द्वारा सिद्ध किया हुआ घी रोगी को पिलाये; अथवा दस्तावर दवाओं को घी के साथ रोगी को पिलाये। साधारणतया, अगर ज़्यादा झंझट न हो सके, तो 'हरड़ का बक्कल' गुड़ में मिला कर रोगी को सेवन कराये; अथवा 'आरग्वधादि क्वाथ' पिलाये।

☛ **नोट**—अमलताश का गूदा, पीपरामूल, नागरमोथा, कुटकी और जंगी हरड़—इन पाँचों के काढ़े को 'आरोग्यपंचक' या 'आरग्वधादि क्वाथ' कहते हैं। यह आम-पाचक, त्रिदोश-नाशक, शूल-नाशक और दीपक है। इससे पच कर दस्त आता है।

---

* बाहर का चमड़ा और भीतर के मल-मूत्र आदि पीले हो जायें।

(३) वातज पाण्डु-रोग में चिकनी चिकित्सा करनी चाहिए। पित्तज में कड़वी और शीतल क्रिया करनी चाहिए। कफज में कड़वी, रूखी और गरम क्रिया करनी चाहिए। मिले हुए दोषों में मिली हुई क्रिया करनी चाहिये। कहा है—

सर्वेषु पाण्डुरोगेषु पथ्याचूर्णं घृतप्लुतम्।

स्निग्धो विधिर्वातभवे प्रशस्तस्तिक्तः सुशीतः किल पित्तजाते।

कफात्मके रूक्षकटुष्णतिक्तः प्रोक्तो विमिश्रस्त्रिमलोद्भवेस्यात्॥

सब तरह के पाण्डु-रोगों में 'छोटी हरड़ों का चूर्ण', घी में मिला कर देना चाहिए। पाण्डु-रोग में यह नुसख़ा परमोत्तम और परीक्षित है। वातज पीलिया में स्निग्ध या मातदिल, पित्तज में सिद्धशीत—गरमी और खुश्की-रहित शीतल, कफज में रूखी, कड़वी और गरम तथा मिले हुए दोषों में मिली हुई क्रिया करनी चाहिए।

(४) कामला-रोगी को पहले घी प्रभृति चिकनी चीज़ पिला कर तब कोई विरेचन या दस्तावर दवा देनी चाहिये। इसके भी बाद, रोग शान्त करने वाली औषधि देनी चाहिये।

(५) इन रोगों में, रोग की ठीक परीक्षा करके, देश, काल, पात्र और बलाबल का विचार करके कोई परीक्षित औषधि रोगी को खिलानी चाहिये। साथ ही कोई दवा आँखों में आँज कर या नाक में डाल कर रोग का नाश करना चाहिये। नस्य देने से अक्सर पीलापन जाता रहता है। जैसे—

१—द्रोणपुष्पी या गूमा के पत्तों का रस निकाल कर आँखों में डालना चाहिये।

२—गेरू, हल्दी और आमलों को पीस कर और 'शहद' में मिला कर नेत्रों में आँजना चाहिये।

३—कामला में कड़वी तूम्बी का रस—स्वरस—दो-तीन बूंद नाक में टपकाना चाहिये।

४—देवदाली के फलों का रस निकाल कर सुंघाना चाहिये।

☛ नोट—यह चारों उपाय आज़मूदा हैं।

(६) इन रोगों में जीर्ण ज्वर और यकृत-रोग की तरह पथ्यापथ्य सेवन कराना चाहिये।

(७) कामला-रोग में पीले कपड़े पहनना हितकारक है। अतः रोगी को यही सलाह देनी चाहिये।

☐ पाण्डु-रोग की चिकित्सा ☐

पाण्डु-रोग-नाशक नुसखे

• अयोमोदक •

(१) लोह-भस्म, तिल, सोंठ, मिर्च, पीपर और कोल—ये सब एक-एक तोला ले कर कूट-पीस कर छान लो। इसमें सब चूर्ण के वजन के बराबर 'सोना-मक्खी की भस्म' मिला दो और खरल करके एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—एक गोली 'शहद' के साथ खा कर, ऊपर से 'माठा' पीने से पाण्डु-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

• नवायस लौह •

(२) सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविड़ङ्ग और चीते की छाल—इन सबको एक-एक तोले ले कर, कूट-पीस कर छान लो। फिर इसमें तीन तोले 'लौह-भस्म' मिला कर सबको एक कर लो।

सेवन विधि—इसको २ रत्ती की मात्रा से ६ माशे शहद और ३ माशे घी के साथ लेने से पाण्डु-रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—'भावप्रकाश' में सब चूर्ण के बराबर नौ तोले लौहभस्म मिलाना लिखा है। हमने उस तरह परीक्षा नहीं की। वैद्य लोग कर के देखें। ध्यान रखें, पित्तज पाण्डु-रोग में 'नवायस-लौह' विशेष उपकारी है।

• योगराज •

(३) त्रिफला ३ माशे, त्रिकुटा ३ माशे, वायविड़ङ्ग ३ माशे, शुद्ध शिलाजीत ५ माशे, चाँदी का मैल ५ माशे, सोना माखी की भस्म ५ माशे, लोहा की धूल ५ माशे और शक्कर ८ माशे—इन सबको कूट-पीस कर, शहद मिला कर, एक साफ़-सुथरे लोहे के वर्तन में रख दो। इसमें से अग्नि-बल के अनुसार सेवन करने से पाण्डु, क्षय, खाँसी, विषम-ज्वर, सब तरह के कोढ़, श्वास, हिचकी, अरुचि, विशेष करके मृगी, कामला और बवासीर-रोग नष्ट होते हैं। यह योगराज 'चरक' का है। वृन्द वैद्य ने इसकी खूब तारीफ़ की है।

सेवन विधि : मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—शहद। इस दवा के पच जाने पर कुलथी, मकोय और कबूतर का मांस छोड़ कर रोगी और मनमाने पदार्थ खा सकता है।

• व्योषाद्य घृत •

(४) त्रिकुटा, बेल की छाल, दारुहल्दी, त्रिफला, सफ़ेद पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, मोथा, मंडूर, पाठा, वायविड़ङ्ग, देवदारु, विछोरिया या वृश्चिकाली और भारंगी—इन सब दवाओं को मिला कर आध सेर लो। इनको सिल पर डाल कर जल के साथ पीस लो। यही लुगदी या कल्क है। अब दो सेर 'घी', आठ सेर 'दूध' और ३२ सेर 'पानी' तैयार करो। सबके तैयार होने पर, पीतल की क़लईदार कड़ाही में (१) लुगदी, (२) घी, (३) दूध और (४) पानी को चढ़ा कर, घी की विधि से, मन्दाग्नि से पका लो।

सेवन-विधि—मात्रा ६ माशे की है। इस घृत के खाने से पाण्डुरोगादि अनेक रोग नष्ट होते हैं, पर ठीकरें खाने से हुए पाण्डु पर तो यह घृत रामबाण ही है।

• मण्डूर-वटक •

(५) त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, वायविड़ङ्ग, चव्य, चीता, दारुहल्दी, दालचीनी, शुद्ध सोनामाखी, गठिवन, और देवदारु—इन सबको चार-चार तोले ले कर, अलग-अलग पीस कर चूर्ण बना लो। इसके बाद अंजन के समान 'शुद्ध मंडूर' को चूर्णों से दूना लेकर, 'गाय के अठगुने मूत्र' में पकाओ। इसके बाद, उसे पहले की दवाओं के चूर्ण में मिला कर गूलर के फल के बराबर वटक बना लो। ये वटक पाण्डु-रोगियों के प्राणदाता हैं। इनके सेवन से कोढ़, उरुस्तम्भ, कफ-रोग, कामला, प्रमेह, बवासीर और तिल्ली-रोग भी नष्ट होते हैं।

सेवन-विधि—इन वटकों को माठे के साथ सेवन करना चाहिये। अगर रोग पुराना हो, तो जो मन में आये सो रोगी खा सकता है।

• मंडूर वज्र-वटक •

(६) पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—ये सब ४ तोले, देवदारु ४ तोले, त्रिफला ४ तोले, वायविड़ङ्ग ४ तोले, मोथा ४ तोले और कुटकी ४ तोले ले कर, कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। जितना इस पिसे-छने चूर्ण का वज़न हो, उससे दूना मंडूर लो। मंडूर को अठगुने गो-मूत्र में पकाओ। जब वह पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उतार लो। फिर उसमें पहले की दवाओं के चूर्ण को मिला कर दो-दो तोले के वटक बना लो।

सेवन-विधि—इन वटकों को 'माठा' के साथ सेवन करने से पाण्डु-रोग, मन्दाग्नि, अरुचि, बवासीर, ग्रहणी-दोष, उरुस्तम्भ, हलीमक, कृमि-रोग, तिल्ली,

उदर-रोग और गल-रोग नष्ट होते हैं। इनके सिवा और भी अनेक रोग नष्ट होते हैं।

• विड़ङ्गाद्य लौह •

(७) वायविड़ङ्ग, त्रिफला, त्रिकुटा, दारूहल्दी, पीपर और शुद्ध मंडूर—इन सब को पीस-छान कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को 'घी और शहद' के साथ सेवन करने से पाण्डु और कामला-रोग नष्ट होते हैं। यह नुसख़ा वृन्द ने कहा है। वृन्द के योग सदा अच्छे निकलते हैं।

• कौरैया पाक •

(८) कौरैया की जड़ ला कर धो लो और उसकी छाल उतार लो। पीछे उसे सिल पर रख, पानी के साथ पीसो और उसका रस निकाल लो। रस को क़लईदार कड़ाही में डाल कर आग पर पकाओ। जब औटते-औटते गाढ़ा हो जाय, उसमें अन्दाज़ से सोंठ, मिर्च, पीपर, जायफल, माजूफल, जावित्री, लौंग, बायविड़ङ्ग, मरोड़फली, बेलगिरी और नागकेशर बराबर-बराबर ले कर मिला दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से अतिसार, संग्रहणी और पाण्डु रोग नष्ट होते हैं।

सेवन-विधि—(१) अतिसार और संग्रहणी में इन गोलियों को 'हींग-मिली छाछ' के साथ अथवा 'सोंठ' के साथ अथवा 'घी' साथ लो। (२) पाण्डु-रोग में उन्हें गो-मूत्र के साथ लो। यह बालकों के लिए अच्छी हैं।

नोट—कौरैया को कुड़ा या कुरैया भी कहते हैं। इसकी फलियों में जो बीज निकलते हैं, उन्हें 'इन्द्रजौ' कहते हैं। जड़ और बीज दोनों ही कड़वे होते हैं। कोरैया सफ़ेद और काली दो तरह की होती हैं। यह अग्निदीपक पाचक और ग्राहक—क़ाबिज़ होती है। अतिसार-वर्णन में इसके बहुत से नुसखे लिख आये हैं।

• पुनर्नवादि मंडूर •

(९) पूनर्नवा, निशोथ, सोंठ, मिर्च, पीपर, बायविड़ङ्ग, देवदारु, चीता, मीठा कूट, हल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, दन्ती, चव्य, इन्द्रजौ, कुटकी, पीपरामूल, मोथा, काकड़ासिंगी, कालाज़ीरा, अजवायन और कायफल—इन को चार-चार तोले ले कर कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। फिर चूर्ण के वज़न से दुगुना 'मंडूर' ले कर अठगुने 'गोमूत्र' में पकाओ। बाद में, सब चूर्ण मिला दो और नीचे उतार कर, उसमें पुराना गुड़' मिला कर, गोलियाँ बना लो। यह 'पुनर्नवादि मंडूर' अश्विनीकुमारों ने बनाया है। इसके सेवन से पाण्डु, कामला, हलीमक, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा,

ज्वर, सूजन, उदरशूल, तिल्ली, अफारा, बवासीर संग्रहणी, कृमिरोग, वातरक्त और कोढ़—ये सब नष्ट हो जाते हैं।

सेवन-विधि—बलाबल-अनुसार ये गोलियाँ 'छाछ' में घोल कर पीनी चाहिये। मात्रा ४ माशे की है।

□ ग़रीबी नुसखे □

(१०) लोहसार की भस्म को सात दिन तक 'गो-मूत्र' में भावना दे कर दूध के साथ सेवन करो। इनसे पाण्डु-रोग जाता है।

(११) मंडूर को सात बार आग में तपा कर 'गो-मूत्र' में बुझाओ। जब अच्छी तरह से भस्म हो जाय, उसे चना-बराबर ले कर शहद और घी में चाटो। इससे पाण्डु-रोग नष्ट होता है।

नोट—भात में मिला कर खाने से सूजन-सहित पाण्डु नष्ट हो जाता है, परीक्षित है।

(१२) हल्दी को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। फिर और हल्दी ले कर काढ़ा बना लो। फिर कल्क, काढ़े और घी को क़लईदार कड़ाही में चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। घी-मात्र रहने पर उतार लो। इस घी का सेवन करने से पाण्डु-रोग नष्ट होता है। कहा है :—

क्षणदाक्वाथकल्काभ्यां घृतं सिद्धमिमं जयेत्।

(१३) कड़वे नीम के पत्तों को पानी में पीस कर,पाव-भर रस निकाल लो। उस रस में मिश्री मिला कर गरम करो। शीतल होने पर पी लो। इससे पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१४) कड़वी तूम्बी के पत्तों का काढ़ा पीने से पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१५) लोहे के १ माशे कीट को महीन पीस कर, ६ माशे गुड़ में मिला कर ११ दिन तक खाने से पाण्डु-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—लुहार की दूकान पर जहाँ लोहा कूटा-पीटा जाता है, वहाँ जो मैल झड़-झड़ कर गिरता है, उसे ही लोहे का मैल या कीट कहते हैं। उसे आग में तपा-तपा कर गो-मूत्र में बुझा लेने से वह निर्दोष हो जाता है। पाण्डु-रोग में यह बहुत काम आता है।

(१६) लोहा का मैल ला कर, आग में तपा-तपा कर, सात बार 'गो-मूत्र' में बुझाओ। फिर उसमें से ४ रत्ती मैल को ३ माशे 'घी' और ६ माशे 'शहद' में

मिला कर चाटो। इससे पाण्डु-रोग निश्चय ही नष्ट होता है। इससे पेट का तो भयानक-से-भयानक दर्द नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) त्रिफले के ६ माशे चूर्ण में 'शहद' मिला कर रोज़ चाटने से पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१८) गिलोय का ६ माशे चूर्ण, 'शहद' मे मिला कर चाटने से पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१९) कालीमिर्च का ६ माशे चूर्ण शहद में मिला कर चाटने से पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(२०) दो माशे रेवन्दचीनी 'शर्वत अनार' में मिला कर चाटने से पाण्डु-रोग और कामला नष्ट होते हैं। प्रथम श्रेणी की दवा है।

नोट—रेवन्दचीनी, को संस्कृत में रेवटचीनी, पीता, गन्धिनी, क्षीरणी प्रभृति कहते हैं। मराठी में 'रेवाचीनी', गुजराती में 'देवचीनी', बंगला में 'रेउचीनी' और अँगरेजी में 'रूवर्ब' कहते हैं। इसकी मात्रा जवान के लिए १ या १॥ माशे की है। ज़्यादा मात्रा लेने से भयंकर परिणाम होता है।

(२१) त्रिकुटा, बाँसा, चिरायता, नीम की छाल, कुटकी और गिलोय—इनका काढ़ा बना कर, शीतल होने पर उसमें शहद मिला कर पीने से कामला और पाण्डु दोनों नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—त्रिफले के ४ तोले काढ़े में ६ माशे शहद मिला कर पीने से पाण्डु-रोग चला जाता है।

(२२) हरड़, तिल और त्रिकुटा—ये सब एक-एक तोले लो फिर इनमें तीन तोले सोनामक्खी का चूर्ण मिलाओ। शेष में शहद मिला कर मोदक बना लो और रोज़ खाओ। इन मोदकों से पाण्डु-रोग नष्ट हो जाता है।

(२३) सूखे हुए बकरी के मल को एक-दो बार 'गो-मूत्र' में पका कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को ३ माशे घी और ६ माशे शहद के साथ 'भात में मिला कर' खाने से सूजन और पाण्डु-रोग नष्ट होते तथा अग्नि दीप्त होती और बढ़ती है। —वृन्द।

(२४) त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, वायविड़ङ्ग और चीते की छाल—सबको बराबर-बराबर एक-एक तोला और लोह-चूर्ण नौ तोले ले ले कर मिला लो। इस चूर्ण को ना-बराबर 'घी और शहद' में मिला कर सेवन करने से पाण्डु-रोग, हृद्रोग, कोढ़ और कामला आराम होते हैं।

(२५) गुड़ में मिला कर 'बड़ी हरड़' खाने से सब तरह के पाण्डु-रोग आराम होते हैं। परीक्षित हैं।

□ पाण्डु-रोग की विशेष चिकित्सा □

वातज पाण्डु-रोग की चिकित्सा

(२६) शुद्ध शिलाजीत में केसर और मिश्री मिला कर, बकरी के दूध के साथ सेवन करने से वातज पाण्डु-रोग नष्ट होता है।

(२७ त्रिफले के काढ़े में घी और चीनी मिला कर सेवन करने से वातज पाण्डु-रोग जाता है। परीक्षित है।

(२८) हल्दी का काढ़ा बना कर रख लो। साथ ही छटाँक भर हल्दी को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। घी एक पाव लो। घी, लुगदी और काढ़े को क़लईदार कड़ाही में चढ़ा कर, मन्दाग्नि से पका कर घी निकाल लो। शीतल होने पर छान लो और किसी चौड़े मुँह की बोतल या घी की हाँड़ी में रख दो। इसमें से ६ माशे से २ तोले तक घी, गरम भात के साथ खाओ। इस घी से वातज और पित्तज दोनों पाण्डु-रोग नष्ट हो जाते हैं।

☛ **नोट**—इसी तरह त्रिफले का काढ़ा और कल्क तैयार करके, भैंस का घी पका लेने से भी वातज पाण्डु-रोग में लाभ होता है। काढ़ा कितना होना चाहिए, घी कितना लेना चाहिए, घी पका या नहीं—ये सब बातें हम पीछे लिख आये हैं। 'व्योपाद्य घृत', जो पहले लिख आये हैं, वातज पाण्डु में अच्छा है।

(२९) मण्डूर के चूर्ण को गो-मूत्र में सात बार बुझा कर रख लो। उसमें से ४ रत्ती से १ माशे तक मंडूर, चार माशे गाय के घी और ६ माशे शहद में मिला कर लेने से वातज पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(३०) दाख, हल्दी और पुनर्नवा एक-एक तोले ले कर, अधकचरा कर लो और गाय के पाव भर दूध में पाव भर जल मिला कर औटाओ। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और ज़रा-सी मिश्री मिला कर पियो। इस 'दुग्धयोग' से वातज पाण्डु-रोग नष्ट होता है।

□ पित्तज पाण्डु-रोग की चिकित्सा □

(३१) त्रिफला और नीम के नर्म-नर्म पत्तों का चूर्ण बना कर, शहद में मिला कर सेवन करने से पित्तज पाण्डु-रोग नष्ट होता है। परीक्षित है।

(३२) निशोथ के चूर्ण में दो भाग 'शक्कर' मिला कर सेवन करने से पित्तज पाण्डु नष्ट होता है। मात्रा एक तोले की है।—वृन्द।

(३३) हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, अडूसे की जड़ की छाल, कुटकी, चिरायता और नीम की छाल—इन सब को तीन-तीन माशे ले कर, आध सेर जल में पकाओ। चौथाई जल रहने पर उतार कर छान लो। शीतल होने पर छह माशे 'शहद' मिला कर पीने से पित्तज पाण्ड और कामला निश्चय ही नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(३४) लौह-मंडूर को आमलों के स्वरस में खूब खरल करो। पीछे उसके वज़न से चौगुना सूखे आमलों का चूर्ण उसमें मिला दो। उसको थोड़ी मात्रा में लगातार सेवन करने से पित्तज पाण्डु रोग अवश्य नष्ट होता है।

(३५) नवायस लौह, जो पाण्डु-रोग की सामान्य चिकित्सा में लिखा है, पित्त-जनित पाण्डु-रोग में अच्छा काम देता है।

(३६) आमले, लौह चूर्ण, सोंठ, पीपर, गोलमिर्च, हल्दी, शहद और चीनी—ये सब मिला कर सेवन करने से पित्तज पाण्डु में खूब लाभ होता है। इसको 'धात्रीलौह' कहते हैं। इससे हलीमक और कामला भी नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(३७) मकोय, कासनी और मूली के पत्तों का स्वरस—इन्हें आग पर चढ़ा कर पकाओ। जब स्वरस फट कर सफ़ेद पानी अलग हो जाय, छान कर बोतल में भर लो। इसमें दो-दो तोले पानी, सवेरे-शाम, जरा सा 'शहद' डाल कर पीने से पित्तज पाण्डु नष्ट होता है।

□ कफज पाण्डु-रोग की चिकित्सा □

(३८) दशमूल के काढ़े में 'सोंठ' मिला कर सेवन करने से पाण्डु-रोग, ज्वर, अतिसार, सूजन, ग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, कण्ठ-रोग और हृद्रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३९) बड़ी हरड़ गोमूत्र में भिगो कर और गो-मूत्र में मिला कर सेवन करने से कफज पाण्डु-रोग नष्ट होता हैं।

(४०) लौह-भस्म १ माशे और पिसी हुई सोंठ ४ माशे—इन दोनों को गो-मूत्र के साथ सेवन करने से कफज पाण्डु आराम होता है।

(४१) पीपल और सोंठ को चार-चार माशे ले कर पीस-छान लो और गो-मूत्र के साथ सेवन करो। इससे कफज पाण्डु-रोग आराम होता है।

(४२) ३ माशे शुद्ध शिलाजीत गो-मूत्र के साथ सेवन करने से कफज का पाण्डु-रोग नष्ट होता है।

(४३) त्रिफले और त्रिकुटे को बराबर-बराबर ले कर काढ़ा बना लो। शीतल होने पर, उसमें 'शहद' मिला कर पीने से खूब जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(४४) सूखी मूली १ तोला, बेल के हरे पत्ते ६ माशे, बाँस की जड़ ३ माशे और सोंठ ३ माशे— इन सब को कूट कर, ३२ तोले जल में पकाओ। जब ८ तोले जल रह जाय, उतार कर छान लो और पी जाओ। इससे कफज पाण्डु-रोग आराम होता है। कम उम्र वाले को कम देना चाहिये। परीक्षित है।

(४५) लौह-मंडूर को सात वार गोमूत्र में भावना दे-दे कर धूप में सुखा लो। इसको सफ़ेद पुनर्नवा या गरम जल के साथ सेवन करने के कफज पाण्डु रोग नष्ट होता है। यह पहले सिरे की उत्तम दवा है।

नोट—मंडूर ६०-७० साल का पुराना या इससे भी अधिक अच्छा होता है और वह शोध कर लिया जाता है। नया और विना शोधा मंडूर भूल कर भी न लेना चाहिये। आगे हम इसके सम्बन्ध में और भी लिखेंगे।

□ कामला-रोग की चिकित्सा □

(४६) हल्दी, त्रिफला, त्रिकुटा, बायविड़ंग और मंडूर—इन को पीस-कूट कर ना-बराबर घी और शहद के साथ सेवन करने से कामला और पाण्डु-रोग नष्ट होते हैं।

नोट—एक रत्ती मंडूर-भस्म, एक रत्ती गुलाब-जल में घोटा हुआ प्रवाल—मूंगा, १ माशे बंसलीचन, १ माशे-छोटी इलायची और १ माशे पीपर का चूर्ण—सबको एकत्र मिला कर, शहद के साथ, सवेरे-शाम चटाने से और बीच-बीच में सफ़ेद पुनर्नवा का स्वरस (अग्नि पर फाड़ा हुआ) पिलाने से यकृत का शोथ जाता रहता है; आँखों का पीलापन नष्ट हो जाता तथा ज्वर चला जाता है। परीक्षित है। इस नुसखे से एक ऐसा रोगी आराम हुआ, जिसका यकृत मलेरिया, ज्वर के कारण, बहुत ही बिगड़ गया था। हर समय थोड़ा-थोड़ा ज्वर रहता था। यकृत और प्लीहा के बढ़ने के कारण पेट बढ़ गया था, कमज़ोरी के कारण उठा-बैठा न जाता था; पर उसे भूख बहुत लगती थी और दस्त ज्यादा आते थे। इस नुसखे से और शिकायत तो मिट गई, पर दस्त कम न हुए। तब उस रोगी को मंडूर २ रत्ती, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, चीता और जायफल—इन सबका चूर्ण

मिला कर ३ माशे, दिन में दो बार सेवन कराया। इससे उसकी रही-सही शिकायत, भी मिट गई।

मंडूर लोहे का मैल होता है, जो लुहारों की दूकानों में, लोहा धमाते समय नीचे इकट्ठा हो जाता है। वह ६० साल से ऊपर का पुराना लेना चाहिये, क्योंकि ६० साल से पहले का मंडूर विष-समान होता है। वहेड़े की लकड़ी के कोयलों पर मंडूर को तपा-तपा कर गो-मूत्र में बुझाना चाहिये। अगर वहेड़े की लकड़ी न मिले, तो बबूल की लकड़ी के कोयलों पर तपाना चाहिये।

(४७) मंडूर, दारुहल्दी, हल्दी, त्रिफला और कुटकी—इनके चूर्ण को नाबराबर घी और शहद के साथ सेवन करने से कामला नष्ट होता है।

(४८) हरड़ १ तोले, हल्दी १ तोले और मंडूर २ तोले—सबका चूर्ण बना कर गुड़, मधु और जल के साथ सेवन करने से कामला नष्ट होता है।

(४९) नीम का रस, घी और शहद के साथ; खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

(५०) त्रिफला या गिलोय अथवा हल्दी—इनमें से किसी एक के रस में, घी और शहद मिला कर सेवन करने से कामला निश्चय ही चला जाता है।

(५१) आमले, मंडूर, त्रिकुटा, हल्दी, मधु, घी और चीनी—ये सब भयंकर कामला को भी नष्ट करते हैं।

(५२) वहेड़े की लकड़ी की आग में मंडूर को आठ बार गरम कर-करके गो-मूत्र में बुझाओ। फिर इसमें से शहद के साथ चाटो। इसके लगातार बहुत दिन चाटने से 'कुम्भ कामला' रोग निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

(५३) त्रिकुटा, चीता, बायबिड़ङ्ग, त्रिफला और मोथा—सबको बराबर-बराबर लो। सबके वजन के बराबर 'मंडूर' लेकर चूर्ण बना लो। इसका माठा, मधु, घी और कुछ गरम जल के साथ लेने से कामला, पाण्डु हृद्रोग, कोढ़, बवासीर और मूर्च्छा—ये रोग नष्ट होते हैं।

(५४) हल्दी, त्रिफला, नीम की छाल, खिरेंटी और मुलहठी—इनसे सिद्ध किया हुआ घी कामला को नष्ट करता है। इसी का नाम 'हरिद्राद्य घृत' है। मात्रा ६ माशे की है।

नोट—भैंस का घी १ सेर लो। दूध ४ सेर लो। पानी १६ सेर लो। हल्दी और त्रिफला प्रभृति को मिला कर १ पाव लो। हल्दी प्रभृति को सिल पर रख

कर पानी के साथ लुगदी बना लो। पीछे लुगदी, घी और पानी को कढ़ाही में चढ़ा कर मन्दाग्नि से घी पका लो। घी-मात्र रहने पर उतार कर रख लो।

(५५) गिलोय के पत्ते पीस कर माठे के साथ सेवन करने से कामला नष्ट होता है।

(५६) गाय के दूध में सोंठ का चूर्ण मिला कर सेवन करने से कामला चला जाता है।

लोलिम्बराज जी कहते हैं।

अये मनोज्ञकुण्डले स्फुरन्मुखेन्दुमण्डले ।
गवां पयः सनागरं निहन्ति कामलाभरम् ।।

हे शोभायमान कुंडलों वाली। हे चन्द्रमा के समान प्रकाशमान मुँह वाली! गाय के दूध में सोंठ मिला कर पीने से कामला का भारी ज़ोर भी घट जाता है।

☛ **नोट**—परीक्षित है। भयंकर कामला भी निश्चय ही नष्ट होता है।

(५७) एक तोले हल्दी का चूर्ण, आठ तोले दही में मिला कर, सवेरे ही खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

(५८) हरड़ का चूर्ण गुड़ और शहद के साथ खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

☛ **नोट**—हरड़ का चूर्ण खाली शहद के साथ चाटने से भी कामला चला जाता है।

(५९) हल्दी का चूर्ण घी, शहद और चीनी में मिला कर खाने से कामला चला जाता है।

(६०) कुटकी को पीस कर, उसमें मिश्री मिला कर, हथेली-भर फाँको और ऊपर से गुनगुना जल पियो। कामला-रोग निश्चय ही चला जायगा। परीक्षित है।

(६१) सोंठ, मिर्च, पीपर, बायविड़ङ्ग, त्रिफला, दारुहल्दी, पीपर और लोहभस्म—इन सबका चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को ना-बराबर घी और शहद के साथ खाने से कामला-रोग निश्चय ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६२) त्रिफला, गिलोय, दारुहल्दी और नीम की छाल का रस—इन सबके रस में शहद मिला कर पीने से कामला-रोग अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

(६३) ६ माशे कुटकी को ६ माशे शक्कर में मिला कर पीने से कामला चला जाता है।

(६५) सफेद चन्दन का, हुरसे पर गुलाब जल के साथ घिसा हुआ रस ३ माशे, आमाहल्दी का गुलाव-जल के साथ घिसा हुआ रस ५ माशे और शहद ७ माशे—तीनों को मिला कर सात दिन चाटने से और दाल भात खाने से कामला भाग जाता है। परीक्षित है।

☛ नोट—गुलाबजल हो तो अच्छा। अगर न हो तो पानी में चन्दन वगैरः को घिस लो।

(६६) एक तोला लौंग, २॥ तोले जल में रात को भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर वही जल पियो। इससे भी कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(६७) तीन तोले महँदी की पत्तियाँ, रात को ४ तोले जल में भिगो कर, सवेरे ही छान लो। इस जल के पीने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(६८) पके हुए केले की फली के दो टुकड़े करो। एक टुकड़े में १ या २ माशे सीपी का चूना भर कर खा लो। इसे कितने ही दिन करने से कामला या कमलवायु नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(६९) रेवन्दचीनी दूध में घिस कर ७ दिन चाटने से कामला चला जाता है। मात्रा १ या १॥ माशे की है।

(७०) सात माशे कंघी पानी में पीस कर, शहद में मिला कर खाने से कामला नष्ट हो जाता है। पथ्य—दाल भात।

(७१) विनौले ३ तोले ४ माशे रात में भिगो दो। सवेरे पीस कर साफ़ पानी नितार लो। उसमें लाहौरी नमक मिला कर रोज़-रोज़ पीने से कामला चला जाता है। खटाई और बादी पदार्थों से परहेज़ रखना चाहिए।

(७२) अरीठा १ तोला ८ माशे और गावजुवाँ १ तोला ८ माशे—दोनों को एक पाव पानी में रात को भिगो कर, सवेरे ही साफ़ जल निकाल कर पीने से; ईश्वर-कृपा से, सात दिन में कामला कष्ट हो जाता है।

(७३) दो-तीन कसौंधी की पत्तियाँ, दो-तीन गोल मिर्चों के साथ खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

(७४) बबूल के फूलों में बराबर की मिश्री मिला कर खाने से कामला चला जाता है। मात्रा—१ तोले की।

(७५) सिरके में बना मूली का अचार खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

(७६) अगर कामला नष्ट हो जाने पर भी पीलापन रह जाय, तो सात दाने कलौंजी के, स्त्री के दूध में पीस कर; नाक में टपकाने से पीलापन चला जाता है।

(७७) बेल के पत्तों को सिल पर कूट-पीस कर कपड़े में निचोड़ कर रस निकाल लो। इस रस में चार-पाँच कालीमिर्चों का चूर्ण पीस कर मिला दो। इसके पीने से कामला चला जाता है।

(७८) कड़वे नीम की छाल ३ तोले, घोड़ाबच १ तोला और कालीमिर्च ३ माशे—इन सबको महीन पीस कर, पाव-भर जल में छान कर रख लो। इसकी चार खुराक करो। हर बार ३ माशे शहद मिला कर पी जाओ। दूध-शक्कर खाओ। इससे कामला, पाण्डु और खुजली रोग नष्ट होते हैं।

☛ **नोट**—तेल, खटाई नमक और मिर्च अपथ्य हैं।

(७९) अरण्ड के नरम पत्ते १ तोला ले कर, १० तोले दूध में पीस कर, कपड़े में छान लो। फिर उसमें ६ माशे चीनी मिला कर, दिन में तीन बार पियो। कामला-रोग के लिये यह अच्छी दवा है।

□ नस्य और अंजन □

(८०) देवदाली के पत्तों का रस दो-तीन बूँद नाक में टपकाने से कामला चला जाता है परीक्षित है।

लोलिम्बराज कहते हैं—

देवदाली फलरसो नस्यतो हन्ति कामलाम् ।
सन्देहो नात्र संफुल्लनीलोत्पलविलोचने ॥

हे खिले हुए नीलकमल के समान नेत्रों वाली कामिनी ! देवदाली के फल का रस सूँघने से कामला चला जाता है, इसमें शक नहीं।

(८१) गेरू, हल्दी और आमले—इन तीनों को घिस कर, इनका अंजन करने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

लोलिम्बराज कहते हैं—

गिरिदात्रिधात्रीणामंजनं कामलापहम् ।
इदं न हि भवेत्मिथ्याशपथस्तु तवांगने ॥

गेरू, हल्दी और आमले के अंजन से कामला नष्ट हो जाता है। हे स्त्री ! यह झूठ नहीं है, तेरी क़सम।

(८२) दो-तीन बूँद नीबू का रस नेत्रों में टपकाने से कामला चला जाता है।

(८३) कड़वी तूम्बी का स्वरस दो-तीन बूँद नाक में टपकाने से कामला चला जाता है परीक्षित है।

(८४) कड़वी तूम्बी के बीज पानी में पीस कर नस्य लेने से कामला और पीलिया आराम होते हैं। परीक्षित है।

(८५) सफेद प्याज़, गुड़ और हल्दी—इन तीनों को मिला कर नस लेने से कामला आराम होता है। परीक्षित है।

(८६) द्रोणपुष्पी या गूमा के फूलों का रस आँजने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(८७) घीग्वार का रस सूँघने से आँखों का पीलापन चला जाता है।

□ कुम्भ-कामला और हलीमक की चिकित्सा □

(८८) वरियारा, कुटकी, जेठी मधु, आमला, बहेड़ा, हल्दी और दारु-हल्दी—इनका चूर्ण, शहद और चीनी में मिला कर चाटने से 'हलीमक' रोग चला जाता है।

(८९) दारुहल्दी या त्रिफला—इनमें से किसी एक का कषाय बना कर और शहद मिला कर पीने से कुम्भ कामला और कामला-रोग नष्ट होते हैं।

(९०) गिलोय के रस में शहद मिला कर पीने से कामला और कुम्भ-कामला नष्ट हो जाते हैं।

(९१) नीत का रस शहद में मिला कर पीने से कामला और कुम्भ-कामला चले जाते हैं।

(९२) उत्तम शुद्ध शिलाजीत; 'गो-मूत्र' के साथ पीने से कुम्भ-कामला चला जाता है।

(९३) लोहसार की भस्म और मोथे का चूर्ण 'खैरसार' के साथ पीने से हलीमक-रोग चला जाता है।

(९४) खाँड़, तिल, खिरेंटी, त्रिफला, हल्दी और दारुहल्दी को कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। पीछे इसमें लोह-भस्म मिला लो। इसको शहद के साथ सेवन करने से हलीमक-रोग चला जाता है।

(९५) गिलोय का स्वरस और गिलोय का कल्क तथा भैंस का घी लेकर, उसमें चौगुना दूध डाल कर घी बनाओ। इस 'अमृतलतादि घृत' के सेवन करने से हलीमक चला जाता है। परीक्षित है।

☛ **नोट**—हलीमक-रोग को मीठे और वात-पित्तनाशक पदार्थों से जीतना चाहिये। पाण्डु और कामला में लिखी दवाओं से हलीमक को शान्त करना चाहिए।

(९६) आध सेर महुआ, आध सेर गेहूँ, आध सेर गुड़ और आध सेर जंग लगा हुआ लोहा—इन चारों को एक मिट्टी के घड़े में डाल कर, ऊपर से बारह सेर जल भर दो और घड़े का मुँह बन्द कर के आठ दिन तक उसे अलग रख दो; छेड़ो मत। इसके बाद, इसमें से २ से ५ तोले तक जल रोगी को सवेरे-शाम पिलाओ। इससे कामला और हलीमक नष्ट होते हैं। अगर जी मिचलाये, तो पान या इलायची खिलाओ। यह नुसखा पं० नवनीत मिश्र जी वैद्य, पटना का परीक्षित है।

□ पाण्डु, कामला और हलीमक की सामान्य चिकित्सा □

(९७) त्रिफला, गिलोय, अडूसा, कुटकी, चिरायता और नीम की छाल का काढ़ा, शहद मिला कर, पीने से हलीमक, पाण्डु और कामला नष्ट होते हैं।

• त्र्यूषणादि मंडूर वटक •

(९८) सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविड़ङ्ग, चव्य, चीता, दारुहल्दी, दालचीनी, सोनामाखी, पीपलामूल और देवदारु—इन सबको चार-चार तोले ले कर, अलग-अलग पीस कर चूर्ण बना लो। इन सबके वज़न से दूना मण्डूर का चूर्ण ले कर अठगुने गोमूत्र में पकाओ और ऊपर के चूर्ण उसमें मिला कर, गूलर के फल-समान गोली बना कर, माठे के साथ सेवन करो। जब गोली पच जाय, तब भोजन करो। यह मण्डूर-वटक पाण्डु-रोग वालों के प्राण बचाने वाला है। इससे कुष्ट, उदर-रोग, सूजन, जाँघों का जकड़ना, कफरोग, बवासीर, कामला और प्रमेह आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं।

• अष्टादशांग लौह •

(९९) चिरायता, देवदारु, दारुहल्दी, मोथा, गिलोय, कुटकी, परवल, जवासा, पित्तपापड़ा, नीम, त्रिकुटा, चीता, हरड़, बहेड़ा, आमला और वायविड़ङ्ग—ये सब बराबर-बराबर, और सबके वज़न के बराबर 'लोहभस्म' ले कर, सबको मिला दो। पीछे इसमें घी और शहद मिला कर मोदक बनाओ। इन मोदकों के माठे के साथ सेवन करने से पाण्डु, हलीमक, सूजन, प्रमेह, संग्रहणी, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त, बवासीर, जीभ का जठरा जाना, आमवात, व्रण, वायुगोला, कफरोग, विद्रधि, सफ़ेद और दूसरे तरह के कोढ़ आराम होते हैं।

(१००) हरड़ का चूर्ण ६ माशे ले कर, ६ माशे गुड़ या शक्कर में मिला कर खा जाओ। इससे पाण्डु, कामला और हलीमक तीनों नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(१०१) सफ़ेद निशोथ का ६ माशे चूर्ण, ६ माशे गुड़ या चीनी में मिला कर खाने से पाण्डु, कामला और हलीमक तीनों नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(१०२) ६ माशे इन्द्रायण का चूर्ण, ६ माशे गुड़ में मिला कर खाने से भी पाण्डु, कामला और हलीमक नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

• पुनर्नवादि तैल •

(१०३) त्रिकुटा, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, जायफल, कचूर, दारु-हल्दी, प्रियंगू, देवदारु, रेणुका, कूट—पुनर्नवा की जड़, अजवायन, काला ज़ीरा इलायची, दालचीनी, पद्मकाष्ठ, तेजपात और नागकेशर—इन सब को एक-एक तोला ले कर, सिल पर पानी से पीस कर लुगदी (कल्क) बना लो। फिर तिलों का तेल २ सेर, सफ़ेद पुनर्नवा सवा छह सेर और पानी ३२ सेर लो। पहले सफ़ेद पुनर्नवा को चढ़ा कर काढ़ा बना लो और ८ सेर जल रहने पर उतार लो।

इसके बाद कड़ाही में लुगदी रखो, पुनर्नवा का काढ़ा डालो और तेल डालो। सबको मन्दाग्नि से पकाओ और तेल-मात्र रहने पर उतार लो। इसका नाम 'पुनर्नवादि' तेल है। इसे मालिश करने से पाण्डु, कामला, हलीमक, श्वास, तिल्ली का रोग, मल रोग और पुराना ज्वर—ये सब नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

☛ नोट—पुनर्नवा दो तरह का होता है—(१) सफ़ेद फूल का, और (२) लाल फूल का। सफ़ेद फूल वाले को हिन्दी में विषखपरा कहते हैं। लाल फूल वाले को गदह-सठ या गदहपुनेरा कहते हैं। यों तो शोथ का नाश करने में दोनों ही पुन-र्नवा अच्छे हैं, पर सफ़ेद विशेष अच्छा है।

• पाण्डु-पंचानन रस •

(१०४) लौहभस्म, अभ्रक भस्म और ताँबाभस्म—प्रत्येक को चार-चार तोले लो। त्रिकुटा, दन्ती की जड़, चव्य, चीता, कालाज़ीरा, हल्दी, दारुहल्दी, तेवड़ी की जड़, मानकन्दमूल, इन्द्रजौ, कुटकी, देवदारु, वच और मोथा—इन सबको दो-दो तोले लो। इन सबके वज़न से दूना 'मण्डूर' लो। मण्डूर का अठगुना गो-मूत्र लो। पहले गो-मूत्र में मण्डूर को औटा लो। जब औटते-औटते गाढ़ा हो जाय, उसमें ऊपर की सब चीज़ें मिला दो। यही 'पाण्डु-पंचानन रस' है।

सेवन-विधि—इसको गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये। इससे पाण्डु, हलीमक और सूजन आदि सब नष्ट हो जाते हैं।

• पुनर्नवाष्टक क्वाथ •

(१०५) सफ़ेद फूल वाला हरा या ताज़ा पुनर्नवा, नीम की हरी छाल, परवल के हरे पत्ते, सोंठ, कुटकी हरी गिलोय, देवदारु और हरड़—इन सबको ३-३ माशे लेकर कूट लो और आधा सेर जल में औटाओ। चौथाई जल रहने पर उतार लो और छान कर शीतल कर लो। पीछे इसमें ६ माशे 'शहद' डाल कर हर दिन पियो। इस काढ़े से सब तरह के शोथ (सूजन) आराम होते हैं। यह मशहूर काढ़ा है। पाण्डु-रोग में जब सूजन बहुत ही बढ़ जाय इसको सेवन कराओ; आश्चर्यजनक फल दीखेगा। सूजन का नाश करने में रामबाण है।

इस काढ़े के दो-तीन दिन लेने से कड़ा मल नरम होकर दस्त खुलासा आता है, भूख लगती और ज्वर हल्का होता है।

यह काढ़ा केवल पुराने शोथ-ज्वर की ही दवा नहीं है, इससे विषम-ज्वर और जिन ज्वरों में रोगी की तिल्ली और यकृत—लिवर एकदम खराब हो कर सारे शरीर में सूजन फैल जाती है, अथवा जिन उदर-रोगों के कारण सारे शरीर में सूजन आ जाती है, उन सब में भी यह काढ़ा अच्छा काम करता है। इसके सिवा, जिस सूजन का कारण नहीं मालूम होता, जिसमें ज्वर भी नहीं होता और प्लीहा तथा यकृत की शिकायतें भी समझ में नहीं आती, उनमें भी यह अच्छा काम करता है। यहाँ तक कि गर्भवती और प्रसूता स्त्रियों की सूजन में भी यह अच्छा फल दिखाता है।

☞ नोट—(१) यह पुनर्नवाष्टक सब तरह के शोथ या सूजन की अमोघ दवा है। जब ज्वर में बारम्बार कुनैन या तीक्ष्ण देशी या विलायती दवा देने और आहार-विहार में गड़बड़ होने से रोगी के हाथ, पाँव, पेट आदि अंगों पर सूजन आ जाती है और उसके साथ बुख़ार जम जाता है, उस समय यह काढ़ा रामबाण की तरह अचूक निशाने पर लगता है उस समय अगर रोगी स्नान प्रभृति त्याग कर हल्का पथ्य सेवन करता है, तो निश्चय ही लाभ होता है।

(२) सफ़ेद पुनर्नवा सूजन की अच्छी दवा है। इसके दो तोले स्वरस के ६ माशे शहद में मिला कर दिन में दो-तीन बार पीने से सूजन चली जाती है। ज्वर-नाशक और दवाओं के साथ यदि इसका स्वरस अनुपान के तौर पर दिया जाय, तो बहुत लाभ हो।

(३) जो सूजन दिन में बढ़े, रात में कम हो जाय, सूजन पर अँगुली गड़ाने से गड्ढा-सा हो जाय, हृदय की धड़कन बहुत हो, शरीर बहुत ही रूखा हो, उस सूजन

में 'दशमूल का क्वाथ' विशेष लाभदायक है। दशमूल की प्रत्येक दवा ३-३ माशे ले कर कूट लो और १६ तोले जल में पकाओ। चौथाई जल रहने पर उतार लो। सवेरे ही इसमें ज़रा-सा शहद डाल कर पियो। शोथ-ज्वर नष्ट हो जाएगा। अगर खाँसी हो तो २-३ रत्ती पीपल का चूर्ण डाल दो। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़े का चूर्ण और ६ माशे शहद डाल कर पियो। अगर शोथ-ज्वर में अजीर्ण हो, तो ज़रा-सी बड़ी इलायची और अजवायन मिला कर पियो। दशमूल के काढ़े से सूजन तो जाती ही है, पर इसके सिवा यह सन्निपात ज्वर, वात-रोग, प्रसूतिका रोग की भी अच्छी दवा है।

□ 'मण्डूर' शब्द पर दो-चार बातें □

हमने अनेक स्थानों पर लोह-कीट, मण्डूर, लोह-मल आदि शब्द लिखे हैं। उन शब्दों का भेद अनजान पाठकों को समझ लेना चाहिये। लुहार की दूकान से लोह-कीट ला कर दवा में मिला देना हितकारक कहीं—अहितकारक है; क्योंकि नया मण्डूर दवा के काम का नहीं होता। साठ साल के भीतर (पहले) का मण्डूर काम में लेना अच्छा नहीं। क्योंकि साठ वर्ष से कम का मण्डूर विष के समान होता है।

मण्डूर के संस्कृत में क्या-क्या नाम हैं ?

लोहे के मैल को 'मण्डूर' कहते हैं। संस्कृत में मण्डूर, लोहकिट्ट, लोहमल, किट्टी, लोहसिंहासन और शूलघातन आदि नाम लोहे के मैल के हैं। बोलचाल में इसे लोहे की कीटी या कीटीसार भी कहते हैं।

मण्डूर कहाँ मिलता है ?

लोहे को आग में धमाते समय उसका जो मैल मिट्टी में गिर जाता है, उसी को 'मण्डूर' कहते हैं। जहाँ प्राचीन समय में लोह के कारख़ाने थे, वहीं से यह अच्छा मिलता है; क्योंकि मण्डूर साठ साल से सौ साल तक पुराना ही अच्छा होता है। अतः बूढ़े लोगों से पता लगा कर, ऐसे स्थान खोजने चाहिये और वहाँ से इकट्ठा हुआ मण्डूर या लोहे का मैल ही लेना चाहिये।

मण्डूर कैसा होता है ?

मण्डूर के टुकड़े एक-से नहीं होते। कोई टुकड़ा गोल होता है, कोई लम्बा होता है, कोई ऊँचा-नीचा और कोई टेढ़ा-मेढ़ा होता है। नया मण्डूर चिकना और काले रंग का होता है, पर पुराना होने से वही मटमैला या ख़ाकी-सा हो जाता है। और तोड़ने पर भीतर से काले रंग का निकलता है। मण्डूर अति-भंगुर और बिखरने वाला होता है।

यह वज़न में प्रायः लोहे के समान या उससे कुछ कम होता है। गुणों में भी प्रायः लोहे के समान ही होता है। इसीलिये, लोहे के अभाव में मण्डूर इस्तेमाल किया जाता है। यह लोहे की तरह तेज़ नहीं होता; इसी से कमज़ोर मनुष्यों को, यहाँ तक कि बच्चों को भी, वेखटके दिया जा सकता है।

मण्डूर किस काम में आता है ?

कामला, पाण्डु, यकृत की विकृति और बालकों के यकृत-सम्बन्धी रोगों में मण्डूर बड़े काम की चीज़ है।

क्या नया मण्डूर काम का नहीं होता ?

हाँ, नया मण्डूर औषधि के काम का नहीं होता है। साठ साल से कम का मण्डूर विष के समान होता है; इसी से वैद्य लोग साठ साल का या इससे भी पुराना मण्डूर दवाओं में डालते हैं। सौ बरस का मण्डूर सबसे उत्तम होता है; अस्सी साल का मध्यम होता है, और साठ साल का साधारण होता है। इससे कम वर्षों का मण्डूर निकम्मा होता है और चालीस साल से कम का तो विषवत् होता है। अतः जहाँ तक हो साठ-साल या साठ साल से पुराना मण्डूर लेना चाहिये। अगर १०० साल का पुराना हाथ लग जाय, तव तो कहना ही क्या !

मण्डूर शुद्ध करने की विधि

पुराना मण्डूर पुराने कारखानों की खंडहर ज़मीनों में मिलता है। बड़े-बूढ़ों से पूछने से ऐसी ज़मीनों का पता लगता है। वहाँ से बड़ी चतुराई से मण्डूर इकट्ठा कर लेना चाहिये। इसके वाद उसे पानी से धो कर साफ कर लेना चाहिये। इसके वाद, 'बहेड़े की लकड़ी' लाकर कोयले वना लेने चाहिये। अगर वह न मिले, तो 'बबूल की लकड़ी' के कोयले तैयार करने चाहिये। फिर उन कोयलों को भट्टी में जला कर, एक बर्तन में मण्डूर रख कर, उसे खूब तपाना चाहिये। जव मण्डूर आग के समान लाल हो जाय, उसे मिट्टी या पत्थर के वर्तन में भरे 'गो-मूत्र' में बुझा देना चाहिये। इसके बाद उसे गो-मूत्र से निकाल कर, फिर आग पर लाल करना चाहिये और फिर उसे गो-मूत्र में डाल कर बुझा देना चाहिये। इस तरह, सात वार तपा-तपा कर उसे गो-मूत्र में बुझाना चाहिये। इस तरह करने से मण्डूर टुकड़े-टुकड़े हो कर विखर जाता है। इसके वाद मण्डूर को पानी से धो कर सुखा लेना और फिर हमाम-दस्ते में डाल कर कूट लेना चाहिये। जब ख़ूब महीन हो जाय, तब उसे किसी वर्तन में रख देना चाहिये। यही मण्डूर दवा में ड़ालने योग्य है।

और भी अच्छा मण्डूर बनाने की विधि

ऊपर के पिसे हुए मण्डूर का, कुछ समय तक गोमूत्र में भिगो कर, गजपुट में २-३ बार पका लेने से वह और भी अच्छा हो जाता है।

इसके बाद उस मण्डूर को, मण्डूर से चौगुने त्रिफले के काढ़े में, कड़ाही में डाल कर पकाना चाहिये। जब त्रिफले का काढ़ा जलते-जलते सूख जाय, तब मण्डूर की भस्म हो जायगी। जब मण्डूर और कड़ाही का रँग लाल हो जाय, तब और आग न देनी चाहिये। कड़ाही जब आप ही ठण्डी हो जाय, मण्डूर को निकाल कर और फिर पीस कर महीन कर लेना चाहिये।

त्रिफले का काढ़ा

मण्डुर का जितना वज़न हो, उससे दुगुना त्रिफला लेना चाहिये। जैसे, एक सेर मण्डूर हो, तो गुठली निकाला हुआ दो सेर त्रिफला ले कर, १६ सेर जल में काढ़ा पकाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो। यही त्रिफले का काढ़ा मण्डूर की भस्म करने में काम का होता है।

मण्डूर-भस्म क्या काम आती है ?

यह मण्डूर-भस्म, अनुपान-विशेष के साथ देने से, अनेक रोग नष्ट करती है। पाण्डु, कामला, हलीमक, यकृत-शोथ, तिल्ली और पेट के रोगों में यह बड़ा काम देती है। इनके सिवा ज्वर, खाँसी, अफारा, शूल, बवासीर, कृमि-रोग और गोले के रोग में भी यह बड़ी लाभदायक है।

नोट—यह वर्णन हमने 'वैद्य' मुरादाबाद के एक सम्पादकीय लेख के आधार पर लिखा है। अतः हम सम्पादक महोदय बाबू शङ्करलाल जी हरिशङ्कर जी के अतीव आभारी हैं।

□ पाण्डु-रोग में पथ्यापथ्य □

पथ्य

शाली चावल, जौ, गेहूँ, जंगली (जांगल) जीवों का मांस-रस, मूँग अरहर और मसूर—ये पाण्डु-रोग में पथ्य हैं।

इस रोग में खूब सावधान रहो। रोगी को शीतल जल से स्नान मत कराओ। पानी गरम करके उसमें नर्म कपड़ा डुबो कर, दूसरे-तीसरे दिन

रोगी का शरीर पोंछ दो। रोगी का पलंग, घर और उसके निकट के स्थान खूब साफ-सुथरे रखो।

औटा कर शीतल किया हुआ जल, अथवा लोहा बुझा हुआ जल रोगी को पिलाओ।

लोहे की कढ़ाही में पकाया हुआ दूध, पुराने चावलों का भात, सूजी की रोटी, मूंग या मसूर की दाल, परवल, मूली, तोरई, बैंगन, कच्चा केला, पालक का साग, साफ चीनी, सेंधानोन और गाय का घी पथ्य हैं।

अपथ्य

पाण्डु-रोगी को पेट-भर खाना मना है। भूख लगने पर भी थोड़ा-सा खाना चाहिए।

मछली, मांस, गरम मसाले और लालमिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थ न खाने चाहिये।

— ★ —

कुछ जानने-योग्य बातें

• स्वरस •

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम और फाँट—ये औषधियों के पाँच तरह के कषाय या क्वाथ होते हैं। ये उत्तरोत्तर हल्के होते हैं। स्वरस से कल्क, कल्क से क्वाथ, क्वाथ से हिम और हिम से फाँट हल्का होता है।

स्वरस के लिये शीत, अग्नि या कीड़ों आदि से न ख़राब हुई दवा लो। उसे सिल या खरल में, बिना जल डाले, कूट-पीस कर, मोटे गज़ी के कपड़े में रख कर निचोड़ लो। जो रस टपकेगा, वही स्वरस है।

अथवा

सोलह तोले गीली दवा को पीस-कूट कर, दूने पानी में डाल कर, २४ घण्टों तक भीगने दो। इसमें से कपड़े द्वारा निचोड़ने से जो रस निकलेगा, वह भी उत्तम स्वरस होगा।

अगर गीली दवा न मिले, तो सूखी दवा लेकर, जौकुट कर लो और अठ-गुना पानी डाल कर, मिट्टी के बर्तन में, रात को भिगो दो। उसे सवेरे ही मन्दी-मन्दी आग पर औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार लो और मल-छान लो। यह भी स्वरस है।

पहला स्वरस भारी होता है, इसलिये जवान को उसकी मात्रा २ तोले की है; परन्तु पिछले दोनों तरह के स्वरसों की मात्रा ४ तोले की है।

स्वरस में अगर मिश्री, शहद, गुड़, खार, ज़ीरा, नमक, घी, तेल और चूर्ण प्रभृति मिलाने हों तो आठ-आठ माशे डालने चाहिये।

• कल्क •

अगर गीली दवा का कल्क बनाना हो, तो गीली दवा ला कर, सिल पर पीस लो। यही 'कल्क' है। अगर दवा गीली न हो, सूखी हो, तो उसमें पानी डाल कर सिल पर पीस लो। यह भी 'कल्क' है।

कल्क की मात्रा एक कर्ष या एक तोले की होती है।

कल्क में अगर शहद, घी या तेल मिलाना हो, तो कल्क से दूना डालो। अगर मिश्री या गुड़ डालना हो, तो कल्क के बराबर डालो। अगर कोई पतली चीज़ डालनी हो, तो कल्क से चौगुनी डालो।

• क्वाथ •

जब क्वाथ करना हो, अच्छी दवा ला कर जौकुट कर लो। चार तोले दवा में सोलह गुना यानी ६४ तोले जल डाल कर, मिट्टी की कोरी हाँड़ी में, बिना ढक्कन दिये, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब आठवाँ भाग, यानी आठ तोले जल रह जाय, उतार कर छान लो और गरम-गरम ही रोगी को पिला दो।

इसको शृत, कषाय, क्वाथ और निर्यूह कहते हैं।

जवान के लिये पके हुये काढ़े की मात्रा आठ-आठ तोले की है।

अगर क्वाथ में ज़ीरा, गूगल, खार, नमक, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिर्च या पीपल—ये पदार्थ डालने हों, तो चार-चार माशे डालो। अगर घी, दूध, गुड़, तेल, मूत्र अथवा और पतली चीज़ें, या कल्क और चूर्ण आदि डालने हों, तो एक तोले भर डालो।

क्वाथ में 'बूरा' डालना हो, तो वात-रोग में चौथा भाग, पित्त-रोग में आठवाँ भाग और कफ-रोग में सोलहवाँ भाग डालो। अगर 'शहद' डालना हो, तो कफ के रोग में चौथा भाग और पित्त के रोग में आठवाँ भाग और वात-रोग में सोलहवाँ भाग डालो।

नोट—कितने ही ग्रन्थों में लिखा है—चौथा भाग बाक़ी रहा काढ़ा, आठवाँ भाग बाक़ी रहे काढ़े से भारी होता है। जो रोगी बड़ी देह और प्रदीप्त अग्नि वाला हो, वह चौथा भाग शेष रहा—सोलह तोले काढ़ा पिये। कुछ वैद्य कहते हैं, सोलह तोले काढ़ में से आधा छोड़ कर, आठ तोले पिये। मध्य शरीर और मध्य अग्नि वाला चार तोले काढ़ा पिये।

आज-कल के रोगी पहले के लोगों से कमज़ोर होते हैं। अतः दो या अढ़ाई तोले दवा ले कर, उसमें १६ गुना यानी ३२ या ४० तोले पानी मिला कर काढ़ा बनाना चाहिये और आठवाँ भाग—चार तोले या पाँच तोले रहने पर पिला देना चाहिये। उदाहरण-स्वरूप, किसी नुसख़े में ८ दवाएँ हों, तो प्रत्येक दवा तीन-तीन माशे लेनी चाहिये। इस तरह आठों दवाएँ मिला कर २४ माशे या २ तोले लेनी चाहिये। एक-एक दवा दो-दो तोले कभी न लेनी चाहिये।

अच्छी तरह बैठ कर, मुँह, हृदय और नेत्रों को प्रसन्न कर के, सोने, चाँदी या मिट्टी के बर्तन में काढ़ा पीना चाहिये और काढ़े को पी कर, बर्तन को उलट देना चाहिये। काढ़ा पी कर पानी से कुल्ले कर लेने चाहिये और ऊपर से पान या इलायची खा लेनी चाहिये।

नोट—काढ़े के सम्बन्ध में अधिक जानने के लिए **'चिकित्सा-चन्द्रोदय'** दूसरा भाग भी देख लीजिये।

• हिम •

चार तोले औषधियों को जौ-कुट करके, उसमें २४ तोले पानी डाल कर, रात के समय, मिट्टी के बर्तन में भिगो दो। सवेरे ही उसे मल-छान कर पी लो। यही 'हिम' है। इसकी मात्रा ८ तोले की है। इसे 'शीतकषाय' भी कहते हैं।

• फाँट •

चार तोले दवा लेकर जौ-कुट कर लो। फिर उसे हाँड़ी में डाल कर, ऊपर से १६ तोले गरम जल भर दो। थोड़ी देर बाद उन दवाओं को मसल कर मल-छान लो। इसको 'चूर्णद्रव' या 'फाँट' कहते हैं। इसकी मात्रा ८ तोले की है।

नोट—इसमें मिश्री, शहद या गुड़ प्रभृति पदार्थ मिलाने हों, तो क्वाथ में लिखे अनुसार डालो।

• चूर्ण •

सूखी हुई दवाओं को खूब महीन कूट कर कपड़े में छान लो। इसी को 'चूर्ण' कहते हैं। इसे 'रज' और 'क्षोद' भी कहते हैं।

अगर चूर्ण में गुड़ डालना हो, तो बराबर डालो; अगर चीनी डालनी हो तो दूनी डालो। हींग डालनी हो, तो भून कर डालो। हींग भून कर डालने से जी नहीं मिचलाता। अगर घी आदि पतली चीज़ों में मिला कर चूर्ण चाटना हो, तो उनको दूना मिलाओ। अगर चूर्ण घोल कर पीना हो, तो पतले पदार्थ चौगुने लो; क्योंकि, जैसे जल में गिरा हुआ तेल क्षण-भर में चारों ओर फैल जाता है, उसी तरह दवा, अनुपान के बल से, सारे शरीर में फैल जाती है।

अगर चूर्ण, गोली, अवलेह और कल्क के ऊपर गरम जल पीना हो, तो पित्त के रोग में चार तोले, वायु के रोग में आठ तोले और कफ के रोग में बारह तोले पीना चाहिए।

• अवलेह •

क्वाथ आदि को फिर आग पर रख कर औटाने से जो गाढ़ा-गाढ़ा रस बनता है, उसे ही 'अवलेह' या 'लेह' कहते हैं। अवलेह की मात्रा चार-चार तोले की है।

अवलेह में अगर चीनी डालनी हो, तो चूर्ण से चौगुनी डालो। गुड़ डालना हो, तो दूना डालो। अगर कोई पतला पदार्थ मिलाना हो, तो चूर्ण से चौगुना डालो।

अवलेह के ऊपर दूध, ईख का रस, पंचमूल के कषाय का यूष और अडूसे का काढ़ा—इनमें से जो उचित हो, वही अनुपान नियत करना चाहिए।

अवलेह में जब चाशनी के समान तार निकलने लगें, पानी में डालने से अवलेह डूब जाय, कड़ा हो जाय, अंगुलियों से दबाने से उस पर अँगुलियों के निशान उठ आवें; गन्ध, वर्ण, और रस अपूर्व हो जाय—तब समझो कि अवलेह ठीक बना।

• गोली •

गोलियाँ सात तरह की होती हैं :—(१) गुटिका, (२) वटी, (३) मोदक, (४) वटिका, (५) पिण्डी, (६) गुड़, और (७) वर्त्ति। गुटिका=गोली। वटी=बड़े। मोदक=लड्डू। वटिका=वड़ी। पिण्डी=मुठिया। गुड़=गोली। वर्त्ति=वत्ती।

गोलियाँ आग पर अवलेह की तरह बनायी जाती हैं। गुड़ या चीनी को आग पर पका कर, उसमें चूर्ण को डाल कर, फिर गोली बनाते हैं। किसी-किसी समय, विना आग पर पकाये गूगल, शहद या और कोई पतली चीज़ चूर्ण में मिला कर भी गोलियाँ वनाते हैं।

अगर बूरे की गोली बनानी हो, तो चूर्ण के वज़न से चौगुना बूरा लो। अगर गुड़ से गोली वनानी हो, तो चूर्ण से दूना गुड़ लो। अगर गूगल या शहद के साथ गोली वनानी हो, तो चूर्ण के वज़न के बराबर गूगल और शहद ले कर गोली बनाओ। अगर और किसी पतले पदार्थ से गोली वनानी हो, तो चूर्ण से दूना पतला पदार्थ लो।

गोली की मात्रा १ तोले की है, पर बल और समय देख कर, जितनी उचित जँचे, उतनी ही मात्रा देनी चाहिए।

नोट—अनेक तरह की गोलियाँ रत्ती या आधी रत्ती से भी कम दी जाती हैं। अगर कोई रोगी को 'महाज्वरांकुश वटी' १ तोले दे दे, तो रोगी फ़ौरन ही मर जायगा। ऊपर, साधारण काष्ठादिक औषधियों से वनी गोलियों की मात्रा १ तोले की लिखी है। चिकित्सा में तर्क और विचार की बड़ी ज़रूरत है।

• घृत और तेल •

घृत और तेल पकाने और उनमें कौन चीज़ कितनी लेनी आदि बातें इसी भाग के पहले फ़ुटनोट में विस्तार से लिखी हैं।

जितना कल्क का वज़न हो, उससे चौगुना घी या तेल लो। घी या तेल से चौगुना दूसरा पतला पदार्थ लो। जैसे, १ सेर कल्क हो, तो चार सेर घी और सोलह सेर दवाओं का काढ़ा प्रभृति लो। कल्क, तेल या घी और काढ़े को मिला कर आग पर चढ़ा दो। मन्दी-मन्दी आग से पकने दो। काढ़ा वगैरः जल जायँ, तेल या घी-मात्र रह जाय, तब उतार लो। बस, यही घी या तेल बनाने की विधि है।

• मन्थ •

शीतल जल में चार तोले दवा का चूर्ण भिगो दो। जब भीग जाय, तब मिट्टी के बर्तन में रई से मथ लो। बस यही 'मन्थ' है। इसकी मात्रा ८ तोले की है।

• पुटपाक •

पुटपाक की विधि इसी भाग में पहले लिखी है।

जिस चीज़ का पुटपाक करना हो, उसे सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। उस लुगदी पर कँभारी, बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर, उस पर दो-दो अंगुल मिट्टी चढ़ा दो। फिर उसे धूप में सुखा कर, आरने कण्डों की आग में पकाओ। जब वह गोला अंगारों के समान लाल हो जाय, निकाल लो। इसके बाद, शीतल होने पर, मिट्टी और पत्ते हटा कर, उसका रस निचोड़ लो। यही रस पुटपाक-रस है। इस रस की मात्रा चार तोले की है।

अगर पुटपाक-रस में शहद डालना हो, तो १ तोले डालो। यदि इसमें कोई कल्क या चूर्ण या पतला पदार्थ डालना हो, तो आठ माशे डालो।

• भावना •

जितने पतले पदार्थ में चूर्ण अच्छी तरह डूब जाय, उतने ही पतले पदार्थ से भावना देनी चाहिए।

• गरम जल •

पानी गरम करने से जब आठवाँ भाग (सेर का आध पाव), चौथा भाग (सेर का पाव-भर), अथवा आधा (सेर का आधा सेर) रहे, तब समझो कि जल गरम हुआ। पानी यदि खूब उबल जाय, तो उसे भी गरम हुआ समझो।

कफ के रोग में आठवाँ भाग रहा, वात-रोग में चौथा भाग रहा और पित्त के रोग में आधा रहा जल काम में लाना चाहिए।

रात में गरम जल पीने से कफ, आमवात, मेद, श्वास, खाँसी और ज्वर-रोग नष्ट हो जाते हैं। गरम जल वस्ति या मूत्राशय को शोधता और अग्नि दीपन करता है।

• क्षीरपाक •

औषधि जितनी हो, दूध उससे अठगुना लो और दूध से चौगुना पानी मिला कर औटाओ। जब दूध-मात्र रह जाय, उतार लो। इस दूध के पीने से आम के कारण से हुआ शूल नष्ट होता है। यदि कहीं 'दुग्धपाक' का काम पड़े, तो इसी तरह पकाओ।

• आसव और अरिष्ट •

कच्ची दवा और कच्चे पानी में जो मदिरा बनाई जाय, उसे 'आसव' कहते हैं; जैसे, 'कुमार्यासव'।

जो मदिरा काढ़ा पका कर बनाई जाती है, उसे 'अरिष्ट' कहते हैं। अरिष्ट और आसव की मात्रा चार तोले की है।

नोट—जहाँ अरिष्ट में डालने के पदार्थों की तौल न लिखी हो, वहाँ १०२४ तोले पतला पदार्थ, ४०० तोले गुड़, २०० तोले शहद और ४० तोले दवा लेनी चाहिए।

जो चीजें पतली चीज़ों में डाल कर बहुत दिन तक रख छोड़ी जाती हैं, वह सन्धित या खट्टी हो जाती हैं। यह 'आसव' और 'अरिष्ट' नाम से दो तरह की हाती हैं। अगर कच्चे पानी में कच्ची दवा डाल कर रख छोड़ी जाती है, तो 'आसव' कहाती है। अगर काढ़ा करके रखी जाती है, तो 'अरिष्ट कहाती है।

• नस्य •

इसके लिए 'चिकित्सा-चन्द्रोदय, दूसरे भाग में देखिये। कम-से-कम नस्य का काम पड़ने पर तो अवश्य ही देखिये; क्योंकि वहाँ नस्य के सम्बन्ध में बहुत-सी काम की बातें लिखी हैं।

□ ध्यान देने योग्य आवश्यक बातें □

(१) नर्म दवा पकानी हो, तो चौगुना जल डालो। कड़ी दवा में अठगुना जल और बहुत ही कड़ी में सोलह गुना पानी डालो। यह **कषाय या काढ़े** का नियम है।

(२) खैर आदि का सार लो। नीम आदि की छाल लो। अनार आदि के फल लो। परवल आदि के पत्ते लो। चीते की जड़, सूरन का कन्द, नीम और अडूसे के पत्ते, त्रिफले के फल, धाय के फूल, कटेरी का सर्वाङ्ग, खैर का सार और

दूध वाले वृक्षों की छाल लो। बेल का कच्चा फल और अमलताश का पका फल लो। बड़ की छाल, विजयसार का सार और तालीसपत्र के पत्ते लो।

(३) चूर्ण से दूनी मिश्री और बराबर गुड़ मिलाओ। लडडुओं में चूर्ण से दूना गुड़ और चौगुनी मिश्री मिला दो।

(४) मधुर, अम्ल और लवण रस वायु का नाश करते हैं। तिक्त, कटु, और कषाय रस कफ को दूर करते हैं। कषाय, तिक्त और मधुर रस पित्त का नाश करते हैं।

तिक्त, कटु और कषाय रस वात को उत्पन्न करते हैं। मधुर, अम्ल और लवग कफ को पैदा करते हैं। अम्ल, लवण और कटु रस पित्त पैदा करते हैं।

(५) सब रोगों में, जहाँ तक हो, नई दवायें लो। पर बायबिड़ङ्ग, पीपल, गुड़, धनिया, घी और शहद पुराने लो। चावल, पान और काँजी भी पुराने ही अच्छे होते हैं।

(६) गिलोय, कुड़ा, अडूसा, पेठा, शतावर, असगन्ध, सहचर, सौंफ और प्रसारिणी—इनको सदा गीली लो, पर दूनी मत लो। नीम, परवल, केवड़ा, खिरेंटी, सोंठ, कन्द, इन्द्रवारुणी, नागबली, गूगल—ये भी गीली ही लो; पर दूनी लो।

(७) सूखी और नयी दवा काम में लो और गीली दवा को दूनी लो।

(८) जहाँ औषधि खाने का समय न लिखा हो, वहाँ प्रातःकाल में दवा सेवन कराओ।

(९) जहाँ किसी दवा का अंग न लिखा हो (जैसे जड़, छाल या पत्ते वगैरा), वहाँ जड़ लो।

(१०) जहाँ औषधि का प्रमाण न लिखा हो कि कितनी-कितनी चाहिए, वहाँ सबको बराबर-बराबर लो।

(११) जहाँ यह न लिखा हो, कि अमुक पात्र में दवा पकाओ, वहाँ मिट्टी का वर्तन लेना चाहिए।

(१२) जहाँ गोली वगैरः बनाने या अनुपान के पतले पदार्थ का नाम न लिखा हो, वहाँ जल लो। जहाँ यह न लिखा हो, कि अमुक चीज़ का तेल लो, वहाँ तिल का तेल लो।

(१३) जहाँ एक ही दवा दो बार लिखी हो, वहाँ उसे दूनी यानी दो बार ही लो।

(१४) चूर्ण छह महीने में निकम्मे हो जाते हैं। गोली और अवलेह १ वर्ष बाद ख़राब हो जाते हैं। 'आसव, धातु और रस जितने पुराने हों, उतने ही अच्छे।

नोट—वर्षा काल में चूर्णों को यथा-सम्भव, दो माहों के भीतर ही प्रयोग कर लेना चाहिए, तथा रखने में भी सावधानी बरतनी चाहिए।

(१५) जहाँ खाली लवण लिखा हों, वहाँ सेंधानोन, और जहाँ चन्दन लिखा हो, वहाँ लाल चन्दन लो। चूर्ण, आसव, अवलेह और तेल में सफ़ेद चन्दन लो। क्वाथ और लेप में अधिकता से लाल चन्दन लो। खाली घी-दूध लिखा हो, वहाँ गाय का घी-दूध लो। जहाँ केवल मूत्र लिखा हो, वहाँ गो-मूत्र लो।

(१६) अगर कोई औषधि न मिले, तो उसका बदल या प्रतिनिधि ले लो। किसके बदले में क्या लेना चाहिए, इसके लिए 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' पहला भाग देखिये।

(१७) कौन दवा अच्छी हैं, कौन बुरी, यह जानने के लिए भी 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' पहला भाग देखिये।

(१८) सुहागा, भिलावा, धतूरे के बीज, अफ़ीम, कुचला, हींग, नौसादर, खपरिया, हिङ्गलू, गेरू, हरताल, फिटकरी, जमालगोटा, सींगिया, मैनसिल, कौड़ी, शंख, समन्दरफेन, पारा और गन्धक के शोधने की विधियाँ 'चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भाग में लिखी है।

—: ✻ :—

स्वर्णबंग के चन्द परीक्षित प्रयोग

(१) अगर अपने तईं हस्तमैथुन करके स्त्री-भोग के अयोग्य बना लिया है, स्त्री के पास जाने की हिम्मत नहीं होती, आपकी इन्द्रिय में तेजी नहीं आती, तो आप सवेरे के समय,

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
मकरध्वज	२ रत्ती
मक्खन	१ तोले
मिश्री	१ तोले

इन सबको मिला कर सेवन करें।

अथवा

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
मकरध्वज	२ रत्ती
मलाई	५ तोले
मिश्री	१ तोले

इन सबको मिला कर खाएँ। यह सवेरे के नुसख़े हैं।

अथवा

यह संध्या-समय के नुसख़े हैं।

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
मकरध्वज	२ रत्ती
गुलकन्द गुलाब	२॥ तोले

अथवा

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
गुलकन्द गुलाब	२ तोले

मिला कर खावें। ऊपर से मिश्री-मिला अधौटा गरम दूध पिएँ।

सूचना

ये नुसख़े तेज़ हैं, गरम हैं, अगर गरमी जान पड़े तो मात्रा आधी कर दें या फिर सवेरे ही लें। जब सहन होने लगें, शाम को भी वेने लगें।

(२) अगर आपको स्वप्नदोष का रोग है तो आप नीचे लिखी दवाएँ खाकर मिश्री मिला गरम दूध पी लें।

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
मूंगा भस्म	२ रत्ती
गिलोय का सत्त	२ रत्ती
शतावर का चूर्ण	४ रत्ती
विधायरे का चूर्ण	१ माशे
शुद्ध शिलाजीत	२ रत्ती

नोट—विधारे की लकड़ी वड़ी कठिनता से कुटती है, उसे कूट कर कपड़े में छान लें। इसी तरह शतावर को कूट कर छान लें; शिलाजीत सूखा हो तो पीस लें, गीला हो तो दवाओं में मिला कर गोली बना लें। यह नुसख़ा बलवान रोगियों को है। सब कोई इसे सहन नहीं कर सकते। अतः कमज़ोर पुरुष सब दवाएँ आधी-आधी लें।

(३) अगर जीर्ण-ज्वर या तपे-कौन : हो, बुख़ार हो, २१ दिन से ज्यादा का हो; तो आप नीचे का योग सेवन करें :—

स्वर्ण मालिनी वसन्त	१ रत्ती
स्वर्ण बंग	२ रत्ती
मकरध्वज	१ रत्ती
सितोपलादि चूर्ण	१॥ माशे
च्यवनप्राश	६ माशे

इन सबको मिला कर सवेरे-शाम चाटें। भोजन के बाद द्राक्षारिष्ट दो तोले पीलें।

(४) अगर आपको दस्त-क़ब्ज़ का रोग है, पाख़ाना साफ़ नहीं होता तो आप नीचे का नुसख़ा सेवन करें।

स्वर्ण बंग	२ रत्ती
गुलकन्द गुलाब	२॥ तोले

इन्हें मिला कर सवेरे-शाम खाएँ। ऊपर से मिश्री मिला गरम दूध पी लें।

* इति *

—: ★ :—